

मिथिला सांस्कृतिक समन्वय समितिक त्रैमासिक पत्रिका

अंक 26, अप्रैल 2011 सँ जून 2011

प्रकाशक : **विनय कुमार झा**

मिथिला सांस्कृतिक समन्वय समिति, गुवाहाटी

मुद्रक : **बालाजी प्रिंटर्स**

छत्रीबाड़ी, गुवाहाटी, असम

: संपादकीय एवं पत्राचारक पता :

Premkant Choudhary

Flat no. 2, C-Block-B, Punya Enclave

RG Barua Road (Behind Sinha Lounge)

Ganeshguri, Guwahati-781006

(M) 094353-42658, 098540-50707

E-mail : purvottarmaithil@gmail.com
msssghy2000@gmail.com

Bank A/C No.

Mithila Sanskritik Samanway Samiti
SBI A/C No. : 31539261052

एहि अंक मे



मिथिला सांस्कृतिक समन्वय समितिक त्रैमासिक पत्रिका

अंक 26, अप्रैल 2011 सँ जून 2011

प्रकाशक : **विनय कुमार झा**

मिथिला सांस्कृतिक समन्वय समिति, गुवाहाटी

मुद्रक : **बालाजी प्रिंटर्स**

छत्रीबाड़ी, गुवाहाटी, असम

: संपादकीय एवं पत्राचारक पता :

Premkant Choudhary

Flat no. 2, C-Block-B, Punya Enclave

RG Barua Road (Behind Sinha Lounge)

Ganeshguri, Guwahati-781006

(M) 094353-42658, 098540-50707

E-mail : purvottarmaithil@gmail.com
msssghy2000@gmail.com

Bank A/C No.

Mithila Sanskritik Samanway Samiti
SBI A/C No. : 31539261052

एहि अंक मे



मिथिला सांस्कृतिक समन्वय समितिक त्रैमासिक पत्रिका

अंक 26, अप्रैल 2011 सँ जून 2011

प्रकाशक : **विनय कुमार झा**

मिथिला सांस्कृतिक समन्वय समिति, गुवाहाटी

मुद्रक : **बालाजी प्रिंटर्स**

छत्रीबाड़ी, गुवाहाटी, असम

: संपादकीय एवं पत्राचारक पता :

Premkant Choudhary

Flat no. 2, C-Block-B, Punya Enclave

RG Barua Road (Behind Sinha Lounge)

Ganeshguri, Guwahati-781006

(M) 094353-42658, 098540-50707

E-mail : purvottarmaithil@gmail.com

msssghy2000@gmail.com

Bank A/C No.

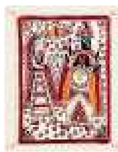
Mithila Sanskritik Samanway Samiti

SBI A/C No. : 31539261052

एहि अंक मे



सिरमा मे जोगा कें राखबयोग्य



मिथिला, मैथिल ओ मैथिलीक सर्वाङ्गीण अभ्युथानक लेल समर्पित 'पूर्वोत्तर मैथिल'क टटका (जुलाई-सितम्बर 2010) अङ्क स्वनामधन्य डॉ. भीमनाथ झाक सौजन्य सँ देखबाक, पढ़बाक ओ गुणबाक सौभाग्य प्राप्त कऽ अभिभूत छी। ई पत्रिका अपन शैशव के लाँघि किशोरावस्था मे प्रवेश करैत एतबा सिद्ध कऽ देलक अछि जे मैथिली पत्रकारिताक बहुविध उद्यानक कोनो 'सिजनल फ्लावर' नहि, अपितु बौद्धिक ऊर्जा सँ संपृक्त रचनात्मक चेतनाक सुवास सँ नव किंवा पुरान रचनाधर्मीक साहित्यिक ओजस्विता कैँ प्रतिपल समृद्ध करैत सिरमा मे जोगा कैँ राखबयोग्य आध्यात्मिक पुष्प'क श्रेणी मे आबि गेल अछि। माँ शारदा सँ सतत प्रार्थना करैत छिथैन्हि जे 'पूर्वोत्तर मैथिल'क सुरभि सँ मिथिलाञ्चले नहि, आर्यावर्त्तक प्रत्येक क्षेत्र सुरभित होइत रहओ।

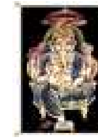
'प्रतिबिम्ब' मे पंचानन मिश्र, सुशीला झा, डॉ. नारायण झा, धीरेन्द्र प्रेमर्षि ओ गजेन्द्र ठाकुर क रचना कोनो सचेत पाठक कैँ उद्वेलित करबाक पूर्ण क्षमता सँ युक्त अछि।'अनसोहांत' मे प्रेमकान्त चौधरीक स्पष्टवादिता निर्विवादरूपे हिनक निष्पक्ष चिन्तन ओ 'बेबाक' टिप्पणीक ईर्ष्य क्षमताक देबाक लेल पर्याप्त बुझना जाइछ। 'कविता' मे स्वनामधन्य पुण्यश्लोक वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री', राजकमल चौधरी ओ मंत्रेश्वर झाक रचना कैँ समाहित कऽ अपने ई सिद्ध कऽ देल अछि जे 'पूर्वोत्तर मैथिल' अपना 'क्वॉलिटी'क संग कथमपि 'कम्प्रोमाइज' नहि कऽ सकैछ। डॉ. शेफालिका वर्मा क 'प्रतिवादक स्वर' आधुनिक कथाकार कैँ नव दिशा प्रदान करबा मे तत्पर अछि। संघ लोक सेवा आयोगक मैथिलीक पाठ्यक्रम, मिथिलाक्षर ओ सौन्दर्य-विन्यास निश्चित रूपैँ स्मरणीय।

मैथिलीक पूर्व, मध्य ओ समकालीन पत्र-पत्रिका जेकाँ 'अल्पायु' नहि भऽ, पूर्ण 'दीर्घायु' ओ 'स्वस्थ' रहि उत्तरोत्तर विकासोन्मुख होइत रहओ ई पूर्वोत्तर मैथिल-इएह मङ्गलकामना।

असीम स्नेह ओ अनन्त शुभकामनाक सङ्ग,

– डॉ. मित्रनाथ झा
मिथिला शोध संस्थान, कबड़ाघाट,
दरभंगा- 846004

खूब नीक लागत



'पूर्वोत्तर मैथिल' पढ़लौंह। खूब नीक लागल। माता मिथिलाक सेवा में अहां सभ जुटल छी, एहि बातक लेल साधुवाद दैत छी।

मैथिली भाषी सभ प्रवास में रहिक अपन मूल के नहिं बिसरैत छथि। मैथिलीक जतेक नीक आ स्तरीय पत्रिका निकलैत अछि, सब मिथिला सं बाहर आन-आन ठाम सं प्रकाशित होइत अछि। एहन उदाहरण आन कोनो भाखा में नहिं देखि सकैत छी। एहि सं बुझाइत अछि जे मैथिल संस्कृति मे कतेक शक्ति अछि। पत्रिका निरंतर आगू बढ़तै रहए, यैह हमर मंगलकामना छीक।

– आनंद महतो
पटना

'पूर्वोत्तर मैथिल'क ई अंक अहांके केहन लागल, अपन विचार, सुझाव लिखिकए वा इमेल purvottarmaithil@gmail.com पर पठाऊ। पता अछि :

Editor :
Purvottar Maithil
Flat No. 2, C-Block-B
Punya Enclave, RG Barua Road
(Behind Sinha Lounge)
Ganeshguri, Guwahati-781006
(M) 094353-42658, 098540-50707

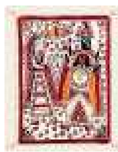
निवेदन

- गैर-मैथिल मित्र सभ के उपहार मे मधुबनी पेंटिंग देबाक अभ्यास करी।
- अपन गाम मे कोनो रचनात्मक कार्य सं जुड़ल रही।
- वर्ष मे एक बेर अपन गाम अवश्य आबी।
- पूर्वोत्तर मैथिल अपने Site पर देखू www.purvottarmaithil.com

पूर्वोत्तर मैथिलक अगिला अंकक लेल रचना आमंत्रित अछि।



सिरमा मे जोगा केंं राखबयोग्य



मिथिला, मैथिल ओ मैथिलीक सर्वाङ्गीण अभ्युथानक लेल समर्पित 'पूर्वोत्तर मैथिल'क टटका (जुलाई-सितम्बर 2010) अङ्क स्वनामधन्य डॉ. भीमनाथ झाक सौजन्य सँ देखबाक, पढ़बाक ओ गुणबाक सौभाग्य प्राप्त कऽ अभिभूत छी। ई पत्रिका अपन शैशव के लाँघि किशोरावस्था मे प्रवेश करैत एतबा सिद्ध कऽ देलक अछि जे मैथिली पत्रकारिताक बहुविध उद्यानक कोनो 'सिजनल फ्लावर' नहि, अपितु बौद्धिक ऊर्जा सँ संपृक्त रचनात्मक चेतनाक सुवास सँ नव किंवा पुरान रचनाधर्मीक साहित्यिक ओजस्विता कँ प्रतिपल समृद्ध करैत सिरमा मे जोगा कँ राखबयोग्य आध्यात्मिक पुष्प'क श्रेणी मे आबि गेल अछि। माँ शारदा सँ सतत प्रार्थना करैत छिथैन्हि जे 'पूर्वोत्तर मैथिल'क सुरभि सँ मिथिलाञ्चले नहि, आर्यावर्त्तक प्रत्येक क्षेत्र सुरभित होइत रहओ।

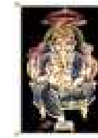
'प्रतिबिम्ब' मे पंचानन मिश्र, सुशीला झा, डॉ. नारायण झा, धीरेन्द्र प्रेमर्षि ओ गजेन्द्र ठाकुर क रचना कोनो सचेत पाठक कँ उद्वेलित करबाक पूर्ण क्षमता सँ युक्त अछि। 'अनसोहांत' मे प्रेमकान्त चौधरीक स्पष्टवादिता निर्विवादरूपे हिनक निष्पक्ष चिन्तन ओ 'बेबाक' टिप्पणीक ईर्ष्य क्षमताक देबाक लेल पर्याप्त बुझना जाइछ। 'कविता' मे स्वनामधन्य पुण्यश्लोक वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री', राजकमल चौधरी ओ मंत्रेश्वर झाक रचना कँ समाहित कऽ अपने ई सिद्ध कऽ देल अछि जे 'पूर्वोत्तर मैथिल' अपना 'क्वॉलिटी'क संग कथमपि 'कम्प्रोमाइज' नहि कऽ सकैछ। डॉ. शेफालिका वर्मा क 'प्रतिवादक स्वर' आधुनिक कथाकार कँ नव दिशा प्रदान करबा मे तत्पर अछि। संघ लोक सेवा आयोगक मैथिलीक पाठ्यक्रम, मिथिलाक्षर ओ सौन्दर्य-विन्यास निश्चित रूपेँ स्मरणीय।

मैथिलीक पूर्व, मध्य ओ समकालीन पत्र-पत्रिका जेकाँ 'अल्पायु' नहि भऽ, पूर्ण 'दीर्घायु' ओ 'स्वस्थ' रहि उत्तरोत्तर विकासोन्मुख होइत रहओ ई पूर्वोत्तर मैथिल-इएह मङ्गलकामना।

असीम स्नेह ओ अनन्त शुभकामनाक सङ्ग,

- डॉ. मित्रनाथ झा
मिथिला शोध संस्थान, कबड़ाघाट,
दरभंगा- 846004

खूब नीक लागत



'पूर्वोत्तर मैथिल' पढ़लौंह। खूब नीक लागल। माता मिथिलाक सेवा में अहां सभ जुटल छी, एहि बातक लेल साधुवाद दैत छी।

मैथिली भाषी सभ प्रवास में रहिक अपन मूल के नहिं बिसरैत छथि। मैथिलीक जतेक नीक आ स्तरीय पत्रिका निकलैत अछि, सब मिथिला सं बाहर आन-आन ठाम सं प्रकाशित होइत अछि। एहन उदाहरण आन कोनो भाखा में नहिं देखि सकैत छी। एहि सं बुझाइत अछि जे मैथिल संस्कृति मे कतेक शक्ति अछि। पत्रिका निरंतर आगू बढ़तै रहए, यैह हमर मंगलकामना छीक।

- आनंद महतो
पटना

'पूर्वोत्तर मैथिल'क ई अंक अहांके केहन लागल, अपन विचार, सुझाव लिखिकए वा इमेल purvottarmaithil@gmail.com पर पठाऊ। पता अछि :

Editor :
Purvottar Maithil
Flat No. 2, C-Block-B
Punya Enclave, RG Barua Road
(Behind Sinha Lounge)
Ganeshguri, Guwahati-781006
(M) 094353-42658, 098540-50707

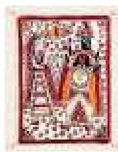
निवेदन

- गैर-मैथिल मित्र सभ के उपहार मे मधुबनी पेंटिंग देबाक अभ्यास करी।
- अपन गाम मे कोनो रचनात्मक कार्य सं जुड़ल रही।
- वर्ष मे एक बेर अपन गाम अवश्य आबी।
- पूर्वोत्तर मैथिल अपने Site पर देखू www.purvottarmaithil.com

पूर्वोत्तर मैथिलक अगिला अंकक लेल रचना आमंत्रित अछि।



सिरमा मे जोगा कें राखबयोग्य



मिथिला, मैथिल ओ मैथिलीक सर्वाङ्गीण अभ्युथानक लेल समर्पित 'पूर्वोत्तर मैथिल'क टटका (जुलाई-सितम्बर 2010) अङ्क स्वनामधन्य डॉ. भीमनाथ झाक सौजन्य सँ देखबाक, पढ़बाक ओ गुणबाक सौभाग्य प्राप्त कऽ अभिभूत छी। ई पत्रिका अपन शैशव के लाँघि किशोरावस्था मे प्रवेश करैत एतबा सिद्ध कऽ देलक अछि जे मैथिली पत्रकारिताक बहुविध उद्यानक कोनो 'सिजनल फ्लावर' नहि, अपितु बौद्धिक ऊर्जा सँ संपृक्त रचनात्मक चेतनाक सुवास सँ नव किंवा पुरान रचनाधर्मीक साहित्यिक ओजस्विता कँ प्रतिपल समृद्ध करैत सिरमा मे जोगा कँ राखबयोग्य आध्यात्मिक पुष्प'क श्रेणी मे आबि गेल अछि। माँ शारदा सँ सतत प्रार्थना करैत छिथैन्हि जे 'पूर्वोत्तर मैथिल'क सुरभि सँ मिथिलाञ्चले नहि, आर्यावर्त्तक प्रत्येक क्षेत्र सुरभित होइत रहओ।

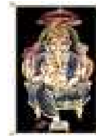
'प्रतिबिम्ब' मे पंचानन मिश्र, सुशीला झा, डॉ. नारायण झा, धीरेन्द्र प्रेमर्षि ओ गजेन्द्र ठाकुर क रचना कोनो सचेत पाठक कँ उद्वेलित करबाक पूर्ण क्षमता सँ युक्त अछि। 'अनसोहांत' मे प्रेमकान्त चौधरीक स्पष्टवादिता निर्विवादरूपे हिनक निष्पक्ष चिन्तन ओ 'बेबाक' टिप्पणीक ईर्ष्य क्षमताक देबाक लेल पर्याप्त बुझना जाइछ। 'कविता' मे स्वनामधन्य पुण्यश्लोक वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री', राजकमल चौधरी ओ मंत्रेश्वर झाक रचना कँ समाहित कऽ अपने ई सिद्ध कऽ देल अछि जे 'पूर्वोत्तर मैथिल' अपना 'क्वॉलिटी'क संग कथमपि 'कम्प्रोमाइज' नहि कऽ सकैछ। डॉ. शेफालिका वर्मा क 'प्रतिवादक स्वर' आधुनिक कथाकार कँ नव दिशा प्रदान करबा मे तत्पर अछि। संघ लोक सेवा आयोगक मैथिलीक पाठ्यक्रम, मिथिलाक्षर ओ सौन्दर्य-विन्यास निश्चित रूपेँ स्मरणीय।

मैथिलीक पूर्व, मध्य ओ समकालीन पत्र-पत्रिका जेकाँ 'अल्पायु' नहि भऽ, पूर्ण 'दीर्घायु' ओ 'स्वस्थ' रहि उत्तरोत्तर विकासोन्मुख होइत रहओ ई पूर्वोत्तर मैथिल-इएह मङ्गलकामना।

असीम स्नेह ओ अनन्त शुभकामनाक सङ्ग,

– *डॉ. मित्रनाथ झा*
मिथिला शोध संस्थान, कबड़ाघाट,
दरभंगा- 846004

खूब नीक लागत



'पूर्वोत्तर मैथिल' पढ़लौंह। खूब नीक लागल। माता मिथिलाक सेवा में अहां सभ जुटल छी, एहि बातक लेल साधुवाद दैत छी।

मैथिली भाषी सभ प्रवास में रहिक अपन मूल के नहिं बिसरैत छथि। मैथिलीक जतेक नीक आ स्तरीय पत्रिका निकलैत अछि, सब मिथिला सं बाहर आन-आन ठाम सं प्रकाशित होइत अछि। एहन उदाहरण आन कोनो भाखा में नहिं देखि सकैत छी। एहि सं बुझाइत अछि जे मैथिल संस्कृति मे कतेक शक्ति अछि। पत्रिका निरंतर आगू बढ़तै रहए, यैह हमर मंगलकामना छीक।

– आनंद महतो
पटना

'पूर्वोत्तर मैथिल'क ई अंक अहांके केहन लागल, अपन विचार, सुझाव लिखिकए वा इमेल purvottarmaithil@gmail.com पर पठाऊ। पता अछि :

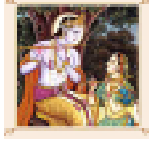
Editor :
Purvottar Maithil
Flat No. 2, C-Block-B
Punya Enclave, RG Barua Road
(Behind Sinha Lounge)
Ganeshguri, Guwahati-781006
(M) 094353-42658, 098540-50707

निवेदन

- गैर-मैथिल मित्र सभ के उपहार मे मधुबनी पेंटिंग देबाक अभ्यास करी।
- अपन गाम मे कोनो रचनात्मक कार्य सं जुड़ल रही।
- वर्ष मे एक बेर अपन गाम अवश्य आबी।
- पूर्वोत्तर मैथिल अपने Site पर देखू www.purvottarmaithil.com

पूर्वोत्तर मैथिलक अगिला अंकक लेल रचना आमंत्रित अछि।

अतीतक उत्सव नहि, वर्तमानक व्याधिक उपचार आवश्यक



मिथिलाक अतीत गौरव शाली छल। मिथिलामे ज्ञान आ धनक भरमार छल। एक सं एक प्रतापी राजा भेलाह। एक सं एक बढ़िक' बुद्धिजीवी, विद्वान, कवि, विभूति सब भेलाह। एहि बात सं कियो असहमत नहि भ' सकैत अछि। आई मिथिलाक दशा की अछि? जेना कोनो भूखंड भीषण युद्ध सं उजड़ि जाइत अछि, लोकसभ पलायन करैत अछि, विकासक पहिया ठप भ' जाइत अछि- तहिना मिथिलाक अवस्था अछि। मिथिलाके ई दशा कोनो भीषण युद्धक प्रभाव सं नहि भेल अछि। स्वतंत्रताक बाद एहि क्षेत्र के अपन हाल पर छोड़ि देल गेल। एतए सामंतवादक प्रभाव ओहिना बनल रहल। जे जनप्रतिनिधि बनलाह से कहियो जनसाधारण सं मतलब नहि रखलैथ। उपेक्षाक दंश सं पीड़ित ई क्षेत्र पिछड़ैत चल गेल। एकर दशा कोनो असाध्य व्याधि सं ग्रस्त मनुष्य सनके भ गेल अछि। एहन अवस्था मे अतीतक गुणगान करैत रहला सं मिथिला व्याधिमुक्त नहि भ' सकैत अछि। किछु एहन बिंदु अछि जाहि पर व्यापक चेतना आ आत्ममंथन आवश्यक अछि।

मिथिला सं अनवरत पलायन भ' रहल अछि। पलायन मनुष्यके भावनात्मक रूप सं क्षति पहुंचबैत अछि। जाहि सं मैथिल समुदायक अस्तित्व संकट मे बुझाइत अछि। पलायन के रोकै के लेल हम सब की विकल्प चुनि सकैत छी। एहि पर विचार केनाई आवश्यक अछि।

मिथिलामे जतेक कुरीति आ कुसंस्कार प्रचलित अछि ओतेक भारत वर्ष मे आन ठाम नहि देखल जा सकैत अछि। जन्म सं मृत्यु तक ततेक अनुष्ठान आ आडंबर प्रचलित अछि, ओहि सभ पर पुनर्विचार अत्यंत आवश्यक अछि।

दहेज संकट मिथिलामे घटैके स्थान पर बढ़ले जा रहल अछि। कन्याक विवाह केनाई आब मैथिल लोकके लेल कठिन संघर्षक काज बनि गेलहन। दहेजक विरुद्ध मानसिकताक निर्माण केना भ' सकैत अछि। एहि बात पर विचार आवश्यक अछि।

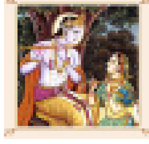
मैथिली भाषा के भले संविधान में मान्यता भेट गेल मुदा मैथिल अपन भाषा सं दूर भ' रहल छैथ। मैथिलक धीया-पूता हिन्दी बाजि रहल अछि। नहि कोनो प्रतिनिधि मैथिली दैनिक पत्र अछि। नहि भाषा-संस्कृति के प्रति कोनो तरहक चेतना अछि। बिखरल प्रयास सभ सं आ विद्यापति पर्व मनेला सं मैथिलीक रक्षा नहि होयत। एहि के लेल विज्ञान सम्मत रूप सं काज करए पड़त।

मैथिल अखनहु सामंतवादक अन्हार सं बाहर नहि आयल हन। सामंतवादी मानसिकताक त्याग आवश्यक अछि। तहिना जाति भेदक संकीर्णता सं बहरेनाई आवश्यक अछि।

मिथिलामे चाही रोजगारक अवसर, स्त्री के शिक्षा आ समान अधिकार। सड़क-पानि-बिजली, विज्ञान सम्मत खेती। एहिके लेल प्रबल जनमत चाही। जनांदोलन चाही। तथा कथित ठेकेदारक सभ ई काज नहि करताह। सभ मैथिल के विचार करए पड़त कि वर्तमानक व्याधिक उपचार केना होयत।

– **दिनकर कुमार,** मो. 9435103755

अतीतक उत्सव नहि, वर्तमानक व्याधिक उपचार आवश्यक



मिथिलाक अतीत गौरव शाली छल। मिथिलामे ज्ञान आ धनक भरमार छल। एक सं एक प्रतापी राजा भेलाह। एक सं एक बढ़िक' बुद्धिजीवी, विद्वान, कवि, विभूति सब भेलाह। एहि बात सं कियो असहमत नहि भ' सकैत अछि। आई मिथिलाक दशा की अछि? जेना कोनो भूखंड भीषण युद्ध सं उजड़ि जाइत अछि, लोकसभ पलायन करैत अछि, विकासक पहिया ठप भ' जाइत अछि– तहिना मिथिलाक अवस्था अछि। मिथिलाके ई दशा कोनो भीषण युद्धक प्रभाव सं नहि भेल अछि। स्वतंत्रताक बाद एहि क्षेत्र के अपन हाल पर छोड़ि देल गेल। एतए सामंतवादक प्रभाव ओहिना बनल रहल। जे जनप्रतिनिधि बनलाह से कहियो जनसाधारण सं मतलब नहि रखलैथ। उपेक्षाक दंश सं पीड़ित ई क्षेत्र पिछड़ैत चल गेल। एकर दशा कोनो असाध्य व्याधि सं ग्रस्त मनुष्य सनके भ गेल अछि। एहन अवस्था मे अतीतक गुणगान करैत रहला सं मिथिला व्याधिमुक्त नहि भ' सकैत अछि। किछु एहन बिंदु अछि जाहि पर व्यापक चेतना आ आत्ममंथन आवश्यक अछि।

×ñçÁÜè Öæáæ ·ð¤ ÖÜð âç´ßÏæÙ ×ð´ ×æ‹ØÌæ ÖðÅU »ðÜÐ ×éÎæ ×ñçÁÜ ¥ÂÙ Öæáæ âð ÎêÚU ÚUãð ÚUãÜ ÀñÍÐ ×ñçÁÜ·¤ ÏèØæ-ÂêÌæ çãU‹Îè ÕæçÁ ÚUãÜ ¥çÀÐ ÙçãU ·¤ôÙô ÂýçÌçÙçÏ ×ñçÁÜè ÎñçÙ·¤ Â˜æ ¥çÀÐ ÙçãU Öæáæ-â¢S·ë¤çÌ ·ð¤ ÂýçÌ ·¤ôÙô ÌÚUãU·¤ ¿ðÌÙæ ¥çÀÐ

मिथिला सं अनवरत पलायन भ' रहल अछि। पलायन मनुष्यके भावनात्मक रूप सं क्षति पहुंचबैत अछि। जाहि सं मैथिल समुदायक अस्तित्व संकट मे बुझाइत अछि। पलायन के रोकै के लेल हम सब की विकल्प चुनि सकैत छी। एहि पर विचार केनाई आवश्यक अछि।

मिथिलामे जतेक कुरीति आ कुसंस्कार प्रचलित अछि ओतेक भारत वर्ष मे आन ठाम नहि देखल जा सकैत अछि। जन्म सं मृत्यु तक ततेक अनुष्ठान आ आडंबर प्रचलित अछि, ओहि सभ पर पुनर्विचार अत्यंत आवश्यक अछि।

दहेज संकट मिथिलामे घटैके स्थान पर बढ़ले जा रहल अछि। कन्याक विवाह केनाई आब मैथिल लोकके लेल कठिन संघर्षक काज बनि गेलहन। दहेजक विरुद्ध मानसिकताक निर्माण केना भ' सकैत अछि। एहि बात पर विचार आवश्यक अछि।

मैथिली भाषा के भले संविधान में मान्यता भेट गेल मुदा मैथिल अपन भाषा सं दूर भ' रहल छैथ। मैथिलक धीया-पूता हिन्दी बाजि रहल अछि। नहि कोनो प्रतिनिधि मैथिली दैनिक पत्र अछि। नहि भाषा-संस्कृति के प्रति कोनो तरहक चेतना अछि। बिखरल प्रयास सभ सं आ विद्यापति पर्व मनेला सं मैथिलीक रक्षा नहि होयत। एहि के लेल विज्ञान सम्मत रूप सं काज करए पड़त।

मैथिल अखनहु सामंतवादक अन्हार सं बाहर नहि आयल हन। सामंतवादी मानसिकताक त्याग आवश्यक अछि। तहिना जाति भेदक संकीर्णता सं बहरेनाई आवश्यक अछि।

मिथिलामे चाही रोजगारक अवसर, स्त्री के शिक्षा आ समान अधिकार। सड़क-पानि-बिजली, विज्ञान सम्मत खेती। एहिके लेल प्रबल जनमत चाही। जनांदोलन चाही। तथा कथित ठेकेदारक सभ ई काज नहि करताह। सभ मैथिल के विचार करए पड़त कि वर्तमानक व्याधिक उपचार केना होयत।

– **दिनकर कुमार,** मो. 9435103755

अतीतक उत्सव नहि, वर्तमानक व्याधिक उपचार आवश्यक



मिथिलाक अतीत गौरव शाली छल। मिथिलामे ज्ञान आ धनक भरमार छल। एक सं एक प्रतापी राजा भेलाह। एक सं एक बढ़िक' बुद्धिजीवी, विद्वान, कवि, विभूति सब भेलाह। एहि बात सं कियो असहमत नहि भ' सकैत अछि। आई मिथिलाक दशा की अछि? जेना कोनो भूखंड भीषण युद्ध सं उजड़ि जाइत अछि, लोकसभ पलायन करैत अछि, विकासक पहिया ठप भ' जाइत अछि- तहिना मिथिलाक अवस्था अछि। मिथिलाके ई दशा कोनो भीषण युद्धक प्रभाव सं नहि भेल अछि। स्वतंत्रताक बाद एहि क्षेत्र के अपन हाल पर छोड़ि देल गेल। एतए सामंतवादक प्रभाव ओहिना बनल रहल। जे जनप्रतिनिधि बनलाह से कहियो जनसाधारण सं मतलब नहि रखलैथ। उपेक्षाक दंश सं पीड़ित ई क्षेत्र पिछड़ैत चल गेल। एकर दशा कोनो असाध्य व्याधि सं ग्रस्त मनुष्य सनके भ गेल अछि। एहन अवस्था मे अतीतक गुणगान करैत रहला सं मिथिला व्याधिमुक्त नहि भ' सकैत अछि। किछु एहन बिंदु अछि जाहि पर व्यापक चेतना आ आत्ममंथन आवश्यक अछि।

मिथिला सं अनवरत पलायन भ' रहल अछि। पलायन मनुष्यके भावनात्मक रूप सं क्षति पहुंचबैत अछि। जाहि सं मैथिल समुदायक अस्तित्व संकट मे बुझाइत अछि। पलायन के रोकै के लेल हम सब की विकल्प चुनि सकैत छी। एहि पर विचार केनाई आवश्यक अछि।

मिथिलामे जतेक कुरीति आ कुसंस्कार प्रचलित अछि ओतेक भारत वर्ष मे आन ठाम नहि देखल जा सकैत अछि। जन्म सं मृत्यु तक ततेक अनुष्ठान आ आडंबर प्रचलित अछि, ओहि सभ पर पुनर्विचार अत्यंत आवश्यक अछि।

दहेज संकट मिथिलामे घटैके स्थान पर बढ़ले जा रहल अछि। कन्याक विवाह केनाई आब मैथिल लोकके लेल कठिन संघर्षक काज बनि गेलहन। दहेजक विरुद्ध मानसिकताक निर्माण केना भ' सकैत अछि। एहि बात पर विचार आवश्यक अछि।

मैथिली भाषा के भले संविधान में मान्यता भेट गेल मुदा मैथिल अपन भाषा सं दूर भ' रहल छैथ। मैथिलक धीया-पूता हिन्दी बाजि रहल अछि। नहि कोनो प्रतिनिधि मैथिली दैनिक पत्र अछि। नहि भाषा-संस्कृति के प्रति कोनो तरहक चेतना अछि। बिखरल प्रयास सभ सं आ विद्यापति पर्व मनेला सं मैथिलीक रक्षा नहि होयत। एहि के लेल विज्ञान सम्मत रूप सं काज करए पड़त।

मैथिल अखनहु सामंतवादक अन्हार सं बाहर नहि आयल हन। सामंतवादी मानसिकताक त्याग आवश्यक अछि। तहिना जाति भेदक संकीर्णता सं बहरेनाई आवश्यक अछि।

मिथिलामे चाही रोजगारक अवसर, स्त्री के शिक्षा आ समान अधिकार। सड़क-पानि-बिजली, विज्ञान सम्मत खेती। एहिके लेल प्रबल जनमत चाही। जनांदोलन चाही। तथा कथित ठेकेदारक सभ ई काज नहि करताह। सभ मैथिल के विचार करए पड़त कि वर्तमानक व्याधिक उपचार केना होयत।

– **दिनकर कुमार,** मो. 9435103755

पूर्वोत्तर मैथिल अपनेक नगर मे उपलब्ध अछि :–

असम : l **गुवाहाटी :** अरुण कुमार झा, बामुनीमैदान, मो. : 94351-01766, कमलकांत झा, फटाशील आमबाड़ी, मो. : 9864176437, रविकुमार झा, फटाशील आमबाड़ी, मो. : 986417५६२८२ दिलीप कुमार झा, बेलतला, फोन : 94350-13450, श्री तिलकेश्वर झा तरूण नगर, फो. : 9954586540, संतोष कुमार झा फैन्सी बाजार, फो. : 98641-26176, विंदेश्वर मिश्र मालिगाँव पांडू फो. : 98542-87692 l **जोरहाट:** स्कंद कुमार मिश्र, दुर्गा भंडार, भगदोईमुख, ए.टी. रोड, जोरहाट, फो. : 94357-03453, l **खारुपेटिया :** पवन कुमार झा, बालचंद खुराना रोड, वार्ड नं. 1, खारुपेटिया, दरंग, फो.: 9435088346, डा. के.के. झा, दरंग कालेज, दरंग, फो. : 9435080059, श्री सतीशचन्द्र झा, डिस्ट्रीक्ट कौंसिल कालोनी, पो.-डिफू, कार्बीआंग्लांग, असम-782420, फो. : 9435366033, l **बंगाईगांव :** विनयकुमार झा, उत्तरायण मिशन रोड, नतुनपाड़ा, बंगाईगांव, l **बिहार: पटना**-श्री शरदिन्दू चौधरी, संपादक, समय साल, 2ए-39 इन्दपुरी, पटना -24, फो. : 09334102305, राजेश कुमार झा, मिथिला कालोनी, नशरीगंज, पो. बाटागंज, पटना-18, **मुजफ्फरपुर**- श्री विष्णुकान्त झा, 9470834202, श्री अजीत कुमार झा, फो.: 09472834926, l **मधुबनी :** श्री गया प्रसाद सिंह, फोन : 9431287158, भोगेन्द्र मिश्र, चित्रगुप्त नगर समिप नीलम सीनेमा, फो. : 09431654303. l **दरभंगा**-अग्रवाल न्यूज एजेंसी, स्टेशन रोड, आकांक्षा न्यूज एजेन्सी, मो. : 09031416196, श्री मणिकांत झा फो. : 9431451489, पंकज, मो.: 9507429158 l **जयनगर**-डॉ. कमलाकान्त झा, शहीद चौक, मो. 09934914944 l **सहरसा** - विनय कुमार चौधरी, कृष्ण कुटिर, पंचमढ़ी, फो. : 228190, डा.एल.एन. झा, फो. : 9431440145 , l **कटिहार**-ललन झा, रीडर्स कार्नर, होटल राजस्थान, फो. : 09437206661, श्री नारायण झा, कटिहार - 9431260030 **बेगूसराय :** प्रदीप बिहारी, चतुरंग भवन, 09431211543. l **भागलपुर**- डॉ. प्रेमशंकर सिंह, ऋचायन, राधारानी सिन्हा रोड, फो. : 2422666, l **समस्तीपुर :** डा. नरेश कुमार विकल, फो.: 094302-44114, l **मोतीहारी :** सुशील कुमार सुमन, मो.-09431022737, l **निर्मली :** उमेश मंडल, तुलसी भवन, निर्मली, वार्ड नं. 6, वाया दरभंगा फो. : 9931654742 **दलसिंहसराय** श्री गौरीनाथ प्रदीप विहारी भास्कर, फो. : 06243215228, डॉ.सत्यनारायण महतो, फो. : 9934258434, श्री गोपाल झा, किशनगंज - 9431885999

l **झारखंड :** डॉ. धनाकर ठाकुर, ई.-35, श्यामली, राँची-2, मो. : 9470193694, **बोकारो :** श्री अमीरी नाथ झा अमर, फो. : 249994, **जमशेदपुर**-डॉ रवीन्द्र कुमार चौधरी, फो. : 09334066298, डॉ. अशोक अविचल, फो. : 9006056324

l **प. बंगाल :** राजकुमार गिरी-रतनदीप अपार्टमेंट, ए-5, ब्लाक-बी, 17, बीटी रोड, कोलकाता-56, 9432303617, अशोक झा, 243, रविन्द्र शरणी, कोलकता-75, लक्ष्मण झा सागर, 3बी, तिस्ता अपार्टमेंट 94 एवेन्यु साउथ, संतोषपुर, कोलकता-7, फो. : 3334909576

l **छत्तीसगढ़ : रायपुर,** मनीश कुमार झा, फोन : 9425517092

l **दिल्ली :** श्री गजेन्द्र ठाकुर, फ्लैट नं. 389, सेक्टर-ए, बसंतकूंज, न्यू दिल्ली-70, फोन : 09911382078, श्री रंजीत कुमार झा, फो. : 09871-212341 , श्री कृपानन्द झा, फो. : 9868551104 , प्रेमकांत झा, सूर्य बिहार, निकट केसा कॉलोनी, नवावगंज, कानपुर-2, फोन : 99364-34557

l **हरियाणा :** श्री जे.एन. मंडल, हाऊस नं. 3074ए, सेक्टर-3, हाऊसिंगबोर्ड कालोनी, फरीदाबाद-121004 फो. : 09312399739, श्री भीमसिंह मैथिल, फरीदाबाद 9050479190,

l **राजस्थान :** जयपुर - श्री नन्दन मोहन, फो. : 9660013301, श्री अशोक ठाकुर, जेडीए, जयपुर, मो. : 9414076234

l **महाराष्ट्र :** श्री मानेश्वर मनुज, रेलवे क्वार्टर नं. 39/9, रेलवे कालोनी, दहीसर ईस्ट, मुंबई-68, फोन : 7498126102
श्री अर्जुन मंडल, पुणे - 9423527219

l **आन्ध्रप्रदेश :** श्री दयानाथ झा, हैदराबाद - 9949157553, श्री ज्योति प्रकाश लाल, हैदराबाद - 9885909451

l **गोवा :**श्री उमेश कुमार कर्ण, फो. : 9423835001

l **नेपाल :** श्री रामरिझन यादव विराटनगर फो. : 00977 - 9852830679, डॉ. रामावतार यादव , काठमाण्डू 01. 4421844 021.523191

पूर्वोत्तर मैथिल अपनेक नगर मे उपलब्ध अछि :-

असम : l **गुवाहाटी** : अरुण कुमार झा, बामुनीमैदान, मो. : 94351-01766, कमलकांत झा, फटाशील आमबाड़ी, मो. : 9864176437, रविकुमार झा, फटाशील आमबाड़ी, मो. : 986417५६२८२ दिलीप कुमार झा, बेलतला, फोन : 94350-13450, श्री तिलकेश्वर झा तरूण नगर, फो. : 9954586540, संतोष कुमार झा फैन्सी बाजार, फो. : 98641-26176, विंदेश्वर मिश्र मालिगाँव पांडू फो. : 98542-87692 l **जोरहाट:** स्कंद कुमार मिश्र, दुर्गा भंडार, भगदोईमुख, ए.टी. रोड, जोरहाट, फो. : 94357-03453, l **खारुपेटिया** : पवन कुमार झा, बालचंद खुराना रोड, वार्ड नं. 1, खारुपेटिया, दरंग, फो.: 9435088346, डा. के.के. झा, दरंग कालेज, दरंग, फो. : 9435080059, श्री सतीशचन्द्र झा, डिस्ट्रीक्ट कौंसिल कालोनी, पो.-डिफू, कार्बीआंग्लांग, असम-782420, फो. : 9435366033, l **बंगाईगांव** : विनयकुमार झा, उत्तरायण मिशन रोड, नतुनपाड़ा, बंगाईगांव, l **बिहार: पटना**-श्री शरदिन्दू चौधरी, संपादक, समय साल, 2ए-39 इन्दपुरी, पटना -24, फो. : 09334102305, राजेश कुमार झा, मिथिला कालोनी, नशरीगंज, पो. बाटागंज, पटना-18, **मुजफ्फरपुर**- श्री विष्णुकान्त झा, 9470834202, श्री अजीत कुमार झा, फो.: 09472834926, l **मधुबनी** : श्री गया प्रसाद सिंह, फोन : 9431287158, भोगेन्द्र मिश्र, चित्रगुप्त नगर समिप नीलम सीनेमा, फो. : 09431654303. l **दरभंगा**-अग्रवाल न्यूज एजेंसी, स्टेशन रोड, आकांक्षा न्यूज एजेन्सी, मो. : 09031416196, श्री मणिकांत झा फो. : 9431451489, पंकज, मो.: 9507429158 l **जयनगर**-डॉ. कमलाकान्त झा, शहीद चौक, मो. 09934914944 l **सहरसा** - विनय कुमार चौधरी, कृष्ण कुटिर, पंचमढ़ी, फो. : 228190, डा.एल.एन. झा, फो. : 9431440145 , l **कटिहार**-ललन झा, रीडर्स कार्नर, होटल राजस्थान, फो. : 09437206661, श्री नारायण झा, कटिहार - 9431260030 **बेगूसराय** : प्रदीप बिहारी, चतुरंग भवन, 09431211543. l **भागलपुर**- डॉ. प्रेमशंकर सिंह, ऋचायन, राधारानी सिन्हा रोड, फो. : 2422666, l **समस्तीपुर** : डा. नरेश कुमार विकल, फो.: 094302-44114, l **मोतीहारी** : सुशील कुमार सुमन, मो.-09431022737, l **निर्मली** : उमेश मंडल, तुलसी भवन, निर्मली, वार्ड नं. 6, वाया दरभंगा फो. : 9931654742 **दलसिंहसराय** श्री गौरीनाथ प्रदीप विहारी भास्कर, फो. : 06243215228, डॉ.सत्यनारायण महतो, फो. : 9934258434, श्री गोपाल झा, किशनगंज - 9431885999

l **झारखंड** : डॉ. धनाकर ठाकुर, ई.-35, श्यामली, राँची-2, मो. : 9470193694, **बोकारो** : श्री अमीरी नाथ झा अमर, फो. : 249994, **जमशेदपुर**-डॉ रवीन्द्र कुमार चौधरी, फो. : 09334066298, डॉ. अशोक अविचल, फो. : 9006056324

l **प. बंगाल** : राजकुमार गिरी-रतनदीप अपार्टमेंट, ए-5, ब्लाक-बी, 17, बीटी रोड, कोलकाता-56, 9432303617, अशोक झा, 243, रविन्द्र शरणी, कोलकता-75, लक्ष्मण झा सागर, 3बी, तिस्ता अपार्टमेंट 94 एवेन्यु साउथ, संतोषपुर, कोलकता-7, फो. : 3334909576

l **छत्तीसगढ़ : रायपुर,** मनीश कुमार झा, फोन : 9425517092

l **दिल्ली** : श्री गजेन्द्र ठाकुर, फ्लैट नं. 389, सेक्टर-ए, बसंतकूंज, न्यू दिल्ली-70, फोन : 09911382078, श्री रंजीत कुमार झा, फो. : 09871-212341 , श्री कृपानन्द झा, फो. : 9868551104 , प्रेमकांत झा, सूर्य बिहार, निकट केसा कॉलोनी, नवावगंज, कानपुर-2, फोन : 99364-34557

l **हरियाणा** : श्री जे.एन. मंडल, हाऊस नं. 3074ए, सेक्टर-3, हाऊसिंगबोर्ड कालोनी, फरीदाबाद-121004 फो. : 09312399739, श्री भीमसिंह मैथिल, फरीदाबाद 9050479190,

l **राजस्थान** : जयपुर - श्री नन्दन मोहन, फो. : 9660013301, श्री अशोक ठाकुर, जेडीए, जयपुर, मो. : 9414076234

l **महाराष्ट्र** : श्री मानेश्वर मनुज, रेलवे क्वार्टर नं. 39/9, रेलवे कालोनी, दहीसर ईस्ट, मुंबई-68, फोन : 7498126102
श्री अर्जुन मंडल, पुणे - 9423527219

l **आन्ध्रप्रदेश** : श्री दयानाथ झा, हैदराबाद - 9949157553, श्री ज्योति प्रकाश लाल, हैदराबाद - 9885909451

l **गोवा** :श्री उमेश कुमार कर्ण, फो. : 9423835001

l **नेपाल** : श्री रामरिझन यादव विराटनगर फो. : 00977 - 9852830679, डॉ. रामावतार यादव , काठमाण्डू 01. 4421844 021.523191

पूर्वोत्तर मैथिल अपनेक नगर मे उपलब्ध अछि :-

असम : l **गुवाहाटी :** अरुण कुमार झा, बामुनीमैदान, मो. : 94351-01766, कमलकांत झा, फटाशील आमबाड़ी, मो. : 9864176437, रविकुमार झा, फटाशील आमबाड़ी, मो. : 986417५६२८२ दिलीप कुमार झा, बेलतला, फोन : 94350-13450, श्री तिलकेश्वर झा तरूण नगर, फो. : 9954586540, संतोष कुमार झा फैन्सी बाजार, फो. : 98641-26176, विंदेश्वर मिश्र मालिगाँव पांडू फो. : 98542-87692 l **जोरहाट:** स्कंद कुमार मिश्र, दुर्गा भंडार, भगदोईमुख, ए.टी. रोड, जोरहाट, फो. : 94357-03453, l **खारुपेटिया :** पवन कुमार झा, बालचंद खुराना रोड, वार्ड नं. 1, खारुपेटिया, दरंग, फो.: 9435088346, डा. के.के. झा, दरंग कालेज, दरंग, फो. : 9435080059, श्री सतीशचन्द्र झा, डिस्ट्रीक्ट कौंसिल कालोनी, पो.-डिफू, कार्बीआंग्लांग, असम-782420, फो. : 9435366033, l **बंगाईगांव :** विनयकुमार झा, उत्तरायण मिशन रोड, नतुनपाड़ा, बंगाईगांव, l **बिहार: पटना**-श्री शरदिन्दू चौधरी, संपादक, समय साल, 2ए-39 इन्दपुरी, पटना -24, फो. : 09334102305, राजेश कुमार झा, मिथिला कालोनी, नशरीगंज, पो. बाटागंज, पटना-18, **मुजफ्फरपुर**- श्री विष्णुकान्त झा, 9470834202, श्री अजीत कुमार झा, फो.: 09472834926, l **मधुबनी :** श्री गया प्रसाद सिंह, फोन : 9431287158, भोगेन्द्र मिश्र, चित्रगुप्त नगर समिप नीलम सीनेमा, फो. : 09431654303. l **दरभंगा**-अग्रवाल न्यूज एजेंसी, स्टेशन रोड, आकांक्षा न्यूज एजेन्सी, मो. : 09031416196, श्री मणिकांत झा फो. : 9431451489, पंकज, मो.: 9507429158 l **जयनगर**-डॉ. कमलाकान्त झा, शहीद चौक, मो. 09934914944 l **सहरसा** - विनय कुमार चौधरी, कृष्ण कुटिर, पंचमढ़ी, फो. : 228190, डा.एल.एन. झा, फो. : 9431440145 , l **कटिहार**-ललन झा, रीडर्स कार्नर, होटल राजस्थान, फो. : 09437206661, श्री नारायण झा, कटिहार - 9431260030 **बेगूसराय :** प्रदीप बिहारी, चतुरंग भवन, 09431211543. l **भागलपुर**- डॉ. प्रेमशंकर सिंह, ऋचायन, राधारानी सिन्हा रोड, फो. : 2422666, l **समस्तीपुर :** डा. नरेश कुमार विकल, फो.: 094302-44114, l **मोतीहारी :** सुशील कुमार सुमन, मो.-09431022737, l **निर्मली :** उमेश मंडल, तुलसी भवन, निर्मली, वार्ड नं. 6, वाया दरभंगा फो. : 9931654742 **दलसिंहसराय** श्री गौरीनाथ प्रदीप विहारी भास्कर, फो. : 06243215228, डॉ.सत्यनारायण महतो, फो. : 9934258434, श्री गोपाल झा, किशनगंज - 9431885999

l **झारखंड :** डॉ. धनाकर ठाकुर, ई.-35, श्यामली, राँची-2, मो. : 9470193694, **बोकारो :** श्री अमीरी नाथ झा अमर, फो. : 249994, **जमशेदपुर**-डॉ रवीन्द्र कुमार चौधरी, फो. : 09334066298, डॉ. अशोक अविचल, फो. : 9006056324

l **प. बंगाल :** राजकुमार गिरी-रतनदीप अपार्टमेंट, ए-5, ब्लाक-बी, 17, बीटी रोड, कोलकाता-56, 9432303617, अशोक झा, 243, रविन्द्र शरणी, कोलकता-75, लक्ष्मण झा सागर, 3बी, तिस्ता अपार्टमेंट 94 एवेन्यु साउथ, संतोषपुर, कोलकता-7, फो. : 3334909576

l **छत्तीसगढ़ : रायपुर,** मनीश कुमार झा, फोन : 9425517092

l **दिल्ली :** श्री गजेन्द्र ठाकुर, फ्लैट नं. 389, सेक्टर-ए, बसंतकूंज, न्यू दिल्ली-70, फोन : 09911382078, श्री रंजीत कुमार झा, फो. : 09871-212341 , श्री कृपानन्द झा, फो. : 9868551104 , प्रेमकांत झा, सूर्य बिहार, निकट केसा कॉलोनी, नवावगंज, कानपुर-2, फोन : 99364-34557

l **हरियाणा :** श्री जे.एन. मंडल, हाऊस नं. 3074ए, सेक्टर-3, हाऊसिंगबोर्ड कालोनी, फरीदाबाद-121004 फो. : 09312399739, श्री भीमसिंह मैथिल, फरीदाबाद 9050479190,

l **राजस्थान :** जयपुर - श्री नन्दन मोहन, फो. : 9660013301, श्री अशोक ठाकुर, जेडीए, जयपुर, मो. : 9414076234

l **महाराष्ट्र :** श्री मानेश्वर मनुज, रेलवे क्वार्टर नं. 39/9, रेलवे कालोनी, दहीसर ईस्ट, मुंबई-68, फोन : 7498126102
श्री अर्जुन मंडल, पुणे - 9423527219

l **आन्ध्रप्रदेश :** श्री दयानाथ झा, हैदराबाद - 9949157553, श्री ज्योति प्रकाश लाल, हैदराबाद - 9885909451

l **गोवा :**श्री उमेश कुमार कर्ण, फो. : 9423835001

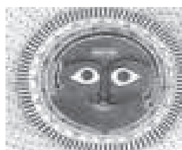
l **नेपाल :** श्री रामरिझन यादव विराटनगर फो. : 00977 - 9852830679, डॉ. रामावतार यादव , काठमाण्डू 01. 4421844 021.523191



समसामयिक

सौ बरखक बिहार

ललित कुमार झा



बिहार'क इतिहास जँ बिहारक भूभागक इतिहास मानल जाय तऽ इएह कथन होयत जे जतेक प्राचीन मानव सभ्यता ततवे प्राचीन बिहारक इतिहास। महाभारत काल में अंग प्रदेश जकर राजा छलाह दानवीर कर्ण, ओकर भागलपुरक आसपासक क्षेत्र छल। जरासंध एवं राजा विराटक राज्य एहि भूभाग में अवस्थित झल। ताहू सऽ बहुत पहिने रामायण काल में मिथिला राज्य सर्वविदित अछि जे बिहारक मिथिलांचल क्षेत्र (किछु भाग वर्तमान नेपाल देश में) छल। मिथिलाक इतिहासक आख्यान ताइ सऽपहिने सतयुग काल सऽ भेंटेत अछि। वर्तमान समय के मुजफ्फरपुर, सीतामढ़ी, समस्तीपुर, मधुबनी, दरभंगा, सहरसा आदि जिला मिथिलांक भूभाग रहल छल। सीताजीक जन्म स्थान सीतामढ़ी शहर के सटले पुनौरा मानल जाइत अछि। रामायणक रचयिता महर्षि वाल्मिकी बिहारक वाल्मिकी नगर में बास करैत छलाह।

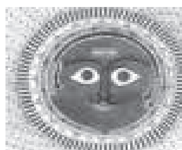
भगवान राम जखन महर्षि विश्वामित्र संग अयोध्या सऽ जनकपुरक यात्रा में रहथि,



समसामयिक

सौ बरखक बिहार

ललित कुमार झा



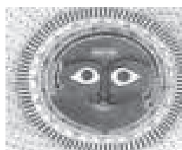
बिहार'क इतिहास जँ बिहारक भूभागक इतिहास मानल जाय तऽ इएह कथन होयत जे जतेक प्राचीन मानव सभ्यता ततवे प्राचीन बिहारक इतिहास। महाभारत काल में अंग प्रदेश जकर राजा छलाह दानवीर कर्ण, ओकर भागलपुरक आसपासक क्षेत्र छल। जरासंध एवं राजा विराटक राज्य एहि भूभाग में अवस्थित झल। ताहू सऽ बहुत पहिने रामायण काल में मिथिला राज्य सर्वविदित अछि जे बिहारक मिथिलांचल क्षेत्र (किछु भाग वर्तमान नेपाल देश में) छल। मिथिलाक इतिहासक आख्यान ताइ सऽपहिने सतयुग काल सऽ भेंटेत अछि। वर्तमान समय के मुजफ्फरपुर, सीतामढ़ी, समस्तीपुर, मधुबनी, दरभंगा, सहरसा आदि जिला मिथिलांक भूभाग रहल छल। सीताजीक जन्म स्थान सीतामढ़ी शहर के सटले पुनौरा मानल जाइत अछि। रामायणक रचयिता महर्षि वाल्मिकी बिहारक वाल्मिकी नगर में बास करैत छलाह।

भगवान राम जखन महर्षि विश्वामित्र संग अयोध्या सऽ जनकपुरक यात्रा में रहथि,



सौ बरखक बिहार

ललित कुमार झा



बिहार'क इतिहास जँ बिहारक भूभागक इतिहास मानल जाय तऽ इएह कथन होयत जे जतेक प्राचीन मानव सभ्यता ततवे प्राचीन बिहारक इतिहास। महाभारत काल में अंग प्रदेश जकर राजा छलाह दानवीर कर्ण, ओकर भागलपुरक आसपासक क्षेत्र छल। जरासंध एवं राजा विराटक राज्य एहि भूभाग में अवस्थित झल। ताहू सऽ बहुत पहिने रामायण काल में मिथिला राज्य सर्वविदित अछि जे बिहारक मिथिलांचल क्षेत्र (किछु भाग वर्तमान नेपाल देश में) छल। मिथिलाक इतिहासक आख्यान ताइ सऽपहिने सतयुग काल सऽ भेंटेत अछि। वर्तमान समय के मुजफ्फरपुर, सीतामढ़ी, समस्तीपुर, मधुबनी, दरभंगा, सहरसा आदि जिला मिथिलांक भूभाग रहल छल। सीताजीक जन्म स्थान सीतामढ़ी शहर के सटले पुनौरा मानल जाइत अछि। रामायणक रचयिता महर्षि वाल्मिकी बिहारक वाल्मिकी नगर में बास करैत छलाह।

भगवान राम जखन महर्षि विश्वामित्र संग अयोध्या सऽ जनकपुरक यात्रा में रहथि,

अहिल्या उद्धारक स्थान-अहिल्यास्थान, गौतमकुण्ड आओर बहुत रास ठांव हुनक यात्राक साक्षी उत्तरी बिहार में प्रमाणिक ढंग सऽ विद्यमान अछि।

राजकुमार सिद्धार्थ बोधगया में ज्ञान प्राप्ति पश्चात गौतम बुद्ध बनी गेलाह। जैनधर्मक प्रवर्तक भगवान महावीर बिहारक पावापुरी में जन्म आओर निर्वाण ग्रहण केने रहथि।

सिख धर्मक दसम गुरु गुरु गोविन्द सिंहक जन्म स्थान एवं संत कबीरक निर्वाण भूमि सेहो बिहारे थिक।

चाणक्य, जे कौटिल्य नाम सऽ सेहो विख्यात छथि एवं अर्थशास्त्रक रचयिताक जन्मकर्म भूमि बिहारे छल।

सातम-आठम शताब्दी इसापूर्व मगध आओर लिछवी साम्राज्य अपन चरम उत्कर्ष पर छल। एहन मान्यता अछि जे लिछवी में संसारक प्रथम प्रजातंत्र शासन व्यवस्था शुरु भेल। जखन सिकन्दर महान विश्व विजयक अभियान पर निकलल रहथि तखन ओ बिहारक मगध साम्राज्य छल जे ओकरा शंत कए सकल। सम्राट अशोक जिनकर राजधानी पाटलीपुत्र (पटना) रहनि। हुनकर साम्राज्यक गाथा की कहल जाय अखनो, भारत सरकारक सिल एवं राष्ट्रीय ध्वज में प्रत्युक्त चक्र सम्राट अशोकक उपस्थिति दर्ज करा रहल अछि। राजकुमार महेन्द्र आओर राजकुमारी संघमित्रा के अपन दूत बना संसारक विभिन्न क्षेत्र में बौद्ध धर्मक प्रचार-प्रसार करौलनि जकरे कारण आऽ विश्वक बहुत रास देश में बौद्ध धर्म प्रचलित अछि।

जखन संसार में शिक्षा अपन शैशव काल में छल तखन बिहार में क्रमशः विक्रमशिला और नालन्दा विश्वविद्यालय छल। ताहि सऽ अन्दाज लगायल जा सकैछ जे बिहारक इतिहास कतेक गरिमापूर्ण रहल अछि।

लगभग सातम-आठम शताब्दी में गुप्त वंशक साम्राज्यक पतन के पश्चात बिहारक गरिमा तेयन छीन्न होम लागल। तथापि बीच-बीच में जेना बिहारक शेरशाह मुगल शासन के पराजित कए थोड़ेक समय वास्ते दिल्लीक गद्दी पर विराजमान। भए शासन व्यवस्थाक स्वर्णिम अध्याय लिखलनि। बिहारक



गौरवपूर्ण अतीत आओर साक्ष्य संगति वर्तमानक जीवन पद्धति बिहार के दर्शनीय बना देने अछि। एकरा संक्षिप्त रूपे दर्शन करेबाक प्रयास कए रहल छी।

बिहार दर्शन

दोहा :

कण-कण में इतिहास समेटल, गुञ्जित अछि पुरातात्विक नाद।

समस्त बिहार अति मनोहर गीत ''ललित'' करैछ संवाद॥

पाटलीपुत्र अशोकक देखू, मगध सन नहि कोनो साम्राज्य।

अर्थशास्त्र, राजनीति, उपदेष्टा, बसथि एतहि महान चाणक्य॥

लिछवी जनपद गणतंत्र प्रणाली, प्राचीनतम संसारक।

ई सुन्दर भूमि बिहारक, ई सुन्दर भूमि बिहारक॥

बोधगया आयल सिद्धार्थ, गेल गया सऽ बुद्ध महान।

ज्ञानपूंज तेहन पौलनि, इजोत भेल सगर जहान॥

वैशाली बला भगवान महावीर प्रवर्तक जैन विचारक।

ई सुन्दर भूमि बिहारक, ई-सुन्दर भूमि बिहारक॥

जहि पुण्य भूमि सऽ सीता माता प्रकट भेलीह ओकर जगत में।

''मैथिली'' अइयो भाषा बनि कऽ, विद्यमान मैथिल रगत में॥

ज्ञान-भक्ति संगमक भूमि कथा उगना अवतारक।

ई सुन्दर भूमि विचारक, ई सुन्दर भूमि बिहारक॥

जन्मभूमि गुरु गोविन्द सिंहक, संत कबीरक निर्वाण भेल॥

जतए विश्वविद्यालय, विक्रमशिला, नालन्दाक गरिमा छल॥

फेर ओहने विश्वविद्यालयक गरिमा विचार अछि सरकारक।

ई सुन्दर भूमि बिहारक, ई सुन्दर भूमि बिहारक॥

रेशम नगरी भागलपुरक कर्ण अंगक, दानवीर।

विश्व प्रसिद्ध सोनपुर मेला, धर्मक नगरी राजगीर॥

अतिथि देवो भवः के भूमि, आ सर्वधर्म समभावके।

ई सुन्दर भूमि बिहारक, ई सुन्दर भूमि बिहारक॥

आधुनिक इतिहास : अंग्रेज शासनक शुरुआत में बिहार, प्रेसीडेन्सी ऑफ बेंगालक अधीन शासित छल। तखन शासनक केन्द्र

अहिल्या उद्धारक स्थान–अहिल्यास्थान, गौतमकुण्ड आओर बहुत रास ठांव हुनक यात्राक साक्षी उत्तरी बिहार में प्रमाणिक ढंग सऽ विद्यमान अछि।

राजकुमार सिद्धार्थ बोधगया में ज्ञान प्राप्ति पश्चात गौतम बुद्ध बनी गेलाह। जैनधर्मक प्रवर्तक भगवान महावीर बिहारक पावापुरी में जन्म आओर निर्वाण ग्रहण केने रहथि।

सिख धर्मक दसम गुरु गुरु गोविन्द सिंहक जन्म स्थान एवं संत कबीरक निर्वाण भूमि सेहो बिहारे थिक।

चाणक्य, जे कौटिल्य नाम सऽ सेहो विख्यात छथि एवं अर्थशास्त्रक रचयिताक जन्मकर्म भूमि बिहारे छल।

सातम–आठम शताब्दी इसापूर्व मगध आओर लिछवी साम्राज्य अपन चरम उत्कर्ष पर छल। एहन मान्यता अछि जे लिछवी में संसारक प्रथम प्रजातंत्र शासन व्यवस्था शुरु भेल। जखन सिकन्दर महान विश्व विजयक अभियान पर निकलल रहथि तखन ओ बिहारक मगध साम्राज्य छल जे ओकरा शंत कए सकल। सम्राट अशोक जिनकर राजधानी पाटलीपुत्र (पटना) रहनि। हुनकर साम्राज्यक गाथा की कहल जाय अखनो, भारत सरकारक सिल एवं राष्ट्रीय ध्वज में प्रत्युक्त चक्र सम्राट अशोकक उपस्थिति दर्ज करा रहल अछि। राजकुमार महेन्द्र आओर राजकुमारी संघमित्रा के अपन दूत बना संसारक विभिन्न क्षेत्र में बौद्ध धर्मक प्रचार–प्रसार करौलनि जकरे कारण आऽ विश्वक बहुत रास देश में बौद्ध धर्म प्रचलित अछि।

जखन संसार में शिक्षा अपन शैशव काल में छल तखन बिहार में क्रमशः विक्रमशिला और नालन्दा विश्वविद्यालय छल। ताहि सऽ अन्दाज लगायल जा सकैछ जे बिहारक इतिहास कतेक गरिमापूर्ण रहल अछि।

लगभग सातम–आठम शताब्दी में गुप्त वंशक साम्राज्यक पतन के पश्चात बिहारक गरिमा तेयन छीन्न होम लागल। तथापि बीच–बीच में जेना बिहारक शेरशाह मुगल शासन के पराजित कए थोड़ेक समय वास्ते दिल्लीक गद्दी पर विराजमान। भए शासन व्यवस्थाक स्वर्णिम अध्याय लिखलनि। बिहारक



गौरवपूर्ण अतीत आओर साक्ष्य संगति वर्तमानक जीवन पद्धति बिहार के दर्शनीय बना देने अछि। एकरा संक्षिप्त रूपे दर्शन करेबाक प्रयास कए रहल छी।

बिहार दर्शन

दोहा :

कण–कण में इतिहास समेटल, गुञ्जित अछि पुरातात्विक नाद।

समस्त बिहार अति मनोहर गीत ''ललित'' करैछ संवाद॥

पाटलीपुत्र अशोकक देखू, मगध सन नहि कोनो साम्राज्य।

अर्थशास्त्र, राजनीति, उपदेष्टा, बसथि एतहि महान चाणक्य॥

लिछवी जनपद गणतंत्र प्रणाली, प्राचीनतम संसारक।

ई सुन्दर भूमि बिहारक, ई सुन्दर भूमि बिहारक॥

बोधगया आयल सिद्धार्थ, गेल गया सऽ बुद्ध महान।

ज्ञानपूंज तेहन पौलनि, इजोत भेल सगर जहान॥

वैशाली बला भगवान महावीर प्रवर्तक जैन विचारक।

ई सुन्दर भूमि बिहारक, ई–सुन्दर भूमि बिहारक॥

जहि पुण्य भूमि सऽ सीता माता प्रकट भेलीह ओकर जगत में।

''मैथिली'' अइयो भाषा बनि कऽ, विद्यमान मैथिल रगत में॥

ज्ञान–भक्ति संगमक भूमि कथा उगना अवतारक।

ई सुन्दर भूमि विचारक, ई सुन्दर भूमि बिहारक॥

जन्मभूमि गुरु गोविन्द सिंहक, संत कबीरक निर्वाण भेल॥

जतए विश्वविद्यालय, विक्रमशिला, नालन्दाक गरिमा छल॥

फेर ओहने विश्वविद्यालयक गरिमा विचार अछि सरकारक।

ई सुन्दर भूमि बिहारक, ई सुन्दर भूमि बिहारक॥

रेशम नगरी भागलपुरक कर्ण अंगक, दानवीर।

विश्व प्रसिद्ध सोनपुर मेला, धर्मक नगरी राजगीर॥

अतिथि देवो भवः के भूमि, आ सर्वधर्म समभावके।

ई सुन्दर भूमि बिहारक, ई सुन्दर भूमि बिहारक॥

आधुनिक इतिहास : अंग्रेज शासनक शुरुआत में बिहार, प्रेसीडेन्सी ऑफ बेंगालक अधीन शासित छल। तखन शासनक केन्द्र

अहिल्या उद्धारक स्थान-अहिल्यास्थान, गौतमकुण्ड आओर बहुत रास ठांव हुनक यात्राक साक्षी उत्तरी बिहार में प्रमाणिक ढंग सऽ विद्यमान अछि।

राजकुमार सिद्धार्थ बोधगया में ज्ञान प्राप्ति पश्चात गौतम बुद्ध बनी गेलाह। जैनधर्मक प्रवर्तक भगवान महावीर बिहारक पावापुरी में जन्म आओर निर्वाण ग्रहण केने रहथि।

सिख धर्मक दसम गुरु गुरु गोविन्द सिंहक जन्म स्थान एवं संत कबीरक निर्वाण भूमि सेहो बिहारे थिक।

चाणक्य, जे कौटिल्य नाम सऽ सेहो विख्यात छथि एवं अर्थशास्त्रक रचयिताक जन्मकर्म भूमि बिहारे छल।

सातम-आठम शताब्दी इसापूर्व मगध आओर लिछवी साम्राज्य अपन चरम उत्कर्ष पर छल। एहन मान्यता अछि जे लिछवी में संसारक प्रथम प्रजातंत्र शासन व्यवस्था शुरु भेल। जखन सिकन्दर महान विश्व विजयक अभियान पर निकलल रहथि तखन ओ बिहारक मगध साम्राज्य छल जे ओकरा शंत कए सकल। सम्राट अशोक जिनकर राजधानी पाटलीपुत्र (पटना) रहनि। हुनकर साम्राज्यक गाथा की कहल जाय अखनो, भारत सरकारक सिल एवं राष्ट्रीय ध्वज में प्रत्युक्त चक्र सम्राट अशोकक उपस्थिति दर्ज करा रहल अछि। राजकुमार महेन्द्र आओर राजकुमारी संघमित्रा के अपन दूत बना संसारक विभिन्न क्षेत्र में बौद्ध धर्मक प्रचार-प्रसार करौलनि जकरे कारण आऽ विश्वक बहुत रास देश में बौद्ध धर्म प्रचलित अछि।

जखन संसार में शिक्षा अपन शैशव काल में छल तखन बिहार में क्रमशः विक्रमशिला और नालन्दा विश्वविद्यालय छल। ताहि सऽ अन्दाज लगायल जा सकैछ जे बिहारक इतिहास कतेक गरिमापूर्ण रहल अछि।

लगभग सातम-आठम शताब्दी में गुप्त वंशक साम्राज्यक पतन के पश्चात बिहारक गरिमा तेयन छीन्न होम लागल। तथापि बीच-बीच में जेना बिहारक शेरशाह मुगल शासन के पराजित कए थोड़ेक समय वास्ते दिल्लीक गद्दी पर विराजमान। भए शासन व्यवस्थाक स्वर्णिम अध्याय लिखलनि। बिहारक



गौरवपूर्ण अतीत आओर साक्ष्य संगति वर्तमानक जीवन पद्धति बिहार के दर्शनीय बना देने अछि। एकरा संक्षिप्त रूपे दर्शन करेबाक प्रयास कए रहल छी।

बिहार दर्शन

दोहा :

कण-कण में इतिहास समेटल, गुञ्जित अछि पुरातात्विक नाद।

समस्त बिहार अति मनोहर गीत ''ललित'' करैछ संवाद॥

पाटलीपुत्र अशोकक देखू, मगध सन नहि कोनो साम्राज्य।

अर्थशास्त्र, राजनीति, उपदेष्टा, बसथि एतहि महान चाणक्य॥

लिछवी जनपद गणतंत्र प्रणाली, प्राचीनतम संसारक।

ई सुन्दर भूमि बिहारक, ई सुन्दर भूमि बिहारक॥

बोधगया आयल सिद्धार्थ, गेल गया सऽ बुद्ध महान।

ज्ञानपूंज तेहन पौलनि, इजोत भेल सगर जहान॥

वैशाली बला भगवान महावीर प्रवर्तक जैन विचारक।

ई सुन्दर भूमि बिहारक, ई-सुन्दर भूमि बिहारक॥

जहि पुण्य भूमि सऽ सीता माता प्रकट भेलीह ओकर जगत में।

''मैथिली'' अइयो भाषा बनि कऽ, विद्यमान मैथिल रगत में॥

ज्ञान-भक्ति संगमक भूमि कथा उगना अवतारक।

ई सुन्दर भूमि विचारक, ई सुन्दर भूमि बिहारक॥

जन्मभूमि गुरु गोविन्द सिंहक, संत कबीरक निर्वाण भेल॥

जतए विश्वविद्यालय, विक्रमशिला, नालन्दाक गरिमा छल॥

फेर ओहने विश्वविद्यालयक गरिमा विचार अछि सरकारक।

ई सुन्दर भूमि बिहारक, ई सुन्दर भूमि बिहारक॥

रेशम नगरी भागलपुरक कर्ण अंगक, दानवीर।

विश्व प्रसिद्ध सोनपुर मेला, धर्मक नगरी राजगीर॥

अतिथि देवो भवः के भूमि, आ सर्वधर्म समभावके।

ई सुन्दर भूमि बिहारक, ई सुन्दर भूमि बिहारक॥

आधुनिक इतिहास : अंग्रेज शासनक शुरुआत में बिहार, प्रेसीडेन्सी ऑफ बेंगालक अधीन शासित छल। तखन शासनक केन्द्र

कोलकाता होयबाक कारणे, कार्यालय, शिक्षाक केन्द्र मुख्य रूपे कोलकते सऽ संचालित होइत छल। जकर दुष्प्रभाव सऽ बिहारक अवनति होइत चल गेल। बिहारक सपूत डा. राजेन्द्र प्रसाद (जे भारतक प्रथम राष्ट्रपति से हो भेलाह) एवं अन्य नेताक प्रयास सऽ 1912 में बिहार नाम सऽ नव राज्यक गठन भेल। 1935 में पुन: राज्यक पुनर्गठन भेल जाहि में उड़ीसा राज्य के बिहार सऽ अलग कएल गेल। 1947 में स्वतंत्र भारत में बिहारक मानचित्र यथास्थिति राखल गेल पश्चिम बंगाल में साटि देल गेल। तकर बाद पुन: बिहार दू भाग में विभक्त कए देल गेल। आदिवासी बहुल क्षेत्र के अलग कए झारखण्ड नाम सऽ नव राज्यके गठन कएल गेल।

1912 में गठित ई वर्तमान बिहार आव लगभग सौ बरखक भए गेल। धार्मिक, ऐतिहासिक, श्रमशीलता, मेधाशक्ति आदि कारणे बिहारक संतान अपन सशक्त उपस्थित मात्र अपना देशेटा में नहि, संपूर्ण विश्व में प्रमाणित करौने छथि। एहि खुशी के व्यक्त करबाक सुन्दरतम ढंग गीत सऽ नीक की होयत।

बिहार गीत

ई सुन्दर भूमि बिहारक।

ई सुन्दर भूमि बिहारक॥

माँ गंगे मेरुदंड प्रवाहित नस-नस में नदी बहैछ।

ऋषि मुनि के तपोभूमि, ई गौरबक गाथा कहैछ।।

धर्मकर्म जनगण के मन में, धूम रहैछ तीहारक।

ई सुन्दर भूमि बिहारक, ई सुन्दर भूमि बिहारक।

जाति आओर धर्म अछि जतेक, एहि बगिया के सुन्दर फूल।

सादा जीवन उँच्च विचार, आडंबर नहि करै फिजूल॥

मेहनती आ ज्ञानवान सभ, जतन करथि रोजेगारक।

ई सुन्दर भूमि बिहारक, ई सुन्दर भूमि बिहारक॥

सुन्दर एतहुक वन, उपवन, आ सुन्दर भाषा भेष।

पर्यावरण हितैषी जीवन दर्शन, प्रकृति प्रेम विशेष॥

लीची, आम, अन्नक धरती, कमी नहिं आहारक।

ई सुन्दर भूमि बिहारक, ई सुन्दर भूमि बिहारक॥

आर्यभट्ट सन वैज्ञानिक, महाकवि कालिदास विद्यापति।

दर्शनशास्त्र, पुरान रचयिता, होइछ वीर सतहुक संतति॥

साहित्य, संस्कृति आओर कला, झलक गाँव जबारक।

ई सुन्दर भूमि बिहारक, ई सुन्दर भूमि बिहारक॥

अतीत विशेष ई विशेष राज्य केओ मानथि किनहिं मानथि। गौरब हासिल करथि अवस्से जखन बिहारी ठानथि॥

''ललित'' नमन एहि पुण्य भूमि के कृपा रहय भगवानक।

ई सुन्दर भूमि बिहारक, ई सुन्दर भूमि बिहारक॥

दोहा : *आर्यावर्ते भारतवर्षे, उत्तम राज्य बिहार।*
भूजपुरी-मैथिली, मगही, संग हिन्दी परिवार॥

स्वतंत्रता आन्दोलन में बिहारक भूमिका अग्रणी रहल अछि। वीर कुँवर सिंहक अंग्रेज शासनक विरुद्ध देल हुँकार अखनो धरि गुञ्जायमान अछि। बिहारक किसान राजकुमार शुक्लक विशेष आग्रह पर गाँधी जी 1917 में चंपारण आएल रहथि। जकर बादे गाँधी जी भारतीय राजनीतिक असमान पर जयमगाए लगालाह। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, जयप्रकाश नारायण, आदि स्वतंत्रता आंदोलनक मुख्य पाया रहेथि। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारतक संविधान निर्माण में राजेन्द्र बाबू के अतुलनीय योगदान छन्हि।

जयप्रकाश नारायण जी के स्वतंत्रता आन्दोलनक अलावा स्वतंत्र भारत में जखन स्व. श्रीमती इंदिरा गाँधी आपातकाल घोषित कए देने छलीह लोकतंत्र व्यवस्था पर खतरा आवि गेल छल। तानाशाहीक बिजारोपण भए रहल छल। याद करु प्राय: ओही अबधि में संसारक बहुत रास देश में तानाशाहक बिजारोपण भेल छल। जकरा ओ देश सभ अखन धरि ढोयबाक अभिशप्त अछि। किछु देश में अखन जनाक्रोशक दबाव में लोहि अबधि में बनल तानाशाह सभ हटाओल जा रहल अछि। कहबाक अभिप्राय ई जे श्री जय प्रकाश नारायण के नेतृत्व में ओहि तरहक महत्वाकांक्षा के जन्मकालहि में एहन ने मर्दन कएल गेल जे, पुन: भारत में तानाशाही मानसिकता बला व्यक्ति नहि भेलाह आ नञि भविष्य में होयत। जनता जनार्दन सर्वोच्च छथि, ई धारणा, सभ सत्ताधारीलोक के अन्तरारगा में बैस गेलनि। एहि तरहे बिहार बहुत तरहें देश के विकास सुरक्षा एकता, आदि काज में अग्रणी भूमिका में रहल अछि। राष्ट्रभाषा केर विकास में बिहारक रामधारी सिंह दिनकर, रामवृक्ष बेनीपुरी, देवकी नन्दन खत्री, फनीश्वर नाथ रेणु, नागार्जुन आदि बहुत रास लोकक योगदान अछि। पौराणिक काल सऽ एहि भूभागक लोक साहित्य, कला प्रेमी रहलाह अछि। साहित्य संस्कृति, फिल्म के विकास में भिखारी ठाकुरक योगदान अविस्मरणीय अछि। एहि सौ साल में बिहार की हेरौलक की पौलक एकर लेखा जोखा केनाइ आवश्यक तऽ अछिए, मुदा ताहू सऽ बेसी जरूरी ई बुझना जाइत अछि जे वर्तमान बिहारक दसा आओर दिशा की अछि। पलायन रोकबा वास्ते सरकारक की योजना थिक। एहन बहुत रास प्रश्नक समाधान में वर्तमान सरकार कतेक तत्पर अछि, ताहि दिज समस्त बिहारबासी खासकए प्रवासी बिहारीक विशेष नजरि अछि।

राज्य में विकासक पहिया चलि चुकल अछि। मुदा विकासक फैदां पक्षपातपूर्ण ढंग सऽ नहिं होइक तकर ध्यान राखब सरकार के वास्ते विशेष जरूरी। माननीय सर्वोच्च न्यायालयक एकटा विद्वान न्यायाधीश कहने रहथिन जे मात्र न्याय भेनाइ पर्याप्त नहि, संगे लोकके आभाष सेहो होयबाक चाही जे न्याय भए रहल अछि। तहिना राज्य के कोनो भाग किंवा लोक के ई मान नहिं होयबाक चाही जे लाभसऽ बंचित छथि। नहिं तऽ बिहारक लोक के घरेलूओ अस्तर पर बाँट-बखरा में विशेष रुचि रहैत छनि। जे वर्तमान बिहारक राज्य के अक्षुण्ण रखबाक अछि तऽ जन आकांक्षा के विशेष महत्व देनाइ आवश्यक।

संपर्क : *द्वारा प्रो. ए. पाठक*
जीएस कालोनी, फटाशिल, गुवाहाटी
मो. : 98640 65553

कोलकाता होयबाक कारणे, कार्यालय, शिक्षाक केन्द्र मुख्य रूपे कोलकते सऽ संचालित होइत छल। जकर दुष्प्रभाव सऽ बिहारक अवनति होइत चल गेल। बिहारक सपूत डा. राजेन्द्र प्रसाद (जे भारतक प्रथम राष्ट्रपति से हो भेलाह) एवं अन्य नेताक प्रयास सऽ 1912 में बिहार नाम सऽ नव राज्यक गठन भेल। 1935 में पुन: राज्यक पुनर्गठन भेल जाहि में उड़ीसा राज्य के बिहार सऽ अलग कएल गेल। 1947 में स्वतंत्र भारत में बिहारक मानचित्र यथास्थिति राखल गेल पश्चिम बंगाल में साटि देल गेल। तकर बाद पुन: बिहार दू भाग में विभक्त कए देल गेल। आदिवासी बहुल क्षेत्र के अलग कए झारखण्ड नाम सऽ नव राज्यके गठन कएल गेल।

1912 में गठित ई वर्तमान बिहार आव लगभग सौ बरखक भए गेल। धार्मिक, ऐतिहासिक, श्रमशीलता, मेधाशक्ति आदि कारणे बिहारक संतान अपन सशक्त उपस्थित मात्र अपना देशेटा में नहि, संपूर्ण विश्व में प्रमाणित करौने छथि। एहि खुशी के व्यक्त करबाक सुन्दरतम ढंग गीत सऽ नीक की होयत।

बिहार गीत

ई सुन्दर भूमि बिहारक।

ई सुन्दर भूमि बिहारक॥

माँ गंगे मेरुदंड प्रवाहित नस-नस में नदी बहैछ।

ऋषि मुनि के तपोभूमि, ई गौरबक गाथा कहैछ।।

धर्मकर्म जनगण के मन में, धूम रहैछ तीहारक।

ई सुन्दर भूमि बिहारक, ई सुन्दर भूमि बिहारक।

जाति आओर धर्म अछि जतेक, एहि बगिया के सुन्दर फूल।

सादा जीवन उँच्च विचार, आडंबर नहि करै फिजूल॥

मेहनती आ ज्ञानवान सभ, जतन करथि रोजेगारक।

ई सुन्दर भूमि बिहारक, ई सुन्दर भूमि बिहारक॥

सुन्दर एतहुक वन, उपवन, आ सुन्दर भाषा भेष।

पर्यावरण हितैषी जीवन दर्शन, प्रकृति प्रेम विशेष॥

लीची, आम, अन्नक धरती, कमी नहिं आहारक।

ई सुन्दर भूमि बिहारक, ई सुन्दर भूमि बिहारक॥

आर्यभट्ट सन वैज्ञानिक, महाकवि कालिदास विद्यापति।

दर्शनशास्त्र, पुरान रचयिता, होइछ वीर सतहुक संतति॥

साहित्य, संस्कृति आओर कला, झलक गाँव जबारक।

ई सुन्दर भूमि बिहारक, ई सुन्दर भूमि बिहारक॥

अतीत विशेष ई विशेष राज्य केओ मानथि किनहिं मानथि। गौरब हासिल करथि अवस्से जखन बिहारी ठानथि॥

''ललित'' नमन एहि पुण्य भूमि के कृपा रहय भगवानक।

ई सुन्दर भूमि बिहारक, ई सुन्दर भूमि बिहारक॥

दोहा : *आर्यावर्ते भारतवर्षे, उत्तम राज्य बिहार।*
भूजपुरी-मैथिली, मगही, संग हिन्दी परिवार॥

स्वतंत्रता आन्दोलन में बिहारक भूमिका अग्रणी रहल अछि। वीर कुँवर सिंहक अंग्रेज शासनक विरुद्ध देल हुँकार अखनो धरि गुञ्जायमान अछि। बिहारक किसान राजकुमार शुक्लक विशेष आग्रह पर गाँधी जी 1917 में चंपारण आएल रहथि। जकर बादे गाँधी जी भारतीय राजनीतिक असमान पर जयमगाए लगालाह। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, जयप्रकाश नारायण, आदि स्वतंत्रता आंदोलनक मुख्य पाया रहेथि। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारतक संविधान निर्माण में राजेन्द्र बाबू के अतुलनीय योगदान छन्हि।

जयप्रकाश नारायण जी के स्वतंत्रता आन्दोलनक अलावा स्वतंत्र भारत में जखन स्व. श्रीमती इंदिरा गाँधी आपातकाल घोषित कए देने छलीह लोकतंत्र व्यवस्था पर खतरा आवि गेल छल। तानाशाहीक बिजारोपण भए रहल छल। याद करु प्राय: ओही अबधि में संसारक बहुत रास देश में तानाशाहक बिजारोपण भेल छल। जकरा ओ देश सभ अखन धरि ढोयबाक अभिशप्त अछि। किछु देश में अखन जनाक्रोशक दबाव में लोहि अबधि में बनल तानाशाह सभ हटाओल जा रहल अछि। कहबाक अभिप्राय ई जे श्री जय प्रकाश नारायण के नेतृत्व में ओहि तरहक महत्वाकांक्षा के जन्मकालहि में एहन ने मर्दन कएल गेल जे, पुन: भारत में तानाशाही मानसिकता बला व्यक्ति नहि भेलाह आ नञि भविष्य में होयत। जनता जनार्दन सर्वोच्च छथि, ई धारणा, सभ सत्ताधारीलोक के अन्तरारगा में बैस गेलनि। एहि तरहे बिहार बहुत तरहें देश के विकास सुरक्षा एकता, आदि काज में अग्रणी भूमिका में रहल अछि। राष्ट्रभाषा केर विकास में बिहारक रामधारी सिंह दिनकर, रामवृक्ष बेनीपुरी, देवकी नन्दन खत्री, फनीश्वर नाथ रेणु, नागार्जुन आदि बहुत रास लोकक योगदान अछि। पौराणिक काल सऽ एहि भूभागक लोक साहित्य, कला प्रेमी रहलाह अछि। साहित्य संस्कृति, फिल्म के विकास में भिखारी ठाकुरक योगदान अविस्मरणीय अछि। एहि सौ साल में बिहार की हेरौलक की पौलक एकर लेखा जोखा केनाइ आवश्यक तऽ अछिए, मुदा ताहू सऽ बेसी जरूरी ई बुझना जाइत अछि जे वर्तमान बिहारक दसा आओर दिशा की अछि। पलायन रोकबा वास्ते सरकारक की योजना थिक। एहन बहुत रास प्रश्नक समाधान में वर्तमान सरकार कतेक तत्पर अछि, ताहि दिज समस्त बिहारबासी खासकए प्रवासी बिहारीक विशेष नजरि अछि।

राज्य में विकासक पहिया चलि चुकल अछि। मुदा विकासक फैदां पक्षपातपूर्ण ढंग सऽ नहिं होइक तकर ध्यान राखब सरकार के वास्ते विशेष जरूरी। माननीय सर्वोच्च न्यायालयक एकटा विद्वान न्यायाधीश कहने रहथिन जे मात्र न्याय भेनाइ पर्याप्त नहि, संगे लोकके आभाष सेहो होयबाक चाही जे न्याय भए रहल अछि। तहिना राज्य के कोनो भाग किंवा लोक के ई मान नहिं होयबाक चाही जे लाभसऽ बंचित छथि। नहिं तऽ बिहारक लोक के घरेलूओ अस्तर पर बाँट-बखरा में विशेष रुचि रहैत छनि। जे वर्तमान बिहारक राज्य के अक्षुण्ण रखबाक अछि तऽ जन आकांक्षा के विशेष महत्व देनाइ आवश्यक।

संपर्क : *द्वारा प्रो. ए. पाठक*
जीएस कालोनी, फटाशिल, गुवाहाटी
मो. : 98640 65553

कोलकाता होयबाक कारणे, कार्यालय, शिक्षाक केन्द्र मुख्य रूपे कोलकते सऽ संचालित होइत छल। जकर दुष्प्रभाव सऽ बिहारक अवनति होइत चल गेल। बिहारक सपूत डा. राजेन्द्र प्रसाद (जे भारतक प्रथम राष्ट्रपति से हो भेलाह) एवं अन्य नेताक प्रयास सऽ 1912 में बिहार नाम सऽ नव राज्यक गठन भेल। 1935 में पुन: राज्यक पुनर्गठन भेल जाहि में उड़ीसा राज्य के बिहार सऽ अलग कएल गेल। 1947 में स्वतंत्र भारत में बिहारक मानचित्र यथास्थिति राखल गेल पश्चिम बंगाल में साटि देल गेल। तकर बाद पुन: बिहार दू भाग में विभक्त कए देल गेल। आदिवासी बहुल क्षेत्र के अलग कए झारखण्ड नाम सऽ नव राज्यके गठन कएल गेल।

1912 में गठित ई वर्तमान बिहार आव लगभग सौ बरखक भए गेल। धार्मिक, ऐतिहासिक, श्रमशीलता, मेधाशक्ति आदि कारणे बिहारक संतान अपन सशक्त उपस्थित मात्र अपना देशेटा में नहि, संपूर्ण विश्व में प्रमाणित करौने छथि। एहि खुशी के व्यक्त करबाक सुन्दरतम ढंग गीत सऽ नीक की होयत।

बिहार गीत

ई सुन्दर भूमि बिहारक।

ई सुन्दर भूमि बिहारक॥

माँ गंगे मेरुदंड प्रवाहित नस-नस में नदी बहैछ।

ऋषि मुनि के तपोभूमि, ई गौरबक गाथा कहैछ।।

धर्मकर्म जनगण के मन में, धूम रहैछ तीहारक।

ई सुन्दर भूमि बिहारक, ई सुन्दर भूमि बिहारक।

जाति आओर धर्म अछि जतेक, एहि बगिया के सुन्दर फूल।

सादा जीवन उँच्च विचार, आडंबर नहि करै फिजूल॥

मेहनती आ ज्ञानवान सभ, जतन करथि रोजेगारक।

ई सुन्दर भूमि बिहारक, ई सुन्दर भूमि बिहारक॥

सुन्दर एतहुक वन, उपवन, आ सुन्दर भाषा भेष।

पर्यावरण हितैषी जीवन दर्शन, प्रकृति प्रेम विशेष॥

लीची, आम, अन्नक धरती, कमी नहिं आहारक।

ई सुन्दर भूमि बिहारक, ई सुन्दर भूमि बिहारक॥

आर्यभट्ट सन वैज्ञानिक, महाकवि कालिदास विद्यापति।

दर्शनशास्त्र, पुरान रचयिता, होइछ वीर सतहुक संतति॥

साहित्य, संस्कृति आओर कला, झलक गाँव जबारक।

ई सुन्दर भूमि बिहारक, ई सुन्दर भूमि बिहारक॥

अतीत विशेष ई विशेष राज्य केओ मानथि किनहिं मानथि। गौरब हासिल करथि अवस्से जखन बिहारी ठानथि॥

''ललित'' नमन एहि पुण्य भूमि के कृपा रहय भगवानक।

ई सुन्दर भूमि बिहारक, ई सुन्दर भूमि बिहारक॥

दोहा : *आर्यावर्ते भारतवर्षे, उत्तम राज्य बिहार।*

भूजपुरी-मैथिली, मगही, संग हिन्दी परिवार॥

स्वतंत्रता आन्दोलन में बिहारक भूमिका अग्रणी रहल अछि। वीर कुँवर सिंहक अंग्रेज शासनक विरुद्ध देल हुँकार अखनो धरि गुञ्जायमान अछि। बिहारक किसान राजकुमार शुक्लक विशेष आग्रह पर गाँधी जी 1917 में चंपारण आएल रहथि। जकर बादे गाँधी जी भारतीय राजनीतिक असमान पर जयमगाए लगालाह। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, जयप्रकाश नारायण, आदि स्वतंत्रता आंदोलनक मुख्य पाया रहेथि। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारतक संविधान निर्माण में राजेन्द्र बाबू के अतुलनीय योगदान छन्हि।

जयप्रकाश नारायण जी के स्वतंत्रता आन्दोलनक अलावा स्वतंत्र भारत में जखन स्व. श्रीमती इंदिरा गाँधी आपातकाल घोषित कए देने छलीह लोकतंत्र व्यवस्था पर खतरा आवि गेल छल। तानाशाहीक बिजारोपण भए रहल छल। याद करु प्राय: ओही अबधि में संसारक बहुत रास देश में तानाशाहक बिजारोपण भेल छल। जकरा ओ देश सभ अखन धरि ढोयबाक अभिशप्त अछि। किछु देश में अखन जनाक्रोशक दबाव में लोहि अबधि में बनल तानाशाह सभ हटाओल जा रहल अछि। कहबाक अभिप्राय ई जे श्री जय प्रकाश नारायण के नेतृत्व में ओहि तरहक महत्वाकांक्षा के जन्मकालहि में एहन ने मर्दन कएल गेल जे, पुन: भारत में तानाशाही मानसिकता बला व्यक्ति नहि भेलाह आ नञि भविष्य में होयत। जनता जनार्दन सर्वोच्च छथि, ई धारणा, सभ सत्ताधारीलोक के अन्तरारगा में बैस गेलनि। एहि तरहे बिहार बहुत तरहें देश के विकास सुरक्षा एकता, आदि काज में अग्रणी भूमिका में रहल अछि। राष्ट्रभाषा केर विकास में बिहारक रामधारी सिंह दिनकर, रामवृक्ष बेनीपुरी, देवकी नन्दन खत्री, फनीश्वर नाथ रेणु, नागार्जुन आदि बहुत रास लोकक योगदान अछि। पौराणिक काल सऽ एहि भूभागक लोक साहित्य, कला प्रेमी रहलाह अछि। साहित्य संस्कृति, फिल्म के विकास में भिखारी ठाकुरक योगदान अविस्मरणीय अछि। एहि सौ साल में बिहार की हेरौलक की पौलक एकर लेखा जोखा केनाइ आवश्यक तऽ अछिए, मुदा ताहू सऽ बेसी जरूरी ई बुझना जाइत अछि जे वर्तमान बिहारक दसा आओर दिशा की अछि। पलायन रोकबा वास्ते सरकारक की योजना थिक। एहन बहुत रास प्रश्नक समाधान में वर्तमान सरकार कतेक तत्पर अछि, ताहि दिज समस्त बिहारबासी खासकए प्रवासी बिहारीक विशेष नजरि अछि।

राज्य में विकासक पहिया चलि चुकल अछि। मुदा विकासक फैदां पक्षपातपूर्ण ढंग सऽ नहिं होइक तकर ध्यान राखब सरकार के वास्ते विशेष जरूरी। माननीय सर्वोच्च न्यायालयक एकटा विद्वान न्यायाधीश कहने रहथिन जे मात्र न्याय भेनाइ पर्याप्त नहि, संगे लोकके आभाष सेहो होयबाक चाही जे न्याय भए रहल अछि। तहिना राज्य के कोनो भाग किंवा लोक के ई मान नहिं होयबाक चाही जे लाभसऽ बंचित छथि। नहिं तऽ बिहारक लोक के घरेलूओ अस्तर पर बाँट-बखरा में विशेष रुचि रहैत छनि। जे वर्तमान बिहारक राज्य के अक्षुण्ण रखबाक अछि तऽ जन आकांक्षा के विशेष महत्व देनाइ आवश्यक।

संपर्क : *द्वारा प्रो. ए. पाठक*

जीएस कालोनी, फटाशिल, गुवाहाटी

मो. : 98640 65553



पर्व

प्रेमक उत्सव वैशाख बिहू



असममे वसंत ऋतुक आरंभ चैत मासक प्रथम दिन सं होति अछि आ वैशाख मासक सातम दिन तक चलैत अछि। लोकगीतक माध्यम सं एतुका जनमानस आनंदानुभूति प्रकट करैत अछि।

असममे वसंत ऋतुक गीतनाद में बिहू गीतक महत्त्व सभसं बेशी अछि। वसंत कालक प्रकृतिक आनंद आओर उल्लासक परिवेश देखि कए लोक पुलकित भ' जाइत अछि। चैतक संक्रांति सं असम में वैशाख बिहू मनायल जाइत अछि एकरा 'रंगाली बिहू' कहल जाइत छै। एहि पर्वक अवसर पर उल्लासक संग बिहू गीत गायल जाइत अछि। एहि गीत सभक प्रमुख भाव-प्रेम छी। एहिये उद्दाम यौवनक उन्मादित भावक प्रकाश होति अछि। 'बोहाग बिहू' अथवा वैशाख बिहू के उर्वरता अथवा प्रजननक उत्सव सेहो मानल जाइत अछि। बरखा भेला सं पृथ्वी बनैत अछि शस्य संभवा। प्रकृतिगत वास्तविकताक आधार पर मैदान में युवक-युवती गणक नृत्य गीत एहि प्रतीक के व्यक्त करैत अछि।

बिहू पर्वक मूल संबंध कृषि सं मानल जाइत अछि। कृषि, वनस्पति, गाछ-बिरिछके बिना बिहू गीतक परिवेश सजीव नहिं भ' सकैत अछि।

बिहू गीतक वाद्य यंत्र सभक नाम भेल- ढोल, गगना, पेंपा, शिंगा, बांसुरी, मंजीरा आदि।

बिहू गीत मे शृंगार रसक प्रधानता होइत अछि। वसंत ऋतु में लोक अपन मनक भावके उन्मुक्त भ' क' व्यक्त करैत अछि। लोकसभक विचार रहैत अछि जखन प्रकृतिमें चारु दिश आनंद व्याप्त रहैत अछि तखन मनुष्य आनंद विहीन केना रहि सकैत अछि।

प्रस्तुत अछि किछु बिहूगीतक उदाहरण :

ढोले बाय ढूलिया खोले बाय खुलिया
कार घरर नाचनी नाचे
उसर चापि चापि नाहिबा नासनी
आमार गात मोहिनी आसे
बूकू बहल करि, ककाल चिया करि
तोमार मान सुवनी नाइ
तोमार एइ ककालही अतिकेई लाही
खोजत हाली जाली जाइ।

(पूर्वोत्तर मैथिल डेस्क)



पर्व

प्रेमक उत्सव वैशाख बिहू



असममे वसंत ऋतुक आरंभ चैत मासक प्रथम दिन सं होति अछि आ वैशाख मासक सातम दिन तक चलैत अछि। लोकगीतक माध्यम सं एतुका जनमानस आनंदानुभूति प्रकट करैत अछि।

असममे वसंत ऋतुक गीतनाद में बिहू गीतक महत्त्व सभसं बेशी अछि। वसंत कालक प्रकृतिक आनंद आओर उल्लासक परिवेश देखि कए लोक पुलकित भ' जाइत अछि। चैतक संक्रांति सं असम में वैशाख बिहू मनायल जाइत अछि एकरा 'रंगाली बिहू' कहल जाइत छै। एहि पर्वक अवसर पर उल्लासक संग बिहू गीत गायल जाइत अछि। एहि गीत सभक प्रमुख भाव-प्रेम छी। एहिये उद्दाम यौवनक उन्मादित भावक प्रकाश होति अछि। 'बोहाग बिहू' अथवा वैशाख बिहू के उर्वरता अथवा प्रजननक उत्सव सेहो मानल जाइत अछि। बरखा भेला सं पृथ्वी बनैत अछि शस्य संभवा। प्रकृतिगत वास्तविकताक आधार पर मैदान में युवक-युवती गणक नृत्य गीत एहि प्रतीक के व्यक्त करैत अछि।

बिहू पर्वक मूल संबंध कृषि सं मानल जाइत अछि। कृषि, वनस्पति, गाछ-बिरिछके बिना बिहू गीतक परिवेश सजीव नहिं भ' सकैत अछि।

बिहू गीतक वाद्य यंत्र सभक नाम भेल- ढोल, गगना, पेंपा, शिंगा, बांसुरी, मंजीरा आदि।

बिहू गीत मे शृंगार रसक प्रधानता होइत अछि। वसंत ऋतु में लोक अपन मनक भावके उन्मुक्त भ' क' व्यक्त करैत अछि। लोकसभक विचार रहैत अछि जखन प्रकृतिमें चारु दिश आनंद व्याप्त रहैत अछि तखन मनुष्य आनंद विहीन केना रहि सकैत अछि।

प्रस्तुत अछि किछु बिहूगीतक उदाहरण :

ढोले बाय ढूलिया खोले बाय खुलिया
कार घरर नाचनी नाचे
उसर चापि चापि नाहिबा नासनी
आमार गात मोहिनी आसे
बूकू बहल करि, ककाल चिया करि
तोमार मान सुवनी नाइ
तोमार एइ ककालही अतिकेई लाही
खोजत हाली जाली जाइ।

(पूर्वोत्तर मैथिल डेस्क)



पर्व

प्रेमक उत्सव वैशाख बिहू



असममे वसंत ऋतुक आरंभ चैत मासक प्रथम दिन सं होति अछि आ वैशाख मासक सातम दिन तक चलैत अछि। लोकगीतक माध्यम सं एतुका जनमानस आनंदानुभूति प्रकट करैत अछि।

असममे वसंत ऋतुक गीतनाद में बिहू गीतक महत्त्व सभसं बेशी अछि। वसंत कालक प्रकृतिक आनंद आओर उल्लासक परिवेश देखि कए लोक पुलकित भ' जाइत अछि। चैतक संक्रांति सं असम में वैशाख बिहू मनायल जाइत अछि एकरा 'रंगाली बिहू' कहल जाइत छै। एहि पर्वक अवसर पर उल्लासक संग बिहू गीत गायल जाइत अछि। एहि गीत सभक प्रमुख भाव-प्रेम छी। एहिये उद्दाम यौवनक उन्मादित भावक प्रकाश होति अछि। 'बोहाग बिहू' अथवा वैशाख बिहू के उर्वरता अथवा प्रजननक उत्सव सेहो मानल जाइत अछि। बरखा भेला सं पृथ्वी बनैत अछि शस्य संभवा। प्रकृतिगत वास्तविकताक आधार पर मैदान में युवक-युवती गणक नृत्य गीत एहि प्रतीक के व्यक्त करैत अछि।

बिहू पर्वक मूल संबंध कृषि सं मानल जाइत अछि। कृषि, वनस्पति, गाछ-बिरिछके बिना बिहू गीतक परिवेश सजीव नहिं भ' सकैत अछि।

बिहू गीतक वाद्य यंत्र सभक नाम भेल-ढोल, गगना, पेंपा, शिंगा, बांसुरी, मंजीरा आदि।

बिहू गीत मे शृंगार रसक प्रधानता होइत अछि। वसंत ऋतु में लोक अपन मनक भावके उन्मुक्त भ' क' व्यक्त करैत अछि। लोकसभक विचार रहैत अछि जखन प्रकृतिमें चारु दिश आनंद व्याप्त रहैत अछि तखन मनुष्य आनंद विहीन केना रहि सकैत अछि।

प्रस्तुत अछि किछु बिहूगीतक उदाहरण :

ढोले बाय ढूलिया खोले बाय खुलिया
कार घरर नाचनी नाचे
उसर चापि चापि नाहिबा नासनी
आमार गात मोहिनी आसे
बूकू बहल करि, ककाल चिया करि
तोमार मान सुवनी नाइ
तोमार एइ ककालही अतिकेई लाही
खोजत हाली जाली जाइ।

(पूर्वोत्तर मैथिल डेस्क)



समसामयिक

मिथिलामे पर्यटनक असीम सम्भावना

डॉ. श्रवण कुमार चौधरी (उपाचार्य)



अति प्राचीन कालसँ मिथिला आर्य सभ्यताक प्रधान केंद्र रहल अछि। राजा जनक, हुनक गुरु आचार्य महर्षि गौतम, याज्ञवल्क्यक यश समस्त आर्यावर्त्तमे विद्यमान छल। शुक्ल यजुर्वेदक प्रवर्तक याज्ञवल्क्क ब्रह्मज्ञान सम्बन्धी ज्ञानक विवेचन शतपथ ब्राह्मणमे एवं वृहदारण्यकोपनिषदमे वर्णित अछि। तैत्तिरीय ब्राह्मणमे मैत्रेयीक ब्रह्मज्ञानक चर्चा अछि।

न्यायशास्त्रक आविष्कर्त्ता मिथिलेमे भेल छथि। मिथिलेसँ न्यायक धारा बंगालक नदिया जिला धरि पहुँचल। आर्यावर्तक सभ प्रान्तक लोक 1950 ई. धरि दर्शनशास्त्रक शिक्षाक लेल मिथिले अबैत छलाह। नव्यन्यायक सूत्रपात सर्वप्रथम मिथिलेसँ भेल। सांख्य सूत्रक प्रवर्तक कपिल, न्यायदर्शनक रचयिता गौतम मिथिलेक छलाह। गौतमक पुत्र सतानन्द जनकक कुल पूज्य छलाह। सनातन धर्मसँ इतर नास्तिक दर्शनक जन्म भेल। ओहि भ्रमजालकें तोड़निहार कुमारिल भट्ट (भटपुरा) उदयनाचार्य (करियन) मिथिलेक छलाह। मीमांसा एवं न्यायशास्त्रक अद्वितीय विद्वान मंडन मिश्रसँ शास्त्रार्थ (जिज्ञासा शान्त) करबाक निमित्त आदि शंकराचार्य जखन हुनक ग्राम महिषी (सहरसा) पहुँचैत छथि तऽ एक पनिहारिनसँ हुनक घरक विषयमे जिज्ञासा कएल। पनिभरनी कहि उठैछ–

स्वत: प्रमाणं परत: प्रमाणं शुकाङ्ना यत्र विचारयन्ति।
शिष्योपशिष्यै रूपगीयमानवेहि तन्मण्डन मिश्रधाम॥
जगदुध्रुवंस्याज्जगद्ध्रुव वा कीराङ्गना यत्र गिरोगिरन्ति।
द्वारस्थ नीडाडंगणसन्निरुद्धा जानीह तन्मण्डन मिश्रधाम॥



समसामयिक

मिथिलामे पर्यटनक असीम सम्भावना

डॉ. श्रवण कुमार चौधरी (उपाचार्य)



अति प्राचीन कालसँ मिथिला आर्य सभ्यताक प्रधान केंद्र रहल अछि। राजा जनक, हुनक गुरु आचार्य महर्षि गौतम, याज्ञवल्क्यक यश समस्त आर्यावर्त्तमे विद्यमान छल। शुक्ल यजुर्वेदक प्रवर्तक याज्ञवल्क्क ब्रह्मज्ञान सम्बन्धी ज्ञानक विवेचन शतपथ ब्राह्मणमे एवं वृहदारण्यकोपनिषदमे वर्णित अछि। तैत्तिरीय ब्राह्मणमे मैत्रेयीक ब्रह्मज्ञानक चर्चा अछि।

न्यायशास्त्रक आविष्कर्त्ता मिथिलेमे भेल छथि। मिथिलेसँ न्यायक धारा बंगालक नदिया जिला धरि पहुँचल। आर्यावर्तक सभ प्रान्तक लोक 1950 ई. धरि दर्शनशास्त्रक शिक्षाक लेल मिथिले अबैत छलाह। नव्यन्यायक सूत्रपात सर्वप्रथम मिथिलेसँ भेल। सांख्य सूत्रक प्रवर्तक कपिल, न्यायदर्शनक रचयिता गौतम मिथिलेक छलाह। गौतमक पुत्र सतानन्द जनकक कुल पूज्य छलाह। सनातन धर्मसँ इतर नास्तिक दर्शनक जन्म भेल। ओहि भ्रमजालकें तोड़निहार कुमारिल भट्ट (भटपुरा) उदयनाचार्य (करियन) मिथिलेक छलाह। मीमांसा एवं न्यायशास्त्रक अद्वितीय विद्वान मंडन मिश्रसँ शास्त्रार्थ (जिज्ञासा शान्त) करबाक निमित्त आदि शंकराचार्य जखन हुनक ग्राम महिषी (सहरसा) पहुँचैत छथि तऽ एक पनिहारिनसँ हुनक घरक विषयमे जिज्ञासा कएल। पनिभरनी कहि उठैछ–

स्वत: प्रमाणं परत: प्रमाणं शुकाङ्ना यत्र विचारयन्ति।
शिष्योपशिष्यै रूपगीयमानवेहि तन्मण्डन मिश्रधाम॥
जगदुध्रुवंस्याज्जगद्ध्रुव वा कीराङ्गना यत्र गिरोगिरन्ति।
द्वारस्थ नीडाडंगणसन्निरुद्धा जानीह तन्मण्डन मिश्रधाम॥



समसामयिक

मिथिलामे पर्यटनक असीम सम्भावना

डॉ. श्रवण कुमार चौधरी (उपाचार्य)



अति प्राचीन कालसँ मिथिला आर्य सभ्यताक प्रधान केंद्र रहल अछि। राजा जनक, हुनक गुरु आचार्य महर्षि गौतम, याज्ञवल्क्यक यश समस्त आर्यावर्त्तमे विद्यमान छल। शुक्ल यजुर्वेदक प्रवर्तक याज्ञवल्क्क ब्रह्मज्ञान सम्बन्धी ज्ञानक विवेचन शतपथ ब्राह्मणमे एवं वृहदारण्यकोपनिषदमे वर्णित अछि। तैत्तिरीय ब्राह्मणमे मैत्रेयीक ब्रह्मज्ञानक चर्चा अछि।

न्यायशास्त्रक आविष्कर्त्ता मिथिलेमे भेल छथि। मिथिलेसँ न्यायक धारा बंगालक नदिया जिला धरि पहुँचल। आर्यावर्तक सभ प्रान्तक लोक 1950 ई. धरि दर्शनशास्त्रक शिक्षाक लेल मिथिले अबैत छलाह। नव्यन्यायक सूत्रपात सर्वप्रथम मिथिलेसँ भेल। सांख्य सूत्रक प्रवर्तक कपिल, न्यायदर्शनक रचयिता गौतम मिथिलेक छलाह। गौतमक पुत्र सतानन्द जनकक कुल पूज्य छलाह। सनातन धर्मसँ इतर नास्तिक दर्शनक जन्म भेल। ओहि भ्रमजालकें तोड़निहार कुमारिल भट्ट (भटपुरा) उदयनाचार्य (करियन) मिथिलेक छलाह। मीमांसा एवं न्यायशास्त्रक अद्वितीय विद्वान मंडन मिश्रसँ शास्त्रार्थ (जिज्ञासा शान्त) करबाक निमित्त आदि शंकराचार्य जखन हुनक ग्राम महिषी (सहरसा) पहुँचैत छथि तऽ एक पनिहारिनसँ हुनक घरक विषयमे जिज्ञासा कएल। पनिभरनी कहि उठैछ–

स्वत: प्रमाणं परत: प्रमाणं शुकाङ्ना यत्र विचारयन्ति।
शिष्योपशिष्यै रूपगीयमानवेहि तन्मण्डन मिश्रधाम॥
जगदुध्रुवंस्याज्जगद्ध्रुव वा कीराङ्गना यत्र गिरोगिरन्ति।
द्वारस्थ नीडाडंगणसन्निरुद्धा जानीह तन्मण्डन मिश्रधाम॥

मंडन मिश्रक संग शंकराचार्यक शास्त्रार्थ मे मध्यस्थताक कार्य मंडनक विदुषी पत्नी भारती कएलनि। भारती शास्त्रार्थमे शंकराचार्यकें पराजित कएलनि। भामतीकार वाचस्पति मिश्र, विवादचिन्तामणिकार वाचस्पति द्वितीय, दार्शनिक गंगेशउपाधयाय, तार्किक जयदेव 'पक्षधर', दार्शनिक गोवर्धन 'अयाची' भवनाथ जनिका ओहिठाम साक्षात् महादेव हुनक तपस्यासँ प्रसन्न भए शंकर (पुत्रक) रूपमे जन्म लए उद्घोष कएल-

वालोहम जगदानन्द नमेवाला सरस्वती।
अपूर्णे पञ्जमेवर्षे वर्णयामि जगत्रयम्॥

कविकोकिल विद्यापतिक भक्तिसँ ओतप्रोत भए महादेव (चाकर) 'उगनाक' रूपमे स्वयं अएलाह। राजा शिव सिंह, रानी लखिमा, राजा हरिसिंह देव, म.म. ज्योतिरीश्वर, म.म. महेश ठाकुर म.म. गोविन्द, म.म. गंगेशोपाध्याय, महाराज हेमांगद ठाकुर, म.म. सचल मिश्र, पं. रत्नपाणि, धर्मदत्त बच्चा झा, म.म. जयदेव मिश्र, म.म. मुरलीधर झा, म.म. गंगानाथ झा, म.म. उमेश मिश्र, म.म. मधुसूदन झा, कविशेखर चन्दा झा, महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह, महाराज कामेश्वर सिंह आदि विद्वान लोकनिक डीह मिथिलाक गौरव स्थल अछि।

कोनो देशक परिचय ओहिठामक सांस्कृतिक प्राकृतिक धरोहरसँ होइत अछि, जे ओहि ठामक अतीतक विशिष्टता प्रदान करैत अछि। ई धरोहर ओहि देशक चित्रात्मक छविकें प्रस्तुत करैत अछि। ओहि स्थानक विरासत कोनो देश विशेषक नहि अपितु सम्पूर्ण मानव सभ्यताक गौरव होइत अछि। मिथिलाक ई विशिष्टता अछि। एहिठामक प्राचीन विद्याक केंद्र, एहिठामक विद्वान्, हुनका लोकनिक स्मारक स्थल, प्राचीन स्मारक, मूर्ति, शिल्पकला, चित्रकला, शिलालेख,हस्तलेख, प्राचीन डीह, गुफा, वास्तु शिल्प, ऐतिहासिक परिदृश्य चौर-चाचर आदिकें देखल जा सकैत अछि। मिथिलाक स्थापत्यकला अत्यन्त गौरवमयी अछि। मिथिलाक ध्वंसावशेष प्राचीन संस्कृति-कला एवं विज्ञानक समृद्धिक परिचायक अछि। पूर्वमे मिथिलाक नाम तिरहुत छल। मिथिलाक प्राचीन ऐतिहासिक धरोहर समृद्धशाली रहल अछि, किन्तु जनजागृतिक अभावक कारणे ने ई सुरक्षित रहि सकल, ने एकरा दिश सरकारक ध्याने गेलैक। एहि ठामक ऐतिहासिक स्मारकमे लौरियाक नन्दनगढ़, लौरियाकेसरियाक बौद्धस्तूप (सबसँ पैघ स्तूप), नन्दन गढ़क अशोक स्तम्भ, राजपुराक अशोक स्तम्भ, रामनगरक पंच शिव मंदिर, चम्पारणक मन्दिर, बड़बाटांड़, सीतामढ़ी आ अकौरक मूर्ति, अहल्यास्थानक स्थापत्यकलाक नाम विशेष रूपसँ लेल जा सकैत अछि। दरभंगा, मधुबनीक किछु मंदिरमे उत्तरी स्थापत्य कलाक समानता भेटैत अछि, जेना भीठ भगवानपुरक तोरण द्वार आदि।

साहित्यिक-सांस्कृतिक-धार्मिक दृष्टिकोणें ऐतिहासिक स्थान सभक मिथिला क्षेत्रमे पर्यटनक असीम सम्भावना छैक। एहिठाम परम्परासँ अनेक स्थान अछि जकरा पर्यटनक रूपमे विकसित कएल जा सकैत अछि। मुदा आई धरि नहि भेल।

विद्यापति सर्किट : कवि कोकिल विद्यापति मिथिला एवं मैथिलीक पहचानकें अन्तर्राष्ट्रीय क्षितिज पर पहुँचौलनि। हुनकासँ जुड़ल स्थलक विकास कए पर्यटनक एक नीक साधन भए सकैत अछि। 14 वीं शताब्दीमे विद्यापति आविर्भाव भेलनि। ओ ओइनवार राजवंशक राजपंडित ओ राजा शिव सिंहक बाल सखा छलाह। ओ महारानी लखिमाकें सहस्रो पद बना कऽ समर्पित कएलाह। ओना विद्यापति सर्किटक श्रीगणेश 1940-50 ई. सँ मांग चलि रहल अछि। विद्यापति गोष्ठी नामक संस्थाक माध्यमे, प्रो. कृष्णकान्त मिश्र आदि विद्वान लोकनि विद्यापतिसँ जुड़ल विभिन्न स्थलक यात्रा कएलनि जाहिमे 1950 ई. मे हुनक जन्म स्थान बिस्फी, 1951 ई. मे हुनक सिद्धभूमि भवानीपुर, 1952 ई. से समाधिभूमि वाजितपुर (वर्तमानमे विद्यापति रेलवे स्टेशन) यात्रा अनेको ओहि समयक मैथिलीक संस्था, लेखक, साहित्यकार लोकनि सामिलात कयलनि। एहि क्रममे समाधिस्थल वाजितपुरक नामकरण 'विद्यापति नगर' कएल गेल। ओहि समयक केन्द्रीय मंत्री सत्यानरायण सिंह जी आवश्वासनो देने रहथि किन्तु सम्प्रति धरि सरकारक तरफसँ कोनो चूल-चाल नहि देखैत छी।

विद्यपति सर्किटकें एहि तरहें पर्यटन स्थलक रूप-रेखा बनाओल जा सकैत अछि।
- जन्मभूमि बिस्फी, सिद्धभूमि जतए विद्यापतिकें प्यास लगलापर उगना गंगाजल पिआओल ओ स्थल पण्डौलसँ पूव भवानीपुर, कर्मभूमि क्रमशः ओइनी समस्तीपुर, देकुली, गजरथपुर, शिवसिंहपुर-दरभंगा तथा नेपालमे राजा बनैली जाहिठाम लखिमाक संग प्रवासमे रहलाह। पुनः विस्फी आगमन। एक दिन पत्नी द्वारा उगना पर प्रहार देखि ओ अपना कैं रोकि नहि सकलाह- हाँ-हाँ, साक्षात महादेव पर प्रहार? ई बात बुझबामे अबैत देरी उगना अन्तर्ध्यान भए गेलाह। विद्यापति उगनाकें तकैत-तकैत भैरवा वाणेश्वर स्थान जे सम्प्रति बेनीपट्टीसँ 15 कि.मी. पश्चिम गाण्डवेश्वर स्थानसँ 2 कि.मी. उत्तरमे अवस्थित अछि पुनः शिवरूपमे दर्शन देल। अन्तिम समय भांपि गंगा स्नान करए पुनः प्रस्थान करैत छथि, किन्तु गंगाक समीप पहुँचि जाइत छथि मुदा किनार नहि, संध्या भए जाइछ। विद्यापति ओतहि विश्राम करैत छथि आ कहैत छथि जे यदि हम एतेक दूरसँ अयलहुँ तऽ की माय नहि अओतीह?

प्रातः गंगाक धार माऊ बाजितपुर जे सम्प्रति विद्यापति नगरक नामे जानल जाइत अछि ओतहि गंगा लाभ करैत छथि। महाप्रयाण स्थल थीक। एहि तरहें जन्मभूमिसँ समाधिभूमि धरि सड़क मार्गसँ जोड़ि प्रत्येक स्थान पर जल, रहबाक स्थलक निर्माण होमक चाही, जाहिसँ स्थानीय लोककें रोजगारो भेटतैक। एहि तरहें पर्यटन उद्योगकें सेहो बढ़ाबा भेटतैक आ विद्यापतिक प्रति उचित श्रद्धांजलि हेतनि। प्रश्न उठैत अछि ई काज करत के? एहि दिशा मे जन-प्रतिनिधिक ध्यान नहि जा रहल छनि आओर ने कोनो सशक्त संस्था एहि दिशा अग्रसर होइत अछि।

राम जानकी सर्किट : शक्तिक उपासना भारतीय संस्कृतिक आधारपिठिका अछि। व्यापकता एवं उपयोगिताक दृष्टिसँ सेहो शक्तिक उपासना केंद्र कें महत्वपूर्ण मानल

मंडन मिश्रक संग शंकराचार्यक शास्त्रार्थ मे मध्यस्थताक कार्य मंडनक विदुषी पत्नी भारती कएलनि। भारती शास्त्रार्थमे शंकराचार्यकें पराजित कएलनि। भामतीकार वाचस्पति मिश्र, विवादचिन्तामणिकार वाचस्पति द्वितीय, दार्शनिक गंगेशउपाधयाय, तार्किक जयदेव 'पक्षधर', दार्शनिक गोवर्धन 'अयाची' भवनाथ जनिका ओहिठाम साक्षात् महादेव हुनक तपस्यासँ प्रसन्न भए शंकर (पुत्रक) रूपमे जन्म लए उद्घोष कएल-

वालोहम जगदानन्द नमेवाला सरस्वती।
अपूर्णे पञ्जमेवर्षे वर्णयामि जगत्रयम्॥

कविकोकिल विद्यापतिक भक्तिसँ ओतप्रोत भए महादेव (चाकर) 'उगनाक' रूपमे स्वयं अएलाह। राजा शिव सिंह, रानी लखिमा, राजा हरिसिंह देव, म.म. ज्योतिरीश्वर, म.म. महेश ठाकुर म.म. गोविन्द, म.म. गंगेशोपाध्याय, महाराज हेमांगद ठाकुर, म.म. सचल मिश्र, पं. रत्नपाणि, धर्मदत्त बच्चा झा, म.म. जयदेव मिश्र, म.म. मुरलीधर झा, म.म. गंगानाथ झा, म.म. उमेश मिश्र, म.म. मधुसूदन झा, कविशेखर चन्दा झा, महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह, महाराज कामेश्वर सिंह आदि विद्वान लोकनिक डीह मिथिलाक गौरव स्थल अछि।

कोनो देशक परिचय ओहिठामक सांस्कृतिक प्राकृतिक धरोहरसँ होइत अछि, जे ओहि ठामक अतीतक विशिष्टता प्रदान करैत अछि। ई धरोहर ओहि देशक चित्रात्मक छविकें प्रस्तुत करैत अछि। ओहि स्थानक विरासत कोनो देश विशेषक नहि अपितु सम्पूर्ण मानव सभ्यताक गौरव होइत अछि। मिथिलाक ई विशिष्टता अछि। एहिठामक प्राचीन विद्याक केंद्र, एहिठामक विद्वान्, हुनका लोकनिक स्मारक स्थल, प्राचीन स्मारक, मूर्ति, शिल्पकला, चित्रकला, शिलालेख,हस्तलेख, प्राचीन डीह, गुफा, वास्तु शिल्प, ऐतिहासिक परिदृश्य चौर-चाचर आदिकें देखल जा सकैत अछि। मिथिलाक स्थापत्यकला अत्यन्त गौरवमयी अछि। मिथिलाक ध्वंसावशेष प्राचीन संस्कृति-कला एवं विज्ञानक समृद्धिक परिचायक अछि। पूर्वमे मिथिलाक नाम तिरहुत छल। मिथिलाक प्राचीन ऐतिहासिक धरोहर समृद्धशाली रहल अछि, किन्तु जनजागृतिक अभावक कारणे ने ई सुरक्षित रहि सकल, ने एकरा दिश सरकारक ध्याने गेलैक। एहि ठामक ऐतिहासिक स्मारकमे लौरियाक नन्दनगढ़, लौरियाकेसरियाक बौद्धस्तूप (सबसँ पैघ स्तूप), नन्दन गढ़क अशोक स्तम्भ, राजपुराक अशोक स्तम्भ, रामनगरक पंच शिव मंदिर, चम्पारणक मन्दिर, बड़बाटांड़, सीतामढ़ी आ अकौरक मूर्ति, अहल्यास्थानक स्थापत्यकलाक नाम विशेष रूपसँ लेल जा सकैत अछि। दरभंगा, मधुबनीक किछु मंदिरमे उत्तरी स्थापत्य कलाक समानता भेटैत अछि, जेना भीठ भगवानपुरक तोरण द्वार आदि।

साहित्यिक-सांस्कृतिक-धार्मिक दृष्टिकोणें ऐतिहासिक स्थान सभक मिथिला क्षेत्रमे पर्यटनक असीम सम्भावना छैक। एहिठाम परम्परासँ अनेक स्थान अछि जकरा पर्यटनक रूपमे विकसित कएल जा सकैत अछि। मुदा आई धरि नहि भेल।

विद्यापति सर्किट : कवि कोकिल विद्यापति मिथिला एवं मैथिलीक पहचानकें अन्तर्राष्ट्रीय क्षितिज पर पहुँचौलनि। हुनकासँ जुड़ल स्थलक विकास कए पर्यटनक एक नीक साधन भए सकैत अछि। 14 वीं शताब्दीमे विद्यापति आविर्भाव भेलनि। ओ ओइनवार राजवंशक राजपंडित ओ राजा शिव सिंहक बाल सखा छलाह। ओ महारानी लखिमाकें सहस्रो पद बना कऽ समर्पित कएलाह। ओना विद्यापति सर्किटक श्रीगणेश 1940-50 ई. सँ मांग चलि रहल अछि। विद्यापति गोष्ठी नामक संस्थाक माध्यमे, प्रो. कृष्णकान्त मिश्र आदि विद्वान लोकनि विद्यापतिसँ जुड़ल विभिन्न स्थलक यात्रा कएलनि जाहिमे 1950 ई. मे हुनक जन्म स्थान बिस्फी, 1951 ई. मे हुनक सिद्धभूमि भवानीपुर, 1952 ई. से समाधिभूमि वाजितपुर (वर्तमानमे विद्यापति रेलवे स्टेशन) यात्रा अनेको ओहि समयक मैथिलीक संस्था, लेखक, साहित्यकार लोकनि सामिलात कयलनि। एहि क्रममे समाधिस्थल वाजितपुरक नामकरण 'विद्यापति नगर' कएल गेल। ओहि समयक केन्द्रीय मंत्री सत्यानरायण सिंह जी आवश्वासनो देने रहथि किन्तु सम्प्रति धरि सरकारक तरफसँ कोनो चूल-चाल नहि देखैत छी।

विद्यपति सर्किटकें एहि तरहें पर्यटन स्थलक रूप-रेखा बनाओल जा सकैत अछि। - जन्मभूमि बिस्फी, सिद्धभूमि जतए विद्यापतिकें प्यास लगलापर उगना गंगाजल पिआओल ओ स्थल पण्डौलसँ पूव भवानीपुर, कर्मभूमि क्रमशः ओइनी समस्तीपुर, देकुली, गजरथपुर, शिवसिंहपुर-दरभंगा तथा नेपालमे राजा बनैली जाहिठाम लखिमाक संग प्रवासमे रहलाह। पुनः विस्फी आगमन। एक दिन पत्नी द्वारा उगना पर प्रहार देखि ओ अपना कें रोकि नहि सकलाह- हाँ-हाँ, साक्षात महादेव पर प्रहार? ई बात बुझबामे अबैत देरी उगना अन्तर्ध्यान भए गेलाह। विद्यापति उगनाकें तकैत-तकैत भैरवा वाणेश्वर स्थान जे सम्प्रति बेनीपट्टीसँ 15 कि.मी. पश्चिम गाण्डवेश्वर स्थानसँ 2 कि.मी. उत्तरमे अवस्थित अछि पुनः शिवरूपमे दर्शन देल। अन्तिम समय भांपि गंगा स्नान करए पुनः प्रस्थान करैत छथि, किन्तु गंगाक समीप पहुँचि जाइत छथि मुदा किनार नहि, संध्या भए जाइछ। विद्यापति ओतहि विश्राम करैत छथि आ कहैत छथि जे यदि हम एतेक दूरसँ अयलहुँ तऽ की माय नहि अओतीह?

प्रातः गंगाक धार माऊ बाजितपुर जे सम्प्रति विद्यापति नगरक नामे जानल जाइत अछि ओतहि गंगा लाभ करैत छथि। महाप्रयाण स्थल थीक। एहि तरहें जन्मभूमिसँ समाधिभूमि धरि सड़क मार्गसँ जोड़ि प्रत्येक स्थान पर जल, रहबाक स्थलक निर्माण होमक चाही, जाहिसँ स्थानीय लोककें रोजगारो भेटतैक। एहि तरहें पर्यटन उद्योगकें सेहो बढ़ाबा भेटतैक आ विद्यापतिक प्रति उचित श्रद्धांजलि हेतनि। प्रश्न उठैत अछि ई काज करत के? एहि दिशा मे जन-प्रतिनिधिक ध्यान नहि जा रहल छनि आओर ने कोनो सशक्त संस्था एहि दिशा अग्रसर होइत अछि।

राम जानकी सर्किट : शक्तिक उपासना भारतीय संस्कृतिक आधारपिठिका अछि। व्यापकता एवं उपयोगिताक दृष्टिसँ सेहो शक्तिक उपासना केंद्र कें महत्वपूर्ण मानल

मंडन मिश्रक संग शंकराचार्यक शास्त्रार्थ मे मध्यस्थताक कार्य मंडनक विदुषी पत्नी भारती कएलनि। भारती शास्त्रार्थमे शंकराचार्यकें पराजित कएलनि। भामतीकार वाचस्पति मिश्र, विवादचिन्तामणिकार वाचस्पति द्वितीय, दार्शनिक गंगेशउपाधयाय, तार्किक जयदेव 'पक्षधर', दार्शनिक गोवर्धन 'अयाची' भवनाथ जनिका ओहिठाम साक्षात् महादेव हुनक तपस्यासँ प्रसन्न भए शंकर (पुत्रक) रूपमे जन्म लए उद्घोष कएल–

वालोहम जगदानन्द नमेवाला सरस्वती।
अपूर्णे पञ्जमेवर्षे वर्णयामि जगत्रयम्॥

कविकोकिल विद्यापतिक भक्तिसँ ओतप्रोत भए महादेव (चाकर) 'उगनाक' रूपमे स्वयं अएलाह। राजा शिव सिंह, रानी लखिमा, राजा हरिसिंह देव, म.म. ज्योतिरीश्वर, म.म. महेश ठाकुर म.म. गोविन्द, म.म. गंगेशोपाध्याय, महाराज हेमांगद ठाकुर, म.म. सचल मिश्र, पं. रत्नपाणि, धर्मदत्त बच्चा झा, म.म. जयदेव मिश्र, म.म. मुरलीधर झा, म.म. गंगानाथ झा, म.म. उमेश मिश्र, म.म. मधुसूदन झा, कविशेखर चन्दा झा, महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह, महाराज कामेश्वर सिंह आदि विद्वान लोकनिक डीह मिथिलाक गौरव स्थल अछि।

कोनो देशक परिचय ओहिठामक सांस्कृतिक प्राकृतिक धरोहरसँ होइत अछि, जे ओहि ठामक अतीतक विशिष्टता प्रदान करैत अछि। ई धरोहर ओहि देशक चित्रात्मक छविकें प्रस्तुत करैत अछि। ओहि स्थानक विरासत कोनो देश विशेषक नहि अपितु सम्पूर्ण मानव सभ्यताक गौरव होइत अछि। मिथिलाक ई विशिष्टता अछि। एहिठामक प्राचीन विद्याक केंद्र, एहिठामक विद्वान्, हुनका लोकनिक स्मारक स्थल, प्राचीन स्मारक, मूर्ति, शिल्पकला, चित्रकला, शिलालेख,हस्तलेख, प्राचीन डीह, गुफा, वास्तु शिल्प, ऐतिहासिक परिदृश्य चौर–चाचर आदिकें देखल जा सकैत अछि। मिथिलाक स्थापत्यकला अत्यन्त गौरवमयी अछि। मिथिलाक ध्वंसावशेष प्राचीन संस्कृति–कला एवं विज्ञानक समृद्धिक परिचायक अछि। पूर्वमे मिथिलाक नाम तिरहुत छल। मिथिलाक प्राचीन ऐतिहासिक धरोहर समृद्धशाली रहल अछि, किन्तु जनजागृतिक अभावक कारणे ने ई सुरक्षित रहि सकल, ने एकरा दिश सरकारक ध्याने गेलैक। एहि ठामक ऐतिहासिक स्मारकमे लौरियाक नन्दनगढ़, लौरियाकेसरियाक बौद्धस्तूप (सबसँ पैघ स्तूप), नन्दन गढ़क अशोक स्तम्भ, राजपुराक अशोक स्तम्भ, रामनगरक पंच शिव मंदिर, चम्पारणक मन्दिर, बड़बाटांड़, सीतामढ़ी आ अकौरक मूर्ति, अहल्यास्थानक स्थापत्यकलाक नाम विशेष रूपसँ लेल जा सकैत अछि। दरभंगा, मधुबनीक किछु मंदिरमे उत्तरी स्थापत्य कलाक समानता भेटैत अछि, जेना भीठ भगवानपुरक तोरण द्वार आदि।

साहित्यिक-सांस्कृतिक-धार्मिक दृष्टिकोणें ऐतिहासिक स्थान सभक मिथिला क्षेत्रमे पर्यटनक असीम सम्भावना छैक। एहिठाम परम्परासँ अनेक स्थान अछि जकरा पर्यटनक रूपमे विकसित कएल जा सकैत अछि। मुदा आई धरि नहि भेल।

विद्यापति सर्किट : कवि कोकिल विद्यापति मिथिला एवं मैथिलीक पहचानकें अन्तर्राष्ट्रीय क्षितिज पर पहुँचौलनि। हुनकासँ जुड़ल स्थलक विकास कए पर्यटनक एक नीक साधन भए सकैत अछि। 14 वीं शताब्दीमे विद्यापति आविर्भाव भेलनि। ओ ओइनवार राजवंशक राजपंडित ओ राजा शिव सिंहक बाल सखा छलाह। ओ महारानी लखिमाकें सहस्रो पद बना कऽ समर्पित कएलाह। ओना विद्यापति सर्किटक श्रीगणेश 1940–50 ई. सँ मांग चलि रहल अछि। विद्यापति गोष्ठी नामक संस्थाक माध्यमे, प्रो. कृष्णकान्त मिश्र आदि विद्वान लोकनि विद्यापतिसँ जुड़ल विभिन्न स्थलक यात्रा कएलनि जाहिमे 1950 ई. मे हुनक जन्म स्थान बिस्फी, 1951 ई. मे हुनक सिद्धभूमि भवानीपुर, 1952 ई. से समाधिभूमि वाजितपुर (वर्तमानमे विद्यापति रेलवे स्टेशन) यात्रा अनेको ओहि समयक मैथिलीक संस्था, लेखक, साहित्यकार लोकनि सामिलात कयलनि। एहि क्रममे समाधिस्थल वाजितपुरक नामकरण 'विद्यापति नगर' कएल गेल। ओहि समयक केन्द्रीय मंत्री सत्यानरायण सिंह जी आवश्वासनो देने रहथि किन्तु सम्प्रति धरि सरकारक तरफसँ कोनो चूल–चाल नहि देखैत छी।

विद्यपति सर्किटकें एहि तरहें पर्यटन स्थलक रूप–रेखा बनाओल जा सकैत अछि। – जन्मभूमि बिस्फी, सिद्धभूमि जतए विद्यापतिकें प्यास लगलापर उगना गंगाजल पिआओल ओ स्थल पण्डौलसँ पूव भवानीपुर, कर्मभूमि क्रमशः ओइनी समस्तीपुर, देकुली, गजरथपुर, शिवसिंहपुर–दरभंगा तथा नेपालमे राजा बनैली जाहिठाम लखिमाक संग प्रवासमे रहलाह। पुनः विस्फी आगमन। एक दिन पत्नी द्वारा उगना पर प्रहार देखि ओ अपना कैं रोकि नहि सकलाह– हाँ–हाँ, साक्षात महादेव पर प्रहार? ई बात बुझबामे अबैत देरी उगना अन्तर्ध्यान भए गेलाह। विद्यापति उगनाकें तकैत–तकैत भैरवा वाणेश्वर स्थान जे सम्प्रति बेनीपट्टीसँ 15 कि.मी. पश्चिम गाण्डवेश्वर स्थानसँ 2 कि.मी. उत्तरमे अवस्थित अछि पुनः शिवरूपमे दर्शन देल। अन्तिम समय भांपि गंगा स्नान करए पुनः प्रस्थान करैत छथि, किन्तु गंगाक समीप पहुँचि जाइत छथि मुदा किनार नहि, संध्या भए जाइछ। विद्यापति ओतहि विश्राम करैत छथि आ कहैत छथि जे यदि हम एतेक दूरसँ अयलहुँ तऽ की माय नहि अओतीह?

प्रातः गंगाक धार माऊ बाजितपुर जे सम्प्रति विद्यापति नगरक नामे जानल जाइत अछि ओतहि गंगा लाभ करैत छथि। महाप्रयाण स्थल थीक। एहि तरहें जन्मभूमिसँ समाधिभूमि धरि सड़क मार्गसँ जोड़ि प्रत्येक स्थान पर जल, रहबाक स्थलक निर्माण होमक चाही, जाहिसँ स्थानीय लोककें रोजगारो भेटतैक। एहि तरहें पर्यटन उद्योगकें सेहो बढ़ाबा भेटतैक आ विद्यापतिक प्रति उचित श्रद्धांजलि हेतनि। प्रश्न उठैत अछि ई काज करत के? एहि दिशा मे जन–प्रतिनिधिक ध्यान नहि जा रहल छनि आओर ने कोनो सशक्त संस्था एहि दिशा अग्रसर होइत अछि।

राम जानकी सर्किट : शक्तिक उपासना भारतीय संस्कृतिक आधारपिठिका अछि। व्यापकता एवं उपयोगिताक दृष्टिसँ सेहो शक्तिक उपासना केंद्र कें महत्वपूर्ण मानल

गेल अछि। शक्तिपीठक विषयमे किछु कहब सूर्यकें दीप देखएबाक समान होएत। पर्यटनक मानचित्रसँ कोसो दूर अछि राम जानकी सर्किट। सीतामढ़ीमे जानकीजीक भव्य मंदिर अछि। सम्प्रति जे मंदिर अछि ओहिठामसँ चारि किलोमीटर उत्तर फतहपुर गिरिमिशानीमे अवस्थित पौराणिक मंदिर राजा जनक द्वारा अकालसँ मुक्ति हेतु हलेष्ट यज्ञक समय स्थापित महादेवक मंदिर अछि। यज्ञ कएलाक बाद ओही स्थान पर हर जोतब शुरू कएलन्हि। महादेव पार्वतीक संग जनककें आशीर्वाद देल। हर जोतैत जखन जानकी मंदिरसँ दक्षिण जे सम्प्रति उर्विजा कुण्डक नामे प्रख्यात अछि ओतहिसँ माँ जगदजननी सीता प्रकट भेलीह। हरक नास द्वारा चीरल सिराउरकें सीतकहल जाइछ तें माँक नाम सीता पड़ल। एहि तरहें सीतामढ़ीमे हलेश्वर एवं सम्प्रति जे सीताक मंदिर अछि ओ उर्विजा कुण्ड ऐतिहासिक स्थान अछि।

अयोध्या सँ राम विश्वामित्रक संग अबैत अथि। बक्सरमे राक्षस लोकनिक संहार करैत छथि। श्रृंगी आश्रम-टेकटायर स्टेशन सँ दू किलोमीटर पर सिंगिया गांव अछि, ओहिठाम राम गेल छलाह। श्रृंगी मुनिसँ भेंट करए। ओहिठाम सँ आगू अहियारी कमतौल स्टेशन सँ दक्षिण ग्राम अछि जतए अहल्याकें उद्धार कएल। अहल्या स्थान ओहिठाम एक भव्य मन्दिर अछि। उद्धार स्थल 1 किलोमीटर पश्चिममे अछि। गौतम आश्रम ओतहि अछि। ओहि ठामसँ 3 किलोमीटर उत्तर याज्ञवल्क्य आश्रम यगवन अछि। वशिष्ठ आश्रम बसैठ मे अछि। ओहिठामसँ उत्तर पूवमे विद्यादात्री शक्तिपीठ उच्चैठ, भगवतीक पूजा अर्चना कएल। ओतएसँ विसौल जे 10 कि.मी. उत्तर-पूवमे अवस्थित अछि विश्राम कएल। एतए सँ प्रात- गुरुक पूजाक हेतु फूल लोढ़बाक लेल जनकक फुलवाड़ी फुलहा जाइत छथि। ओहिठाम माँ जानकी सेहो सखी-बहिनपाक संग गिरिजा पूजन हेतु अबैत छथि जतए दूनू गोटेकें प्रथम दर्शन होइछ। सीता सेहो नित्य गिरिजा पूजन करऽ जाइत छली।

जनकपुर : जनकक राजधानी छल। ओतए पूर्व कालमे एक छोट सन जीर्ण-शीर्ण



मंदिर छल। जाहिमे स्वर्णमयी सीता रामक भव्य मूर्ति छल। संवत् 1837 मे टीकमगढ़क महारानी वृषभानु कुवरिजी ओहि स्थान पर एक विशाल मंदिरक निर्माण कराओल। जे सम्प्रति नौलखा मंदिरक नामसँ विख्यात अछि। ओ मंदिर माँ जानकी मंदिरक नामे प्रख्यात अछि। धनुषा जतए महादेव धनुष राखल गेल छल ओ स्वयंवरक समय मे टूटल सम्प्रति मंदिरसँ किछु दूरी पर अवस्थित अछि। विवाहोपरान्त विदा डोली किछु कालक लेल राखल गेल जकरा पंथपाकर कहल जाइछ जे सीतामढ़ी सँ 10 कि.मी. पूव-उत्तर मे अवस्थित अछि। सीतमढ़ी सँ 18 कि.मी. देकुली धाम अछि जतए राम किछु समयक लेल रुकल छलाह। ओहिठाम सेहो एक विशाल शिव मंदिर अछि। एहि तरहें अयोध्या सँ जनकपुर होइत पुनः अयोध्या प्रसंग एक राम-सीता सर्किट बनि सकैछ।

एकर अतिरिक्त हजारों वर्षसँ जनकपुर ऐतिहासिक परिक्रमा होइत आबि रहल अछि। एकर विस्तार 250 कि.मी. छैक। ई परिक्रमा फाल्गुन शुक्ल प्रतिपद सँ फाल्गुन पूर्णिमा धरि पन्द्रह स्थान पर रात्रि विश्राम करैत हजारों श्रद्धालुक संग मैया सीताक डोली चलैत अछि। ई परिक्रमा मार्ग जनकपुर, फुलहर, करुणा, कलना, जलेश्वर, मटिहानी, मरई, धूपकुंड, कंचनवन, परवत्ता, धनुष, सतीश्वर, अउर आदि स्थान होइत पुनः जनकपुर पहुँचैत अछि। ओना तऽ बिहार सरकार नवम्बर 2007 ई. मे घोषणा कयलनि जे अयोध्यासँ जनकपुर धरि मिथिलांचलकें राम-जानकी सर्किट मे राखल जाएत। ई सर्किट मे अयोध्या सँ चलि जनकपुरक बाटमे जतए-जतए पैर राखल से सभ स्थानकें राखल जायत। अपन लीला सँ लोक कें अपना दिश आकर्षित कएल, ओहि स्थानकें पर्यटनक केंद्रके रूपमे विकसित करबाक फैसला बिहार सरकार कएलक। ई घोषणा 25 नवम्बर 2007 ई. मे नगर विकास मंत्री श्री अश्वनी चौबेजी विद्यापति सेवा संस्थान, दरभंगाक समापन समारोहक अवसर पर कएने छलाह। कागज पर जे भेल हो देखबामे किछु नहि अबैत अछि।

सहरसा सर्किट : उग्रतारा भगवती महिषी जतए मंडन मिश्र एवं भारतीक डीह सेहो अछि। ई सहरसा सँ 8 कि.मी. पश्चिममे अछि। बनगांव-लक्ष्मीनाथ गोसाँइक कर्मक्षेत्र कन्दाहा सूर्य मन्दिर जकर स्थापना ओइनवार वंशक राजा हरि सिंह कएने छलाह। कहल जाइछ जे पतरघाट प्रखण्डमे एक शिलालेख भेटल छलै जे सम्प्रति कलकत्ताक संग्रहालयमे सुरक्षित अछि जाहिमे वर्णित अछि जे पाल साम्राज्य कालमे ओतए एक विश्वविद्यालय छल। (आज-4/3/03) सहरसा जिला मुख्यालयसँ 10 कि.मी. सोनवर्षा राज्य जाहिठाम महाभारत कालीन राजा विराटक राजधानी छल। ओहिठाम गुप्तवासमे पाण्डव लोकनि अटकल छलाह। सोनवर्षाक चण्डी स्थान, कीचकक गांव-कचरा अछि। एकर

गेल अछि। शक्तिपीठक विषयमे किछु कहब सूर्यकें दीप देखएबाक समान होएत। पर्यटनक मानचित्रसँ कोसो दूर अछि राम जानकी सर्किट। सीतामढ़ीमे जानकीजीक भव्य मंदिर अछि। सम्प्रति जे मंदिर अछि ओहिठामसँ चारि किलोमीटर उत्तर फतहपुर गिरिमिशानीमे अवस्थित पौराणिक मंदिर राजा जनक द्वारा अकालसँ मुक्ति हेतु हलेष्ट यज्ञक समय स्थापित महादेवक मंदिर अछि। यज्ञ कएलाक बाद ओही स्थान पर हर जोतब शुरू कएलन्हि। महादेव पार्वतीक संग जनककें आशीर्वाद देल। हर जोतैत जखन जानकी मंदिरसँ दक्षिण जे सम्प्रति उर्विजा कुण्डक नामे प्रख्यात अछि ओतहिसँ माँ जगदजननी सीता प्रकट भेलीह। हरक नास द्वारा चीरल सिराउरकें सीतकहल जाइछ तें माँक नाम सीता पड़ल। एहि तरहें सीतामढ़ीमे हलेश्वर एवं सम्प्रति जे सीताक मंदिर अछि ओ उर्विजा कुण्ड ऐतिहासिक स्थान अछि।

अयोध्या सँ राम विश्वामित्रक संग अबैत अथि। बक्सरमे राक्षस लोकनिक संहार करैत छथि। श्रृंगी आश्रम-टेकटायर स्टेशन सँ दू किलोमीटर पर सिंगिया गांव अछि, ओहिठाम राम गेल छलाह। श्रृंगी मुनिसँ भेंट करए। ओहिठाम सँ आगू अहियारी कमतौल स्टेशन सँ दक्षिण ग्राम अछि जतए अहल्याकें उद्धार कएल। अहल्या स्थान ओहिठाम एक भव्य मन्दिर अछि। उद्धार स्थल 1 किलोमीटर पश्चिममे अछि। गौतम आश्रम ओतहि अछि। ओहि ठामसँ 3 किलोमीटर उत्तर याज्ञवल्क्य आश्रम यगवन अछि। वशिष्ठ आश्रम बसैठ मे अछि। ओहिठामसँ उत्तर पूवमे विद्यादात्री शक्तिपीठ उच्चैठ, भगवतीक पूजा अर्चना कएल। ओतएसँ विसौल जे 10 कि.मी. उत्तर-पूवमे अवस्थित अछि विश्राम कएल। एतए सँ प्रात- गुरुक पूजाक हेतु फूल लोढ़बाक लेल जनकक फुलवाड़ी फुलहा जाइत छथि। ओहिठाम माँ जानकी सेहो सखी-बहिनपाक संग गिरिजा पूजन हेतु अबैत छथि जतए दूनू गोटेकें प्रथम दर्शन होइछ। सीता सेहो नित्य गिरिजा पूजन करऽ जाइत छली।

जनकपुर : जनकक राजधानी छल। ओतए पूर्व कालमे एक छोट सन जीर्ण-शीर्ण



मंदिर छल। जाहिमे स्वर्णमयी सीता रामक भव्य मूर्ति छल। संवत् 1837 मे टीकमगढ़क महारानी वृषभानु कुवरिजी ओहि स्थान पर एक विशाल मंदिरक निर्माण कराओल। जे सम्प्रति नौलखा मंदिरक नामसँ विख्यात अछि। ओ मंदिर माँ जानकी मंदिरक नामे प्रख्यात अछि। धनुषा जतए महादेव धनुष राखल गेल छल ओ स्वयंवरक समय मे टूटल सम्प्रति मंदिरसँ किछु दूरी पर अवस्थित अछि। विवाहोपरान्त विदा डोली किछु कालक लेल राखल गेल जकरा पंथपाकर कहल जाइछ जे सीतामढ़ी सँ 10 कि.मी. पूव-उत्तर मे अवस्थित अछि। सीतमढ़ी सँ 18 कि.मी. देकुली धाम अछि जतए राम किछु समयक लेल रुकल छलाह। ओहिठाम सेहो एक विशाल शिव मंदिर अछि। एहि तरहें अयोध्या सँ जनकपुर होइत पुन: अयोध्या प्रसंग एक राम-सीता सर्किट बनि सकैछ।

एकर अतिरिक्त हजारों वर्षसँ जनकपुर ऐतिहासिक परिक्रमा होइत आबि रहल अछि। एकर विस्तार 250 कि.मी. छैक। ई परिक्रमा फाल्गुन शुक्ल प्रतिपद सँ फाल्गुन पूर्णिमा धरि पन्द्रह स्थान पर रात्रि विश्राम करैत हजारों श्रद्धालुक संग मैया सीताक डोली चलैत अछि। ई परिक्रमा मार्ग जनकपुर, फुलहर, करुणा, कलना, जलेश्वर, मटिहानी, मरई, धूपकुंड, कंचनवन, परवत्ता, धनुष, सतीश्वर, अउर आदि स्थान होइत पुन: जनकपुर पहुँचैत अछि। ओना त ऽ बिहार सरकार नवम्बर 2007 ई. मे घोषणा कयलनि जे अयोध्यासँ जनकपुर धरि मिथिलांचलकें राम-जानकी सर्किट मे राखल जाएत। ई सर्किट मे अयोध्या सँ चलि जनकपुरक बाटमे जतए-जतए पैर राखल से सभ स्थानकें राखल जायत। अपन लीला सँ लोक कें अपना दिश आकर्षित कएल, ओहि स्थानकें पर्यटनक केंद्रके रूपमे विकसित करबाक फैसला बिहार सरकार कएलक। ई घोषणा 25 नवम्बर 2007 ई. मे नगर विकास मंत्री श्री अश्वनी चौबेजी विद्यापति सेवा संस्थान, दरभंगाक समापन समारोहक अवसर पर कएने छलाह। कागज पर जे भेल हो देखबामे किछु नहि अबैत अछि।

सहरसा सर्किट : उग्रतारा भगवती महिषी जतए मंडन मिश्र एवं भारतीक डीह सेहो अछि। ई सहरसा सँ 8 कि.मी. पश्चिममे अछि। बनगांव-लक्ष्मीनाथ गोसाँइक कर्मक्षेत्र कन्दाहा सूर्य मन्दिर जकर स्थापना ओइनवार वंशक राजा हरि सिंह कएने छलाह। कहल जाइछ जे पतरघाट प्रखण्डमे एक शिलालेख भेटल छलै जे सम्प्रति कलकत्ताक संग्रहालयमे सुरक्षित अछि जाहिमे वर्णित अछि जे पाल साम्राज्य कालमे ओतए एक विश्वविद्यालय छल। (आज-4/3/03) सहरसा जिला मुख्यालयसँ 10 कि.मी. सोनवर्षा राज्य जाहिठाम महाभारत कालीन राजा विराटक राजधानी छल। ओहिठाम गुप्तवासमे पाण्डव लोकनि अटकल छलाह। सोनवर्षाक चण्डी स्थान, कीचकक गांव-कचरा अछि। एकर

गेल अछि। शक्तिपीठक विषयमे किछु कहब सूर्यकें दीप देखएबाक समान होएत। पर्यटनक मानचित्रसँ कोसो दूर अछि राम जानकी सर्किट। सीतामढ़ीमे जानकीजीक भव्य मंदिर अछि। सम्प्रति जे मंदिर अछि ओहिठामसँ चारि किलोमीटर उत्तर फतहपुर गिरिमिशानीमे अवस्थित पौराणिक मंदिर राजा जनक द्वारा अकालसँ मुक्ति हेतु हलेष्ट यज्ञक समय स्थापित महादेवक मंदिर अछि। यज्ञ कएलाक बाद ओही स्थान पर हर जोतब शुरू कएलन्हि। महादेव पार्वतीक संग जनककें आशीर्वाद देल। हर जोतैत जखन जानकी मंदिरसँ दक्षिण जे सम्प्रति उर्विजा कुण्डक नामे प्रख्यात अछि ओतहिसँ माँ जगदजननी सीता प्रकट भेलीह। हरक नास द्वारा चीरल सिराउरकें सीतकहल जाइछ तें माँक नाम सीता पड़ल। एहि तरहें सीतामढ़ीमे हलेश्वर एवं सम्प्रति जे सीताक मंदिर अछि ओ उर्विजा कुण्ड ऐतिहासिक स्थान अछि।

अयोध्या सँ राम विश्वामित्रक संग अबैत अथि। बक्सरमे राक्षस लोकनिक संहार करैत छथि। श्रृंगी आश्रम-टेकटायर स्टेशन सँ दू किलोमीटर पर सिंगिया गांव अछि, ओहिठाम राम गेल छलाह। श्रृंगी मुनिसँ भेंट करए। ओहिठाम सँ आगू अहियारी कमतौल स्टेशन सँ दक्षिण ग्राम अछि जतए अहल्याकें उद्धार कएल। अहल्या स्थान ओहिठाम एक भव्य मन्दिर अछि। उद्धार स्थल 1 किलोमीटर पश्चिममे अछि। गौतम आश्रम ओतहि अछि। ओहि ठामसँ 3 किलोमीटर उत्तर याज्ञवल्क्य आश्रम यगवन अछि। वशिष्ठ आश्रम बसैठ मे अछि। ओहिठामसँ उत्तर पूवमे विद्यादात्री शक्तिपीठ उच्चैठ, भगवतीक पूजा अर्चना कएल। ओतएसँ विसौल जे 10 कि.मी. उत्तर-पूवमे अवस्थित अछि विश्राम कएल। एतए सँ प्रात- गुरुक पूजाक हेतु फूल लोढ़बाक लेल जनकक फुलवाड़ी फुलहा जाइत छथि। ओहिठाम माँ जानकी सेहो सखी-बहिनपाक संग गिरिजा पूजन हेतु अबैत छथि जतए दूनू गोटेकें प्रथम दर्शन होइछ। सीता सेहो नित्य गिरिजा पूजन करऽ जाइत छली।

जनकपुर : जनकक राजधानी छल। ओतए पूर्व कालमे एक छोट सन जीर्ण-शीर्ण



मंदिर छल। जाहिमे स्वर्णमयी सीता रामक भव्य मूर्ति छल। संवत् 1837 मे टीकमगढ़क महारानी वृषभानु कुवरिजी ओहि स्थान पर एक विशाल मंदिरक निर्माण कराओल। जे सम्प्रति नौलखा मंदिरक नामसँ विख्यात अछि। ओ मंदिर माँ जानकी मंदिरक नामे प्रख्यात अछि। धनुषा जतए महादेव धनुष राखल गेल छल ओ स्वयंवरक समय मे टूटल सम्प्रति मंदिरसँ किछु दूरी पर अवस्थित अछि। विवाहोपरान्त विदा डोली किछु कालक लेल राखल गेल जकरा पंथपाकर कहल जाइछ जे सीतामढ़ी सँ 10 कि.मी. पूव-उत्तर मे अवस्थित अछि। सीतमढ़ी सँ 18 कि.मी. देकुली धाम अछि जतए राम किछु समयक लेल रुकल छलाह। ओहिठाम सेहो एक विशाल शिव मंदिर अछि। एहि तरहें अयोध्या सँ जनकपुर होइत पुन: अयोध्या प्रसंग एक राम-सीता सर्किट बनि सकैछ।

एकर अतिरिक्त हजारों वर्षसँ जनकपुर ऐतिहासिक परिक्रमा होइत आबि रहल अछि। एकर विस्तार 250 कि.मी. छैक। ई परिक्रमा फाल्गुन शुक्ल प्रतिपद सँ फाल्गुन पूर्णिमा धरि पन्द्रह स्थान पर रात्रि विश्राम करैत हजारों श्रद्धालुक संग मैया सीताक डोली चलैत अछि। ई परिक्रमा मार्ग जनकपुर, फुलहर, करुणा, कलना, जलेश्वर, मटिहानी, मरई, धूपकुंड, कंचनवन, परवत्ता, धनुष, सतीश्वर, अउर आदि स्थान होइत पुन: जनकपुर पहुँचैत अछि। ओना तऽ बिहार सरकार नवम्बर 2007 ई. मे घोषणा कयलनि जे अयोध्यासँ जनकपुर धरि मिथिलांचलकें राम-जानकी सर्किट मे राखल जाएत। ई सर्किट मे अयोध्या सँ चलि जनकपुरक बाटमे जतए-जतए पैर राखल से सभ स्थानकें राखल जायत। अपन लीला सँ लोक कें अपना दिश आकर्षित कएल, ओहि स्थानकें पर्यटनक केंद्रके रूपमे विकसित करबाक फैसला बिहार सरकार कएलक। ई घोषणा 25 नवम्बर 2007 ई. मे नगर विकास मंत्री श्री अश्वनी चौबेजी विद्यापति सेवा संस्थान, दरभंगाक समापन समारोहक अवसर पर कएने छलाह। कागज पर जे भेल हो देखबामे किछु नहि अबैत अछि।

सहरसा सर्किट : उग्रतारा भगवती महिषी जतए मंडन मिश्र एवं भारतीक डीह सेहो अछि। ई सहरसा सँ 8 कि.मी. पश्चिममे अछि। बनगांव-लक्ष्मीनाथ गोसाँइक कर्मक्षेत्र कन्दाहा सूर्य मन्दिर जकर स्थापना ओइनवार वंशक राजा हरि सिंह कएने छलाह। कहल जाइछ जे पतरघाट प्रखण्डमे एक शिलालेख भेटल छलै जे सम्प्रति कलकत्ताक संग्रहालयमे सुरक्षित अछि जाहिमे वर्णित अछि जे पाल साम्राज्य कालमे ओतए एक विश्वविद्यालय छल। (आज-4/3/03) सहरसा जिला मुख्यालयसँ 10 कि.मी. सोनवर्षा राज्य जाहिठाम महाभारत कालीन राजा विराटक राजधानी छल। ओहिठाम गुप्तवासमे पाण्डव लोकनि अटकल छलाह। सोनवर्षाक चण्डी स्थान, कीचकक गांव-कचरा अछि। एकर

अतिरिक्त देवना डीह, गोरही, नरपतगंजक निकट धरहारामे भीमशंकर महदेव मंदिर भीमाशंकरक स्मरण करबैत अछि। एकर अतिरिक्त लोरिक, चनैनक कर्मभूमि हरदी, कारी, खिरहरी एही ठामक छलाह। सहरसासँ दक्षिण दिवारी गांवमे आदि शक्ति विषहरीक मंदिर तथा मत्स्यगंधा परिसरक बगलमे रक्त काली मंदिरक अपन अलग महिमा छनि।

भागलपुर पर्यटन सर्किट : भागलपुर सर्किटमे केवल हिन्दूधर्मक नहि अपितु जैन, बौद्ध एवं इस्लाम धर्मक अनेक तीर्थ स्थल विद्यमान अछि। भागलपुरसँ 40 कि.मी. दूर विक्रमशिला विश्वविद्यालय जे पूर्वमे बौद्ध विहार सेहो छल। विक्रमशिला विश्वविद्यालय स्थापना पाल नरेश धर्मपाल (775-800) करबौने छलाह। ई विश्वक पांच शिक्षापीठमे एक छल। एहिठाम आचार्य भारतीय ज्ञान-विज्ञानकें अन्तर्राष्ट्रीय जगतमे प्रतिष्ठित कएलनि। 1203 ई. मे एहि विश्वविद्यालयके मुसलमान आक्रान्ता बख्तियार खिजली एकरा नष्ट कए देलनि। अनेको बौद्ध भिक्षुक सामूहिक नसंहार कएल। एकर पुस्तकालयकें जरा देल गेल। एहिठाम हजारों बौद्ध धर्मावलम्बी प्रत्येक वर्ष अबैत छथि।

सुल्तानगंजक अजगैबीनाथ मंदिरक राजा शशांक द्वारा स्थापित अछि। ई मंदिर 16वीं शताब्दीमे हसाय भारती नामक सन्यासी द्वारा बनाओल गेल छल। एहिठाम उत्तर वाहिनी गंगा बहैत छथि। एहिठामसँ अनेकों बौद्ध प्रतिमा भेटल अछि। ओ प्रतिमा सम्प्रति वर्मिघम संग्रहालय (इंग्लैण्ड), ब्रिटिश म्यूजियम (लंदन) एवं एशियन आर्ट म्यूजियम (सैन फ्रांसिस्को) के शोभा बढ़ा रहल अछि। एकर अतिरिक्त मुरली पहाड़ी पर स्थित शिलामूर्ति खंड देखबा लेल इस्लाम धर्माबलम्बी सेहो अबैत छथि। एहि तरहें देखैत छी तऽ सुल्तानगंज एके संग हिंदू, बौद्ध, ओ इस्लाम धर्मक पवित्र स्थल अछि। भागलपुरक कुप्पाघाट महर्षि मेंहीक तपस्थली अछि। ओतहि एक प्राचीन सुरंग सेहो अछि जे मुंगेर घाट पर निकलैत अछि। भागलपुर सँ 70 कि.मी. पर भीम बांध खड़गपुर झील सेहो पर्यटक स्थल अछि। जाहिठाम गर्म जलक प्राकृतिक झरना अछि। महार गिरि जकर सम्बन्ध समुद्र मंथनसँ अछि। ओहिके उपर माधव गुप्त कालक आदित्य सेन नृसिंहदेव प्रतिमा स्थापित करबौने छथि। ओकरा तलहटीमे रानी कोष्णा देवी पलहरनी नहर खुनौलनि। जैन धर्मक वासुपुज्यक जन्मस्थली सेहो अछि जे 12हम तीर्थंकर छलाह। भगवान महावीर सेहो चम्पामे बहुत समय धरि रहलाह। जैनधर्मक पंचकल्याण मंदिर अवस्थित होएबाक कारणें हजारों धर्मावलम्बी अबैत छथि। चम्पानगरक बिहुला मंदिर एवं ओहिठामक मंनुषा कला (रेशम उद्योग) पर्यटककें आकर्षित करैत आबि रहल अछि। बिहुला-विषहरिक प्रेम कथा अध्यात्मिक उन्नतिक पर्व बनि गेल। शहकंड स्थित शशांक कालीन गिरिवर नाथ मंदिर दर्शनीय अछि। कहलगांव वटेश्वर स्थान, लखीसरायक श्रृंगी ऋषिक आश्रम, मुंगेरक किला, योगाश्रम, कृष्णगढ़क किला, गौरीपुरक शिवलिंग जकरा साढ़े तीन हजार वर्ष पुरातत्ववेत्ता मानलनि अछि, दर्शनीय थिक। गौरीपुरक मंदिर मे शिव-पार्वती मूर्ति 1200 साल पुरान अछि। ओहिठाम एक कूप अछि जकर पानि मीठ एवं दुधिया रहैछ।

बेगुसराय सर्किट : ऐतिहासिक स्थलमे अछि जयमंगला गढ़- एहि ठाम गौतम बुद्ध राजगीरसँ जन्मभूमि जयबाकाल जलमार्ग सँ 'अपण नियम' (जलधारासँ घेरल बाजार)क चर्चा बौद्ध साहित्यमे कएल गेल अछि। बुद्ध एहि स्थान पर रुकि अपन शिष्य लोकनिकें उपदेश देने छलाह। ओ एतहि बौद्ध धर्मक विनयमक (विनय पिटक) एक अध्यायक रचना कएल। एहि ठाम एक बौद्ध विद्यापीठ सेहो छल, जाहिमे 'शैल एवं केलय' नामक बौद्धभिक्षु छलाह। एहि बातक पुष्टि राहुल सांस्कृत्यायन द्वारा रचित 'त्रिपद' सँ होइत अछि। नदीक संगम स्थल होएबाक कारणें एहिठाम व्यापारी लोकनि ठहरैत छलाह। तें एहिठाम नीक बाजार सेहो लगैत छलैक। ठहरबाक सेहो उत्तम व्यवस्था छलैक। जयमंगलागढ़ शाक्त तांत्रिकक गढ़ सम्प्रतियों अछि। एही ठाम 'काँवर झील' ई झील एशिया महादेशक प्रसिद्ध झीलमे सँ एक अछि। मंगलादेवीक संग एहिठाम नवग्रहक देवी देवता छथि। खेतमे प्राप्त नवग्रह मूर्ति सम्प्रति बेगूसराय संग्रहालयमे अछि।

मसुरियाडीह : एहि ठाम सँ गुप्तकालीन मुहर प्राप्त भेल छल। जाहिमे एक भाग त्रिशूल एवं दोसर भाग मे समुद्र अंकित अछि जे शैव धर्म प्रधान प्रशासनिक केंद्रक द्योतक अछि।

नौलागढ़ : गेरुआ रंगक मृदंगम एवं मूर्ति, चांदीक सिक्का तथा नादवाला कूप (छोट इनार) भेटल, जे गुप्तकालीन शासनक संकेत दैत अछि।

वरैयपुर (बीहट) : एहिठाम कारी कशौटी (सिलेटी) पाथरक आदमकद सूर्य प्रतिमा एवं विशालकाय बसहा पालकालीन सभ्यता प्रतीक मानल जाइत अछि।

सिंघौलक : एक टिला पर एक चबुतरा पर चारि बौद्ध स्तूपक भग्नावशेष प्राप्त भेल, जे बौद्धकालीन होएबाक संकेत अछ। एहिठाम एक बौद्ध विहारक भग्नावशेष सेहो अछि।

बरैयापुर : एहिठाम कारी पाथरक मूर्ति, चौकठि, खिड़की एवं असोराक स्तम्भ आदि प्राप्त भेल अछि। खुदाइ मे माटिक बनल हरिअर रंगक बर्तन सेहो प्राप्त भेल जे मुगल कालीन बुझना जाइछ। (सहारा-15/4/1998)

वीर पुर : एहिठामसँ प्राप्त शिवलिंग नौलागढ़ पंचायतक मक्ख ग्राम मे स्थापित अछि जाहिमेसँ सतत एक प्रकारक सुगन्ध बहराइत छैक जे भक्त केर मन मोहि लैत अछि।

पचम्बा : एहिठामसँ चामुण्डा देवीक मूर्ति प्राप्त भेल अछि। मुंगेरक माँ चण्डिकाक मंदिर अति प्रसिद्ध अछि। शारदीय नवरात्रामे रातिक बारह बजेसँ लोक गंगाक **कष्टहरणी** घाट सँ स्नान कए दू पात्रमे गंगाजल भरि बोल बम करैत एक पात्रक जल माँक नेत्र पर चढबैत अछि आ दोसर पात्रक जल बड़का दुर्गा महारानीक मंदिरमे चढ़बैत अछि। ई क्रम राति बारह बजे सँ भोर धरि चलैछ। माँ सतीक नेत्र एहिठाम खसल छनि। राजा कर्णक यैह आराध्य देवी छलथिन।

समस्तीपुर सर्किट : सिमरिया भिण्डी, कल्याणपुर-महिषासुर मर्दिनी, उमामहेश्वर एवं विशाल सूर्यक मूर्ति अछि। वसुदेव विष्णुक मूर्ति जाहि पर शिलालेख छैक।

अतिरिक्त देवना डीह, गोरही, नरपतगंजक निकट धरहारामे भीमशंकर महदेव मंदिर भीमाशंकरक स्मरण करबैत अछि। एकर अतिरिक्त लोरिक, चनैनक कर्मभूमि हरदी, कारी, खिरहरी एही ठामक छलाह। सहरसासँ दक्षिण दिवारी गांवमे आदि शक्ति विषहरीक मंदिर तथा मत्स्यगंधा परिसरक बगलमे रक्त काली मंदिरक अपन अलग महिमा छनि।

भागलपुर पर्यटन सर्किट : भागलपुर सर्किटमे केवल हिन्दूधर्मक नहि अपितु जैन, बौद्ध एवं इस्लाम धर्मक अनेक तीर्थ स्थल विद्यमान अछि। भागलपुरसँ 40 कि.मी. दूर विक्रमशिला विश्वविद्यालय जे पूर्वमे बौद्ध विहार सेहो छल। विक्रमशिला विश्वविद्यालय स्थापना पाल नरेश धर्मपाल (775-800) करबौने छलाह। ई विश्वक पांच शिक्षापीठमे एक छल। एहिठाम आचार्य भारतीय ज्ञान-विज्ञानकें अन्तर्राष्ट्रीय जगतमे प्रतिष्ठित कएलनि। 1203 ई. मे एहि विश्वविद्यालयके मुसलमान आक्रान्ता बख्तियार खिजली एकरा नष्ट कए देलनि। अनेको बौद्ध भिक्षुक सामूहिक नसंहार कएल। एकर पुस्तकालयकें जरा देल गेल। एहिठाम हजारों बौद्ध धर्मावलम्बी प्रत्येक वर्ष अबैत छथि।

सुल्तानगंजक अजगैबीनाथ मंदिरक राजा शशांक द्वारा स्थापित अछि। ई मंदिर 16वीं शताब्दीमे हसाय भारती नामक सन्यासी द्वारा बनाओल गेल छल। एहिठाम उत्तर वाहिनी गंगा बहैत छथि। एहिठामसँ अनेकों बौद्ध प्रतिमा भेटल अछि। ओ प्रतिमा सम्प्रति वर्मिघम संग्रहालय (इंग्लैण्ड), ब्रिटिश म्यूजियम (लंदन) एवं एशियन आर्ट म्यूजियम (सैन फ्रांसिस्को) के शोभा बढ़ा रहल अछि। एकर अतिरिक्त मुरली पहाड़ी पर स्थित शिलामूर्ति खंड देखबा लेल इस्लाम धर्माबलम्बी सेहो अबैत छथि। एहि तरहें देखैत छी तऽ सुल्तानगंज एके संग हिंदू, बौद्ध, ओ इस्लाम धर्मक पवित्र स्थल अछि। भागलपुरक कुप्पाघाट महर्षि मेंहीक तपस्थली अछि। ओतहि एक प्राचीन सुरंग सेहो अछि जे मुंगेर घाट पर निकलैत अछि। भागलपुर सँ 70 कि.मी. पर भीम बांध खड़गपुर झील सेहो पर्यटक स्थल अछि। जाहिठाम गर्म जलक प्राकृतिक झरना अछि। महार गिरि जकर सम्बन्ध समुद्र मंथनसँ अछि। ओहिके उपर माधव गुप्त कालक आदित्य सेन नृसिंहदेव प्रतिमा स्थापित करबौने छथि। ओकरा तलहटीमे रानी कोष्णा देवी पलहरनी नहर खुनौलनि। जैन धर्मक वासुपुज्यक जन्मस्थली सेहो अछि जे 12हम तीर्थंकर छलाह। भगवान महावीर सेहो चम्पामे बहुत समय धरि रहलाह। जैनधर्मक पंचकल्याण मंदिर अवस्थित होएबाक कारणें हजारों धर्मावलम्बी अबैत छथि। चम्पानगरक बिहुला मंदिर एवं ओहिठामक मंनुषा कला (रेशम उद्योग) पर्यटककें आकर्षित करैत आबि रहल अछि। बिहुला-विषहरिक प्रेम कथा अध्यात्मिक उन्नतिक पर्व बनि गेल। शहकंड स्थित शशांक कालीन गिरिवर नाथ मंदिर दर्शनीय अछि। कहलगांव वटेश्वर स्थान, लखीसरायक श्रृंगी ऋषिक आश्रम, मुंगेरक किला, योगाश्रम, कृष्णगढ़क किला, गौरीपुरक शिवलिंग जकरा साढ़े तीन हजार वर्ष पुरातत्ववेत्ता मानलनि अछि, दर्शनीय थिक। गौरीपुरक मंदिर मे शिव-पार्वती मूर्ति 1200 साल पुरान अछि। ओहिठाम एक कूप अछि जकर पानि मीठ एवं दुधिया रहैछ।

बेगुसराय सर्किट : ऐतिहासिक स्थलमे अछि जयमंगला गढ़- एहि ठाम गौतम बुद्ध राजगीरसँ जन्मभूमि जयबाकाल जलमार्ग सँ 'अपण नियम' (जलधारासँ घेरल बाजार)क चर्चा बौद्ध साहित्यमे कएल गेल अछि। बुद्ध एहि स्थान पर रुकि अपन शिष्य लोकनिकें उपदेश देने छलाह। ओ एतहि बौद्ध धर्मक विनयमक (विनय पिटक) एक अध्यायक रचना कएल। एहि ठाम एक बौद्ध विद्यापीठ सेहो छल, जाहिमे 'शैल एवं केलय' नामक बौद्धभिक्षु छलाह। एहि बातक पुष्टि राहुल सांस्कृत्यायन द्वारा रचित 'त्रिपद' सँ होइत अछि। नदीक संगम स्थल होएबाक कारणें एहिठाम व्यापारी लोकनि ठहरैत छलाह। तें एहिठाम नीक बाजार सेहो लगैत छलैक। ठहरबाक सेहो उत्तम व्यवस्था छलैक। जयमंगलागढ़ शाक्त तांत्रिकक गढ़ सम्प्रतियों अछि। एही ठाम 'काँवर झील' ई झील एशिया महादेशक प्रसिद्ध झीलमे सँ एक अछि। मंगलादेवीक संग एहिठाम नवग्रहक देवी देवता छथि। खेतमे प्राप्त नवग्रह मूर्ति सम्प्रति बेगूसराय संग्रहालयमे अछि।

मसुरियाडीह : एहि ठाम सँ गुप्तकालीन मुहर प्राप्त भेल छल। जाहिमे एक भाग त्रिशूल एवं दोसर भाग मे समुद्र अंकित अछि जे शैव धर्म प्रधान प्रशासनिक केंद्रक द्योतक अछि।

नौलागढ़ : गेरुआ रंगक मृदंगम एवं मूर्ति, चांदीक सिक्का तथा नादवाला कूप (छोट इनार) भेटल, जे गुप्तकालीन शासनक संकेत दैत अछि।

वरैयपुर (बीहट) : एहिठाम कारी कशौटी (सिलेटी) पाथरक आदमकद सूर्य प्रतिमा एवं विशालकाय बसहा पालकालीन सभ्यता प्रतीक मानल जाइत अछि।

सिंघौलक : एक टिला पर एक चबुतरा पर चारि बौद्ध स्तूपक भग्नावशेष प्राप्त भेल, जे बौद्धकालीन होएबाक संकेत अछ। एहिठाम एक बौद्ध विहारक भग्नावशेष सेहो अछि।

बरैयापुर : एहिठाम कारी पाथरक मूर्ति, चौकठि, खिड़की एवं असोराक स्तम्भ आदि प्राप्त भेल अछि। खुदाइ मे माटिक बनल हरिअर रंगक बर्तन सेहो प्राप्त भेल जे मुगल कालीन बुझना जाइछ। (सहारा-15/4/1998)

वीर पुर : एहिठामसँ प्राप्त शिवलिंग नौलागढ़ पंचायतक मक्ख ग्राम मे स्थापित अछि जाहिमेसँ सतत एक प्रकारक सुगन्ध बहराइत छैक जे भक्त केर मन मोहि लैत अछि।

पचम्बा : एहिठामसँ चामुण्डा देवीक मूर्ति प्राप्त भेल अछि। मुंगेरक माँ चण्डिकाक मंदिर अति प्रसिद्ध अछि। शारदीय नवरात्रामे रातिक बारह बजेसँ लोक गंगाक **कष्टहरणी** घाट सँ स्नान कए दू पात्रमे गंगाजल भरि बोल बम करैत एक पात्रक जल माँक नेत्र पर चढबैत अछि आ दोसर पात्रक जल बड़का दुर्गा महारानीक मंदिरमे चढ़बैत अछि। ई क्रम राति बारह बजे सँ भोर धरि चलैछ। माँ सतीक नेत्र एहिठाम खसल छनि। राजा कर्णक यैह आराध्य देवी छलथिन।

समस्तीपुर सर्किट : सिमरिया भिण्डी, कल्याणपुर-महिषासुर मर्दिनी, उमामहेश्वर एवं विशाल सूर्यक मूर्ति अछि। वसुदेव विष्णुक मूर्ति जाहि पर शिलालेख छैक।

अतिरिक्त देवना डीह, गोरही, नरपतगंजक निकट धरहारामे भीमशंकर महदेव मंदिर भीमाशंकरक स्मरण करबैत अछि। एकर अतिरिक्त लोरिक, चनैनक कर्मभूमि हरदी, कारी, खिरहरी एही ठामक छलाह। सहरसासँ दक्षिण दिवारी गांवमे आदि शक्ति विषहरीक मंदिर तथा मत्स्यगंधा परिसरक बगलमे रक्त काली मंदिरक अपन अलग महिमा छनि।

भागलपुर पर्यटन सर्किट : भागलपुर सर्किटमे केवल हिन्दूधर्मक नहि अपितु जैन, बौद्ध एवं इस्लाम धर्मक अनेक तीर्थ स्थल विद्यमान अछि। भागलपुरसँ 40 कि.मी. दूर विक्रमशिला विश्वविद्यालय जे पूर्वमे बौद्ध विहार सेहो छल। विक्रमशिला विश्वविद्यालय स्थापना पाल नरेश धर्मपाल (775-800) करबौने छलाह। ई विश्वक पांच शिक्षापीठमे एक छल। एहिठाम आचार्य भारतीय ज्ञान-विज्ञानकें अन्तर्राष्ट्रीय जगतमे प्रतिष्ठित कएलनि। 1203 ई. मे एहि विश्वविद्यालयके मुसलमान आक्रान्ता बख्तियार खिजली एकरा नष्ट कए देलनि। अनेको बौद्ध भिक्षुक सामूहिक नसंहार कएल। एकर पुस्तकालयकें जरा देल गेल। एहिठाम हजारों बौद्ध धर्मावलम्बी प्रत्येक वर्ष अबैत छथि।

सुल्तानगंजक अजगैबीनाथ मंदिरक राजा शशांक द्वारा स्थापित अछि। ई मंदिर 16वीं शताब्दीमे हसाय भारती नामक सन्यासी द्वारा बनाओल गेल छल। एहिठाम उत्तर वाहिनी गंगा बहैत छथि। एहिठामसँ अनेकों बौद्ध प्रतिमा भेटल अछि। ओ प्रतिमा सम्प्रति वर्मिघम संग्रहालय (इंग्लैण्ड), ब्रिटिश म्यूजियम (लंदन) एवं एशियन आर्ट म्यूजियम (सैन फ्रांसिस्को) के शोभा बढ़ा रहल अछि। एकर अतिरिक्त मुरली पहाड़ी पर स्थित शिलामूर्ति खंड देखबा लेल इस्लाम धर्माबलम्बी सेहो अबैत छथि। एहि तरहें देखैत छी तऽ सुल्तानगंज एके संग हिंदू, बौद्ध, ओ इस्लाम धर्मक पवित्र स्थल अछि। भागलपुरक कुप्पाघाट महर्षि मेंहीक तपस्थली अछि। ओतहि एक प्राचीन सुरंग सेहो अछि जे मुंगेर घाट पर निकलैत अछि। भागलपुर सँ 70 कि.मी. पर भीम बांध खड़गपुर झील सेहो पर्यटक स्थल अछि। जाहिठाम गर्म जलक प्राकृतिक झरना अछि। महार गिरि जकर सम्बन्ध समुद्र मंथनसँ अछि। ओहिके उपर माधव गुप्त कालक आदित्य सेन नृसिंहदेव प्रतिमा स्थापित करबौने छथि। ओकरा तलहटीमे रानी कोष्णा देवी पलहरनी नहर खुनौलनि। जैन धर्मक वासुपुज्यक जन्मस्थली सेहो अछि जे 12हम तीर्थंकर छलाह। भगवान महावीर सेहो चम्पामे बहुत समय धरि रहलाह। जैनधर्मक पंचकल्याण मंदिर अवस्थित होएबाक कारणें हजारों धर्मावलम्बी अबैत छथि। चम्पानगरक बिहुला मंदिर एवं ओहिठामक मंनुषा कला (रेशम उद्योग) पर्यटककें आकर्षित करैत आबि रहल अछि। बिहुला-विषहरिक प्रेम कथा अध्यात्मिक उन्नतिक पर्व बनि गेल। शहकंड स्थित शशांक कालीन गिरिवर नाथ मंदिर दर्शनीय अछि। कहलगांव वटेश्वर स्थान, लखीसरायक श्रृंगी ऋषिक आश्रम, मुंगेरक किला, योगाश्रम, कृष्णगढ़क किला, गौरीपुरक शिवलिंग जकरा साढ़े तीन हजार वर्ष पुरातत्ववेत्ता माननलि अछि, दर्शनीय थिक। गौरीपुरक मंदिर मे शिव-पार्वती मूर्ति 1200 साल पुरान अछि। ओहिठाम एक कूप अछि जकर पानि मीठ एवं दुधिया रहैछ।

बेगुसराय सर्किट : ऐतिहासिक स्थलमे अछि जयमंगला गढ़- एहि ठाम गौतम बुद्ध राजगीरसँ जन्मभूमि जयबाकाल जलमार्ग सँ 'अपण नियम' (जलधारासँ घेरल बाजार)क चर्चा बौद्ध साहित्यमे कएल गेल अछि। बुद्ध एहि स्थान पर रुकि अपन शिष्य लोकनिकें उपदेश देने छलाह। ओ एतहि बौद्ध धर्मक विनयमक (विनय पिटक) एक अध्यायक रचना कएल। एहि ठाम एक बौद्ध विद्यापीठ सेहो छल, जाहिमे 'शैल एवं केलय' नामक बौद्धभिक्षु छलाह। एहि बातक पुष्टि राहुल सांस्कृत्यायन द्वारा रचित 'त्रिपद' सँ होइत अछि। नदीक संगम स्थल होएबाक कारणें एहिठाम व्यापारी लोकनि ठहरैत छलाह। तें एहिठाम नीक बाजार सेहो लगैत छलैक। ठहरबाक सेहो उत्तम व्यवस्था छलैक। जयमंगलागढ़ शाक्त तांत्रिकक गढ़ सम्प्रतियों अछि। एही ठाम 'काँवर झील' ई झील एशिया महादेशक प्रसिद्ध झीलमे सँ एक अछि। मंगलादेवीक संग एहिठाम नवग्रहक देवी देवता छथि। खेतमे प्राप्त नवग्रह मूर्ति सम्प्रति बेगूसराय संग्रहालयमे अछि।

मसुरियाडीह : एहि ठाम सँ गुप्तकालीन मुहर प्राप्त भेल छल। जाहिमे एक भाग त्रिशूल एवं दोसर भाग मे समुद्र अंकित अछि जे शैव धर्म प्रधान प्रशासनिक केंद्रक द्योतक अछि।

नौलागढ़ : गेरुआ रंगक मृदंगम एवं मूर्ति, चांदीक सिक्का तथा नादवाला कूप (छोट इनार) भेटल, जे गुप्तकालीन शासनक संकेत दैत अछि।

वरैयपुर (बीहट) : एहिठाम कारी कशौटी (सिलेटी) पाथरक आदमकद सूर्य प्रतिमा एवं विशालकाय बसहा पालकालीन सभ्यता प्रतीक मानल जाइत अछि।

सिंघौलक : एक टिला पर एक चबुतरा पर चारि बौद्ध स्तूपक भग्नावशेष प्राप्त भेल, जे बौद्धकालीन होएबाक संकेत अछ। एहिठाम एक बौद्ध विहारक भग्नावशेष सेहो अछि।

बरैयापुर : एहिठाम कारी पाथरक मूर्ति, चौकठि, खिड़की एवं असोराक स्तम्भ आदि प्राप्त भेल अछि। खुदाइ मे माटिक बनल हरिअर रंगक बर्तन सेहो प्राप्त भेल जे मुगल कालीन बुझना जाइछ। (सहारा-15/4/1998)

वीर पुर : एहिठामसँ प्राप्त शिवलिंग नौलागढ़ पंचायतक मक्ख ग्राम मे स्थापित अछि जाहिमेसँ सतत एक प्रकारक सुगन्ध बहराइत छैक जे भक्त केर मन मोहि लैत अछि।

पचम्बा : एहिठामसँ चामुण्डा देवीक मूर्ति प्राप्त भेल अछि। मुंगेरक माँ चण्डिकाक मंदिर अति प्रसिद्ध अछि। शारदीय नवरात्रामे रातिक बारह बजेसँ लोक गंगाक **कष्टहरणी** घाट सँ स्नान कए दू पात्रमे गंगाजल भरि बोल बम करैत एक पात्रक जल माँक नेत्र पर चढबैत अछि आ दोसर पात्रक जल बड़का दुर्गा महारानीक मंदिरमे चढ़बैत अछि। ई क्रम राति बारह बजे सँ भोर धरि चलैछ। माँ सतीक नेत्र एहिठाम खसल छनि। राजा कर्णक यैह आराध्य देवी छलथिन।

समस्तीपुर सर्किट : सिमरिया भिण्डी, कल्याणपुर-महिषासुर मर्दिनी, उमामहेश्वर एवं विशाल सूर्यक मूर्ति अछि। वसुदेव विष्णुक मूर्ति जाहि पर शिलालेख छैक।

परोरिया भरिहर : दलसिंहसरायसँ 6 कि.मी. पाण्डवडीह जाहिठामसँ कुषाणकालीन पाण्डव नगरक अवशेष भेटल अछि। ईटाक बनल पानि रखबाक टंकी, ब्रह्मीलिपिक अभिलेख जाहिमे धमिकस खुदल अछि। ओहि समयक राजाक चित्र ताम्बाक सिक्का पर उकेरल अछि। लालमृदभांड सुनहला, कारी, बैगनी, नीला रंगक ई.पू. 3500 सँ 200 वर्ष पूर्वक अछि। ई स्थान वैलिराजगढ़, मधुबनी, एवं कटरा-मुजफ्फरपुर सँ प्राचीन बुझना जाइछ। एकरे बगलमे सोठगामा एवं कमरावस्थित डीह सेहो अवस्थित अछि।

वारी : सिंघिया-कुशेश्वर पथ पर बसौलीसँ उत्तर अछि वारी। एक प्राचीन मंदिरक अवशेष अछि जकरा ऋषि-मुनिक स्थान कहल जाइछ। एहिठामक मंदिरमे सहस्रमुख शिवलिंगक अतिरिक्त अनेको शिवलिंग अछि। (सौ. पाथर पर लिखल मिथिलाक इतिहास-सत्यार्थी-36)

खदमेश्वर : महादेवक मंदिर मोरवा थानेश्वर महादेव समस्तीपुरमे अछि।

पतैली : उजियापुरक पतैली गाँव ऋषि पंतजलि ओ महर्षि धौम्मक कर्मभूमिक रूपमे चर्चित लहेरी टोलक माँ सिद्धिदात्री भगवतीक मंदिर।

रोसड़ा : सं. 12 लक्ष्मीपुर मुहल्ला मे 200 वर्षक वटवृक्ष जड़ि सँ प्राप्त बुद्धकालीन शिलालेख जाहिपर बुद्धक प्रतिमाकारी रंगक नीचामे सुन्दर नक्कासीक संग छोट-छोट अन्य मूर्ति सब उकेरल अछि।

हथौड़ी कोठी : उजियारपुरक दक्षिण बाबा बोधवलि स्थान अछि। मन्नीपुर-वारिसनगर प्रखण्डक भगवती मंदिर।

उजियारपुर : कमला ओ प्रवासी पक्षीक अभयारण्यक अनुपम दृश्य उपस्थित करैछ।

घोघीगांव : सरायरंजन सँ 4 कि.मी. दक्षिण शाहजहाँकालीन राम-जानकी मंदिर 360 झोपरपट्टीमे अवस्थित 700 एकड़ मे फैलल अछि। एहि मंदिरक शाखा-अमरौली, चकबा, चकसिकन्दर, मधुबनी जिलाक महादेव पट्टी गांव एवं नेपाल ओ उत्तर प्रदेशक अनेको स्थानमे पसरल अछि।

किसनपुर मालीडीह : पोखरिक उराही मे यक्षिणी, भगवानबुद्ध, राम, हनुमान, लक्ष्मण, सीता, ताम्र प्रतिमा सब प्राप्त भेल छल। ईंटा 18 ईंच लंबा 12 ईंच चौड़ा अछि। आंटा पीसऽ बाला जांत, मांटिक घैल। ओखरा सँ 2 कि.मी. पश्चिम मे खालिसपुर स्थित चौर मे धनवारा डीह अछि। खिजली वंश (1290-1320) द्वारा एहि गढ़कें ध्वस्त कएल गेल हो से अनुमान अछि। एकरे बगलमे अछि- फतेहपुर डीह। एकरे बगल सँ नाग, गणेश एवं हनुमाजीक प्रतिमा प्राप्त भेल। रोसड़ा सतीमाइक मंदिर 1600 ई. मे निर्मित अछि।

शक्तिपीठ सर्किट (दरभंगा, मधुबनी)

अहल्यास्थान- कमतौल, उच्चैठ, भगवती बेनीपट्टी, अकौरक भगवती, कालिकापुरक कालीस्थान, गिरिजास्थान, फुलहर दक्षिणेश्वर काली-राजनगर, राजेशश्वरी-बहरवन, खजौली कामाख्या मंदिर-राजनगर, मधुबनीक भगवती मंगरौनीक बूढ़ी माइ, भगवतीपुरक-महिषासुर मर्दिनी, नाहरक दुर्गा, कोइलखक-कोकिलाक्षी देवी, सखेश्वरीक छिन्नमस्तिका, सखड़ा निर्मली, मकरंदाक वाणेश्वरी मंदिर, नवादाक हैहट देवी, कंकाली मंदिर राजपरिसर दरभंगा, मलेक्षमर्दिनी मंदिर-दरभंगा, श्यामा मंदिर परिसर-दरभंगाकें लेल जा सकैछ।

शैव सर्किट : गाण्डवेश्वर स्थान शिवनगर, वाणेश्वर स्थान मधवापुर, दक्षनेश्वर स्थान-उत्तरा, सोमेश्वर स्थान-सौराठ, कलनाक महादेव, मधुबनीक महादेव, एकादश रुद्र-मंगरौनी, राजनगरक शिवमंदिर, देवहारक स्थान, बुरआरक महोदव, विदेश्वर स्थान हैंठीवालीक, धूमवाला महादेव, हुलास पट्टी-घोघरडीहाक गौरी शंकर मंदिर झंझारपुरक नाहर भगवतीपुरक-भुवनेश्वर स्थान- (अयाचीक वंशज वैद्यनाथक रूपमे हिनके पूजैत छथि।) नवादाक महादेव, अकौरक पंचानन, हनुमान नगर, नदौईस विरौल, देवकुली, बलिया, पोखराम, लगमा, परड़ी, माधवेश्वर स्थान, कपिलेश्वर स्थान, माधवेश्वर स्थान-दरभंगा।

ऐतिहासिक गांव एवं डीह : श्रृंगी ऋषिक डीह-सिंहिया-टेकटायर, गौतम-अहल्याक डीह अहल्यास्थान, कमतौल याज्ञवल्क्क डीह यगवन, कालीदासक डीह उच्चैठ भगवती, विद्यापतिक डीह-विस्फी, अकौर, भौरा-मधुबनी, राजनगर बलिराजगढ़, बाबूबरही, पस्टन-अन्धराठाढ़ी, वाचस्पतिक डीह, अयाचीक डीह-सरिसवपाही कदपीधाम झंझारपुर, नागार्जुनक डीह-तरौनी, चन्दाझाक डीह-पिण्डारुच, भीठ भगवानपुर, तिलकेश्वरगढ़, कर्णपुगढ़, मालीडीह, सनैयाडीह, समौल, गौनू झाक डीह, भरवाड़ा। दरभंगाक पोखड़ि, दरभंगाक म्यूजियम, चन्द्रधारी म्यूजियम, लक्ष्मेश्वर म्यूजियम, ललितनारायण मिथिला विश्वविद्यालय म्यूजियम, कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय म्यूजियम, मिथिलाशोध संस्थान, कवराघाट एवं राजपरिसर के बनाओल जा सकैछ।

कामरिया सर्किट : सुल्तानगंज सँ देवघर जाहिमे 70 प्रतिशत कावरिया मिथिला ओ नेपालक रहैत छथि। मिथिलाक अहेन परिवार नहि जाहि घरसँ प्रत्येक वर्ष ओ लोकनि नहि जाइत होथि। एहि पथकें सेहो विकसित करैत सरकारी स्तर पर जेना जम्मू-कटरा सँ वैष्णव देवीक यात्रा होइत अछि औद्योगिक क्षेत्र बनाओल जा सकैछ।

एहि तरहें हम देखैत छी जे यदि मिथिलाक धार्मिक, ऐतिहासिक स्थलकें सरकार द्वारा पर्यटनक दृष्टिकोणसँ सौन्दर्यीकरण एवं स्थल तक पहुंचबाक लेल समुचित साधन एवं सुरक्षाक भार सरकारी स्तर पर होइक तऽ निश्चित रूपसँ ई क्षेत्र विश्वक मानचित्र पर उभरिकऽ आओत। विश्वक पर्यटकक आगमन हेतैक एहि भूभागक गरिमा सेहो बढ़तैक आ एहि ठामक लोकक आर्थिक क्षमता सेहो मजबूत हेतैक, संगहि पर्यटन उद्योगक विकसित स्वरूप राष्ट्रीय स्तर पर भऽ सकत।

- स्नातकोत्तर साहित्य विभाग
का.सिं.द. संस्कृत विश्वविद्यालय,
दरभंगा
मो. -9430849752

परोरिया भरिहर : दलसिंहसरायसँ 6 कि.मी. पाण्डवडीह जाहिठामसँ कुषाणकालीन पाण्डव नगरक अवशेष भेटल अछि। ईटाक बनल पानि रखबाक टंकी, ब्रह्मीलिपिक अभिलेख जाहिमे धमिकस खुदल अछि। ओहि समयक राजाक चित्र ताम्बाक सिक्का पर उकेरल अछि। लालमृदभांड सुनहला, कारी, बैगनी, नीला रंगक ई.पू. 3500 सँ 200 वर्ष पूर्वक अछि। ई स्थान वैलिराजगढ़, मधुबनी, एवं कटरा-मुजफ्फरपुर सँ प्राचीन बुझना जाइछ। एकरे बगलमे सोठगामा एवं कमरावस्थित डीह सेहो अवस्थित अछि।

वारी : सिंघिया-कुशेश्वर पथ पर बसौलीसँ उत्तर अछि वारी। एक प्राचीन मंदिरक अवशेष अछि जकरा ऋषि-मुनिक स्थान कहल जाइछ। एहिठामक मंदिरमे सहस्रमुख शिवलिंगक अतिरिक्त अनेको शिवलिंग अछि। (सौ. पाथर पर लिखल मिथिलाक इतिहास-सत्यार्थी-36)

खदमेश्वर : महादेवक मंदिर मोरवा थानेश्वर महादेव समस्तीपुरमे अछि।

पतैली : उजियापुरक पतैली गाँव ऋषि पंतजलि ओ महर्षि धौम्मक कर्मभूमिक रूपमे चर्चित लहेरी टोलक माँ सिद्धिदात्री भगवतीक मंदिर।

रोसड़ा : सं. 12 लक्ष्मीपुर मुहल्ला मे 200 वर्षक वटवृक्ष जड़ि सँ प्राप्त बुद्धकालीन शिलालेख जाहिपर बुद्धक प्रतिमाकारी रंगक नीचामे सुन्दर नक्कासीक संग छोट-छोट अन्य मूर्ति सब उकेरल अछि।

हथौड़ी कोठी : उजियारपुरक दक्षिण बाबा बोधवलि स्थान अछि। मन्नीपुर-वारिसनगर प्रखण्डक भगवती मंदिर।

उजियारपुर : कमला ओ प्रवासी पक्षीक अभयारण्यक अनुपम दृश्य उपस्थित करैछ।

घोघीगांव : सरायरंजन सँ 4 कि.मी. दक्षिण शाहजहाँकालीन राम-जानकी मंदिर 360 झोपरपट्टीमे अवस्थित 700 एकड़ मे फैलल अछि। एहि मंदिरक शाखा-अमरौली, चकबा, चकसिकन्दर, मधुबनी जिलाक महादेव पट्टी गांव एवं नेपाल ओ उत्तर प्रदेशक अनेको स्थानमे पसरल अछि।

किसनपुर मालीडीह : पोखरिक उराही मे यक्षिणी, भगवानबुद्ध, राम, हनुमान, लक्ष्मण, सीता, ताम्र प्रतिमा सब प्राप्त भेल छल। ईंटा 18 ईच लंबा 12 ईच चौड़ा अछि। आंटा पीसऽ बाला जांत, मांटिक घैल। ओखरा सँ 2 कि.मी. पश्चिम मे खालिसपुर स्थित चौर मे धनवारा डीह अछि। खिजली वंश (1290-1320) द्वारा एहि गढ़कें ध्वस्त कएल गेल हो से अनुमान अछि। एकरे बगलमे अछि- फतेहपुर डीह। एकरे बगल सँ नाग, गणेश एवं हनुमाजीक प्रतिमा प्राप्त भेल। रोसड़ा सतीमाइक मंदिर 1600 ई. मे निर्मित अछि।

शक्तिपीठ सर्किट (दरभंगा, मधुबनी)

अहल्यास्थान- कमतौल, उच्चैठ, भगवती बेनीपट्टी, अकौरक भगवती, कालिकापुरक कालीस्थान, गिरिजास्थान, फुलहर दक्षिणेश्वर काली-राजनगर, राजेशश्वरी-बहरवन, खजौली कामाख्या मंदिर-राजनगर, मधुबनीक भगवती मंगरौनीक बूढ़ी माइ, भगवतीपुरक-महिषासुर मर्दिनी, नाहरक दुर्गा, कोइलखक-कोकिलाक्षी देवी, सखेश्वरीक छिन्नमस्तिका, सखड़ा निर्मली, मकरंदाक वाणेश्वरी मंदिर, नवादाक हैहट देवी, कंकाली मंदिर राजपरिसर दरभंगा, मलेक्षमर्दिनी मंदिर-दरभंगा, श्यामा मंदिर परिसर-दरभंगाकें लेल जा सकैछ।

शैव सर्किट : गाण्डवेश्वर स्थान शिवनगर, वाणेश्वर स्थान मधवापुर, दक्षनेश्वर स्थान-उत्तरा, सोमेश्वर स्थान-सौराठ, कलनाक महादेव, मधुबनीक महादेव, एकादश रुद्र-मंगरौनी, राजनगरक शिवमंदिर, देवहारक स्थान, बुरआरक महोदव, विदेश्वर स्थान हैंठीवालीक, धूमवाला महादेव, हुलास पट्टी-घोघरडीहाक गौरी शंकर मंदिर झंझारपुरक नाहर भगवतीपुरक-भुवनेश्वर स्थान- (अयाचीक वंशज वैद्यनाथक रूपमे हिनके पूजैत छथि।) नवादाक महादेव, अकौरक पंचानन, हनुमान नगर, नदौईस विरौल, देवकुली, बलिया, पोखराम, लगमा, परड़ी, माधवेश्वर स्थान, कपिलेश्वर स्थान, माधवेश्वर स्थान-दरभंगा।

ऐतिहासिक गांव एवं डीह : श्रृंगी ऋषिक डीह-सिंहिया-टेकटायर, गौतम-अहल्याक डीह अहल्यास्थान, कमतौल याज्ञवल्क्क डीह यगवन, कालीदासक डीह उच्चैठ भगवती, विद्यापतिक डीह-विस्फी, अकौर, भौरा-मधुबनी, राजनगर बलिराजगढ़, बाबूबरही, पस्टन-अन्धराठाढ़ी, वाचस्पतिक डीह, अयाचीक डीह-सरिसवपाही कदपीधाम झंझारपुर, नागार्जुनक डीह-तरौनी, चन्दाझाक डीह-पिण्डारुच, भीठ भगवानपुर, तिलकेश्वरगढ़, कर्णपुगढ़, मालीडीह, सनैयाडीह, समौल, गौनू झाक डीह, भरवाड़ा। दरभंगाक पोखड़ि, दरभंगाक म्यूजियम, चन्द्रधारी म्यूजियम, लक्ष्मेश्वर म्यूजियम, ललितनारायण मिथिला विश्वविद्यालय म्यूजियम, कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय म्यूजियम, मिथिलाशोध संस्थान, कवराघाट एवं राजपरिसर के बनाओल जा सकैछ।

कामरिया सर्किट : सुल्तानगंज सँ देवघर जाहिमे 70 प्रतिशत कावरिया मिथिला ओ नेपालक रहैत छथि। मिथिलाक अहेन परिवार नहि जाहि घरसँ प्रत्येक वर्ष ओ लोकनि नहि जाइत होथि। एहि पथकें सेहो विकसित करैत सरकारी स्तर पर जेना जम्मू-कटरा सँ वैष्णव देवीक यात्रा होइत अछि औद्योगिक क्षेत्र बनाओल जा सकैछ।

एहि तरहें हम देखैत छी जे यदि मिथिलाक धार्मिक, ऐतिहासिक स्थलकें सरकार द्वारा पर्यटनक दृष्टिकोणसँ सौन्दर्यीकरण एवं स्थल तक पहुंचबाक लेल समुचित साधन एवं सुरक्षाक भार सरकारी स्तर पर होइक तऽ निश्चित रूपसँ ई क्षेत्र विश्वक मानचित्र पर उभरिकऽ आओत। विश्वक पर्यटकक आगमन हेतैक एहि भूभागक गरिमा सेहो बढ़तैक आ एहि ठामक लोकक आर्थिक क्षमता सेहो मजबूत हेतैक, संगहि पर्यटन उद्योगक विकसित स्वरूप राष्ट्रीय स्तर पर भऽ सकत।

- स्नातकोत्तर साहित्य विभाग
का.सिं.द. संस्कृत विश्वविद्यालय,
दरभंगा
मो. -9430849752

परोरिया भरिहर : दलसिंहसरायसँ 6 कि.मी. पाण्डवडीह जाहिठामसँ कुषाणकालीन पाण्डव नगरक अवशेष भेटल अछि। ईटाक बनल पानि रखबाक टंकी, ब्रह्मीलिपिक अभिलेख जाहिमे धमिकस खुदल अछि। ओहि समयक राजाक चित्र ताम्बाक सिक्का पर उकेरल अछि। लालमृदभांड सुनहला, कारी, बैगनी, नीला रंगक ई.पू. 3500 सँ 200 वर्ष पूर्वक अछि। ई स्थान वैलिराजगढ़, मधुबनी, एवं कटरा-मुजफ्फरपुर सँ प्राचीन बुझना जाइछ। एकरे बगलमे सोठगामा एवं कमरावस्थित डीह सेहो अवस्थित अछि।

वारी : सिंघिया-कुशेश्वर पथ पर बसौलीसँ उत्तर अछि वारी। एक प्राचीन मंदिरक अवशेष अछि जकरा ऋषि-मुनिक स्थान कहल जाइछ। एहिठामक मंदिरमे सहस्रमुख शिवलिंगक अतिरिक्त अनेको शिवलिंग अछि। (सौ. पाथर पर लिखल मिथिलाक इतिहास-सत्यार्थी-36)

खदमेश्वर : महादेवक मंदिर मोरवा थानेश्वर महादेव समस्तीपुरमे अछि।

पतैली : उजियापुरक पतैली गाँव ऋषि पंतजलि ओ महर्षि धौम्मक कर्मभूमिक रूपमे चर्चित लहेरी टोलक माँ सिद्धिदात्री भगवतीक मंदिर।

रोसड़ा : सं. 12 लक्ष्मीपुर मुहल्ला मे 200 वर्षक वटवृक्ष जड़ि सँ प्राप्त बुद्धकालीन शिलालेख जाहिपर बुद्धक प्रतिमाकारी रंगक नीचामे सुन्दर नक्कासीक संग छोट-छोट अन्य मूर्ति सब उकेरल अछि।

हथौड़ी कोठी : उजियारपुरक दक्षिण बाबा बोधवलि स्थान अछि। मन्नीपुर-वारिसनगर प्रखण्डक भगवती मंदिर।

उजियारपुर : कमला ओ प्रवासी पक्षीक अभयारण्यक अनुपम दृश्य उपस्थित करैछ।

घोघीगांव : सरायरंजन सँ 4 कि.मी. दक्षिण शाहजहाँकालीन राम-जानकी मंदिर 360 झोपरपट्टीमे अवस्थित 700 एकड़ मे फैलल अछि। एहि मंदिरक शाखा-अमरौली, चकबा, चकसिकन्दर, मधुबनी जिलाक महादेव पट्टी गांव एवं नेपाल ओ उत्तर प्रदेशक अनेको स्थानमे पसरल अछि।

किसनपुर मालीडीह : पोखरिक उराही मे यक्षिणी, भगवानबुद्ध, राम, हनुमान, लक्ष्मण, सीता, ताम्र प्रतिमा सब प्राप्त भेल छल। ईंटा 18 ईच लंबा 12 ईच चौड़ा अछि। आंटा पीसऽ बाला जांत, मांटिक घैल। ओखरा सँ 2 कि.मी. पश्चिम मे खालिसपुर स्थित चौर मे धनवारा डीह अछि। खिजली वंश (1290-1320) द्वारा एहि गढ़कें ध्वस्त कएल गेल हो से अनुमान अछि। एकरे बगलमे अछि- फतेहपुर डीह। एकरे बगल सँ नाग, गणेश एवं हनुमाजीक प्रतिमा प्राप्त भेल। रोसड़ा सतीमाइक मंदिर 1600 ई. मे निर्मित अछि।

शक्तिपीठ सर्किट (दरभंगा, मधुबनी)

अहल्यास्थान- कमतौल, उच्चैठ, भगवती बेनीपट्टी, अकौरक भगवती, कालिकापुरक कालीस्थान, गिरिजास्थान, फुलहर दक्षिणेश्वर काली-राजनगर, राजेशश्वरी-बहरवन, खजौली कामाख्या मंदिर-राजनगर, मधुबनीक भगवती मंगरौनीक बूढ़ी माइ, भगवतीपुरक-महिषासुर मर्दिनी, नाहरक दुर्गा, कोइलखक-कोकिलाक्षी देवी, सखेश्वरीक छिन्नमस्तिका, सखड़ा निर्मली, मकरंदाक वाणेश्वरी मंदिर, नवादाक हैहट देवी, कंकाली मंदिर राजपरिसर दरभंगा, मलेक्षमर्दिनी मंदिर-दरभंगा, श्यामा मंदिर परिसर-दरभंगाकें लेल जा सकैछ।

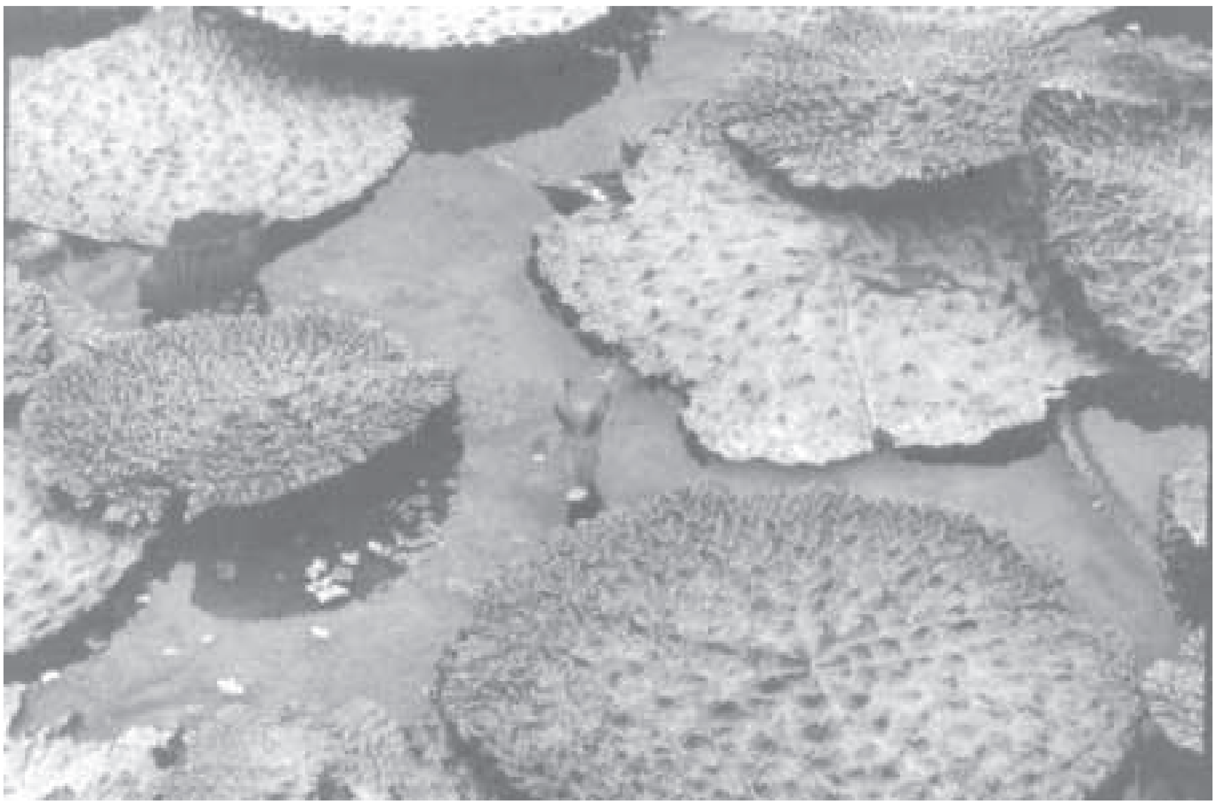
शैव सर्किट : गाण्डवेश्वर स्थान शिवनगर, वाणेश्वर स्थान मधवापुर, दक्षनेश्वर स्थान-उत्तरा, सोमेश्वर स्थान-सौराठ, कलनाक महादेव, मधुबनीक महादेव, एकादश रुद्र-मंगरौनी, राजनगरक शिवमंदिर, देवहारक स्थान, बुरआरक महोदव, विदेश्वर स्थान हैंठीवालीक, धूमवाला महादेव, हुलास पट्टी-घोघरडीहाक गौरी शंकर मंदिर झंझारपुरक नाहर भगवतीपुरक-भुवनेश्वर स्थान- (अयाचीक वंशज वैद्यनाथक रूपमे हिनके पूजैत छथि।) नवादाक महादेव, अकौरक पंचानन, हनुमान नगर, नदौईस विरौल, देवकुली, बलिया, पोखराम, लगमा, परड़ी, माधवेश्वर स्थान, कपिलेश्वर स्थान, माधवेश्वर स्थान-दरभंगा।

ऐतिहासिक गांव एवं डीह : श्रृंगी ऋषिक डीह-सिंहिया-टेकटायर, गौतम-अहल्याक डीह अहल्यास्थान, कमतौल याज्ञवल्क्क डीह यगवन, कालीदासक डीह उच्चैठ भगवती, विद्यापतिक डीह-विस्फी, अकौर, भौरा-मधुबनी, राजनगर बलिराजगढ़, बाबूबरही, पस्टन-अन्धराठाढ़ी, वाचस्पतिक डीह, अयाचीक डीह-सरिसवपाही कदपीधाम झंझारपुर, नागार्जुनक डीह-तरौनी, चन्दाझाक डीह-पिण्डारुच, भीठ भगवानपुर, तिलकेश्वरगढ़, कर्णपुगढ़, मालीडीह, सनैयाडीह, समौल, गौनू झाक डीह, भरवाड़ा। दरभंगाक पोखड़ि, दरभंगाक म्यूजियम, चन्द्रधारी म्यूजियम, लक्ष्मेश्वर म्यूजियम, ललितनारायण मिथिला विश्वविद्यालय म्यूजियम, कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय म्यूजियम, मिथिलाशोध संस्थान, कवराघाट एवं राजपरिसर के बनाओल जा सकैछ।

कामरिया सर्किट : सुल्तानगंज सँ देवघर जाहिमे 70 प्रतिशत कावरिया मिथिला ओ नेपालक रहैत छथि। मिथिलाक अहेन परिवार नहि जाहि घरसँ प्रत्येक वर्ष ओ लोकनि नहि जाइत होथि। एहि पथकें सेहो विकसित करैत सरकारी स्तर पर जेना जम्मू-कटरा सँ वैष्णव देवीक यात्रा होइत अछि औद्योगिक क्षेत्र बनाओल जा सकैछ।

एहि तरहें हम देखैत छी जे यदि मिथिलाक धार्मिक, ऐतिहासिक स्थलकें सरकार द्वारा पर्यटनक दृष्टिकोणसँ सौन्दर्यीकरण एवं स्थल तक पहुंचबाक लेल समुचित साधन एवं सुरक्षाक भार सरकारी स्तर पर होइक तऽ निश्चित रूपसँ ई क्षेत्र विश्वक मानचित्र पर उभरिकऽ आओत। विश्वक पर्यटकक आगमन हेतैक एहि भूभागक गरिमा सेहो बढ़तैक आ एहि ठामक लोकक आर्थिक क्षमता सेहो मजबूत हेतैक, संगहि पर्यटन उद्योगक विकसित स्वरूप राष्ट्रीय स्तर पर भऽ सकत।

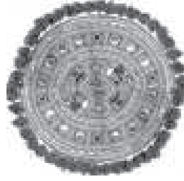
- स्नातकोत्तर साहित्य विभाग
का.सिं.द. संस्कृत विश्वविद्यालय,
दरभंगा
मो. -9430849752



अर्थनीति

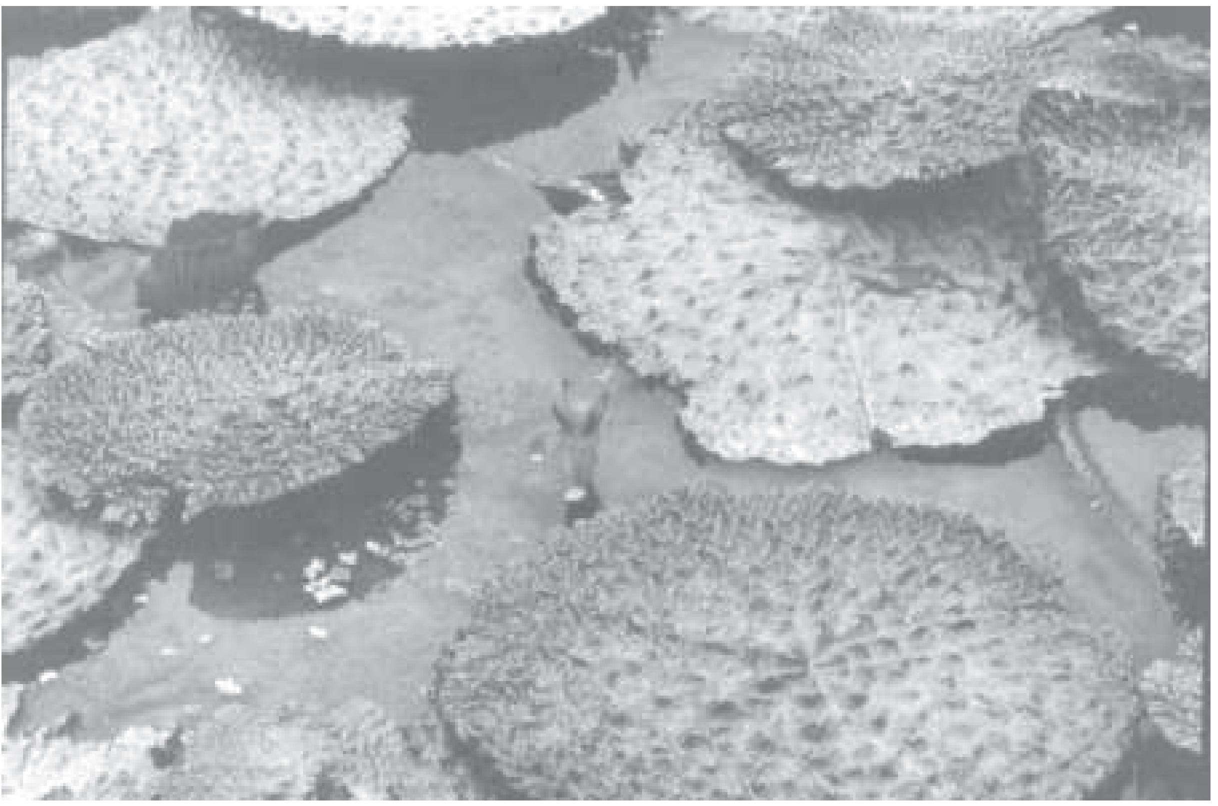
मिथिलामे उद्योग धन्धाक संभावना

कमलेश झा



विषय अछि जे- मिथिलामे कोन-कोन उद्योगक संभावना अछि तकर लेखा-जोखा करब तकर अन्वेषण करब आ संभावित उद्योगक निर्माणमे आबऽ बला समस्या सभकें अटकोरब। मिथिलाक कहला सँ जे भूभाग चित्र मानस पटल पर अभरैछ- से भेल हिमालय पहाड़क उत्तर सीमान पर, दक्षिण सीमान पर पुण्य शलिला गंगा नदी, पूव सीमान पर हेमनि धरि छली कोसी नदी आ पश्चिम सीमान पर गण्डक नदी। अर्थात तीन दिश नदी आ चारिम दिश हिमालय। यैह भू भाग भेल मिथिला- ई हमरा सभहक कहब नहि थिक अपितु ई कहब थिक हमरा लोकनिक शास्त्र पुराणक। आदि कवि वाल्मीकि जे अपना रामायणमे एकर चर्चा केने छथि। महाभारतमे अनेक स्थल पर मिथिला आ मिथिलाक राजाक चर्चा आयल अछि। एकर मतलब भेल-जे मिथिलाक अतीत गौरवशाली रहल अछि।

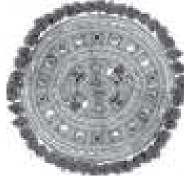
मिथिलाक भूभागक प्राकृतिक संरचनाक झलक सेहो अपूर्वे। अपूर्व अई अर्थमे जे 'विश्वक वैज्ञानिकक' कहब छनि जे अगिला विश्व युद्ध 'जल' लेल हैत 'पिबैवला' जल। ओना लोक अइ बात पर हँसि सकैत अछि-



अर्थनीति

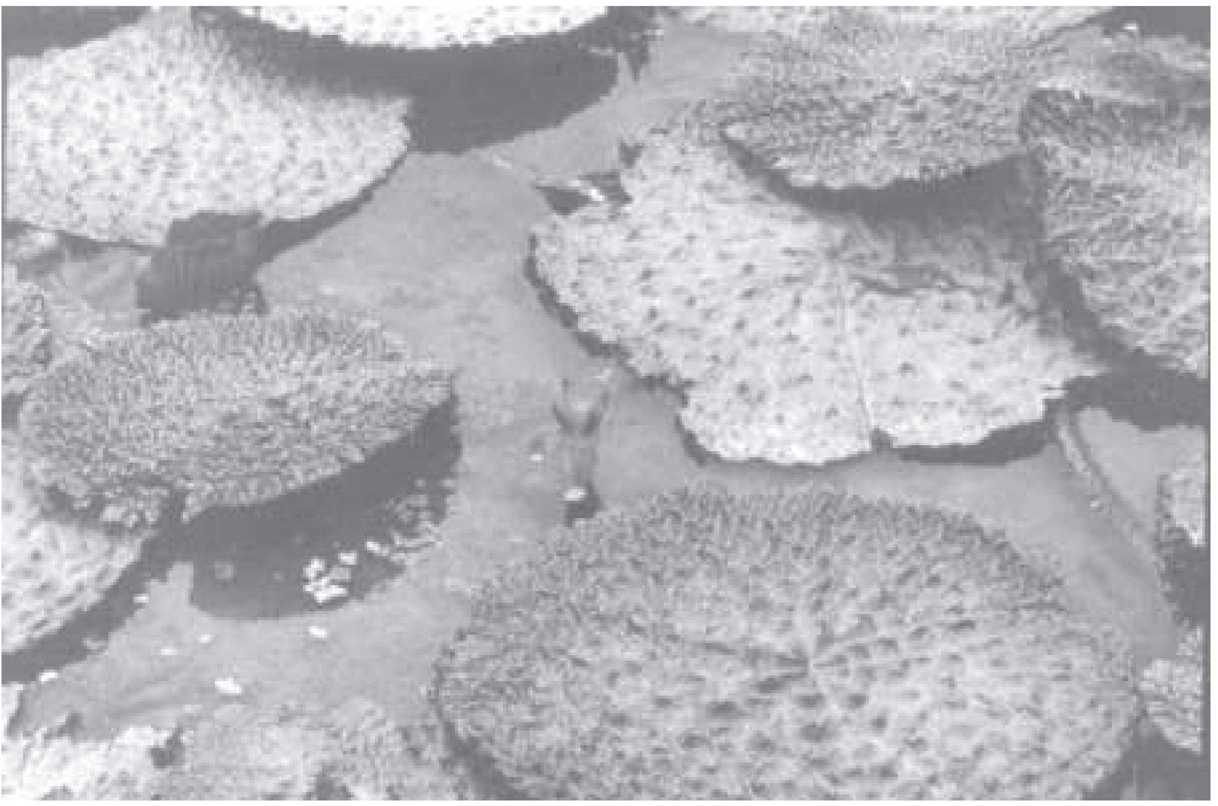
मिथिलामे उद्योग धन्धाक संभावना

कमलेश झा



विषय अछि जे- मिथिलामे कोन-कोन उद्योगक संभावना अछि तकर लेखा-जोखा करब तकर अन्वेषण करब आ संभावित उद्योगक निर्माणमे आबऽ बला समस्या सभकें अटकोरब। मिथिलाक कहला सँ जे भूभाग चित्र मानस पटल पर अभरैछ- से भेल हिमालय पहाड़क उत्तर सीमान पर, दक्षिण सीमान पर पुण्य शलिला गंगा नदी, पूव सीमान पर हेमनि धरि छली कोसी नदी आ पश्चिम सीमान पर गण्डक नदी। अर्थात तीन दिश नदी आ चारिम दिश हिमालय। यैह भू भाग भेल मिथिला- ई हमरा सभहक कहब नहि थिक अपितु ई कहब थिक हमरा लोकनिक शास्त्र पुराणक। आदि कवि वाल्मीकि जे अपना रामायणमे एकर चर्चा केने छथि। महाभारतमे अनेक स्थल पर मिथिला आ मिथिलाक राजाक चर्चा आयल अछि। एकर मतलब भेल-जे मिथिलाक अतीत गौरवशाली रहल अछि।

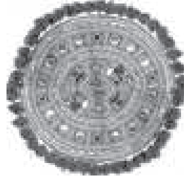
मिथिलाक भूभागक प्राकृतिक संरचनाक झलक सेहो अपूर्वे। अपूर्व अई अर्थमे जे 'विश्वक वैज्ञानिकक' कहब छनि जे अगिला विश्व युद्ध 'जल' लेल हैत 'पिबैवला' जल। ओना लोक अइ बात पर हँसि सकैत अछि-



अर्थनीति

मिथिलामे उद्योग धन्धाक संभावना

कमलेश झा



विषय अछि जे- मिथिलामे कोन-कोन उद्योगक संभावना अछि तकर लेखा-जोखा करब तकर अन्वेषण करब आ संभावित उद्योगक निर्माणमे आबऽ बला समस्या सभकें अटकोरब। मिथिलाक कहला सँ जे भूभाग चित्र मानस पटल पर अभरैछ- से भेल हिमालय पहाड़क उत्तर सीमान पर, दक्षिण सीमान पर पुण्य शलिला गंगा नदी, पूव सीमान पर हेमनि धरि छली कोसी नदी आ पश्चिम सीमान पर गण्डक नदी। अर्थात तीन दिश नदी आ चारिम दिश हिमालय। यैह भू भाग भेल मिथिला- ई हमरा सभहक कहब नहि थिक अपितु ई कहब थिक हमरा लोकनिक शास्त्र पुराणक। आदि कवि वाल्मीकि जे अपना रामायणमे एकर चर्चा केने छथि। महाभारतमे अनेक स्थल पर मिथिला आ मिथिलाक राजाक चर्चा आयल अछि। एकर मतलब भेल-जे मिथिलाक अतीत गौरवशाली रहल अछि।

मिथिलाक भूभागक प्राकृतिक संरचनाक झलक सेहो अपूर्वे। अपूर्व अई अर्थमे जे 'विश्वक वैज्ञानिकक' कहब छनि जे अगिला विश्व युद्ध 'जल' लेल हैत 'पिबैवला' जल। ओना लोक अइ बात पर हँसि सकैत अछि-

जे जखन पृथ्वी पर सत्तरि प्रतिशत जल अछि– आ बाँकी तीस प्रतिशत मे भू–स्थल, मरुभूमि, जंगल आ पहाड़ अछि। तखन जलक संकट कियैक? तखन 'पानि लेल' विश्व युद्ध कियैक? उत्तर सेहो स्पष्ट छै–जे समुद्री जल नुनछराइन होइछ ओ जल पीबा जोगर नहि होइछ। पीबऽवला पानि होइछ–भूगर्भ जल जकर उपयोग हमरा लोकनि चापाकलमे करै छी– बरसातक पानिकें जलाशयमे इकट्ठा कऽ कऽ। हिमालय पहाड़ जकरा प्रसादात मिथिलामे अलेल नदी– अर्थात् नदीक जाल जकाँ पसरल अछि, अलेल नदी मे अलेल पानि। मिथिलाक प्राकृतिक वरदान अछि जे 'जलक भण्डार' अइठाम सुरक्षित अछि। वर्तमान मे 'जलक–उद्योग' हमरा सभ लेल अर्थकारी। अइ उद्योगमे लागत नाम मात्रक पूंजी आ आमदनी प्रचुर।

मिथिला मे जे प्राकृतिक वरदान अछि से भेल अइठामक जनसंख्या। यदा–कदा हमरा लोकनि जाप करैत छी जे चारि करोड़ लोक आ आठ करोड़ हाथ मिथिला भूभागमे बसोबास करैत अछि। लोकक विभाजन साधारणतः दू भागमे कयल जा सकैछ औ भेल प्रतिभा सम्पन्न लोक आ साधारण लोक।

मिथिला भूभागक जमीन उपजाऊ। विश्वमे जे किछु स्थलक नाम चर्चा मे अबैछ– ओइमे ई भू–भाग अबैछ। जंगल, पहाड़ अइ क्षेत्रमे नदारथ। मतलब भेल कृषि–प्रधान क्षेत्र थिक मिथिला। कृषि पर आधारित उद्योग–धन्धाक संभावना, पानि पर आधारित उद्योयग–धन्धाक संभावना।

जमीन : उद्योग लेल चाही कच्चा वस्तु (Raw Material) श्रमिक, तैयार माल (Finished Product) लेल बाजार (Market) सर्वोपरि पूँजी (Capital) आ उद्यमी (Enterpreneur)। मिथिलामे उद्योग–धन्धा पर चर्चा करब तें एकटा बिन्दु (Base Year) ताकय पड़त से आसानीसँ हमरा लोकनि लेल निर्धारित अछि परतंत्र भारत आ स्वतंत्र भारत। माने भेल 1947 ई. हमरा सभक बिन्दु। परतंत्र भारतमे मिथिलामे जे उद्योग–धंधा छल–से भेल चीनी मिल, जूट मिल, पेपर मिल, राइस आदि। ई सबटा उद्योग मिथिलासँ छऊमन्तर भऽ गेल। जे लोक अइ उद्योगमे लागल रहथि–से सभ रोड पर चलि आयल। मिथिलाक आर्थिक स्रोत सुखा गेल। लोक बेरोजगार भ' गेल। चाकरी लेल महानगर दिश पलायन कऽ गेल आ लगातार पलायन भऽ रहल अछि।

मिथिलाक माछ, मखान आ पान अलोपित भ' गेल। धन्यवाद आंध्र प्रदेशक लोकके दियौ जे कहियो काल हमरा सभ माछ दर्शन कऽ लैत छी। मखनाक ऊपजा होइत अछि मुदा सैह टा। 'मखान' मात्र पूजा–पाठमे दर्शन होइछ–आ धन्यवाद दियौ मिथिलाक परम्पराकें जे कोजागरा मे 'मखान' सर्व साधारणकें दर्शन होइछ। अपना माटि परहक 'पान'क जगह ल' लेलक बंगला पान। कर्मे टगि गेल अइठामक लोकक। अपना ओइठाम कहबी छै जे स्वर्गमे पान–मखान नहि भेटैछ।

आम आ लीची मिथिलाक फल। फलक राजा आम लताम, बरहर, अररनेवा, शरीफा, दारिहिम आदि फल सेहो प्रचुर मात्रा मे उपलब्ध भ' सकैछ।

मिथिलाक भोजन माछ–भात। मिथिलामे वर्तमानमे अगहनी धान नहि जँका होइछ। कारण भेल बिना कोनो चिन्तनके मिथिलाक नदीके बाँन्हबाक प्रायस भेल। नदीके अपना ओइठाम 'माय'क संज्ञासँ विभूषित कयल कमला 'मइया', गंगा 'मइया' आदि। नदीकें बान्हल गेल–परिणाम आओर भयंकर भऽ गेल। कोसी महानीकें बान्हबाक प्रयास भेल पुवरिया बाँध कुरसैलामे मिलाओल गेल आ पछवरिया बाँध कुशेश्वर स्थान लग आबिकऽ छोड़ि देल गेल। कमला–वलान बाँधक हाल यैह अछि। कोनो नियम कानूनक पालन नहि भऽ रहल अछि। Science and Technology क मंत्र जपत आ Science बढ़त आ Technology नहि रहत। तखन कोना हैत विकास। सभ नदी उत्थर भ' गेल। नदीक पेटक गाद कहियो साफ नहि भेल। कनेको पानि आयल वैह पानि मधुबनी जिलामे प्रवेश करत, मधुबनीकें भसबैत, दरभंगा मे प्रवेश करत, दरभंगा के भसबैत, समस्तीपुरमे प्रवेश करत, समस्तीपुर के भसबैत, बेगुसरायमे प्रवेश करत आ बेगुसरायकें भसबैत पानि गंगा नदि मे विलिन भ' जाएत। फसल गेल, माल–मवेशी मरल, लोक मरल, घर भसियाल अपार क्षतिक सामना मिथिला बासीके करय पड़ैत छै– आजादीक बाद ई क्षेत्र लावारिस भऽ गेल। चारागाह भऽ गेल। जे धरती सोना उगलै छल धरती उसर भऽ गेल। हमरा लोकनि जखन बच्चा रही–तखन भिनसरे चूड़ा–मूरही जलखै, कलौ भात–माछ, बेरहट–भात–आ

जे जखन पृथ्वी पर सत्तरि प्रतिशत जल अछि–आ बाँकी तीस प्रतिशत मे भू–स्थल, मरुभूमि, जंगल आ पहाड़ अछि। तखन जलक संकट कियैक? तखन 'पानि लेल' विश्व युद्ध कियैक? उत्तर सेहो स्पष्ट छै–जे समुद्री जल नुनछराइन होइछ ओ जल पीबा जोगर नहि होइछ। पीबऽवला पानि होइछ–भूगर्भ जल जकर उपयोग हमरा लोकनि चापाकलमे करै छी– बरसातक पानिकें जलाशयमे इकट्ठा कऽ कऽ। हिमालय पहाड़ जकरा प्रसादात मिथिलामे अलेल नदी– अर्थात् नदीक जाल जकाँ पसरल अछि, अलेल नदी मे अलेल पानि। मिथिलाक प्राकृतिक वरदान अछि जे 'जलक भण्डार' अइठाम सुरक्षित अछि। वर्तमान मे 'जलक–उद्योग' हमरा सभ लेल अर्थकारी। अइ उद्योगमे लागत नाम मात्रक पूंजी आ आमदनी प्रचुर।

मिथिला मे जे प्राकृतिक वरदान अछि से भेल अइठामक जनसंख्या। यदा–कदा हमरा लोकनि जाप करैत छी जे चारि करोड़ लोक आ आठ करोड़ हाथ मिथिला भूभागमे बसोबास करैत अछि। लोकक विभाजन साधारणतः दू भागमे कयल जा सकैछ औ भेल प्रतिभा सम्पन्न लोक आ साधारण लोक।

मिथिला भूभागक जमीन उपजाऊ। विश्वमे जे किछु स्थलक नाम चर्चा मे अबैछ–ओइमे ई भू–भाग अबैछ। जंगल, पहाड़ अइ क्षेत्रमे नदारथ। मतलब भेल कृषि–प्रधान क्षेत्र थिक मिथिला। कृषि पर आधारित उद्योग–धन्धाक संभावना, पानि पर आधारित उद्योयग–धन्धाक संभावना।

जमीन : उद्योग लेल चाही कच्चा वस्तु (Raw Material) श्रमिक, तैयार माल (Finished Product) लेल बाजार (Market) सर्वोपरि पूँजी (Capital) आ उद्यमी (Enterpreneur)। मिथिलामे उद्योग–धन्धा पर चर्चा करब तें एकटा बिन्दु (Base Year) ताकय पड़त से आसानीसँ हमरा लोकनि लेल निर्धारित अछि परतंत्र भारत आ स्वतंत्र भारत। माने भेल 1947 ई. हमरा सभक बिन्दु। परतंत्र भारतमे मिथिलामे जे उद्योग–धंधा छल–से भेल चीनी मिल, जूट मिल, पेपर मिल, राइस आदि। ई सबटा उद्योग मिथिलासँ छऊमन्तर भऽ गेल। जे लोक अइ उद्योगमे लागल रहथि–से सभ रोड पर चलि आयल। मिथिलाक आर्थिक स्रोत सुखा गेल। लोक बेरोजगार भ' गेल। चाकरी लेल महानगर दिश पलायन कऽ गेल आ लगातार पलायन भऽ रहल अछि।

मिथिलाक माछ, मखान आ पान अलोपित भ' गेल। धन्यवाद आंध्र प्रदेशक लोकके दियौ जे कहियो काल हमरा सभ माछ दर्शन कऽ लैत छी। मखनाक ऊपजा होइत अछि मुदा सैह टा। 'मखान' मात्र पूजा–पाठमे दर्शन होइछ–आ धन्यवाद दियौ मिथिलाक परम्पराकें जे कोजागरा मे 'मखान' सर्व साधारणकें दर्शन होइछ। अपना माटि परहक 'पान'क जगह ल' लेलक बंगला पान। कर्मे टगि गेल अइठामक लोकक। अपना ओइठाम कहबी छै जे स्वर्गमे पान–मखान नहि भेटैछ।

आम आ लीची मिथिलाक फल। फलक राजा आम लताम, बरहर, अररनेवा, शरीफा, दारिहिम आदि फल सेहो प्रचुर मात्रा मे उपलब्ध भ' सकैछ।

मिथिलाक भोजन माछ–भात। मिथिलामे वर्तमानमे अगहनी धान नहि जँका होइछ। कारण भेल बिना कोनो चिन्तनके मिथिलाक नदीके बाँन्हबाक प्रायस भेल। नदीके अपना ओइठाम 'माय'क संज्ञासँ विभूषित कयल कमला 'मइया', गंगा 'मइया' आदि। नदीकें बान्हल गेल–परिणाम आओर भयंकर भऽ गेल। कोसी महानीकें बान्हबाक प्रयास भेल पुवरिया बाँध कुरसैलामे मिलाओल गेल आ पछवरिया बाँध कुशेश्वर स्थान लग आबिकऽ छोड़ि देल गेल। कमला–वलान बाँधक हाल यैह अछि। कोनो नियम कानूनक पालन नहि भऽ रहल अछि। Science and Technology क मंत्र जपत आ Science बढ़त आ Technology नहि रहत। तखन कोना हैत विकास। सभ नदी उत्थर भ' गेल। नदीक पेटक गाद कहियो साफ नहि भेल। कनेको पानि आयल वैह पानि मधुबनी जिलामे प्रवेश करत, मधुबनीकें भसबैत, दरभंगा मे प्रवेश करत, दरभंगा के भसबैत, समस्तीपुरमे प्रवेश करत, समस्तीपुर के भसबैत, बेगुसरायमे प्रवेश करत आ बेगुसरायकें भसबैत पानि गंगा नदि मे विलिन भ' जाएत। फसल गेल, माल–मवेशी मरल, लोक मरल, घर भसियाल अपार क्षतिक सामना मिथिला बासीके करय पड़ैत छै– आजादीक बाद ई क्षेत्र लावारिस भऽ गेल। चारागाह भऽ गेल। जे धरती सोना उगलै छल धरती उसर भऽ गेल। हमरा लोकनि जखन बच्चा रही–तखन भिनसरे चूड़ा–मूरही जलखै, कलौ भात–माछ, बेरहट–भात–आ

जे जखन पृथ्वी पर सत्तरि प्रतिशत जल अछि–आ बाँकी तीस प्रतिशत मे भू–स्थल, मरुभूमि, जंगल आ पहाड़ अछि। तखन जलक संकट कियैक? तखन 'पानि लेल' विश्व युद्ध कियैक? उत्तर सेहो स्पष्ट छै–जे समुद्री जल नुनछराइन होइछ ओ जल पीबा जोगर नहि होइछ। पीबऽवला पानि होइछ–भूगर्भ जल जकर उपयोग हमरा लोकनि चापाकलमे करै छी– बरसातक पानिकें जलाशयमे इकट्ठा कऽ कऽ। हिमालय पहाड़ जकरा प्रसादात मिथिलामे अलेल नदी– अर्थात् नदीक जाल जकाँ पसरल अछि, अलेल नदी मे अलेल पानि। मिथिलाक प्राकृतिक वरदान अछि जे 'जलक भण्डार' अइठाम सुरक्षित अछि। वर्तमान मे 'जलक–उद्योग' हमरा सभ लेल अर्थकारी। अइ उद्योगमे लागत नाम मात्रक पूंजी आ आमदनी प्रचुर।

मिथिला मे जे प्राकृतिक वरदान अछि से भेल अइठामक जनसंख्या। यदा–कदा हमरा लोकनि जाप करैत छी जे चारि करोड़ लोक आ आठ करोड़ हाथ मिथिला भूभागमे बसोबास करैत अछि। लोकक विभाजन साधारणतः दू भागमे कयल जा सकैछ औ भेल प्रतिभा सम्पन्न लोक आ साधारण लोक।

मिथिला भूभागक जमीन उपजाऊ। विश्वमे जे किछु स्थलक नाम चर्चा मे अबैछ–ओइमे ई भू–भाग अबैछ। जंगल, पहाड़ अइ क्षेत्रमे नदारथ। मतलब भेल कृषि–प्रधान क्षेत्र थिक मिथिला। कृषि पर आधारित उद्योग–धन्धाक संभावना, पानि पर आधारित उद्योयग–धन्धाक संभावना।

जमीन : उद्योग लेल चाही कच्चा वस्तु (Raw Material) श्रमिक, तैयार माल (Finished Product) लेल बाजार (Market) सर्वोपरि पूँजी (Capital) आ उद्यमी (Enterpreneur)। मिथिलामे उद्योग–धन्धा पर चर्चा करब तें एकटा बिन्दु (Base Year) ताकय पड़त से आसानीसँ हमरा लोकनि लेल निर्धारित अछि परतंत्र भारत आ स्वतंत्र भारत। माने भेल 1947 ई. हमरा सभक बिन्दु। परतंत्र भारतमे मिथिलामे जे उद्योग–धंधा छल–से भेल चीनी मिल, जूट मिल, पेपर मिल, राइस आदि। ई सबटा उद्योग मिथिलासँ छऊमन्तर भऽ गेल। जे लोक अइ उद्योगमे लागल रहथि–से सभ रोड पर चलि आयल। मिथिलाक आर्थिक स्रोत सुखा गेल। लोक बेरोजगार भ' गेल। चाकरी लेल महानगर दिश पलायन कऽ गेल आ लगातार पलायन भऽ रहल अछि।

मिथिलाक माछ, मखान आ पान अलोपित भ' गेल। धन्यवाद आंध्र प्रदेशक लोकके दियौ जे कहियो काल हमरा सभ माछ दर्शन कऽ लैत छी। मखनाक ऊपजा होइत अछि मुदा सैह टा। 'मखान' मात्र पूजा–पाठमे दर्शन होइछ–आ धन्यवाद दियौ मिथिलाक परम्पराकें जे कोजागरा मे 'मखान' सर्व साधारणकें दर्शन होइछ। अपना माटि परहक 'पान'क जगह ल' लेलक बंगला पान। कर्मे टगि गेल अइठामक लोकक। अपना ओइठाम कहबी छै जे स्वर्गमे पान–मखान नहि भेटैछ।

आम आ लीची मिथिलाक फल। फलक राजा आम लताम, बरहर, अररनेवा, शरीफा, दारिहिम आदि फल सेहो प्रचुर मात्रा मे उपलब्ध भ' सकैछ।

मिथिलाक भोजन माछ–भात। मिथिलामे वर्तमानमे अगहनी धान नहि जँका होइछ। कारण भेल बिना कोनो चिन्तनके मिथिलाक नदीके बाँन्हबाक प्रायस भेल। नदीके अपना ओइठाम 'माय'क संज्ञासँ विभूषित कयल कमला 'मइया', गंगा 'मइया' आदि। नदीकें बान्हल गेल–परिणाम आओर भयंकर भऽ गेल। कोसी महानीकें बान्हबाक प्रयास भेल पुवरिया बाँध कुरसैलामे मिलाओल गेल आ पछवरिया बाँध कुशेश्वर स्थान लग आबिकऽ छोड़ि देल गेल। कमला–वलान बाँधक हाल यैह अछि। कोनो नियम कानूनक पालन नहि भऽ रहल अछि। Science and Technology क मंत्र जपत आ Science बढ़त आ Technology नहि रहत। तखन कोना हैत विकास। सभ नदी उत्थर भ' गेल। नदीक पेटक गाद कहियो साफ नहि भेल। कनेको पानि आयल वैह पानि मधुबनी जिलामे प्रवेश करत, मधुबनीकें भसबैत, दरभंगा मे प्रवेश करत, दरभंगा के भसबैत, समस्तीपुरमे प्रवेश करत, समस्तीपुर के भसबैत, बेगुसरायमे प्रवेश करत आ बेगुसरायकें भसबैत पानि गंगा नदि मे विलिन भ' जाएत। फसल गेल, माल–मवेशी मरल, लोक मरल, घर भसियाल अपार क्षतिक सामना मिथिला बासीके करय पड़ैत छै– आजादीक बाद ई क्षेत्र लावारिस भऽ गेल। चारागाह भऽ गेल। जे धरती सोना उगलै छल धरती उसर भऽ गेल। हमरा लोकनि जखन बच्चा रही–तखन भिनसरे चूड़ा–मूरही जलखै, कलौ भात–माछ, बेरहट–भात–आ



रातिमे भात। गहुँम ओथबाक होइ जे कोनो धरानिये लोक पाबनि-तिहार कऽ लिअय। आइ धान अलोपित, ठेक बखारी, भुनहर अलोपित अर्थात् Rice Mill जे धनेरो मिथिलामे छल अलोपित।

राजनैतिक चेतनाक अभाव मे उद्योग-धन्धाक विकास दिवा स्वप्न अछि-एकटा कहबी अपना ओइठाम छै- 'तामा बिना पाहुन उपास। भेलइ एना-जे कोनो गाम से एकटा बुढ़िया रहय। असगरे। साँझ भरली कोनो पाहन ओकर ओइठाम आयलइ। बुढ़ियाकें तामा नहि रहै आओर सभ किछु रहै- मुदा ओ भानस नहि केलक। भिनसरे टोल-पड़ोसमे ई चर्चाक विषय बनि गेलइ। ई 'तामा' की थिक? ई थिक संगठन। मिथिला लेल संगठन। मिथिला राजनैतिक चेतना लेल संगठन। 'एके साधे सभ सधे'- संगठन भेल-तखन गप करु उद्योगक।

कृषिके दुरुस्त करू- आ कृषि आधारित सभ उद्योगक प्रचुर संभावना मिथिला मे अछि। उद्योग लेल चाही बिजली, बिजलीक पता नही- सभ विकासक जड़िमे अछि बिजली- से पनि बिजलीक प्रचुर संभावना अछि- कारण नदी जलाशय निर्माण करय पड़त- बिजली उत्पादन लेल उपकरण आवश्यकता पड़त- ओइ लेल चाही धन। धनो से पहिने चाही इच्छा-शक्ति।

मिथिला हजारो-हजारो वर्षस उत्पादन करैछ-ओ भेल प्रतिभाशाली व्यक्तित्व। उत्पादन कयलक मिथिलाक ओ प्रतिभा बिकाइछ-महानगरमे-आन प्रान्त मे, आन देशमे। साधारण तबकाक लोक नून-तेल-लड़कीमे तेना ने ओझराइल अछि जे ककरो कहैछ- विकास ककरा कहैछ उद्योग-धन्धा। सभ 'कल्हुक वरद बनल दिन-राति अस्त-व्यस्त रहैछ।'

कोनो क्षेत्रक विकासक लेल साठि साल कम नहि भेलइ। हमरा सभहक व्यापारिक क्षेत्रकें उपेक्षित राखि ई चारागाह बनल अछि, राजनेताक।

जखन कि मिथिला मे नगदी फसल भेल कुसियार। आधुनिक चीनी मिलक निर्माण भऽ सकैछ। ओकर Raw Material क आपूर्ति अइठाम सहजता सँ भ' सकैछ। अइठाम पेपर मिलक निर्माण आसानी सँ भऽ सकैछ-कारण ओकर Raw Material-बाँस आ सावे अपना ओइठाम प्रचुर मात्रा मे उत्पादन होइछ। कपड़ा मिलक निर्माण भ' सकैछ- जे Raw Material अर्थात् कपास आयात हैत दोसर राज्यसँ बाजार कपड़ाक अइठाम अछिये। छोट-छोट उद्योगक संभावना- जेना जलजैविक संसाधन जकर चर्चा आन-ठाम भेल अछि। मिथिला जलीय उद्यान ओ पुष्पकृषि Aquatic Horriculture ओ Floriculture केर पर्याप्त संभावना अछि। मखान, सिंघाड़ ओ खोभी आदि जलीय वनस्पति सभहक व्यवसायिक उत्पादन कयल जा सकैछ। खोभीक संगहि स्वत: जात रूपें उगयवला भेंट, कमल, कशेरुक (पानि वला कसौर) चिचोढ, कौआआठूठी, घेंचुल, सारुख, करहर सदृश जलीय वनस्पतिक व्यवसायिक होहन कयल जा सकैछ। मिथिलाक विशाल चौर सभमे स्वभाविक रूपें उगयबला 'कतरा' ओ कोढ़िला क्षेत्रीय हस्तकलाक आधार अछि। माछ उत्पादनक प्रचुर संभावना अछि। आम लीची सँ विभिन्न तरहक वस्तु बना आर्थिक रूपें सबल भऽ सकैत छी। मधुमाछी पालन, पशु-पालन, पारम्परिक पटिया, रस्सी, बाँसुरी उद्योग लेल अजस्त्र कास, पटेर, मोथी, नरकुल आदिक दोहन कयल जा सकैछ अछि। विश्वक अनेक भागमे मनुक्खक उपयोग हेतु आवश्यक जलक कमी के देखैत जल संरक्षण हेतु साकाँक्ष बनयबाक उद्देश्यसँ सन् 2003 वर्षकें अन्तर्राष्ट्रीय स्वच्छ जल वर्ष (Fresh Water Year) घोषित कयल गेल छल। अइ क्षेत्रमे प्राकृतिक रुपसँ उपलब्ध 'मोथा' अछि। 'मोथा' एकटा औषधिय पौधा थिक। एकर इस्तमाल महिलाक सौंदर्य प्रसाधन लिपिस्टक संगे-संग कफ सीरप, भिक्स सहित माथक दर्दसँ छुटकारा लेल तेलक निर्माण होइछ।

अन्तमे हम कहअ चाहब जे जरूरत छै-प्राकृतिक संसाधनकें दोहन करबाक। एकटा बात सतत मोन रखबाक अछि जे- Nature is friend and Nature is foe - प्रकृति दोस्त थिक आओर प्रकृति दुश्मन थिक। हमरा लोकनि मिथिला प्रकृतिसँ दुश्मनी मोल लेने छी। जरूरत अछि जे जन-चेतनाक माध्यमे प्रकृति सँ दोस्ती करबाक अभ्यास हमरा लोकनि कें करऽ पड़त-तखने कोनो विकास, कोनो उद्योग संभव अछि।

ग्राम+पो.- अन्दौली
बेनीपुर, दरभंगा
मो.- 9304696537



रातिमे भात। गहुँम ओथबाक होइ जे कोनो धरानिये लोक पाबनि-तिहार कऽ लिअय। आइ धान अलोपित, ठेक बखारी, भुनहर अलोपित अर्थात् Rice Mill जे धनेरो मिथिलामे छल अलोपित।

राजनैतिक चेतनाक अभाव मे उद्योग-धन्धाक विकास दिवा स्वप्न अछि-एकटा कहबी अपना ओइठाम छै- 'तामा बिना पाहुन उपास। भेलइ एना-जे कोनो गाम से एकटा बुढ़िया रहय। असगरे। साँझ भरली कोनो पाहन ओकर ओइठाम आयलइ। बुढ़ियाकें तामा नहि रहै आओर सभ किछु रहै- मुदा ओ भानस नहि केलक। भिनसरे टोल-पड़ोसमे ई चर्चाक विषय बनि गेलइ। ई 'तामा' की थिक? ई थिक संगठन। मिथिला लेल संगठन। मिथिला राजनैतिक चेतना लेल संगठन। 'एके साधे सभ सधे'- संगठन भेल-तखन गप करु उद्योगक।

कृषिके दुरुस्त करू- आ कृषि आधारित सभ उद्योगक प्रचुर संभावना मिथिला मे अछि। उद्योग लेल चाही बिजली, बिजलीक पता नही- सभ विकासक जड़िमे अछि बिजली- से पनि बिजलीक प्रचुर संभावना अछि- कारण नदी जलाशय निर्माण करय पड़त- बिजली उत्पादन लेल उपकरण आवश्यकता पड़त- ओइ लेल चाही धन। धनो से पहिने चाही इच्छा-शक्ति।

मिथिला हजारो-हजारो वर्षस उत्पादन करैछ-ओ भेल प्रतिभाशाली व्यक्तित्व। उत्पादन कयलक मिथिलाक ओ प्रतिभा बिकाइछ-महानगरमे-आन प्रान्त मे, आन देशमे। साधारण तबकाक लोक नून-तेल-लड़कीमे तेना ने ओझराइल अछि जे ककरो कहैछ- विकास ककरा कहैछ उद्योग-धन्धा। सभ 'कल्हुक वरद बनल दिन-राति अस्त-व्यस्त रहैछ।'

कोनो क्षेत्रक विकासक लेल साठि साल कम नहि भेलइ। हमरा सभहक व्यापारिक क्षेत्रकें उपेक्षित राखि ई चारागाह बनल अछि, राजनेताक।

जखन कि मिथिला मे नगदी फसल भेल कुसियार। आधुनिक चीनी मिलक निर्माण भऽ सकैछ। ओकर Raw Material क आपूर्ति अइठाम सहजता सँ भ' सकैछ। अइठाम पेपर मिलक निर्माण आसानी सँ भऽ सकैछ-कारण ओकर Raw Material- बाँस आ सावे अपना ओइठाम प्रचुर मात्रा मे उत्पादन होइछ। कपड़ा मिलक निर्माण भ' सकैछ- जे Raw Material अर्थात् कपास आयात हैत दोसर राज्यसँ बाजार कपड़ाक अइठाम अछिये। छोट-छोट उद्योगक संभावना- जेना जलजैविक संसाधन जकर चर्चा आन-ठाम भेल अछि। मिथिला जलीय उद्यान ओ पुष्पकृषि Aquatic Horriculture ओ Floriculture केर पर्याप्त संभावना अछि। मखान, सिंघाड़ ओ खोभी आदि जलीय वनस्पति सभहक व्यवसायिक उत्पादन कयल जा सकैछ। खोभीक संगहि स्वतः जात रूपें उगयवला भेंट, कमल, कशेरुक (पानि वला कसौर) चिचोढ, कौआआठूठी, घेंचुल, सारुख, करहर सदृश जलीय वनस्पतिक व्यवसायिक होहन कयल जा सकैछ। मिथिलाक विशाल चौर सभमे स्वभाविक रूपें उगयबला 'कतरा' ओ कोढ़िला क्षेत्रीय हस्तकलाक आधार अछि। माछ उत्पादनक प्रचुर संभावना अछि। आम लीची सँ विभिन्न तरहक वस्तु बना आर्थिक रूपें सबल भऽ सकैत छी। मधुमाछी पालन, पशु-पालन, पारम्परिक पटिया, रस्सी, बाँसुरी उद्योग लेल अजस्त्र कास, पटेर, मोथी, नरकुल आदिक दोहन कयल जा सकैछ अछि। विश्वक अनेक भागमे मनुक्खक उपयोग हेतु आवश्यक जलक कमी के देखैत जल संरक्षण हेतु साकाँक्ष बनयबाक उद्देश्यसँ सन् 2003 वर्षकें अन्तर्राष्ट्रीय स्वच्छ जल वर्ष (Fresh Water Year) घोषित कयल गेल छल। अइ क्षेत्रमे प्राकृतिक रुपसँ उपलब्ध 'मोथा' अछि। 'मोथा' एकटा औषधिय पौधा थिक। एकर इस्तमाल महिलाक सौंदर्य प्रसाधन लिपिस्टक संगे-संग कफ सीरप, भिक्स सहित माथक दर्दसँ छुटकारा लेल तेलक निर्माण होइछ।

अन्तमे हम कहअ चाहब जे जरूरत छै-प्राकृतिक संसाधनकें दोहन करबाक। एकटा बात सतत मोन रखबाक अछि जे- Nature is friend and Nature is foe - प्रकृति दोस्त थिक आओर प्रकृति दुश्मन थिक। हमरा लोकनि मिथिला प्रकृतिसँ दुश्मनी मोल लेने छी। जरूरत अछि जे जन-चेतनाक माध्यमे प्रकृति सँ दोस्ती करबाक अभ्यास हमरा लोकनि कें करऽ पड़त-तखने कोनो विकास, कोनो उद्योग संभव अछि।

ग्राम+पो.- अन्दौली
बेनीपुर, दरभंगा
मो.- 9304696537



रातिमे भात। गहुँम ओथबाक होइ जे कोनो धरानिये लोक पाबनि-तिहार कऽ लिअय। आइ धान अलोपित, ठेक बखारी, भुनहर अलोपित अर्थात् Rice Mill जे धनेरो मिथिलामे छल अलोपित।

राजनैतिक चेतनाक अभाव मे उद्योग-धन्धाक विकास दिवा स्वप्न अछि-एकटा कहबी अपना ओइठाम छै- 'तामा बिना पाहुन उपास। भेलइ एना-जे कोनो गाम से एकटा बुढ़िया रहय। असगरे। साँझ भरली कोनो पाहन ओकर ओइठाम आयलइ। बुढ़ियाकें तामा नहि रहै आओर सभ किछु रहै- मुदा ओ भानस नहि केलक। भिनसरे टोल-पड़ोसमे ई चर्चाक विषय बनि गेलइ। ई 'तामा' की थिक? ई थिक संगठन। मिथिला लेल संगठन। मिथिला राजनैतिक चेतना लेल संगठन। 'एके साधे सभ सधे'- संगठन भेल-तखन गप करु उद्योगक।

कृषिके दुरुस्त करू- आ कृषि आधारित सभ उद्योगक प्रचुर संभावना मिथिला मे अछि। उद्योग लेल चाही बिजली, बिजलीक पता नही- सभ विकासक जड़िमे अछि बिजली- से पनि बिजलीक प्रचुर संभावना अछि- कारण नदी जलाशय निर्माण करय पड़त- बिजली उत्पादन लेल उपकरण आवश्यकता पड़त- ओइ लेल चाही धन। धनो से पहिने चाही इच्छा-शक्ति।

मिथिला हजारो-हजारो वर्षस उत्पादन करैछ-ओ भेल प्रतिभाशाली व्यक्तित्व। उत्पादन कयलक मिथिलाक ओ प्रतिभा बिकाइछ-महानगरमे-आन प्रान्त मे, आन देशमे। साधारण तबकाक लोक नून-तेल-लड़कीमे तेना ने ओझराइल अछि जे ककरो कहैछ- विकास ककरा कहैछ उद्योग-धन्धा। सभ 'कल्हुक वरद बनल दिन-राति अस्त-व्यस्त रहैछ।'

कोनो क्षेत्रक विकासक लेल साठि साल कम नहि भेलइ। हमरा सभहक व्यापारिक क्षेत्रकें उपेक्षित राखि ई चारागाह बनल अछि, राजनेताक।

जखन कि मिथिला मे नगदी फसल भेल कुसियार। आधुनिक चीनी मिलक निर्माण भऽ सकैछ। ओकर Raw Material क आपूर्ति अइठाम सहजता सँ भ' सकैछ। अइठाम पेपर मिलक निर्माण आसानी सँ भऽ सकैछ-कारण ओकर Raw Material-बाँस आ सावे अपना ओइठाम प्रचुर मात्रा मे उत्पादन होइछ। कपड़ा मिलक निर्माण भ' सकैछ- जे Raw Material अर्थात् कपास आयात हैत दोसर राज्यसँ बाजार कपड़ाक अइठाम अछिये। छोट-छोट उद्योगक संभावना- जेना जलजैविक संसाधन जकर चर्चा आन-ठाम भेल अछि। मिथिला जलीय उद्यान ओ पुष्पकृषि Aquatic Horriculture ओ Floriculture केर पर्याप्त संभावना अछि। मखान, सिंघाड़ ओ खोभी आदि जलीय वनस्पति सभहक व्यवसायिक उत्पादन कयल जा सकैछ। खोभीक संगहि स्वतः जात रूपें उगयवला भेंट, कमल, कशेरुक (पानि वला कसौर) चिचोढ, कौआआठूठी, घेंचुल, सारुख, करहर सदृश जलीय वनस्पतिक व्यवसायिक होहन कयल जा सकैछ। मिथिलाक विशाल चौर सभमे स्वभाविक रूपें उगयबला 'कतरा' ओ कोढ़िला क्षेत्रीय हस्तकलाक आधार अछि। माछ उत्पादनक प्रचुर संभावना अछि। आम लीची सँ विभिन्न तरहक वस्तु बना आर्थिक रूपें सबल भऽ सकैत छी। मधुमाछी पालन, पशु-पालन, पारम्परिक पटिया, रस्सी, बाँसुरी उद्योग लेल अजस्त्र कास, पटेर, मोथी, नरकुल आदिक दोहन कयल जा सकैछ अछि। विश्वक अनेक भागमे मनुक्खक उपयोग हेतु आवश्यक जलक कमी के देखैत जल संरक्षण हेतु साकाँक्ष बनयबाक उद्देश्यसँ सन् 2003 वर्षकें अन्तर्राष्ट्रीय स्वच्छ जल वर्ष (Fresh Water Year) घोषित कयल गेल छल। अइ क्षेत्रमे प्राकृतिक रुपसँ उपलब्ध 'मोथा' अछि। 'मोथा' एकटा औषधिय पौधा थिक। एकर इस्तमाल महिलाक सौंदर्य प्रसाधन लिपिस्टक संगे-संग कफ सीरप, भिक्स सहित माथक दर्दसँ छुटकारा लेल तेलक निर्माण होइछ।

अन्तमे हम कहअ चाहब जे जरूरत छै-प्राकृतिक संसाधनकें दोहन करबाक। एकटा बात सतत मोन रखबाक अछि जे- Nature is friend and Nature is foe - प्रकृति दोस्त थिक आओर प्रकृति दुश्मन थिक। हमरा लोकनि मिथिला प्रकृतिसँ दुश्मनी मोल लेने छी। जरूरत अछि जे जन-चेतनाक माध्यमे प्रकृति सँ दोस्ती करबाक अभ्यास हमरा लोकनि कें करऽ पड़त-तखने कोनो विकास, कोनो उद्योग संभव अछि।

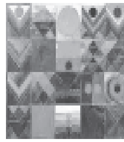
ग्राम+पो.- अन्दौली
बेनीपुर, दरभंगा
मो.- 9304696537



लोकपर्व

मैथिल लोकसंस्कृतिमे सामा-चकेबा

डॉ. योगानन्द झा



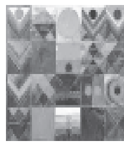
सम्पूर्णतामे भारतीय संस्कृतिक अंगीभूत होइतहुँ मिथिलाक संस्कृति अपन कतिपय वैशिष्ट्यक कारणेँ आदिकालहिसँ अपन पृथक् अस्तित्व बनौने रहल अछि। वैदिक वाङ्मयक प्रति सम्पूर्ण निष्ठा रखितो एहिठाम शुक्ल यजुर्वेदक प्रणयन भेल, वृहदारण्यकोपनिषद्क गार्गी वाचकन्वीक सम्वाद एहिठामक ब्रह्मैषणाक नियामक रहल, याज्ञवल्क्य-स्मृति एहिठामक लोकजगतक विधि-निषेधक नियामक भेल आ कपिल, कणाद, गौतम, वाचस्पति, उदयन, कुमारिल, मण्डन, गंगेश, भवनाथ, शंकर, विद्यापति पक्षधर आदिक दर्शनसँ सम्बलित ई भूमि भारतीय मनीषाक निरन्तर पथ-प्रदर्शक बनल रहल। प्राकृतपैङ्गलम्, चर्याचर्यविनिश्चय, दोहाकोश ओ डाकार्णवमे अपन साहित्यिक पटुताक निदर्शन प्रस्तुत करैत एहिठामक क्षेत्रीय भाषाकेँ ई गौरव सेहो प्राप्त छैक जे एहिमे आदिग्रन्थ सुनियोजित



लोकपर्व

मैथिल लोकसंस्कृतिमे सामा-चकेबा

डॉ. योगानन्द झा



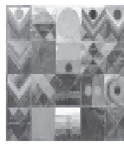
सम्पूर्णतामे भारतीय संस्कृतिक अंगीभूत होइतहुँ मिथिलाक संस्कृति अपन कतिपय वैशिष्ट्यक कारणेँ आदिकालहिसँ अपन पृथक् अस्तित्व बनौने रहल अछि। वैदिक वाङ्मयक प्रति सम्पूर्ण निष्ठा रखितो एहिठाम शुक्ल यजुर्वेदक प्रणयन भेल, वृहदारण्यकोपनिषद्क गार्गी वाचकन्वीक सम्वाद एहिठामक ब्रह्मैषणाक नियामक रहल, याज्ञवल्क्य-स्मृति एहिठामक लोकजगतक विधि-निषेधक नियामक भेल आ कपिल, कणाद, गौतम, वाचस्पति, उदयन, कुमारिल, मण्डन, गंगेश, भवनाथ, शंकर, विद्यापति पक्षधर आदिक दर्शनसँ सम्बलित ई भूमि भारतीय मनीषाक निरन्तर पथ-प्रदर्शक बनल रहल। प्राकृतपैङ्गलम्, चर्याचर्यविनिश्चय, दोहाकोश ओ डाकार्णवमे अपन साहित्यिक पटुताक निदर्शन प्रस्तुत करैत एहिठामक क्षेत्रीय भाषाकेँ ई गौरव सेहो प्राप्त छैक जे एहिमे आदिग्रन्थ सुनियोजित



लोकपर्व

मैथिल लोकसंस्कृतिमे सामा-चकेबा

डॉ. योगानन्द झा



सम्पूर्णतामे भारतीय संस्कृतिक अंगीभूत होइतहुँ मिथिलाक संस्कृति अपन कतिपय वैशिष्ट्यक कारणेँ आदिकालहिसँ अपन पृथक् अस्तित्व बनौने रहल अछि। वैदिक वाङ्मयक प्रति सम्पूर्ण निष्ठा रखितो एहिठाम शुक्ल यजुर्वेदक प्रणयन भेल, वृहदारण्यकोपनिषद्क गार्गी वाचकन्वीक सम्वाद एहिठामक ब्रह्मैषणाक नियामक रहल, याज्ञवल्क्य-स्मृति एहिठामक लोकजगतक विधि-निषेधक नियामक भेल आ कपिल, कणाद, गौतम, वाचस्पति, उदयन, कुमारिल, मण्डन, गंगेश, भवनाथ, शंकर, विद्यापति पक्षधर आदिक दर्शनसँ सम्बलित ई भूमि भारतीय मनीषाक निरन्तर पथ-प्रदर्शक बनल रहल। प्राकृतपैङ्गलम्, चर्याचर्यविनिश्चय, दोहाकोश ओ डाकार्णवमे अपन साहित्यिक पटुताक निदर्शन प्रस्तुत करैत एहिठामक क्षेत्रीय भाषाकेँ ई गौरव सेहो प्राप्त छैक जे एहिमे आदिग्रन्थ सुनियोजित

गद्यग्रन्थक रूपमे भेटैत अछि तथा विद्यापतिसँ लऽ कऽ अधुनातन कालधरिक मैथिली साहित्य ई सिद्ध करबाक हेतु पर्याप्त अछि जे भारतीय साहित्यक विकासमे एकर निरन्तर आ वैभवपूर्ण योगदान रहलैक अछि।

मिथिलाक शिष्ट संस्कृति जँ भारतीय संस्कृतिक विनियमनमे अपन विशिष्ट योगदान दैत रहल अछि तँ एकर लोकसंस्कृति सेहो अपन सुवाससँ लोकजीवनकेँ आप्लावित कयने रहल अछि। भक्तिपक्षीय, व्यवहारक ओ संस्कारपरक गीत, लोककथा, लोकगाथा, मोहावरा, लोकोक्ति, लोकश्रुति ओ किंवन्दन्ती, पिहानी, लोकमंत्र, वचन, फकड़ा, लोकनृत्य ओ लोकनाट्य एहिठामक लोकजीवनमे तेना भऽ कऽ रचल-बसल अछि जे एकरा सभक बिना लोकजीवनक परिकल्पने नहि कयल जा सकैछ। मैथिल लोकसंस्कृतिक ई विविध अंग सभ बहुआयामी, अति विस्तृत, अतुल वैभवसम्पन्न आ आकर्षक अछि।

मिथिलाक लोकनृत्य मध्य एक गोट विशिष्ट प्रकार भेद थिक सामा-चकेबा। ई मिथिलाक विशिष्ट पावनि मध्य परिगणित अछि आ एकर आयोजन छठिक पारणा दिनसँ लऽ कऽ कार्त्तिकी पूर्णिमा दिन धरि होइत छैक। नओ दिनक ई आयोजन मिथिलाक महिला-मंडलक हास-विलास, उल्लास ओ मनोरंजनकेँ सम्पूर्ण मिथिलाञ्चलमे अनुगुञ्जित कयने रहैछ। कातिकक धवल मध्य रात्रिमे कोनो गामसँ गुजरैत काल कोनो चौबट्टी की पोखरिक भीड़ आ कि आनो स्थल पर बाँसक चङेराक बीचमे दीप जरौने आ तकर चारूकात माटिक विभिन्न आकृतिक मूरुतक संग नेनासँ लऽ कऽ बूढ़ धरिक महिलाक हेजँ जँ कोकिल कंठसँ गीत आ फकड़ा बँचैत अभरि जाथि तँ बूझि पड़त जेना आइयो मिथिलामे दहेज कोनो समस्या नहि छैक, नारी-शिक्षाक कोनो अहमियत नहि छैक, वार्षिक जल-प्लावन किछु बिगाड़ि नहि पबैत छैक आ रोग-शोक एहिठामक लोककेँ विदेह जनपदक बूझि हारि मानि चुकल अछि।

सामा चकेबाकेँ लोकनृत्य कहबाक पाछाँ कारण ई छैक जे एहिमे अंग संचालनपूर्वक भावप्रदर्शन ओ संगीतादि लोकरंजनी क्रियाक सन्निवेश छैक। सामा चकेबाक खेड़िमे महिलालोकनि अपना-अपना घरक कुलदेवता लग राखल सामा-चकेबाक डालामे दीप लेसि ओकरा कान्ह पर वा माथ पर धऽ बाहर होइत छथि। बहरयबाक क्रममे बटगबनीक सादृश्यपरक सामाक गीत संग संग चलनिहारि महिलालोकनि गाबऽ लगैत छथि। घर-घर सँ बहरायल डाला सभ गीतगाइनि सभक संग आगू-पाछूक क्रममे एकत्र भऽ एकटा दिव्य यात्राक दृश्यक निर्माण करेत अछि। क्रमशः गीत-संगीतक संग डाला सब कोनो चौबट्टी आदि पर जमा होइत अछि। एतऽ डाला सबकेँ एक दोसरासँ सटा कऽ चक्राकार राखल जाइत छैक आ समूहगान होइत रहैछ। महिलालोकनि डालाक चक्रक चारूकात बैसिकऽ गीतगायन ओ विभिन्न विधि संपन्न करैत छथि। कतहु-कतहु ईहो देखल गेल अछि जे चक्राकार बैसलि नारीलोकनि गीत गबैत काल ठाढ़ भऽ कऽ क्रमशः आगू बढ़ऽ लगैत छथि। बढ़बाक क्रममे ओलोकनि एक बेर बामा पैरकेँ ठेहुनसँ मोड़ि थोड़ेक उपर कऽ लैत छथि आ झुकि कऽ ओहि पैरक खाली स्थानमे दूनू दिससँ हाथ लऽ जाय थपड़ी पिटैत छथि। यैह व्यापार दहिनौ पैरक संग कयल जाइछ। एहि प्रकारक चक्राकार नृत्यक संग गीतो चलैत रहैछ। नृत्य, गीत समाप्ति पर बन्द भऽ जाइछ आ नारीलोकनि अपन-अपन स्थान धऽ लैत छथि। खेड़ि समाप्त भेला उत्तर समस्त सखीलोकनि पुनः डाला कान्ह पर लऽ गीत गबैत घर घुरि जाइत छथि।

मिथिलाक लोकसंस्कृतिमे सामा - चकेबाकेँ भाइ-बहिनिक प्रगाढ़ ओ निश्छल स्नेह-सम्बन्धक प्रतीक-पावनिक मान्यता प्राप्त छैक। मिथिलामे प्रचलित दायभागक अनुसार पिताक सम्पत्ति पर ओकर पुत्र सन्तानेटाक सम विभक्त अधिकार देल गेलैक अछि। पुत्री सन्ततिकेँ पिताक सम्पत्तिसँ ओही दिन वञ्चित कऽ देल जाइत छैक जहिया ओकर विवाह भऽ जाइत छैक। विवाहसँ लऽ कऽ द्विरागमन धरि खाहे जे दान-दहेजक रूपमे ओकरा प्राप्त भऽ जाइक, मुदा ततः पर पिताक सम्पत्ति पर दृष्टि देब ने ओकर अभीष्टे रहैत छैक आ ने वांछिते बूझल जाइत छैक। हँ, ओकर नैहरक आवागमन आजीवन चलिते रहैत छैक, नैहरसँ विदा होमऽकाल तथा नैहरमे उपस्थित काज-तिहारक अवसर पर व्यवहारपरक विदाइ भेटैत रहैत छैक, भाइ द्वारा बहिनिक ओहिठाम गेला पर सनेस-बाड़ी लऽ जायब वांछित बूझल जाइत छैक। एतावता सासुरवास भेला पर मिथिलाक नारी समाजक एकमात्र अवलम्ब ओकर सासुरे रहि जाइत छैक, खाहे ओ सम्पत्तिवान होइक वा दरिद्रछिम्मड़ि।

तथापि दुहिताक उपेक्षाक ई दायभागीय दृष्टिकोण मिथिलाक नारीकेँ विचलित नहि कऽ सकलैक अछि, तकर कारण छैक भाइ-बहिनिक प्रति अविचल स्नेह-सम्बन्ध जे भाइकेँ आजीवन बहिनिक सुख-दुःखक प्रति संवेदनशील बनौने रहैत छैक। सामा-चकेबाक पाबनि तकर वार्षिक स्मृतिपर्व थिक आ एकर माध्यमे बहिन अपन भाइक सुख-सौभाग्यकेँ श्रीवृद्धिक मंगलकामना करैत रहैत अछि। भाइ सेहो बहिनिक एहि प्रकारक मंगलकामनासँ अभिभूत जीवन भरि बहिनिक स्नेहपाशमे आबद्ध रहैत अछि।

ओना कार्तिक शुक्ल द्वितीयाक दिन अनुष्ठित भ्रातृद्वितियामे सेहो भाइ बहिनिक ओहिठाम जाय पूजित होइत छथि आ बहिन हुनक कालकंटक हरण करबाक मान्त्रिक उपचार करैत छथि। मुदा सामा-चकेबामे भाइ-बहिनिक आपकताक जे दृष्टान्त भेटैत अछि, तकर एहिमे अभावे छैक। आइकाल्हि अपसंस्कृतिक प्रसार, अन्यान्य प्रदेशक देखाउँस तथा कर्मावती ओ हुमायूंक ऐतिहासिक कथाकेँ राङि-ढेउरि कऽ सुप्रचारित कऽ देने रक्षाबन्धनक पावनि सेहो भाइबहिनिक स्नेहसूत्रक बन्धनक पाबनिक रूपमे मनाओल जाय लागल अछि। मुदा ई पाबनि हमरालोकनिक लोकसंस्कृतिक अंग नहि बनि सकल अछि। कारण ई जे रक्षामूत्रक मन्त्र राजा बलिसँ सम्बद्ध अछि आ एहिमे ज्येष्ठ द्वारा छोटकेँ आशीर्वचन देबाक विधान छैक। पंडित ओ भाटलोकनि एकरा अपन वृत्तिक रूपमे धयने छथि। दोसर तथ्य ई अछि जे हुमायूं कोनो तेहन ऐतिहासिक पुरुष नहि छल जे ओकर कृत्य लोकजगतक अंग बनि सकैक। वस्तुतः कर्मावतीक राखी आ हुमायूं द्वारा ओकर रक्षाक प्रदर्शन एक गोट कूटनीतिक नाटक छल जाहिमे पवित्रताक परिकल्पने व्यर्थ

गद्यग्रन्थक रूपमे भेटैत अछि तथा विद्यापतिसँ लऽ कऽ अधुनातन कालधरिक मैथिली साहित्य ई सिद्ध करबाक हेतु पर्याप्त अछि जे भारतीय साहित्यक विकासमे एकर निरन्तर आ वैभवपूर्ण योगदान रहलैक अछि।

मिथिलाक शिष्ट संस्कृति जँ भारतीय संस्कृतिक विनियमनमे अपन विशिष्ट योगदान दैत रहल अछि तँ एकर लोकसंस्कृति सेहो अपन सुवाससँ लोकजीवनकेँ आप्लावित कयने रहल अछि। भक्तिपक्षीय, व्यवहारक ओ संस्कारपरक गीत, लोककथा, लोकगाथा, मोहावरा, लोकोक्ति, लोकश्रुति ओ किंवन्दन्ती, पिहानी, लोकमंत्र, वचन, फकड़ा, लोकनृत्य ओ लोकनाट्य एहिठामक लोकजीवनमे तेना भऽ कऽ रचल-बसल अछि जे एकरा सभक बिना लोकजीवनक परिकल्पने नहि कयल जा सकैछ। मैथिल लोकसंस्कृतिक ई विविध अंग सभ बहुआयामी, अति विस्तृत, अतुल वैभवसम्पन्न आ आकर्षक अछि।

मिथिलाक लोकनृत्य मध्य एक गोट विशिष्ट प्रकार भेद थिक सामा-चकेबा। ई मिथिलाक विशिष्ट पावनि मध्य परिगणित अछि आ एकर आयोजन छठिक पारणा दिनसँ लऽ कऽ कार्त्तिकी पूर्णिमा दिन धरि होइत छैक। नओ दिनक ई आयोजन मिथिलाक महिला-मंडलक हास-विलास, उल्लास ओ मनोरंजनकेँ सम्पूर्ण मिथिलाञ्चलमे अनुगुञ्जित कयने रहैछ। कातिकक धवल मध्य रात्रिमे कोनो गामसँ गुजरैत काल कोनो चौबट्टी की पोखरिक भीड़ आ कि आनो स्थल पर बाँसक चङेराक बीचमे दीप जरौने आ तकर चारूकात माटिक विभिन्न आकृतिक मूरुतक संग नेनासँ लऽ कऽ बूढ़ धरिक महिलाक हेजँ जँ कोकिल कंठसँ गीत आ फकड़ा बँचैत अभरि जाथि तँ बूझि पड़त जेना आइयो मिथिलामे दहेज कोनो समस्या नहि छैक, नारी-शिक्षाक कोनो अहमियत नहि छैक, वार्षिक जल-प्लावन किछु बिगाड़ि नहि पबैत छैक आ रोग-शोक एहिठामक लोककेँ विदेह जनपदक बूझि हारि मानि चुकल अछि।

सामा चकेबाकेँ लोकनृत्य कहबाक पाछाँ कारण ई छैक जे एहिमे अंग संचालनपूर्वक भावप्रदर्शन ओ संगीतादि लोकरंजनी क्रियाक सन्निवेश छैक। सामा चकेबाक खेड़िमे महिलालोकनि अपना-अपना घरक कुलदेवता लग राखल सामा-चकेबाक डालामे दीप लेसि ओकरा कान्ह पर वा माथ पर धऽ बाहर होइत छथि। बहरयबाक क्रममे बटगबनीक सादृश्यपरक सामाक गीत संग संग चलनिहारि महिलालोकनि गाबऽ लगैत छथि। घर-घर सँ बहरायल डाला सभ गीतगाइनि सभक संग आगू-पाछूक क्रममे एकत्र भऽ एकटा दिव्य यात्राक दृश्यक निर्माण करेत अछि। क्रमशः गीत-संगीतक संग डाला सब कोनो चौबट्टी आदि पर जमा होइत अछि। एतऽ डाला सबकेँ एक दोसरासँ सटा कऽ चक्राकार राखल जाइत छैक आ समूहगान होइत रहैछ। महिलालोकनि डालाक चक्रक चारूकात बैसिकऽ गीतगायन ओ विभिन्न विधि संपन्न करैत छथि। कतहु-कतहु ईहो देखल गेल अछि जे चक्राकार बैसलि नारीलोकनि गीत गबैत काल ठाढ़ भऽ कऽ क्रमशः आगू बढ़ऽ लगैत छथि। बढ़बाक क्रममे ओलोकनि एक बेर बामा पैरकेँ ठेहुनसँ मोड़ि थोड़ेक उपर कऽ लैत छथि आ झुकि कऽ ओहि पैरक खाली स्थानमे दूनू दिससँ हाथ लऽ जाय थपड़ी पिटैत छथि। यैह व्यापार दहिनौ पैरक संग कयल जाइछ। एहि प्रकारक चक्राकार नृत्यक संग गीतो चलैत रहैछ। नृत्य, गीत समाप्ति पर बन्द भऽ जाइछ आ नारीलोकनि अपन-अपन स्थान धऽ लैत छथि। खेड़ि समाप्त भेला उत्तर समस्त सखीलोकनि पुनः डाला कान्ह पर लऽ गीत गबैत घर घुरि जाइत छथि।

मिथिलाक लोकसंस्कृतिमे सामा - चकेबाकेँ भाइ-बहिनिक प्रगाढ़ ओ निश्छल स्नेह-सम्बन्धक प्रतीक-पावनिक मान्यता प्राप्त छैक। मिथिलामे प्रचलित दायभागक अनुसार पिताक सम्पत्ति पर ओकर पुत्र सन्तानेटाक सम विभक्त अधिकार देल गेलैक अछि। पुत्री सन्ततिकेँ पिताक सम्पत्तिसँ ओही दिन वञ्चित कऽ देल जाइत छैक जहिया ओकर विवाह भऽ जाइत छैक। विवाहसँ लऽ कऽ द्विरागमन धरि खाहे जे दान-दहेजक रूपमे ओकरा प्राप्त भऽ जाइक, मुदा ततः पर पिताक सम्पत्ति पर दृष्टि देब ने ओकर अभीष्टे रहैत छैक आ ने वांछिते बूझल जाइत छैक। हँ, ओकर नैहरक आवागमन आजीवन चलिते रहैत छैक, नैहरसँ विदा होमऽकाल तथा नैहरमे उपस्थित काज-तिहारक अवसर पर व्यवहारपरक विदाइ भेटैत रहैत छैक, भाइ द्वारा बहिनिक ओहिठाम गेला पर सनेस-बाड़ी लऽ जायब वांछित बूझल जाइत छैक। एतावता सासुरवास भेला पर मिथिलाक नारी समाजक एकमात्र अवलम्ब ओकर सासुरे रहि जाइत छैक, खाहे ओ सम्पत्तिवान होइक वा दरिद्रछिम्मड़ि।

तथापि दुहिताक उपेक्षाक ई दायभागीय दृष्टिकोण मिथिलाक नारीकेँ विचलित नहि कऽ सकलैक अछि, तकर कारण छैक भाइ-बहिनिक प्रति अविचल स्नेह-सम्बन्ध जे भाइकेँ आजीवन बहिनिक सुख-दुःखक प्रति संवेदनशील बनौने रहैत छैक। सामा-चकेबाक पाबनि तकर वार्षिक स्मृतिपर्व थिक आ एकर माध्यमे बहिन अपन भाइक सुख-सौभाग्यकेँ श्रीवृद्धिक मंगलकामना करैत रहैत अछि। भाइ सेहो बहिनिक एहि प्रकारक मंगलकामनासँ अभिभूत जीवन भरि बहिनिक स्नेहपाशमे आबद्ध रहैत अछि।

ओना कार्तिक शुक्ल द्वितीयाक दिन अनुष्ठित भ्रातृद्वितियामे सेहो भाइ बहिनिक ओहिठाम जाय पूजित होइत छथि आ बहिन हुनक कालकंटक हरण करबाक मान्त्रिक उपचार करैत छथि। मुदा सामा-चकेबामे भाइ-बहिनिक आपकताक जे दृष्टान्त भेटैत अछि, तकर एहिमे अभावे छैक। आइकाल्हि अपसंस्कृतिक प्रसार, अन्यान्य प्रदेशक देखाउँस तथा कर्मावती ओ हुमायूंक ऐतिहासिक कथाकेँ राङि-ढेउरि कऽ सुप्रचारित कऽ देने रक्षाबन्धनक पावनि सेहो भाइबहिनिक स्नेहसूत्रक बन्धनक पाबनिक रूपमे मनाओल जाय लागल अछि। मुदा ई पाबनि हमरालोकनिक लोकसंस्कृतिक अंग नहि बनि सकल अछि। कारण ई जे रक्षामूत्रक मन्त्र राजा बलिसँ सम्बद्ध अछि आ एहिमे ज्येष्ठ द्वारा छोटकेँ आशीर्वचन देबाक विधान छैक। पंडित ओ भाटलोकनि एकरा अपन वृत्तिक रूपमे धयने छथि। दोसर तथ्य ई अछि जे हुमायूं कोनो तेहन ऐतिहासिक पुरुष नहि छल जे ओकर कृत्य लोकजगतक अंग बनि सकैक। वस्तुतः कर्मावतीक राखी आ हुमायूं द्वारा ओकर रक्षाक प्रदर्शन एक गोट कूटनीतिक नाटक छल जाहिमे पवित्रताक परिकल्पने व्यर्थ

गद्यग्रन्थक रूपमे भेटैत अछि तथा विद्यापतिसँ लऽ कऽ अधुनातन कालधरिक मैथिली साहित्य ई सिद्ध करबाक हेतु पर्याप्त अछि जे भारतीय साहित्यक विकासमे एकर निरन्तर आ वैभवपूर्ण योगदान रहलैक अछि।

मिथिलाक शिष्ट संस्कृति जँ भारतीय संस्कृतिक विनियमनमे अपन विशिष्ट योगदान दैत रहल अछि तँ एकर लोकसंस्कृति सेहो अपन सुवाससँ लोकजीवनकेँ आप्लावित कयने रहल अछि। भक्तिपक्षीय, व्यवहारक ओ संस्कारपरक गीत, लोककथा, लोकगाथा, मोहावरा, लोकोक्ति, लोकश्रुति ओ किंवन्दन्ती, पिहानी, लोकमंत्र, वचन, फकड़ा, लोकनृत्य ओ लोकनाट्य एहिठामक लोकजीवनमे तेना भऽ कऽ रचल-बसल अछि जे एकरा सभक बिना लोकजीवनक परिकल्पने नहि कयल जा सकैछ। मैथिल लोकसंस्कृतिक ई विविध अंग सभ बहुआयामी, अति विस्तृत, अतुल वैभवसम्पन्न आ आकर्षक अछि।

मिथिलाक लोकनृत्य मध्य एक गोट विशिष्ट प्रकार भेद थिक सामा-चकेबा। ई मिथिलाक विशिष्ट पावनि मध्य परिगणित अछि आ एकर आयोजन छठिक पारणा दिनसँ लऽ कऽ कार्त्तिकी पूर्णिमा दिन धरि होइत छैक। नओ दिनक ई आयोजन मिथिलाक महिला-मंडलक हास-विलास, उल्लास ओ मनोरंजनकेँ सम्पूर्ण मिथिलाञ्चलमे अनुगुञ्जित कयने रहैछ। कातिकक धवल मध्य रात्रिमे कोनो गामसँ गुजरैत काल कोनो चौबट्टी की पोखरिक भीड़ आ कि आनो स्थल पर बाँसक चङेराक बीचमे दीप जरौने आ तकर चारूकात माटिक विभिन्न आकृतिक मूरुतक संग नेनासँ लऽ कऽ बूढ़ धरिक महिलाक हेजँ जँ कोकिल कंठसँ गीत आ फकड़ा बँचैत अभरि जाथि तँ बूझि पड़त जेना आइयो मिथिलामे दहेज कोनो समस्या नहि छैक, नारी-शिक्षाक कोनो अहमियत नहि छैक, वार्षिक जल-प्लावन किछु बिगाड़ि नहि पबैत छैक आ रोग-शोक एहिठामक लोककेँ विदेह जनपदक बूझि हारि मानि चुकल अछि।

सामा चकेबाकेँ लोकनृत्य कहबाक पाछाँ कारण ई छैक जे एहिमे अंग संचालनपूर्वक भावप्रदर्शन ओ संगीतादि लोकरंजनी क्रियाक सन्निवेश छैक। सामा चकेबाक खेड़िमे महिलालोकनि अपना-अपना घरक कुलदेवता लग राखल सामा-चकेबाक डालामे दीप लेसि ओकरा कान्ह पर वा माथ पर धऽ बाहर होइत छथि। बहरयबाक क्रममे बटगबनीक सादृश्यपरक सामाक गीत संग संग चलनिहारि महिलालोकनि गाबऽ लगैत छथि। घर-घर सँ बहरायल डाला सभ गीतगाइनि सभक संग आगू-पाछूक क्रममे एकत्र भऽ एकटा दिव्य यात्राक दृश्यक निर्माण करेत अछि। क्रमशः गीत-संगीतक संग डाला सब कोनो चौबट्टी आदि पर जमा होइत अछि। एतऽ डाला सबकेँ एक दोसरासँ सटा कऽ चक्राकार राखल जाइत छैक आ समूहगान होइत रहैछ। महिलालोकनि डालाक चक्रक चारूकात बैसिकऽ गीतगायन ओ विभिन्न विधि संपन्न करैत छथि। कतहु-कतहु ईहो देखल गेल अछि जे चक्राकार बैसलि नारीलोकनि गीत गबैत काल ठाढ़ भऽ कऽ क्रमशः आगू बढ़ऽ लगैत छथि। बढ़बाक क्रममे ओलोकनि एक बेर बामा पैरकेँ ठेहुनसँ मोड़ि थोड़ेक उपर कऽ लैत छथि आ झुकि कऽ ओहि पैरक खाली स्थानमे दूनू दिससँ हाथ लऽ जाय थपड़ी पिटैत छथि। यैह व्यापार दहिनौ पैरक संग कयल जाइछ। एहि प्रकारक चक्राकार नृत्यक संग गीतो चलैत रहैछ। नृत्य, गीत समाप्ति पर बन्द भऽ जाइछ आ नारीलोकनि अपन-अपन स्थान धऽ लैत छथि। खेड़ि समाप्त भेला उत्तर समस्त सखीलोकनि पुनः डाला कान्ह पर लऽ गीत गबैत घर घुरि जाइत छथि।

मिथिलाक लोकसंस्कृतिमे सामा - चकेबाकेँ भाइ-बहिनिक प्रगाढ़ ओ निश्छल स्नेह-सम्बन्धक प्रतीक-पावनिक मान्यता प्राप्त छैक। मिथिलामे प्रचलित दायभागक अनुसार पिताक सम्पत्ति पर ओकर पुत्र सन्तानेटाक सम विभक्त अधिकार देल गेलैक अछि। पुत्री सन्ततिकेँ पिताक सम्पत्तिसँ ओही दिन वञ्चित कऽ देल जाइत छैक जहिया ओकर विवाह भऽ जाइत छैक। विवाहसँ लऽ कऽ द्विरागमन धरि खाहे जे दान-दहेजक रूपमे ओकरा प्राप्त भऽ जाइक, मुदा ततः पर पिताक सम्पत्ति पर दृष्टि देब ने ओकर अभीष्टे रहैत छैक आ ने वांछिते बूझल जाइत छैक। हँ, ओकर नैहरक आवागमन आजीवन चलिते रहैत छैक, नैहरसँ विदा होमऽकाल तथा नैहरमे उपस्थित काज-तिहारक अवसर पर व्यवहारपरक विदाइ भेटैत रहैत छैक, भाइ द्वारा बहिनिक ओहिठाम गेला पर सनेस-बाड़ी लऽ जायब वांछित बूझल जाइत छैक। एतावता सासुरवास भेला पर मिथिलाक नारी समाजक एकमात्र अवलम्ब ओकर सासुरे रहि जाइत छैक, खाहे ओ सम्पत्तिवान होइक वा दरिद्रछिम्मड़ि।

तथापि दुहिताक उपेक्षाक ई दायभागीय दृष्टिकोण मिथिलाक नारीकेँ विचलित नहि कऽ सकलैक अछि, तकर कारण छैक भाइ-बहिनिक प्रति अविचल स्नेह-सम्बन्ध जे भाइकेँ आजीवन बहिनिक सुख-दुःखक प्रति संवेदनशील बनौने रहैत छैक। सामा-चकेबाक पाबनि तकर वार्षिक स्मृतिपर्व थिक आ एकर माध्यमे बहिन अपन भाइक सुख-सौभाग्यकेँ श्रीवृद्धिक मंगलकामना करैत रहैत अछि। भाइ सेहो बहिनिक एहि प्रकारक मंगलकामनासँ अभिभूत जीवन भरि बहिनिक स्नेहपाशमे आबद्ध रहैत अछि।

ओना कार्तिक शुक्ल द्वितीयाक दिन अनुष्ठित भ्रातृद्वितियामे सेहो भाइ बहिनिक ओहिठाम जाय पूजित होइत छथि आ बहिन हुनक कालकंटक हरण करबाक मान्त्रिक उपचार करैत छथि। मुदा सामा-चकेबामे भाइ-बहिनिक आपकताक जे दृष्टान्त भेटैत अछि, तकर एहिमे अभावे छैक। आइकाल्हि अपसंस्कृतिक प्रसार, अन्यान्य प्रदेशक देखाउँस तथा कर्मावती ओ हुमायूंक ऐतिहासिक कथाकेँ राङि-ढेउरि कऽ सुप्रचारित कऽ देने रक्षाबन्धनक पावनि सेहो भाइबहिनिक स्नेहसूत्रक बन्धनक पाबनिक रूपमे मनाओल जाय लागल अछि। मुदा ई पाबनि हमरालोकनिक लोकसंस्कृतिक अंग नहि बनि सकल अछि। कारण ई जे रक्षामूत्रक मन्त्र राजा बलिसँ सम्बद्ध अछि आ एहिमे ज्येष्ठ द्वारा छोटकेँ आशीर्वचन देबाक विधान छैक। पंडित ओ भाटलोकनि एकरा अपन वृत्तिक रूपमे धयने छथि। दोसर तथ्य ई अछि जे हुमायूं कोनो तेहन ऐतिहासिक पुरुष नहि छल जे ओकर कृत्य लोकजगतक अंग बनि सकैक। वस्तुतः कर्मावतीक राखी आ हुमायूं द्वारा ओकर रक्षाक प्रदर्शन एक गोट कूटनीतिक नाटक छल जाहिमे पवित्रताक परिकल्पने व्यर्थ

कहल जा सकैछ। हँ, एकर सम्बन्ध ओहि महाभारतीय लोकश्रुतिसँ अवश्य जोड़ल ज सकैछ जाहिमे श्रीकृष्णक आङुर कटि गेला उत्तर द्रोपदी द्वारा अपन आँचर फाड़ि खून रोकबाक प्रयत्न कथित अछि जकर प्रतिदानक रूपमे श्रीकृष्ण वस्त्र रूप धारण कऽ भरल सभामे द्रोपदीकेँ नाङट करबा पर प्रवृत्त दु:शासनकेँ थका देने छलथिन आ द्रोपदीक लाजक रक्षा कयने छलथिन।

एतावता सामा-चकेबा मिथिलाक एक गोट विशिष्ट पाबनि थिक जकर उपकरण सभ निम्नलिखित अछि-सामा, चकेबा, सतभइञा, झांझी कुकुर, ढोलिया, लड़ुबेचनी, खड़रिच, वनतितिर, वृन्दावन ओ चुगिल। ई सभटा उपकरण महिलालोकनि स्वयं माटि, खढ़, संठी ओ सनक सहायतासँ बनबैत छथि। सभ पात्रक आकृति भिन्न-भिन्न ओ विशिष्ट प्रकारक होइत छैक। वृन्दावनमे संठी ओ खढ़सँ बनल एकटा गुच्छ होइत छैक जकरा प्रतिदिन कने-कने कऽ जराओल जाइत छैक। चुगिलाक केस सनसँ निर्मित रहैछ आ ओकरो प्रतिदिन झरकाओल जाइत छैक।

लोकमान्यताक अनुसार सामा प्रतिवर्ष कार्त्तिक शुक्ल सप्तमी दिन नैहर अबैत छथि आ पूर्णिमा दिन सासुर कऽ प्रस्थान कऽ जाइत छथि। तेँ जयबा काल हिनका विदा करबाक क्रममे जे साँठक वस्तुजात देल जाइत छनि (धान्य, वस्त्र, पुष्प, गहना, मिष्टान्न आदि) तकर पात्रक रूपमे फुलडाली, पौती आदि उपकरण सेहो एहि खेड़िक उपकरण मध्य सम्मिलित रहैछ। सामान्यत: सभटा उपकरण नारीलोकनि स्वयं बनबैत छथि मुदा आइकाल्हुक कुमारिलोकनि कुम्हार द्वारा सद्य:निर्मित उपकरण विशेष पसिन्न करऽ लगलीह अछि, जाहि कारणेँ मूर्त्ति निर्माण कौशलसँ दूर भेल जाइत छथि।

सामा-चकेबाक खेड़िमे लोकनृत्यक प्रदर्शन ओ लोकगीतक गायन प्रमुख अछि। प्रदर्शनक क्रममे वृन्दावनकेँ जरायब ओ मिझायब तथा चुगिलाकेँ बेर-बेर झरकयबाक कृत्य बेस मनोरंजक होइत छैक। अन्तिम दिन भाइ सामा-चकेबाककेँ विदा करबाक हेतु केराक थम्ह आ डपौड़सँ डोली किंवा बेढ़क निर्माण करैत छथि जाहि पर चढ़ाऽ सामा-



चकेबाकेँ सोपकरण वस्त्रादिक संग भसा देल जाइत छनि। भसयबासँ पूर्व सामा-चकेबाकेँ भाइ द्वारा खण्डित कऽ देल जयबाक विधान अछि। भाइ ठेहुन लगा कऽ सामाक मूरुतकेँ खण्डित कऽ दैत छथिन। कतहु-कतहु बहिनलोकनि चडेरहिमे समस्त उपकरणकेँ कूर खेत दिस लऽ जाइत छथि आ ओतहि भाइ द्वारा मुरुत सभकेँ खण्डित कराय जोतल खेतहिमे मिला देल जाइत छैक। मिथिलाक लोकमान्यताक अनुसार चूड़ा-दही खा कऽ यात्रा करब सिद्धिकारक ओ मंगलदायक बूझल जाइछ। से सामा-चकेबाकेँ सेहो विदाइक दिन यैह भोग लगैत छनि आ तकरा प्रसादस्वरूप समदाओनि गओनिहारि ओ जुटल नेना सभमे वितरित कऽ देल जाइत छैक। सामाकेँ फोड़ि कऽ भसयबासँ पूर्व बहिन तकर मजदूरीक प्रतीकक रूपमे भाइक फाँफड़/फाँड़ (धोतीक अग्रभागसँ बनाओल धोकड़ी) मुरही, बताशा ओ अन्य मधुरसँ भरि दैत छथिन जाहिमे बहिन द्वारा भाइक फाँफड़मे तीन मुट्ठी सविधि विधान अछि। ओहीमेसँ भाइ एक मुट्ठी बाहर कऽ बहिनकेँ दऽ दैत छैक। बहिन ओ भाइक प्रति ई दान-प्रतिदानक प्रक्रिया हमरा जनैत दूनूक जिनगी धरि दान-प्रतिदानक माध्यमे आबद्ध रहबाक संकल्पक प्रतीक थिक। कतहु-कतहु फाँफड़ भरलाक बाद भाइ द्वारा बहिनकेँ नगद प्रतिदान देबाक विधान सेहो देखल जाइछ।

सामा-चकेबाकेँ मैथिलीमे साहित्यिक स्वीकृति सेहो भेटल छैक। मैथिलीक यावन्तो लोकगीतक संकलन देखि पड़ैत अछि ताहि सभमे सामा-चकेबाक गीत सामान्यत: संकलित देखले जाइछ। एहि प्रकारक संकलन सभसँ एहि खेड़िक गीतक माध्यमे एहि लोकनृत्यक शास्त्रीय विवेचनक मार्ग प्रशस्त भेल अछि। मिथिलामे प्रचलित वर्षकृत्यमे सामापूजाव्रतक कथा संकलित अछि। विगत शताब्दीक द्वितीय चरणहिमे स्वनामधन्य प्रो. श्रीनन्दनन्दनझाक पितामह भेषनाथझा कथोपकथन शैलीमे दूटा सखीक वार्त्ताक रूपमे मैथिली व्यवहार विज्ञान पोथीक प्रणयन कऽ प्रकाशित करौने छलाह जाहिमे सामा-चकेबाक निबन्ध ग्रन्थपरक शास्त्रीय विवेचन भेल अछि। डा. रामदेवझाक भैया शीर्षक कथा (वैदेही, मई 1956) मे भाइ-बहिनिक स्नेह-सम्बन्धक अतिशय संवेदनपरक चित्र उरेहल गेल अछि। भाइक हेतु सहोदरा आ बहिनिक हेतु सहोदर सामा भसानक दिन कतेक महत्त्वपूर्ण भऽ जाइत छैक आ सहोदराक प्रति स्नेह भाइकेँ कतऽ धरि आपत्तियोकेँ चुनौती देबाक हेतु बाध्य कऽ दैत छेक, से एहि कथामे अत्यन्त शालीनतापूर्वक दर्शाओल गेल अछि। श्रीरवीन्द्रनाथठाकुर आधुनिक मैथिली साहित्यमे लोकगीतकारक रूपमे प्रशस्ति बटोरैत रहलाक। हुनक ई सामागीत मैथिली

कहल जा सकैछ। हँ, एकर सम्बन्ध ओहि महाभारतीय लोकश्रुतिसँ अवश्य जोड़ल ज सकैछ जाहिमे श्रीकृष्णक आङुर कटि गेला उत्तर द्रोपदी द्वारा अपन आँचर फाड़ि खून रोकबाक प्रयत्न कथित अछि जकर प्रतिदानक रूपमे श्रीकृष्ण वस्त्र रूप धारण कऽ भरल सभामे द्रोपदीकेँ नाङट करबा पर प्रवृत्त दु:शासनकेँ थका देने छलथिन आ द्रोपदीक लाजक रक्षा कयने छलथिन।

एतावता सामा-चकेबा मिथिलाक एक गोट विशिष्ट पाबनि थिक जकर उपकरण सभ निम्नलिखित अछि-सामा, चकेबा, सतभइञा, झांझी कुकुर, ढोलिया, लङबेचनी, खड़रिच, वनतितिर, वृन्दावन ओ चुगिल। ई सभटा उपकरण महिलालोकनि स्वयं माटि, खढ़, संठी ओ सनक सहायतासँ बनबैत छथि। सभ पात्रक आकृति भिन्न-भिन्न ओ विशिष्ट प्रकारक होइत छैक। वृन्दावनमे संठी ओ खढ़सँ बनल एकटा गुच्छ होइत छैक जकरा प्रतिदिन कने-कने कऽ जराओल जाइत छैक। चुगिलाक केस सनसँ निर्मित रहैछ आ ओकरो प्रतिदिन झरकाओल जाइत छैक।

लोकमान्यताक अनुसार सामा प्रतिवर्ष कार्त्तिक शुक्ल सप्तमी दिन नैहर अबैत छथि आ पूर्णिमा दिन सासुर कऽ प्रस्थान कऽ जाइत छथि। तँ जयबा काल हिनका विदा करबाक क्रममे जे साँठक वस्तुजात देल जाइत छनि (धान्य, वस्त्र, पुष्प, गहना, मिष्टान्न आदि) तकर पात्रक रूपमे फुलडाली, पौती आदि उपकरण सेहो एहि खेड़िक उपकरण मध्य सम्मिलित रहैछ। सामान्यत: सभटा उपकरण नारीलोकनि स्वयं बनबैत छथि मुदा आइकाल्हुक कुमारिलोकनि कुम्हार द्वारा सद्य:निर्मित उपकरण विशेष पसिन्न करऽ लगलीह अछि, जाहि कारणेँ मूर्त्ति निर्माण कौशलसँ दूर भेल जाइत छथि।

सामा-चकेबाक खेड़िमे लोकनृत्यक प्रदर्शन ओ लोकगीतक गायन प्रमुख अछि। प्रदर्शनक क्रममे वृन्दावनकेँ जरायब ओ मिझायब तथा चुगिलाकेँ बेर-बेर झरकयबाक कृत्य बेस मनोरंजक होइत छैक। अन्तिम दिन भाइ सामा-चकेबाककेँ विदा करबाक हेतु केराक थम्ह आ डपौड़सँ डोली किंवा बेढ़क निर्माण करैत छथि जाहि पर चढ़ाऽ सामा-



चकेबाकेँ सोपकरण वस्त्रादिक संग भसा देल जाइत छनि। भसयबासँ पूर्व सामा-चकेबाकेँ भाइ द्वारा खण्डित कऽ देल जयबाक विधान अछि। भाइ ठेहुन लगा कऽ सामाक मूरुतकेँ खण्डित कऽ दैत छथिन। कतहु-कतहु बहिनलोकनि चडेरहिमे समस्त उपकरणकेँ कूर खेत दिस लऽ जाइत छथि आ ओतहि भाइ द्वारा मुरुत सभकेँ खण्डित कराय जोतल खेतहिमे मिला देल जाइत छैक। मिथिलाक लोकमान्यताक अनुसार चूड़ा-दही खा कऽ यात्रा करब सिद्धिकारक ओ मंगलदायक बूझल जाइछ। से सामा-चकेबाकेँ सेहो विदाइक दिन यैह भोग लगैत छनि आ तकरा प्रसादस्वरूप समदाओनि गओनिहारि ओ जुटल नेना सभमे वितरित कऽ देल जाइत छैक। सामाकेँ फोड़ि कऽ भसयबासँ पूर्व बहिन तकर मजदूरीक प्रतीकक रूपमे भाइक फाँफड़/फाँड़ (धोतीक अग्रभागसँ बनाओल धोकड़ी) मुरही, बताशा ओ अन्य मधुरसँ भरि दैत छथिन जाहिमे बहिन द्वारा भाइक फाँफड़मे तीन मुट्ठी सविधि विधान अछि। ओहीमेसँ भाइ एक मुट्ठी बाहर कऽ बहिनकेँ दऽ दैत छैक। बहिन ओ भाइक प्रति ई दान-प्रतिदानक प्रक्रिया हमरा जनैत दूनूक जिनगी धरि दान-प्रतिदानक माध्यमे आबद्ध रहबाक संकल्पक प्रतीक थिक। कतहु-कतहु फाँफड़ भरलाक बाद भाइ द्वारा बहिनकेँ नगद प्रतिदान देबाक विधान सेहो देखल जाइछ।

सामा-चकेबाकेँ मैथिलीमे साहित्यिक स्वीकृति सेहो भेटल छैक। मैथिलीक यावन्तो लोकगीतक संकलन देखि पड़ैत अछि ताहि सभमे सामा-चकेबाक गीत सामान्यत: संकलित देखले जाइछ। एहि प्रकारक संकलन सभसँ एहि खेड़िक गीतक माध्यमे एहि लोकनृत्यक शास्त्रीय विवेचनक मार्ग प्रशस्त भेल अछि। मिथिलामे प्रचलित वर्षकृत्यमे सामापूजाव्रतक कथा संकलित अछि। विगत शताब्दीक द्वितीय चरणहिमे स्वनामधन्य प्रो. श्रीनन्दनन्दनझाक पितामह भेषनाथझा कथोपकथन शैलीमे दूटा सखीक वार्त्ताक रूपमे मैथिली व्यवहार विज्ञान पोथीक प्रणयन कऽ प्रकाशित करौने छलाह जाहिमे सामा-चकेबाक निबन्ध ग्रन्थपरक शास्त्रीय विवेचन भेल अछि। डा. रामदेवझाक भैया शीर्षक कथा (वैदेही, मई 1956) मे भाइ-बहिनिक स्नेह-सम्बन्धक अतिशय संवेदनपरक चित्र उरेहल गेल अछि। भाइक हेतु सहोदरा आ बहिनिक हेतु सहोदर सामा भसानक दिन कतेक महत्त्वपूर्ण भऽ जाइत छैक आ सहोदराक प्रति स्नेह भाइकेँ कतऽ धरि आपत्तियोकेँ चुनौती देबाक हेतु बाध्य कऽ दैत छेक, से एहि कथामे अत्यन्त शालीनतापूर्वक दर्शाओल गेल अछि। श्रीरवीन्द्रनाथठाकुर आधुनिक मैथिली साहित्यमे लोकगीतकारक रूपमे प्रशस्ति बटोरैत रहलाक। हुनक ई सामागीत मैथिली

कहल जा सकैछ। हँ, एकर सम्बन्ध ओहि महाभारतीय लोकश्रुतिसँ अवश्य जोड़ल ज सकैछ जाहिमे श्रीकृष्णक आङुर कटि गेला उत्तर द्रोपदी द्वारा अपन आँचर फाड़ि खून रोकबाक प्रयत्न कथित अछि जकर प्रतिदानक रूपमे श्रीकृष्ण वस्त्र रूप धारण कऽ भरल सभामे द्रोपदीकेँ नाङट करबा पर प्रवृत्त दु:शासनकेँ थका देने छलथिन आ द्रोपदीक लाजक रक्षा कयने छलथिन।

एतावता सामा-चकेबा मिथिलाक एक गोट विशिष्ट पाबनि थिक जकर उपकरण सभ निम्नलिखित अछि-सामा, चकेबा, सतभइञा, झांझी कुकुर, ढोलिया, लङुबेचनी, खड़रिच, वनतितिर, वृन्दावन ओ चुगिल। ई सभटा उपकरण महिलालोकनि स्वयं माटि, खढ़, संठी ओ सनक सहायतासँ बनबैत छथि। सभ पात्रक आकृति भिन्न-भिन्न ओ विशिष्ट प्रकारक होइत छैक। वृन्दावनमे संठी ओ खढ़सँ बनल एकटा गुच्छ होइत छैक जकरा प्रतिदिन कने-कने कऽ जराओल जाइत छैक। चुगिलाक केस सनसँ निर्मित रहैछ आ ओकरो प्रतिदिन झरकाओल जाइत छैक।

लोकमान्यताक अनुसार सामा प्रतिवर्ष कार्त्तिक शुक्ल सप्तमी दिन नैहर अबैत छथि आ पूर्णिमा दिन सासुर कऽ प्रस्थान कऽ जाइत छथि। तेँ जयबा काल हिनका विदा करबाक क्रममे जे साँठक वस्तुजात देल जाइत छनि (धान्य, वस्त्र, पुष्प, गहना, मिष्टान्न आदि) तकर पात्रक रूपमे फुलडाली, पौती आदि उपकरण सेहो एहि खेड़िक उपकरण मध्य सम्मिलित रहैछ। सामान्यत: सभटा उपकरण नारीलोकनि स्वयं बनबैत छथि मुदा आइकाल्हुक कुमारिलोकनि कुम्हार द्वारा सद्य:निर्मित उपकरण विशेष पसिन्न करऽ लगलीह अछि, जाहि कारणेँ मूर्त्ति निर्माण कौशलसँ दूर भेल जाइत छथि।

सामा-चकेबाक खेड़िमे लोकनृत्यक प्रदर्शन ओ लोकगीतक गायन प्रमुख अछि। प्रदर्शनक क्रममे वृन्दावनकेँ जरायब ओ मिझायब तथा चुगिलाकेँ बेर-बेर झरकयबाक कृत्य बेस मनोरंजक होइत छैक। अन्तिम दिन भाइ सामा-चकेबाककेँ विदा करबाक हेतु केराक थम्ह आ डपौड़सँ डोली किंवा बेढ़क निर्माण करैत छथि जाहि पर चढ़ाऽ सामा-



चकेबाकेँ सोपकरण वस्त्रादिक संग भसा देल जाइत छनि। भसयबासँ पूर्व सामा-चकेबाकेँ भाइ द्वारा खण्डित कऽ देल जयबाक विधान अछि। भाइ ठेहुन लगा कऽ सामाक मूरुतकेँ खण्डित कऽ दैत छथिन। कतहु-कतहु बहिनलोकनि चडेरहिमे समस्त उपकरणकेँ कूर खेत दिस लऽ जाइत छथि आ ओतहि भाइ द्वारा मुरुत सभकेँ खण्डित कराय जोतल खेतहिमे मिला देल जाइत छैक। मिथिलाक लोकमान्यताक अनुसार चूड़ा-दही खा कऽ यात्रा करब सिद्धिकारक ओ मंगलदायक बूझल जाइछ। से सामा-चकेबाकेँ सेहो विदाइक दिन यैह भोग लगैत छनि आ तकरा प्रसादस्वरूप समदाओनि गओनिहारि ओ जुटल नेना सभमे वितरित कऽ देल जाइत छैक। सामाकेँ फोड़ि कऽ भसयबासँ पूर्व बहिन तकर मजदूरीक प्रतीकक रूपमे भाइक फाँफड़/फाँड़ (धोतीक अग्रभागसँ बनाओल धोकड़ी) मुरही, बताशा ओ अन्य मधुरसँ भरि दैत छथिन जाहिमे बहिन द्वारा भाइक फाँफड़मे तीन मुट्ठी सविधि विधान अछि। ओहीमेसँ भाइ एक मुट्ठी बाहर कऽ बहिनकेँ दऽ दैत छैक। बहिन ओ भाइक प्रति ई दान-प्रतिदानक प्रक्रिया हमरा जनैत दूनूक जिनगी धरि दान-प्रतिदानक माध्यमे आबद्ध रहबाक संकल्पक प्रतीक थिक। कतहु-कतहु फाँफड़ भरलाक बाद भाइ द्वारा बहिनकेँ नगद प्रतिदान देबाक विधान सेहो देखल जाइछ।

सामा-चकेबाकेँ मैथिलीमे साहित्यिक स्वीकृति सेहो भेटल छैक। मैथिलीक यावन्तो लोकगीतक संकलन देखि पड़ैत अछि ताहि सभमे सामा-चकेबाक गीत सामान्यत: संकलित देखले जाइछ। एहि प्रकारक संकलन सभसँ एहि खेड़िक गीतक माध्यमे एहि लोकनृत्यक शास्त्रीय विवेचनक मार्ग प्रशस्त भेल अछि। मिथिलामे प्रचलित वर्षकृत्यमे सामापूजाव्रतक कथा संकलित अछि। विगत शताब्दीक द्वितीय चरणहिमे स्वनामधन्य प्रो. श्रीनन्दनन्दनझाक पितामह भेषनाथझा कथोपकथन शैलीमे दूटा सखीक वार्त्ताक रूपमे मैथिली व्यवहार विज्ञान पोथीक प्रणयन कऽ प्रकाशित करौने छलाह जाहिमे सामा-चकेबाक निबन्ध ग्रन्थपरक शास्त्रीय विवेचन भेल अछि। डा. रामदेवझाक भैया शीर्षक कथा (वैदेही, मई 1956) मे भाइ-बहिनिक स्नेह-सम्बन्धक अतिशय संवेदनपरक चित्र उरेहल गेल अछि। भाइक हेतु सहोदरा आ बहिनिक हेतु सहोदर सामा भसानक दिन कतेक महत्त्वपूर्ण भऽ जाइत छैक आ सहोदराक प्रति स्नेह भाइकेँ कतऽ धरि आपत्तियोकेँ चुनौती देबाक हेतु बाध्य कऽ दैत छेक, से एहि कथामे अत्यन्त शालीनतापूर्वक दर्शाओल गेल अछि। श्रीरवीन्द्रनाथठाकुर आधुनिक मैथिली साहित्यमे लोकगीतकारक रूपमे प्रशस्ति बटोरैत रहलाक। हुनक ई सामागीत मैथिली

लोकमञ्चक अत्यन्त प्रिय गीत सावित भेल–

'माटिक सामा बनली
बहिनो खेलऽ चलली
भैया जीबऽ हो
युग–युग जीबऽ हो'

डॉ. लोकनाथमिश्र प्रणीत मैथिलीमे व्यवहार गीत प्रबन्धमे सामा चकेबासँ सम्बन्धित तीन गोट कथा अनुलेखन भेल अछि। आइसँ करीब पचास वर्ष पूर्वहि डा. अमरनाथझा, राम इकबालसिंह 'राकेश' द्वारा संकलित 'मैथिली लोकगीत'क भूमिकामे ई कहि कऽ सामा चकेबाकेँ शास्त्रीय विषय बना देने छलाह जे 'श्यामा चकेबाक सम्बन्धमे पाठकलोकनिकेँ ई जानि उत्सुकता होयतनि जे एकर उल्लेख पद्मपुराणमे अछि।' 'राकेश'क उक्त पोथीमे सामा–चकेबाक खेड़िमे प्रयुक्त समस्त पात्र ओ उपकरणक सम्बन्धमे विशद विवेचन कयल गेल अछि। राजेश्वरझा श्यामा चकेबा नामक विनिबन्धपरक पोथीक रचना कयने छथि। रोहिणीरमणझा सामा चकेबाक कथाकेँ गीतनाट्यक मर्यादा दिऔलनि। साहित्य अकादेमी द्वारा पुरस्कृत पं. गोविन्दझाक पोथी सामाक पौती एही शीर्षक कथाक कारणेँ प्रथित भेल जाहिमे भाइ–बहिनिक आत्यन्तिक अनुरागकेँ उत्कृष्ट अभिव्यक्ति प्रदान कयल गेल अछि।

मैथिल लोकसंस्कृतिक विशिष्ट प्रतीक 'सामा चकेबा' मे भाइक प्रति बहिनिक मंगलकामना पग–पग पर भेटैत अछि, यथा–

जइसन नदिया सेमार तइसन भइया असवार
जइसन केराक थम्ह तइसन भइयाक जांघ
जइसन धोबियाक पाट तइसन भइयाक पीठ
जइसन रेशमक रेश तइसन भइयाक केश
जइसन आमक फाँक तइसन भइयाक आँखि
जइसन चनन बिरीछ तइसन भइया हाथक लाठी

स्पष्ट अछि जे बहिन भाइक स्वास्थ्य ओ सौन्दर्यक प्रति अभिभूत अछि। मुदा स्वास्थ्य ओ सौन्दर्यक संगहि बहिनिक इहो कामना एहि लोकनृत्य प्रकारक गीत सभमे अभिव्यक्त भेल अछि जे भाइ लक्ष्मीवान सेहो होथि यथा–

हमर भैया कोना आबय
हाथी पर बैसल हँसैत आबय
पान सँ दाँत रङइत आबय
रुमाल सँ मुँह पोछैत आबय
कंघी सँ केश झाड़इत आबय
हमर भौजी कोना आबय
पालकी मे बैसल हँसइत आबय
सिनुर सँ माङ भरइत आबय
अयना सँ मुँह देखइत आबय

एकटा गीतमे तँ बहिन द्वारा अपना भाइक हाथमे लोहक बदला सोनाक छूरी देखबाक कामनाक अभिव्यक्ति भेल अछि–

सामा चकेबा अइहऽ हे अइहऽ हे
कूर खेत मे बैसिहऽ हे बैसिहऽ हे
नवरंग पटिया ओछबिहऽ हे
ओहि पटिया पर कय कय जनी कय कय जनी
छोटे बड़े नवे जनी नवे जनी
नवो जनी के खीरे पूड़ी, खीरे पूड़ी
हमरा भैया के सोने छूरी, सोने छूरी

किन्तु बहिनिक ई मंगलकामना चाटुकारिता किंवा लोभग्रस्तताक प्रतीक नहि, अपितु निश्छल स्नेह–भावक प्रतीक थिक। एकटा गीतमे सासुरवास बहिनकेँ जखन भाइ द्वारा पिताक सम्पत्तिमे अधिकार देल जयबाक प्रस्ताव उपस्थित कयल जाइत छैक तखन ओ प्रस्तावकेँ सहजहि लतिआय दैत छैक तथा अपन भातिजक हेतु ओहि सम्पत्तिक परित्याग करबाक मानसिकतासँ भाइकेँ अवगत करबैत केवल भाइक स्नेह–संबल तथा स्वामीक अस्तित्वटा पर अपन अधिकार बुझैत अछि–

जुनि कानू जुनि खीजू हे बहिनी
बाबा के सम्पतिया देबह हे बाँटि
बाबा के सम्पतिया हो भैया
भतिजबा केर आश
हम दूरदेसिन हो भैया
मोटरिया केर हे आस
हम परदेसिन हो भैया
सिन्दुरबा केर हे आस

मिथिलाक लोकजीवनमे ननदि आ भाउजिक स्नेह–सम्बन्धक निदर्शन एहि दूनू सम्बन्धीक नोंक–झोंकसँ प्रगाढ़ता प्राप्त करैत रहल अछि आ तकर प्रचुर अभिव्यक्ति मैथिली लोकगीतक सोहर ओ खेलौना प्रभेदमे भेटैत अछि। सामा–चकेबाक गीतमे सेहो एहि प्रकारक नोंक–झोंकक सहज चित्रण भेल अछि। ननदि अपन भाइक अंगनामे सामा खेलऽ जाइत छथि। भौजी असहयोग करैत छथिन। ननदिकेँ ई स्वाभिमान जाग्रत भऽ जाइत छनि जे हुनका पर तावत् धरि भौजीक जूति नहि चलि सकैत छनि यावत् धरि हुनक माता–पिता जीवैत छथिन। ओहो ओही माता–पिताक सन्तान थिकीह जकर हुनक भाइ, जकरा कारणेँ भौजी अपन जूति चलबऽ चाहैत छथि। तँ ओ भौजीकेँ दमसबैत कहैत छथिन जे यावत् माता–पिताक राज रहत, हम सामा खेलऽ नैहर अयबे करब। बहिनिक प्रति अपन पत्नीक रुक्ष व्यवहारसँ भाइक सहोदरा–स्नेह जाग्रत भऽ उठैत छनि आ ओ अपन पत्नीकेँ मारबाक हेतु उद्यात भऽ जाइत छथि। कारण, नैहर आयल बहिन तँ दू दिनुक पाहुन होइत छैक आ मिथिला भारतीय परम्परानुसार अतिथि देवो भवक मन्त्रकेँ व्यवहारमे अनने रहबामे सभ दिनसँ अग्रगण्य रहल अछि। द्रष्टव्य–

सामा खेलऽ गेली फल्लाँ भैया आंगन हे
आहे भउजो लेलनि लुलुआय ननदि कहाँ आयल हे
जुनि लुलुआउ भउजो जुनि गारि पारू हे
आहे जाबे रहतै माय बापक राज सामा हम खेलब हे
आहे छूटि जयतै माय बापक राज छोड़ब तोर आंगन हे
एतबे वचनिआ सुनलनि फल्लाँ भैया हे
भैया मारलनि बरछी घुमाय बहिन मोर पाहुन हे

भाइ जँ जीवन भरि अपन बहिनिक मर्यादाक रक्षाक हेतु बरछी उसाहनहि रहैत अछि तँ बहीनो अपन सासुरमे सदिखन एहि जोगाड़मे लागलि रहैत अछि जे ओकर भाइ जँ ओकर सासुर अबैक तँ ओकर मान–मर्यादामे कोनो त्रुटि नहि होइक। बहिनिक एहि भावनाक चित्र एहि पदमे कतेक मनोरम भेल अछि, से द्रष्टव्य–

नदिया के तीरे–तीरे फल्लाँ भैया खेलथि

लोकमञ्चक अत्यन्त प्रिय गीत सावित भेल–

'माटिक सामा बनली
बहिनो खेलऽ चलली
भैया जीबऽ हो
युग-युग जीबऽ हो'

डॉ. लोकनाथमिश्र प्रणीत मैथिलीमे व्यवहार गीत प्रबन्धमे सामा चकेबासँ सम्बन्धित तीन गोट कथा अनुलेखन भेल अछि। आइसँ करीब पचास वर्ष पूर्वहि डा. अमरनाथझा, राम इकबालसिंह 'राकेश' द्वारा संकलित 'मैथिली लोकगीत'क भूमिकामे ई कहि कऽ सामा चकेबाकेँ शास्त्रीय विषय बना देने छलाह जे 'श्यामा चकेबाक सम्बन्धमे पाठकलोकनिकेँ ई जानि उत्सुकता होयतनि जे एकर उल्लेख पद्मपुराणमे अछि।' 'राकेश'क उक्त पोथीमे सामा-चकेबाक खेड़िमे प्रयुक्त समस्त पात्र ओ उपकरणक सम्बन्धमे विशद विवेचन कयल गेल अछि। राजेश्वरझा श्यामा चकेबा नामक विनिबन्धपरक पोथीक रचना कयने छथि। रोहिणीरमणझा सामा चकेबाक कथाकेँ गीतनाट्यक मर्यादा दिऔलनि। साहित्य अकादेमी द्वारा पुरस्कृत पं. गोविन्दझाक पोथी सामाक पौती एही शीर्षक कथाक कारणेँ प्रथित भेल जाहिमे भाइ-बहिनिक आत्यन्तिक अनुरागकेँ उत्कृष्ट अभिव्यक्ति प्रदान कयल गेल अछि।

मैथिल लोकसंस्कृतिक विशिष्ट प्रतीक 'सामा चकेबा' मे भाइक प्रति बहिनिक मंगलकामना पग-पग पर भेटैत अछि, यथा–

जइसन नदिया सेमार तइसन भइया असवार
जइसन केराक थम्ह तइसन भइयाक जांघ
जइसन धोबियाक पाट तइसन भइयाक पीठ
जइसन रेशमक रेश तइसन भइयाक केश
जइसन आमक फाँक तइसन भइयाक आँखि
जइसन चनन बिरीछ तइसन भइया हाथक लाठी

स्पष्ट अछि जे बहिन भाइक स्वास्थ्य ओ सौन्दर्यक प्रति अभिभूत अछि। मुदा स्वास्थ्य ओ सौन्दर्यक संगहि बहिनिक इहो कामना एहि लोकनृत्य प्रकारक गीत सभमे अभिव्यक्त भेल अछि जे भाइ लक्ष्मीवान सेहो होथि यथा–

हमर भैया कोना आबय
हाथी पर बैसल हँसैत आबय
पान सँ दाँत रङइत आबय
रुमाल सँ मुँह पोछैत आबय
कंघी सँ केश झाड़इत आबय
हमर भौजी कोना आबय
पालकी मे बैसल हँसइत आबय
सिनुर सँ माङ भरइत आबय
अयना सँ मुँह देखइत आबय

एकटा गीतमे तँ बहिन द्वारा अपना भाइक हाथमे लोहक बदला सोनाक छूरी देखबाक कामनाक अभिव्यक्ति भेल अछि–

सामा चकेबा अइहऽ हे अइहऽ हे
कूर खेत मे बैसिहऽ हे बैसिहऽ हे
नवरंग पटिया ओछबिहऽ हे
ओहि पटिया पर कय कय जनी कय कय जनी
छोटे बड़े नवे जनी नवे जनी
नवो जनी के खीरे पूड़ी, खीरे पूड़ी
हमरा भैया के सोने छूरी, सोने छूरी

किन्तु बहिनिक ई मंगलकामना चाटुकारिता किंवा लोभग्रस्तताक प्रतीक नहि, अपितु निश्छल स्नेह-भावक प्रतीक थिक। एकटा गीतमे सासुरवास बहिनकेँ जखन भाइ द्वारा पिताक सम्पत्तिमे अधिकार देल जयबाक प्रस्ताव उपस्थित कयल जाइत छैक तखन ओ प्रस्तावकेँ सहजहि लतिआय दैत छैक तथा अपन भातिजक हेतु ओहि सम्पत्तिक परित्याग करबाक मानसिकतासँ भाइकेँ अवगत करबैत केवल भाइक स्नेह-संबल तथा स्वामीक अस्तित्वटा पर अपन अधिकार बुझैत अछि–

जुनि कानू जुनि खीजू हे बहिनी
बाबा के सम्पतिया देबह हे बाँटि
बाबा के सम्पतिया हो भैया
भतिजबा केर आश
हम दूरदेसिन हो भैया
मोटरिया केर हे आस
हम परदेसिन हो भैया
सिन्दुरबा केर हे आस

मिथिलाक लोकजीवनमे ननदि आ भाउजिक स्नेह-सम्बन्धक निदर्शन एहि दूनू सम्बन्धीक नोंक-झोंकसँ प्रगाढ़ता प्राप्त करैत रहल अछि आ तकर प्रचुर अभिव्यक्ति मैथिली लोकगीतक सोहर ओ खेलौना प्रभेदमे भेटैत अछि। सामा-चकेबाक गीतमे सेहो एहि प्रकारक नोंक-झोंकक सहज चित्रण भेल अछि। ननदि अपन भाइक अंगनामे सामा खेलऽ जाइत छथि। भौजी असहयोग करैत छथिन। ननदिकेँ ई स्वाभिमान जाग्रत भऽ जाइत छनि जे हुनका पर तावत् धरि भौजीक जूति नहि चलि सकैत छनि यावत् धरि हुनक माता-पिता जीवैत छथिन। ओहो ओही माता-पिताक सन्तान थिकीह जकर हुनक भाइ, जकरा कारणेँ भौजी अपन जूति चलबऽ चाहैत छथि। तँ ओ भौजीकेँ दमसबैत कहैत छथिन जे यावत् माता-पिताक राज रहत, हम सामा खेलऽ नैहर अयबे करब। बहिनिक प्रति अपन पत्नीक रुक्ष व्यवहारसँ भाइक सहोदरा-स्नेह जाग्रत भऽ उठैत छनि आ ओ अपन पत्नीकेँ मारबाक हेतु उद्यात भऽ जाइत छथि। कारण, नैहर आयल बहिन तँ दू दिनुक पाहुन होइत छैक आ मिथिला भारतीय परम्परानुसार अतिथि देवो भवक मन्त्रकेँ व्यवहारमे अनने रहबामे सभ दिनसँ अग्रगण्य रहल अछि। द्रष्टव्य–

सामा खेलऽ गेली फल्लाँ भैया आंगन हे
आहे भउजो लेलनि लुलुआय ननदि कहाँ आयल हे
जुनि लुलुआउ भउजो जुनि गारि पारू हे
आहे जाबे रहतै माय बापक राज सामा हम खेलब हे
आहे छूटि जयतै माय बापक राज छोड़ब तोर आंगन हे
एतबे वचनिआ सुनलनि फल्लाँ भैया हे
भैया मारलनि बरछी घुमाय बहिन मोर पाहुन हे

भाइ जँ जीवन भरि अपन बहिनिक मर्यादाक रक्षाक हेतु बरछी उसाहनहि रहैत अछि तँ बहीनो अपन सासुरमे सदिखन एहि जोगाड़मे लागलि रहैत अछि जे ओकर भाइ जँ ओकर सासुर अबैक तँ ओकर मान-मर्यादामे कोनो त्रुटि नहि होइक। बहिनिक एहि भावनाक चित्र एहि पदमे कतेक मनोरम भेल अछि, से द्रष्टव्य–

नदिया के तीरे-तीरे फल्लाँ भैया खेलथि

लोकमञ्चक अत्यन्त प्रिय गीत सावित भेल–

'माटिक सामा बनली
बहिनो खेलऽ चलली
भैया जीबऽ हो
युग–युग जीबऽ हो'

डॉ. लोकनाथमिश्र प्रणीत मैथिलीमे व्यवहार गीत प्रबन्धमे सामा चकेबासँ सम्बन्धित तीन गोट कथा अनुलेखन भेल अछि। आइसँ करीब पचास वर्ष पूर्वहि डा. अमरनाथझा, राम इकबालसिंह 'राकेश' द्वारा संकलित 'मैथिली लोकगीत'क भूमिकामे ई कहि कऽ सामा चकेबाकेँ शास्त्रीय विषय बना देने छलाह जे 'श्यामा चकेबाक सम्बन्धमे पाठकलोकनिकेँ ई जानि उत्सुकता होयतनि जे एकर उल्लेख पद्मपुराणमे अछि।' 'राकेश'क उक्त पोथीमे सामा–चकेबाक खेड़िमे प्रयुक्त समस्त पात्र ओ उपकरणक सम्बन्धमे विशद विवेचन कयल गेल अछि। राजेश्वरझा श्यामा चकेबा नामक विनिबन्धपरक पोथीक रचना कयने छथि। रोहिणीरमणझा सामा चकेबाक कथाकेँ गीतनाट्यक मर्यादा दिऔलनि। साहित्य अकादेमी द्वारा पुरस्कृत पं. गोविन्दझाक पोथी सामाक पौती एही शीर्षक कथाक कारणेँ प्रथित भेल जाहिमे भाइ–बहिनिक आत्यन्तिक अनुरागकेँ उत्कृष्ट अभिव्यक्ति प्रदान कयल गेल अछि।

मैथिल लोकसंस्कृतिक विशिष्ट प्रतीक 'सामा चकेबा' मे भाइक प्रति बहिनिक मंगलकामना पग–पग पर भेटैत अछि, यथा–

जइसन नदिया सेमार तइसन भइया असवार
जइसन केराक थम्ह तइसन भइयाक जांघ
जइसन धोबियाक पाट तइसन भइयाक पीठ
जइसन रेशमक रेश तइसन भइयाक केश
जइसन आमक फाँक तइसन भइयाक आँखि
जइसन चनन बिरीछ तइसन भइया हाथक लाठी

स्पष्ट अछि जे बहिन भाइक स्वास्थ्य ओ सौन्दर्यक प्रति अभिभूत अछि। मुदा स्वास्थ्य ओ सौन्दर्यक संगहि बहिनिक इहो कामना एहि लोकनृत्य प्रकारक गीत सभमे अभिव्यक्त भेल अछि जे भाइ लक्ष्मीवान सेहो होथि यथा–

हमर भैया कोना आबय
हाथी पर बैसल हँसैत आबय
पान सँ दाँत रङइत आबय
रुमाल सँ मुँह पोछैत आबय
कंघी सँ केश झाड़इत आबय
हमर भौजी कोना आबय
पालकी मे बैसल हँसइत आबय
सिनुर सँ माङ भरइत आबय
अयना सँ मुँह देखइत आबय

एकटा गीतमे तँ बहिन द्वारा अपना भाइक हाथमे लोहक बदला सोनाक छूरी देखबाक कामनाक अभिव्यक्ति भेल अछि–

सामा चकेबा अइहऽ हे अइहऽ हे
कूर खेत मे बैसिहऽ हे बैसिहऽ हे
नवरंग पटिया ओछबिहऽ हे
ओहि पटिया पर कय कय जनी कय कय जनी
छोटे बड़े नवे जनी नवे जनी
नवो जनी के खीरे पूड़ी, खीरे पूड़ी
हमरा भैया के सोने छूरी, सोने छूरी

किन्तु बहिनिक ई मंगलकामना चाटुकारिता किंवा लोभग्रस्तताक प्रतीक नहि, अपितु निश्छल स्नेह–भावक प्रतीक थिक। एकटा गीतमे सासुरवास बहिनकेँ जखन भाइ द्वारा पिताक सम्पत्तिमे अधिकार देल जयबाक प्रस्ताव उपस्थित कयल जाइत छैक तखन ओ प्रस्तावकेँ सहजहि लतिआय दैत छैक तथा अपन भातिजक हेतु ओहि सम्पत्तिक परित्याग करबाक मानसिकतासँ भाइकेँ अवगत करबैत केवल भाइक स्नेह–संबल तथा स्वामीक अस्तित्वटा पर अपन अधिकार बुझैत अछि–

जुनि कानू जुनि खीजू हे बहिनी
बाबा के सम्पतिया देबह हे बाँटि
बाबा के सम्पतिया हो भैया
भतिजबा केर आश
हम दूरदेसिन हो भैया
मोटरिया केर हे आस
हम परदेसिन हो भैया
सिन्दुरबा केर हे आस

मिथिलाक लोकजीवनमे ननदि आ भाउजिक स्नेह–सम्बन्धक निदर्शन एहि दूनू सम्बन्धीक नोंक–झोंकसँ प्रगाढ़ता प्राप्त करैत रहल अछि आ तकर प्रचुर अभिव्यक्ति मैथिली लोकगीतक सोहर ओ खेलौना प्रभेदमे भेटैत अछि। सामा–चकेबाक गीतमे सेहो एहि प्रकारक नोंक–झोंकक सहज चित्रण भेल अछि। ननदि अपन भाइक अंगनामे सामा खेलऽ जाइत छथि। भौजी असहयोग करैत छथिन। ननदिकेँ ई स्वाभिमान जाग्रत भऽ जाइत छनि जे हुनका पर तावत् धरि भौजीक जूति नहि चलि सकैत छनि यावत् धरि हुनक माता–पिता जीवैत छथिन। ओहो ओही माता–पिताक सन्तान थिकीह जकर हुनक भाइ, जकरा कारणेँ भौजी अपन जूति चलबऽ चाहैत छथि। तँ ओ भौजीकेँ दमसबैत कहैत छथिन जे यावत् माता–पिताक राज रहत, हम सामा खेलऽ नैहर अयबे करब। बहिनिक प्रति अपन पत्नीक रुक्ष व्यवहारसँ भाइक सहोदरा–स्नेह जाग्रत भऽ उठैत छनि आ ओ अपन पत्नीकेँ मारबाक हेतु उद्यात भऽ जाइत छथि। कारण, नैहर आयल बहिन तँ दू दिनुक पाहुन होइत छैक आ मिथिला भारतीय परम्परानुसार अतिथि देवो भवक मन्त्रकेँ व्यवहारमे अनने रहबामे सभ दिनसँ अग्रगण्य रहल अछि। द्रष्टव्य–

सामा खेलऽ गेली फल्लाँ भैया आंगन हे
आहे भउजो लेलनि लुलुआय ननदि कहाँ आयल हे
जुनि लुलुआउ भउजो जुनि गारि पारू हे
आहे जाबे रहतै माय बापक राज सामा हम खेलब हे
आहे छूटि जयतै माय बापक राज छोड़ब तोर आंगन हे
एतबे वचनिआ सुनलनि फल्लाँ भैया हे
भैया मारलनि बरछी घुमाय बहिन मोर पाहुन हे

भाइ जँ जीवन भरि अपन बहिनिक मर्यादाक रक्षाक हेतु बरछी उसाहनहि रहैत अछि तँ बहीनो अपन सासुरमे सदिखन एहि जोगाड़मे लागलि रहैत अछि जे ओकर भाइ जँ ओकर सासुर अबैक तँ ओकर मान–मर्यादामे कोनो त्रुटि नहि होइक। बहिनिक एहि भावनाक चित्र एहि पदमे कतेक मनोरम भेल अछि, से द्रष्टव्य–

नदिया के तीरे–तीरे फल्लाँ भैया खेलथि

शिकार हे।
आहे कहा पठौलथिन फल्लाँ बहिनो आइ भैया अएथिन पाहुन हे।
आहे नहि मोरा कोठी भरि आरब चाउर नहि पाकल बीड़ा पानहु हे।
आहे कोना राखब फल्लाँ भैयाक मान भैया मोर पाहन हे।
माइहे, हाटसँ मँगायब आरब चाउर तमोलिन बेटी पान देतइ हे।
आहे भले विधि राखब भैयाक मान भैया मोर पाहन हे।

भाइ आ बहिनिक प्रीति एहि सामा-गीतमे अत्यन्त उत्कृष्ट अभिव्यक्ति पओलक अछि-
कोने भैया के इहो घन फुलबरिया हे
आहे कोने बहिनो गेली चम्पा फूल लोढ़ऽ हे
फल्लाँ भैया के इहो घन फुलबरिया हे
आहे फल्लाँ बहिनो गेली चम्पा फूल लोढ़ऽ हे
फुलवा लोढ़इते बहिन मोर घामलि हे
आहे घामि गेल सिरक सिनूर नयन केर काजर हे
छतबा लय दौड़ल अबथिन फल्लाँ भैया हे
आहे बैसू बहिनी एहि जुड़ि छाहरि हे
आहे पनिञा लय दौड़ल अबथिन अइहब भौजो हे
आहे पीबू ननदी इहो शीतल पनिञा हे
अइहब भौजो के केस चँवर सन हे
आहे एही केश गुथब चमेली फूल हे

एही तरहेँ सामा चकेबाक गीतमे भाइ-बहिनिक भावुक स्नेह-सम्बन्धक पराकाष्ठा देखि पड़ैछ। बहि सदिखन अपन भाइकेँ अन-धन-लक्ष्मीसँ सम्पन्न देखैत रहबाक अभिलाषाक अभिव्यक्ति करैत छथि, मुदा संगहि इहो कामना रखैत छथि जे भाइक स्नेह हुनका लेल बनल रहनि आ ओ साले साल सामाक खेड़िक आनन्द लैत रहथि-
हमरो से कओने भैया चतुर सेयान हे
बामे लेल कागज दहिन खतियान हे
अपना लय लिखिहऽ भैया अनधन लक्ष्मी हे
हमरा लेल लिखिहऽ भैया सामा जोड़ चकेबा हे

आ भाइ-बहिनमे स्नेह बनल रहय सैह तँ एहि खेड़िक लोकप्रचलित उद्देश्यो थिक।



सामा-चकेबाक वृन्दावन दहनक गीत 'वृन्दावनमे अगि लगले केओ ने मिझाबय हे, हम्मर भैया फल्लाँ भैया दौड़ि-दौड़ि मिझाबय हे' मे बहिनिक द्वारा वीर, संघर्षशील ओ लोकोपकारी भाइक कामनाक चित्र देखि पड़ैत अछि। एकर चुगिला दहनक गीत सभ यथा- 'चुगिला करय चुगलपन, बिलाइ करय म्याऊँ, धऽ ला चुगिला केँ फाँसी देऊँ' आदिमे पिशुन प्रवृत्तिक लोकक प्रति जुगुप्सा भावक अनुकीर्त्तन अछि, कारण जे एहन लोक व्यक्ति आ समाजक अकारण बैरी होइत छथि तथा एहने लोकक दुष्प्रवृत्तिक कारणेँ कतोक व्यक्तिक रागानुराग विच्छिन्न होइत रहलनि अछि।

मिथिलाक लोकसंस्कृतिमे जातीय जीवनक झाँकी सामा-चकेबाक गीतक एहि पदमे अछि।
आ गे डिहुली आ गे डिहुली
सामा जाइ छै सासुर किछु गहना चाही गे डिहुली
धऽला कोनो सोनराकेँ गढ़बाइये देबै गे डिहुली
आगे डिहुली आ गे डिहुली
सामा जाइ छै सासुर किछु पौती चाही गे डिहुली
धऽला कोना डोमिनिञाकेँ बनबाइये देबै गे डिहुली
आ गे डिहुली आ गे डिहुली
सामा जाइ छै सासुर किछु कपड़ा चाही गे डिहुली
धऽला कोनो दरजीबाकेँ सिलबाइये देबै गे डिहुली
आ गे डिहुली आ गे डिहुली
सामा जाइ छै सासुर किछु टिकुली चाही गे डिहुली
धऽला कोनो सिनुरहाराकेँ किनबाइये देबै गे डिहुली

एहि पदमे मिथिलाक पारम्परिक जातीय व्यवसाय ओ सामाजिक जीवनमे समस्त जातिक आवश्यकता ओ पारस्परिक समन्वयक आवश्यकताक निदर्शन भेल अछि जे राष्ट्रिय समन्वयक नियामक रहल अछि। एहन पदमे सामा मिथिलाक प्रत्येक घरक बेटीक प्रतिनिधित्व करैत देखि पड़ैत छथि आ सहअस्तित्वक सामाजिक भावनाकेँ सुदृढ़ करबाक पाठ पढ़बैत छथि।

सामा-चकेबाक जे कोनो लोकश्रुत किंवा पौराणिक कथा उपलब्ध अछि ताहिमे भाइ-बहिनिक एक दोसराक हेतु स्नेह ओ त्यागक कथा अनुगुंफित अछि। एहि स्नेह ओ पारस्परिक त्यागक भावनाकेँ ई लोकसांस्कृतिक पर्व जीवन्त रखने अछि। आइ जखन लोकजीवन भौतिकताक अन्हड़मे स्नेह-सम्बन्धकेँ अबडेरने जा रहल अछि, सामा-चकेबा ध्रुवतारा जकाँ मानव समुदायकेँ दिशा-निर्देश करबामे समर्थ अछि आ यैह मिथिलाक एहि लोक सांस्कृतिक पर्वक प्रासंगिकता थिक, सार्थकता थिक।

शिकार हे।
आहे कहा पठौलथिन फल्लाँ बहिनो आइ भैया अएथिन पाहुन हे।
आहे नहि मोरा कोठी भरि आरब चाउर नहि पाकल बीड़ा पानहु हे।
आहे कोना राखब फल्लाँ भैयाक मान भैया मोर पाहन हे।
माइहे, हाटसँ मँगायब आरब चाउर तमोलिन बेटी पान देतइ हे।
आहे भले विधि राखब भैयाक मान भैया मोर पाहन हे।

भाइ आ बहिनिक प्रीति एहि सामा-गीतमे अत्यन्त उत्कृष्ट अभिव्यक्ति पओलक अछि-
कोने भैया के इहो घन फुलबरिया हे
आहे कोने बहिनो गेली चम्पा फूल लोढ़ऽ हे
फल्लाँ भैया के इहो घन फुलबरिया हे
आहे फल्लाँ बहिनो गेली चम्पा फूल लोढ़ऽ हे
फुलवा लोढ़इते बहिन मोर घामलि हे
आहे घामि गेल सिरक सिनूर नयन केर काजर हे
छतबा लय दौड़ल अबथिन फल्लाँ भैया हे
आहे बैसू बहिनी एहि जुड़ि छाहरि हे
आहे पनिञा लय दौड़ल अबथिन अइहब भौजो हे
आहे पीबू ननदी इहो शीतल पनिञा हे
अइहब भौजो के केस चँवर सन हे
आहे एही केश गुथब चमेली फूल हे

एही तरहेँ सामा चकेबाक गीतमे भाइ-बहिनिक भावुक स्नेह-सम्बन्धक पराकाष्ठा देखि पड़ैछ। बहि सदिखन अपन भाइकेँ अन-धन-लक्ष्मीसँ सम्पन्न देखैत रहबाक अभिलाषाक अभिव्यक्ति करैत छथि, मुदा संगहि इहो कामना रखैत छथि जे भाइक स्नेह हुनका लेल बनल रहनि आ ओ साले साल सामाक खेड़िक आनन्द लैत रहथि-
हमरो से कओने भैया चतुर सेयान हे
बामे लेल कागज दहिन खतियान हे
अपना लय लिखिहऽ भैया अनधन लक्ष्मी हे
हमरा लेल लिखिहऽ भैया सामा जोड़ चकेबा हे

आ भाइ-बहिनमे स्नेह बनल रहय सैह तँ एहि खेड़िक लोकप्रचलित उद्देश्यो थिक।



सामा-चकेबाक वृन्दावन दहनक गीत 'वृन्दावनमे अगि लगले केओ ने मिझाबय हे, हम्मर भैया फल्लाँ भैया दौड़ि-दौड़ि मिझाबय हे' मे बहिनिक द्वारा वीर, संघर्षशील ओ लोकोपकारी भाइक कामनाक चित्र देखि पड़ैत अछि। एकर चुगिला दहनक गीत सभ यथा- 'चुगिला करय चुगलपन, बिलाइ करय म्याऊँ, धऽ ला चुगिला कैँ फाँसी देऊँ' आदिमे पिशुन प्रवृत्तिक लोकक प्रति जुगुप्सा भावक अनुकीर्त्तन अछि, कारण जे एहन लोक व्यक्ति आ समाजक अकारण बैरी होइत छथि तथा एहने लोकक दुष्प्रवृत्तिक कारणेँ कतोक व्यक्तिक रागानुराग विच्छिन्न होइत रहलनि अछि।

मिथिलाक लोकसंस्कृतिमे जातीय जीवनक झाँकी सामा-चकेबाक गीतक एहि पदमे अछि।
आ गे डिहुली आ गे डिहुली
सामा जाइ छै सासुर किछु गहना चाही गे डिहुली
धऽला कोनो सोनराकेँ गढ़बाइये देबै गे डिहुली
आगे डिहुली आ गे डिहुली
सामा जाइ छै सासुर किछु पौती चाही गे डिहुली
धऽला कोना डोमिनिञाकेँ बनबाइये देबै गे डिहुली
आ गे डिहुली आ गे डिहुली
सामा जाइ छै सासुर किछु कपड़ा चाही गे डिहुली
धऽला कोनो दरजीबाकेँ सिलबाइये देबै गे डिहुली
आ गे डिहुली आ गे डिहुली
सामा जाइ छै सासुर किछु टिकुली चाही गे डिहुली
धऽला कोनो सिनुरहाराकेँ किनबाइये देबै गे डिहुली

एहि पदमे मिथिलाक पारम्परिक जातीय व्यवसाय ओ सामाजिक जीवनमे समस्त जातिक आवश्यकता ओ पारस्परिक समन्वयक आवश्यकताक निदर्शन भेल अछि जे राष्ट्रिय समन्वयक नियामक रहल अछि। एहन पदमे सामा मिथिलाक प्रत्येक घरक बेटीक प्रतिनिधित्व करैत देखि पड़ैत छथि आ सहअस्तित्वक सामाजिक भावनाकेँ सुदृढ़ करबाक पाठ पढ़बैत छथि।

सामा-चकेबाक जे कोनो लोकश्रुत किंवा पौराणिक कथा उपलब्ध अछि ताहिमे भाइ-बहिनिक एक दोसराक हेतु स्नेह ओ त्यागक कथा अनुगुंफित अछि। एहि स्नेह ओ पारस्परिक त्यागक भावनाकेँ ई लोकसांस्कृतिक पर्व जीवन्त रखने अछि। आइ जखन लोकजीवन भौतिकताक अन्हड़मे स्नेह-सम्बन्धकेँ अबडेरने जा रहल अछि, सामा-चकेबा ध्रुवतारा जकाँ मानव समुदायकेँ दिशा-निर्देश करबामे समर्थ अछि आ यैह मिथिलाक एहि लोक सांस्कृतिक पर्वक प्रासंगिकता थिक, सार्थकता थिक।

शिकार हे।
आहे कहा पठौलथिन फल्लाँ बहिनो आइ भैया अएथिन पाहुन हे।
आहे नहि मोरा कोठी भरि आरब चाउर नहि पाकल बीड़ा पानहु हे।
आहे कोना राखब फल्लाँ भैयाक मान भैया मोर पाहन हे।
माइहे, हाटसँ मँगायब आरब चाउर तमोलिन बेटी पान देतइ हे।
आहे भले विधि राखब भैयाक मान भैया मोर पाहन हे।

भाइ आ बहिनिक प्रीति एहि सामा-गीतमे अत्यन्त उत्कृष्ट अभिव्यक्ति पओलक अछि-
कोने भैया के इहो घन फुलबरिया हे
आहे कोने बहिनो गेली चम्पा फूल लोढ़ऽ हे
फल्लाँ भैया के इहो घन फुलबरिया हे
आहे फल्लाँ बहिनो गेली चम्पा फूल लोढ़ऽ हे
फुलवा लोढ़इते बहिन मोर घामलि हे
आहे घामि गेल सिरक सिनूर नयन केर काजर हे
छतबा लय दौड़ल अबथिन फल्लाँ भैया हे
आहे बैसू बहिनी एहि जुड़ि छाहरि हे
आहे पनिञा लय दौड़ल अबथिन अइहब भौजो हे
आहे पीबू ननदी इहो शीतल पनिञा हे
अइहब भौजो के केस चँवर सन हे
आहे एही केश गुथब चमेली फूल हे

एही तरहेँ सामा चकेबाक गीतमे भाइ-बहिनिक भावुक स्नेह-सम्बन्धक पराकाष्ठा देखि पड़ैछ। बहि सदिखन अपन भाइकेँ अन-धन-लक्ष्मीसँ सम्पन्न देखैत रहबाक अभिलाषाक अभिव्यक्ति करैत छथि, मुदा संगहि इहो कामना रखैत छथि जे भाइक स्नेह हुनका लेल बनल रहनि आ ओ साले साल सामाक खेड़िक आनन्द लैत रहथि-
हमरो से कओने भैया चतुर सेयान हे
बामे लेल कागज दहिन खतियान हे
अपना लय लिखिहऽ भैया अनधन लक्ष्मी हे
हमरा लेल लिखिहऽ भैया सामा जोड़ चकेबा हे

आ भाइ-बहिनमे स्नेह बनल रहय सैह तँ एहि खेड़िक लोकप्रचलित उद्देश्यो थिक।



सामा-चकेबाक वृन्दावन दहनक गीत 'वृन्दावनमे अगि लगले केओ ने मिझाबय हे, हम्मर भैया फल्लाँ भैया दौड़ि-दौड़ि मिझाबय हे' मे बहिनिक द्वारा वीर, संघर्षशील ओ लोकोपकारी भाइक कामनाक चित्र देखि पड़ैत अछि। एकर चुगिला दहनक गीत सभ यथा- 'चुगिला करय चुगलपन, बिलाइ करय म्याऊँ, धऽ ला चुगिला कैँ फाँसी देऊँ' आदिमे पिशुन प्रवृत्तिक लोकक प्रति जुगुप्सा भावक अनुकीर्त्तन अछि, कारण जे एहन लोक व्यक्ति आ समाजक अकारण बैरी होइत छथि तथा एहने लोकक दुष्प्रवृत्तिक कारणेँ कतोक व्यक्तिक रागानुराग विच्छिन्न होइत रहलनि अछि।

मिथिलाक लोकसंस्कृतिमे जातीय जीवनक झाँकी सामा-चकेबाक गीतक एहि पदमे अछि।
आ गे डिहुली आ गे डिहुली
सामा जाइ छै सासुर किछु गहना चाही गे डिहुली
धऽला कोनो सोनराकैँ गढ़बाइये देबै गे डिहुली
आगे डिहुली आ गे डिहुली
सामा जाइ छै सासुर किछु पौती चाही गे डिहुली
धऽला कोना डोमिनिञाकैँ बनबाइये देबै गे डिहुली
आ गे डिहुली आ गे डिहुली
सामा जाइ छै सासुर किछु कपड़ा चाही गे डिहुली
धऽला कोनो दरजीबाकैँ सिलबाइये देबै गे डिहुली
आ गे डिहुली आ गे डिहुली
सामा जाइ छै सासुर किछु टिकुली चाही गे डिहुली
धऽला कोनो सिनुरहाराकैँ किनबाइये देबै गे डिहुली

एहि पदमे मिथिलाक पारम्परिक जातीय व्यवसाय ओ सामाजिक जीवनमे समस्त जातिक आवश्यकता ओ पारस्परिक समन्वयक आवश्यकताक निदर्शन भेल अछि जे राष्ट्रिय समन्वयक नियामक रहल अछि। एहन पदमे सामा मिथिलाक प्रत्येक घरक बेटीक प्रतिनिधित्व करैत देखि पड़ैत छथि आ सहअस्तित्वक सामाजिक भावनाकैँ सुदृढ़ करबाक पाठ पढ़बैत छथि।

सामा-चकेबाक जे कोनो लोकश्रुत किंवा पौराणिक कथा उपलब्ध अछि ताहिमे भाइ-बहिनिक एक दोसराक हेतु स्नेह ओ त्यागक कथा अनुगुंफित अछि। एहि स्नेह ओ पारस्परिक त्यागक भावनाकैँ ई लोकसांस्कृतिक पर्व जीवन्त रखने अछि। आइ जखन लोकजीवन भौतिकताक अन्हड़मे स्नेह-सम्बन्धकैँ अबडेरने जा रहल अछि, सामा-चकेबा ध्रुवतारा जकाँ मानव समुदायकैँ दिशा-निर्देश करबामे समर्थ अछि आ यैह मिथिलाक एहि लोक सांस्कृतिक पर्वक प्रासंगिकता थिक, सार्थकता थिक।



सृजन

साहित्यिक सर्जनाक उर्ध्वशिखा

चन्द्रेश



लेखन-कार्य ततेक सहज ओ सरल नहि अछि। किछु लिखि लेबकैँ लेखन-कार्य नहि कहल जायत। बहुत गोटे किछु लिखि लैत छथि, छपाइयो लैत छथि आ अपनाकैँ शीर्षस्थ लेखक बुझय लगैत छथि। जँ कोनो सम्मान वा पुरस्कार भेटि गेल तँ बस भऽ गेल? अपनाकैँ साहित्यिक लेखक बुझि दम्भ भरैत छथि। किछु लिखिकऽ लेखक बनि जायब ततेक सहज ओ सरल नहि अछि। लेखककैँ पहिने सोचय-विचारय पड़ैत अछि जे की लिखी, किए' लिखी आ ककरा लेल लिखी? एहि उधेस-बुनमे चिन्तन मनन करैत बहुत किछु सोचय-विचारय पड़ैत छैक जे नव दृष्टि विकसित होअय। लिखबाक लेल लिखब आ लिखलहुँ तँ की लिखलहुँ, एहि दुनूमे आकाश-पाताल क फर्क अछि।

सभसँ पहिने तँ ई ध्यान राखय पड़ैत छैक जे लोकधर्मी वा लोकचेतनाकैँ प्रभावित करबाक क्रममे लोकोन्मुखी होयब कोनो



सृजन

साहित्यिक सर्जनाक उर्ध्वशिखा

चन्द्रेश



लेखन-कार्य ततेक सहज ओ सरल नहि अछि। किछु लिखि लेबकैँ लेखन-कार्य नहि कहल जायत। बहुत गोटे किछु लिखि लैत छथि, छपाइयो लैत छथि आ अपनाकैँ शीर्षस्थ लेखक बुझय लगैत छथि। जँ कोनो सम्मान वा पुरस्कार भेटि गेल तँ बस भऽ गेल? अपनाकैँ साहित्यिक लेखक बुझि दम्भ भरैत छथि। किछु लिखिकऽ लेखक बनि जायब ततेक सहज ओ सरल नहि अछि। लेखककैँ पहिने सोचय-विचारय पड़ैत अछि जे की लिखी, किए' लिखी आ ककरा लेल लिखी? एहि उधेस-बुनमे चिन्तन मनन करैत बहुत किछु सोचय-विचारय पड़ैत छैक जे नव दृष्टि विकसित होअय। लिखबाक लेल लिखब आ लिखलहुँ तँ की लिखलहुँ, एहि दुनूमे आकाश-पाताल क फर्क अछि।

सभसँ पहिने तँ ई ध्यान राखय पड़ैत छैक जे लोकधर्मी वा लोकचेतनाकैँ प्रभावित करबाक क्रममे लोकोन्मुखी होयब कोनो



सृजन

साहित्यिक सर्जनाक उर्ध्वशिखा

चन्द्रेश



लेखन-कार्य ततेक सहज ओ सरल नहि अछि। किछु लिखि लेबकैं लेखन-कार्य नहि कहल जायत। बहुत गोटे किछु लिखि लैत छथि, छपाइयो लैत छथि आ अपनाकैं शीर्षस्थ लेखक बुझय लगैत छथि। जँ कोनो सम्मान वा पुरस्कार भेटि गेल तँ बस भऽ गेल? अपनाकैं साहित्यिक लेखक बुझि दम्भ भरैत छथि। किछु लिखिकऽ लेखक बनि जायब ततेक सहज ओ सरल नहि अछि। लेखककैं पहिने सोचय-विचारय पड़ैत अछि जे की लिखी, किए' लिखी आ ककरा लेल लिखी? एहि उधेस-बुनमे चिन्तन मनन करैत बहुत किछु सोचय-विचारय पड़ैत छैक जे नव दृष्टि विकसित होअय। लिखबाक लेल लिखब आ लिखलहुँ तँ की लिखलहुँ, एहि दुनूमे आकाश-पाताल क फर्क अछि।

सभसँ पहिने तँ ई ध्यान राखय पड़ैत छैक जे लोकधर्मी वा लोकचेतनाकैं प्रभावित करबाक क्रममे लोकोन्मुखी होयब कोनो

रचनाकारक धर्म ओ कर्म दुनू थिक। एहि लेल पाठककेँ ध्यानमे रखैत लेखक ओ पाठकक बीच सम्बन्ध-सेतु बनबय पड़ैत अछि। मुदा, ई बनैत अछि शैल्पिक दृष्टिएँ अधुनातन सोचमे कथ्य, विचार, विषय-वस्तु आदि दृष्टिएँ ताल-मेल बैसबैत मानवीय संवेदनाकेँ झकझोड़य आ सोचबाक लेल विवश करय। जँ जीवन-दृष्टि नहि पनुगत तँ सभटा लिखल स्वत: बेकार भऽ जायत। एहि लेल सम्प्रेषित होयबाक कलात्मक विशेषता अपेक्षित अछि। एही ठाम भाषाक प्रश्न उठैत अछि। जं शब्दक प्रयोगमे भाषागत कमी बुझायल तं रुपवादक चांगुरमे कुहरिक' कलात्मक सौन्दर्य दम तोड़ि दैत अछि।

केओ-केओ लिखैत छथि जे विचार-प्रधान रचना नहि होयबाक चाही। हमरा जनैत विचारे प्रमुख तत्व थिक। किएक तँ किछु लिखबाक लेल विचारे रचनाकारकेँ प्रेरित करैत अछि। खासकऽ सर्जनात्मक साहित्यमे विचारक प्रतिबद्धता खास माने-मतलब रखैत अछि। हँ, कोनो विचार अबस्से कोनो बादक प्रतिबद्धतामे ओझराकऽ नहि आबय। खासकऽ अतिबाद वा कोनो मोहक प्रति अतिरेक बाद उपजल तँ यैह ओहि रचनात्मक मूल्यबोधके खारिज कऽ दैत अछि तँ विचारधारा रहय तँ सहज स्फूर्ति होयबाक चाही। राजनैतिक विषय-वस्तु उठयबाक क्रममे वा कोनो राजनैतिक दलक प्रति प्रतिबद्धताक होयबाक फलस्वरूप ओहि दलक राजनैतिक रुझान होयबाक कारणेँ एनमेन बाद खूजिकऽ उभरि अबैत अछि। कहि सकैत छी, ओहि दलक प्रति मदान्धता उभरल तँ रचनाक मूल्यबोध बाधित की भऽ जाइत अछि जे निम्नस्तरीय रचना भऽ अबैत अछि। एतेक सत्य अछि जे सहज ओ सरल सहजात गुणक फलस्वरूप जँ रचना स्वत: स्फूर्त भऽ आबय तँ निश्चिते अपन शिल्प नेने आओत आ कथ्य सम्प्रेषित भऽ आरो कलात्मकतामे निखरि आओत। जीवनानुभूति सँ सृजित आ संवेदनासँ आवेष्टित रचनाक सार्थकता अछिए।

प्रचारात्मक साहित्य पैम्फलेट बनि अबैत अछि। एहन भाषाक प्रयोग अखबारमे नीक जकाँ खपैत अछि आ पत्रकारक लेल नीक गुण थिक। रचनाकार आ पत्रकारमे फर्क होइत अछि। दुनूमे वर्तमानक धुकधुकी ओ अनुगूँज होइत अछि। मुदा, पत्रकारकेँ अपन बातकेँ पाठक धरि पहुँचयबाक जल्दीमे हलतलबी रहैत अछि जखन कि साहित्यकार निचैन भऽ अपन बातकेँ पचाकऽ लेखनीसँ नि:सृत करैत अछि। ईहो सत्य थिक जे जखन कोनो साहित्यकारकेँ किछु लिखबाक बेचैनी औड़ मारैत अछि तँ ओ तत्क्षण लिखय चाहैत छथि। कारण, विवशता ओकरा बेचैन कऽ दैत छैक आ जाधरि ओ कागत पर उतारि नहि पबैत अछि ताधरि ओ बेचैन स्थितिमे रहैत अछि। तँ भोगल यथार्थमे ओ स्वयं परिवेशक भोक्ता बनि वर्तमान सत्य तेनाकऽ उगिलैत अछि जे घनीभूत संवेदना उभरिकऽ मानवीय ह्रदयमे वास कऽ लैत अछि। पत्रकार तँ सहजहिँ प्रचारक उद्देश्यैँ अपन बातकेँ रखतै अछि जाहिमे समग्रताक कमी होइत अछि। संवादक माध्यम दुनू थिक, मुदा दुनू दू कोटिक। युग आ परिवेशक चिक्कन-चुनमुन चित्रणमे साहित्यकार जतय कोनोटा बिन्दु छुबैत छथि तँ यथार्थक दृष्टिएँ सहेजैत भविष्यक संकेत कऽ जाइत छथि। तँ साहित्यकारक साहित्यिक रचनाक महत्व दीर्घावधि घरि आँकल जाइत अछि। पत्रकार तँ आनन-फाननमे चहटगर मशाला दऽ पाठककेँ चटपटी स्वाद पहुँचबैत सशक्त माध्यम बनैत अछि। यथार्थ दुनूमे अछि। पत्रकारकेँ जतय अपन बातकेँ पहुंचबाक ततेक बेगरता रहैत अछि जे समाचार बसिया ने जाइक, मुदा साहित्यकारकेँ एहन खतरा कम रहैत अछि।

एके विचार-भावादि पर कतिपय साहित्यकारक रचना आबि जाय से सम्भव थिक। मुदा, प्रस्तुतिमे भिन्नता होयबे करत। उपस्थापनक कौशलतामे रचनात्मक भिन्नता अपन छवि-छटा प्रस्तुत करबे करत। जतय पत्रकार वर्तमानक अकालन आ अतीतकेँ गुनैत-धुनैत युग आ परिवेशकेँ चित्रित करैत अछि ततय साहित्यकार अतीतक डोर थामने वर्तमानक देहरि पर भविष्यकेँ गुनैत-धुनैत युग सत्यक बात उगिलैत छथि। जिजीविषाक संवाहक बनिकऽ अर्थबोधसँ जीवनबोध धरि लऽ जेबाक सार्थक प्रस्तुति साहित्यकारक निजता थिक। पत्रकार जतय अभिव्यक्तिक स्तर पर विशेष आवेषित भऽ जाइत अछि ततय साहित्यकार सदैव आवेशकेँ नियन्त्रण कऽ लैत अछि। पत्रकार तँ रिपोर्ताज शैलीक माध्यमसँ संवाद बनबैत अछि जखनहि साहित्यकार विशेषकऽ व्यञ्जनात्मक शैलीक। तात्पर्य जे एकटामे सोझे सोझ संवाद करबाक बेचैनी अछि तँ दोसरमे संवाद उपस्थापित करबाक हेतु शब्द चयनक संग ओकर अनमन सौन्दर्य रखबाक भरपूर कोशिश रहैत अछि। साहित्यकार शब्द-सामर्थ्यक शक्ति बढ़यबाक लेल शिल्पक प्रति विशेष चौकन्न रहैत छथि। एहि लेल जतय ओ सदैव नव जमीन तकबाक प्रयासमे नव भाषा विकसित करबाक लेल नव-नव प्रयोग करैत रहैत छथि। एहि ठाम ई ध्यान राखैए पड़ैत अछि जे प्रयोग होयबाके चाही, मुदा मात्र प्रयोगक लेल प्रयोग नहि होयबाक चाही। एकर अर्थ ई नहि लेबाक थिक जे लेखकीय क्षमतामे भाषा आ शिल्पक तेहन ऊँच देबाल ठाढ़ कऽ देल जाय जे लेखक ओ पाठकक बीच संवाद स्थापित नहि भऽ सकय। एही ठाम साहित्यकारक दायित्वबोध विशेष बढ़ि जात अछि जे साधारणो वस्तुकेँ लेखनीमे छुबय तँ ओ असाधारण बनि जाय। यैह क्षमता लेखकीय कौशलकेँ सृजित करैत अछि। वर्तमानक प्रगतिशील भाव-भूमि पर कलात्मक स्तर धरि पहुँचिकऽ अमिट प्रबाव छोड़ैत अछि आ अखबारी वा विज्ञापनी

रचनाकारक धर्म ओ कर्म दुनू थिक। एहि लेल पाठककेँ ध्यानमे रखैत लेखक ओ पाठकक बीच सम्बन्ध-सेतु बनबय पड़ैत अछि। मुदा, ई बनैत अछि शैल्पिक दृष्टिएँ अधुनातन सोचमे कथ्य, विचार, विषय-वस्तु आदि दृष्टिएँ ताल-मेल बैसबैत मानवीय संवेदनाकेँ झकझोड़य आ सोचबाक लेल विवश करय। जँ जीवन-दृष्टि नहि पनुगत तँ सभटा लिखल स्वत: बेकार भऽ जायत। एहि लेल सम्प्रेषित होयबाक कलात्मक विशेषता अपेक्षित अछि। एही ठाम भाषाक प्रश्न उठैत अछि। जं शब्दक प्रयोगमे भाषागत कमी बुझायल तं रुपवादक चांगुरमे कुहरिक' कलात्मक सौन्दर्य दम तोड़ि दैत अछि।

केओ-केओ लिखैत छथि जे विचार-प्रधान रचना नहि होयबाक चाही। हमरा जनैत विचारे प्रमुख तत्व थिक। किएक तँ किछु लिखबाक लेल विचारे रचनाकारकेँ प्रेरित करैत अछि। खासकऽ सर्जनात्मक साहित्यमे विचारक प्रतिबद्धता खास माने-मतलब रखैत अछि। हँ, कोनो विचार अबस्से कोनो बादक प्रतिबद्धतामे ओझराकऽ नहि आबय। खासकऽ अतिबाद वा कोनो मोहक प्रति अतिरेक बाद उपजल तँ यैह ओहि रचनात्मक मूल्यबोधके खारिज कऽ दैत अछि तँ विचारधारा रहय तँ सहज स्फूर्ति होयबाक चाही। राजनैतिक विषय-वस्तु उठयबाक क्रममे वा कोनो राजनैतिक दलक प्रति प्रतिबद्धताक होयबाक फलस्वरूप ओहि दलक राजनैतिक रुझान होयबाक कारणेँ एनमेन बाद खूजिकऽ उभरि अबैत अछि। कहि सकैत छी, ओहि दलक प्रति मदान्धता उभरल तँ रचनाक मूल्यबोध बाधित की भऽ जाइत अछि जे निम्नस्तरीय रचना भऽ अबैत अछि। एतेक सत्य अछि जे सहज ओ सरल सहजात गुणक फलस्वरूप जँ रचना स्वत: स्फूर्त भऽ आबय तँ निश्चिते अपन शिल्प नेने आओत आ कथ्य सम्प्रेषित भऽ आरो कलात्मकतामे निखरि आओत। जीवनानुभूति सँ सृजित आ संवेदनासँ आवेष्टित रचनाक सार्थकता अछिए।

प्रचारात्मक साहित्य पैम्फलेट बनि अबैत अछि। एहन भाषाक प्रयोग अखबारमे नीक जकाँ खपैत अछि आ पत्रकारक लेल नीक गुण थिक। रचनाकार आ पत्रकारमे फर्क होइत अछि। दुनूमे वर्तमानक धुकधुकी ओ अनुगूँज होइत अछि। मुदा, पत्रकारकेँ अपन बातकेँ पाठक धरि पहुँचयबाक जल्दीमे हलतलबी रहैत अछि जखन कि साहित्यकार निचैन भऽ अपन बातकेँ पचाकऽ लेखनीसँ नि:सृत करैत अछि। ईहो सत्य थिक जे जखन कोनो साहित्यकारकेँ किछु लिखबाक बेचैनी औड़ मारैत अछि तँ ओ तत्क्षण लिखय चाहैत छथि। कारण, विवशता ओकरा बेचैन कऽ दैत छैक आ जाधरि ओ कागत पर उतारि नहि पबैत अछि ताधरि ओ बेचैन स्थितिमे रहैत अछि। तँ भोगल यथार्थमे ओ स्वयं परिवेशक भोक्ता बनि वर्तमान सत्य तेनाकऽ उगिलैत अछि जे घनीभूत संवेदना उभरिकऽ मानवीय हृदयमे वास कऽ लैत अछि। पत्रकार तँ सहजहिँ प्रचारक उद्देश्येँ अपन बातकेँ रखतै अछि जाहिमे समग्रताक कमी होइत अछि। संवादक माध्यम दुनू थिक, मुदा दुनू दू कोटिक। युग आ परिवेशक चिक्कन-चुनमुन चित्रणमे साहित्यकार जतय कोनोटा बिन्दु छुबैत छथि तँ यथार्थक दृष्टिएँ सहेजैत भविष्यक संकेत कऽ जाइत छथि। तँ साहित्यकारक साहित्यिक रचनाक महत्व दीर्घावधि घरि आँकल जाइत अछि। पत्रकार तँ आनन-फाननमे चहटगर मशाला दऽ पाठककेँ चटपटी स्वाद पहुँचबैत सशक्त माध्यम बनैत अछि। यथार्थ दुनूमे अछि। पत्रकारकेँ जतय अपन बातकेँ पहुंचबाक ततेक बेगरता रहैत अछि जे समाचार बसिया ने जाइक, मुदा साहित्यकारकेँ एहन खतरा कम रहैत अछि।

एके विचार-भावादि पर कतिपय साहित्यकारक रचना आबि जाय से सम्भव थिक। मुदा, प्रस्तुतिमे भिन्नता होयबे करत। उपस्थापनक कौशलतामे रचनात्मक भिन्नता अपन छवि-छटा प्रस्तुत करबे करत। जतय पत्रकार वर्तमानक अकालन आ अतीतकेँ गुनैत-धुनैत युग आ परिवेशकेँ चित्रित करैत अछि ततय साहित्यकार अतीतक डोर थामने वर्तमानक देहरि पर भविष्यकेँ गुनैत-धुनैत युग सत्यक बात उगिलैत छथि। जिजीविषाक संवाहक बनिकऽ अर्थबोधसँ जीवनबोध धरि लऽ जेबाक सार्थक प्रस्तुति साहित्यकारक निजता थिक। पत्रकार जतय अभिव्यक्तिक स्तर पर विशेष आवेषित भऽ जाइत अछि ततय साहित्यकार सदैव आवेशकेँ नियन्त्रण कऽ लैत अछि। पत्रकार तँ रिपोर्ताज शैलीक माध्यमसँ संवाद बनबैत अछि जखनहि साहित्यकार विशेषकऽ व्यञ्जनात्मक शैलीक। तात्पर्य जे एकटामे सोझे सोझ संवाद करबाक बेचैनी अछि तँ दोसरमे संवाद उपस्थापित करबाक हेतु शब्द चयनक संग ओकर अनमन सौन्दर्य रखबाक भरपूर कोशिश रहैत अछि। साहित्यकार शब्द-सामर्थ्यक शक्ति बढ़यबाक लेल शिल्पक प्रति विशेष चौकन्न रहैत छथि। एहि लेल जतय ओ सदैव नव जमीन तकबाक प्रयासमे नव भाषा विकसित करबाक लेल नव-नव प्रयोग करैत रहैत छथि। एहि ठाम ई ध्यान राखैए पड़ैत अछि जे प्रयोग होयबाके चाही, मुदा मात्र प्रयोगक लेल प्रयोग नहि होयबाक चाही। एकर अर्थ ई नहि लेबाक थिक जे लेखकीय क्षमतामे भाषा आ शिल्पक तेहन ऊँच देबाल ठाढ़ कऽ देल जाय जे लेखक ओ पाठकक बीच संवाद स्थापित नहि भऽ सकय। एही ठाम साहित्यकारक दायित्वबोध विशेष बढ़ि जात अछि जे साधारणो वस्तुकेँ लेखनीमे छुबय तँ ओ असाधारण बनि जाय। यैह क्षमता लेखकीय कौशलकेँ सृजित करैत अछि। वर्तमानक प्रगतिशील भाव-भूमि पर कलात्मक स्तर धरि पहुँचिकऽ अमिट प्रबाव छोड़ैत अछि आ अखबारी वा विज्ञापनी

रचनाकारक धर्म ओ कर्म दुनू थिक। एहि लेल पाठककेँ ध्यानमे रखैत लेखक ओ पाठकक बीच सम्बन्ध-सेतु बनबय पड़ैत अछि। मुदा, ई बनैत अछि शैल्पिक दृष्टिएँ अधुनातन सोचमे कथ्य, विचार, विषय-वस्तु आदि दृष्टिएँ ताल-मेल बैसबैत मानवीय संवेदनाकेँ झकझोड़य आ सोचबाक लेल विवश करय। जँ जीवन-दृष्टि नहि पनुगत तँ सभटा लिखल स्वत: बेकार भऽ जायत। एहि लेल सम्प्रेषित होयबाक कलात्मक विशेषता अपेक्षित अछि। एही ठाम भाषाक प्रश्न उठैत अछि। जं शब्दक प्रयोगमे भाषागत कमी बुझायल तं रुपवादक चांगुरमे कुहरिक' कलात्मक सौन्दर्य दम तोड़ि दैत अछि।

केओ-केओ लिखैत छथि जे विचार-प्रधान रचना नहि होयबाक चाही। हमरा जनैत विचारे प्रमुख तत्व थिक। किएक तँ किछु लिखबाक लेल विचारे रचनाकारकेँ प्रेरित करैत अछि। खासकऽ सर्जनात्मक साहित्यमे विचारक प्रतिबद्धता खास माने-मतलब रखैत अछि। हँ, कोनो विचार अबस्से कोनो बादक प्रतिबद्धतामे ओझराकऽ नहि आबय। खासकऽ अतिबाद वा कोनो मोहक प्रति अतिरेक बाद उपजल तँ यैह ओहि रचनात्मक मूल्यबोधके खारिज कऽ दैत अछि तँ विचारधारा रहय तँ सहज स्फूर्ति होयबाक चाही। राजनैतिक विषय-वस्तु उठयबाक क्रममे वा कोनो राजनैतिक दलक प्रति प्रतिबद्धताक होयबाक फलस्वरूप ओहि दलक राजनैतिक रुझान होयबाक कारणेँ एनमेन बाद खूजिकऽ उभरि अबैत अछि। कहि सकैत छी, ओहि दलक प्रति मदान्धता उभरल तँ रचनाक मूल्यबोध बाधित की भऽ जाइत अछि जे निम्नस्तरीय रचना भऽ अबैत अछि। एतेक सत्य अछि जे सहज ओ सरल सहजात गुणक फलस्वरूप जँ रचना स्वत: स्फूर्त भऽ आबय तँ निश्चिते अपन शिल्प नेने आओत आ कथ्य सम्प्रेषित भऽ आरो कलात्मकतामे निखरि आओत। जीवनानुभूति सँ सृजित आ संवेदनासँ आवेष्टित रचनाक सार्थकता अछिए।

प्रचारात्मक साहित्य पैम्फलेट बनि अबैत अछि। एहन भाषाक प्रयोग अखबारमे नीक जकाँ खपैत अछि आ पत्रकारक लेल नीक गुण थिक। रचनाकार आ पत्रकारमे फर्क होइत

> ·ð¥æð–·ð¥æð çÜ¹ñÌ ÀUçÍ Áð çß¿æÚU–ÂýÏæÙ ÚU¿Ùæ ÙçãU ãUæðØÕæ·¤ ¿æãUèÐ ãU×ÚUæ ÁÙñÌ çß¿æÚUð ÂýÏé¹ ÌˆßçÍ·¤Ð ç·¤° ·¤ Ì¡ ç·¤ÀéU çÜ¹Õæ·¤ ÜðÜ çß¿æÚUð ÚU¿Ùæ·¤æÚU·ð¡¤ ÂýðçÚUÌ ·¤ÚñUÌ ¥çÀUÐ ¹æâ·¤ù âÁüÙæˆ×·¤ âæçãUˆØ×ð çß¿æÚU·¤ ÂýçÌÕhÌæ ¹æâ ×æÙð–×ÌÜÕ ÚU¹ñÌ ¥çÀUÐ ãU¡U, ·¤æðÙæð çß¿æÚU ¥ÕSâð ·¤æðÙæð ÕæÎ·¤ ÂýçÌÕhÌæ×ð ¥æðÛæÚUæ·¤ù ÙçãU ¥æÕØÐ

अछि। दुनूमे वर्तमानक धुकधुकी ओ अनुगूँज होइत अछि। मुदा, पत्रकारकेँ अपन बातकेँ पाठक धरि पहुँचयबाक जल्दीमे हलतलबी रहैत अछि जखन कि साहित्यकार निचैन भऽ अपन बातकेँ पचाकऽ लेखनीसँ नि:सृत करैत अछि। ईहो सत्य थिक जे जखन कोनो साहित्यकारकेँ किछु लिखबाक बेचैनी औड़ मारैत अछि तँ ओ तत्क्षण लिखय चाहैत छथि। कारण, विवशता ओकरा बेचैन कऽ दैत छैक आ जाधरि ओ कागत पर उतारि नहि पबैत अछि ताधरि ओ बेचैन स्थितिमे रहैत अछि। तँ भोगल यथार्थमे ओ स्वयं परिवेशक भोक्ता बनि वर्तमान सत्य तेनाकऽ उगिलैत अछि जे घनीभूत संवेदना उभरिकऽ मानवीय हृदयमे वास कऽ लैत अछि। पत्रकार तँ सहजहिँ प्रचारक उद्देश्येँ अपन बातकेँ रखतै अछि जाहिमे समग्रताक कमी होइत अछि। संवादक माध्यम दुनू थिक, मुदा दुनू दू कोटिक। युग आ परिवेशक चिक्कन-चुनमुन चित्रणमे साहित्यकार जतय कोनोटा बिन्दु छुबैत छथि तँ यथार्थक दृष्टिएँ सहेजैत भविष्यक संकेत कऽ जाइत छथि। तँ साहित्यकारक साहित्यिक रचनाक महत्व दीर्घावधि घरि आँकल जाइत अछि। पत्रकार तँ आनन-फाननमे चहटगर मशाला दऽ पाठककेँ चटपटी स्वाद पहुँचबैत सशक्त माध्यम बनैत अछि। यथार्थ दुनूमे अछि। पत्रकारकेँ जतय अपन बातकेँ पहुंचबाक ततेक बेगरता रहैत अछि जे समाचार बसिया ने जाइक, मुदा साहित्यकारकेँ एहन खतरा कम रहैत अछि।

एके विचार-भावादि पर कतिपय साहित्यकारक रचना आबि जाय से सम्भव थिक। मुदा, प्रस्तुतिमे भिन्नता होयबे करत। उपस्थापनक कौशलतामे रचनात्मक भिन्नता अपन छवि-छटा प्रस्तुत करबे करत। जतय पत्रकार वर्तमानक अकालन आ अतीतकेँ गुनैत-धुनैत युग आ परिवेशकेँ चित्रित करैत अछि ततय साहित्यकार अतीतक डोर थामने वर्तमानक देहरि पर भविष्यकेँ गुनैत-धुनैत युग सत्यक बात उगिलैत छथि। जिजीविषाक संवाहक बनिकऽ अर्थबोधसँ जीवनबोध धरि लऽ जेबाक सार्थक प्रस्तुति साहित्यकारक निजता थिक। पत्रकार जतय अभिव्यक्तिक स्तर पर विशेष आवेषित भऽ जाइत अछि ततय साहित्यकार सदैव आवेशकेँ नियन्त्रण कऽ लैत अछि। पत्रकार तँ रिपोर्ताज शैलीक माध्यमसँ संवाद बनबैत अछि जखनहि साहित्यकार विशेषकऽ व्यञ्जनात्मक शैलीक। तात्पर्य जे एकटामे सोझे सोझ संवाद करबाक बेचैनी अछि तँ दोसरमे संवाद उपस्थापित करबाक हेतु शब्द चयनक संग ओकर अनमन सौन्दर्य रखबाक भरपूर कोशिश रहैत अछि। साहित्यकार शब्द-सामर्थ्यक शक्ति बढ़यबाक लेल शिल्पक प्रति विशेष चौकन्न रहैत छथि। एहि लेल जतय ओ सदैव नव जमीन तकबाक प्रयासमे नव भाषा विकसित करबाक लेल नव-नव प्रयोग करैत रहैत छथि। एहि ठाम ई ध्यान राखैए पड़ैत अछि जे प्रयोग होयबाके चाही, मुदा मात्र प्रयोगक लेल प्रयोग नहि होयबाक चाही। एकर अर्थ ई नहि लेबाक थिक जे लेखकीय क्षमतामे भाषा आ शिल्पक तेहन ऊँच देबाल ठाढ़ कऽ देल जाय जे लेखक ओ पाठकक बीच संवाद स्थापित नहि भऽ सकय। एही ठाम साहित्यकारक दायित्वबोध विशेष बढ़ि जात अछि जे साधारणो वस्तुकेँ लेखनीमे छुबय तँ ओ असाधारण बनि जाय। यैह क्षमता लेखकीय कौशलकेँ सृजित करैत अछि। वर्तमानक प्रगतिशील भाव-भूमि पर कलात्मक स्तर धरि पहुँचिकऽ अमिट प्रबाव छोड़ैत अछि आ अखबारी वा विज्ञापनी

जँ मनुक्खक संवेदनशील मोन-प्राणकेँ जुड़बैत भाव-प्रवण दृष्टिएँ ठोस यथार्थक अभिव्यक्ति होयत तँ निश्चिते कोनो विचारमे आबद्ध भऽ मोन-प्राणकेँ जुड़ेबे करत। स्वाभाविक थिक जे नव अनुभूतिमे नव स्वादकेँ जगयबाक निमित्त यथार्थबोधक संग समयसँ जुड़ैये पड़त। एहि लेल मनुक्खक भावना ओ आवेगकेँ बुझबाक सामर्थ्यबोध विकसित करय पड़त।

ओना मनुक्खक संवेदनशील मोनकेँ छुबाक प्रयास राजनीति सेहो करैत अछि जे भाषणक कलाबाजीमे लोककेँ उद्वेलित कऽ लैत अछि। मुदा, अखबारी भाषण ओ लेखनक प्रभाव किछु काल धरिमे समेटिकऽ रहि जाइत अछि। जे साहित्यकार राजनीतिक बल-बुत्ता पर अपनाकेँ स्थापित कऽ लैत अछि से टटका लाभ अबस्से उठा लैत अछि, मुदा स्थायित्वक अभावेँ टिकि नहि पबैत अछि। तेँ साहित्यकारक दृष्टि-सजगता ओ सम्पन्नताक बात उठैत अछि।

मनुक्खकेँ मनुक्ख बुझि मानवीय मूल्यक पक्षधरताक क्रममे सदति मानवीय हितक लेल समयसँ संवाद उपस्थापित करबेक चाही। लोक सत्यक प्रति प्रतिबद्धताक क्रममे आचरण ओ व्यवहारमे एकमेव होयब आवश्यके। समय सचकेँ जनैत-परेखैत जँ दृष्टि सम्पन्नतामे सचढ़ता, स्वतंत्रता आ मौलिकताक सन्निवेश होभयत तँ निश्चिते मुक्तिक नव सनेस विलहबे करत। तेँ कोनो ठोस विचार उभरिकऽ रचनामे आयब आवश्यके जे मानवीय मूल्यबोधक संवाहक बनि नव दृष्टि प्रदान कऽ सकय। क्रान्तिकारी चेतनासँ लैश भऽ समयसँ मुठभेड़ करब युगक माङ्ग थिक। घुरि-फिरिकऽ पाछाँ पलटिकऽ ताकब तँ बाट टपब मोश्किल। तेँ कन्डेरिये तकितो जाइ आ आगाँ डेग उठबैत जयबाक अछि आ यैह युगक अनुकूल थिक। मूल्यबोधक प्रगतिशीलक बाट पर सदति आगाँ बढ़ैत लेखनी वस्तुत: साहित्यिक सर्जनाक उर्ध्वशिखा थिक।



प्रदर्शनी सँ मुक्त भऽ साहित्यिक सौन्दर्यमे जीवनकेँ व्याख्यायित करैत अछि। एहन रचना कालजयी होइत अछि जे भविष्यक बाट फोलैत अछि। तात्कालीकतासँ फराक दीर्घजीवी होयबाक गुण कोनो रचनाकारक सार्थकता थिक। एहन रचनाक अनुगूँज देर-देर तक सुनाय पड़ैत अछि। रचनाक यैह वैशिष्ट्य थिक जे चुप्पीकेँ तोड़य। एकर अर्थ ई नहि जे गर्दमगोल कऽ हो-हल्ला मचबाय। एतेक तँ सत्य अछि जे जाहि रचनाक अनुगूँजमे मौनकेँ प्रखर होयबाक सम्भावना विशेष अछि से अबस्से पाठकीय चुप्पीकेँ तोड़ैत सामर्थ्य-शक्तिकेँ आरो उर्जस्वित करैत अछि।

आजुक मनुक्खक जीवन ततेक संश्लिष्ट भऽ आयल अछि जे अस्त-व्यस्त जीवन जीवाक लेल विवश अछि। स्वार्थलिप्सामे मदान्ध, भौतिकवादी सुख-सुविधा लेल अपस्याँत, टाकाक पाछाँ बेहाल ओकर कुत्सित मोनमे रंग-बिरही योजना सब दौगैत अछि। योजना बनायब नीक गुण थिक, मुदा सभमे अपने फायदा ताकब अधलाह। खासकऽ मानवीय मूल्यकेँ ताख पर राखिकऽ बजारक वस्तु बना देब तँ आरो निम्नस्तरीय थिक। फल भेटल अछि जे आइ-काल्हिमे मनुक्ख विसंगतिसँ भरपूर जीवन जीवाक लेल विवश अछि। ओ असन्तोष, पीड़ा, अवसादजन्य तनाओपूर्ण जीवन जीवैत-भोगैत अछि। एहि विकट स्थितिमे मनुक्खक मनुक्ख प्रति घृणा ओ द्वेष पनुगैत अछि। जँ मनुक्खकेँ मनुक्ख नहि बुझल जाइत अछि तँ एक दोसरक प्रति अविश्वासक भाव पनुगैत अछि जे सन्देहक खधियाकेँ आरो चाकर-चौरस करैत अछि। कहि सकैत छी जे भोगवादी प्रवृत्ति मनुक्खकेँ गीड़ैत अछि। जैँकि रागात्मक ओ भावात्मक सम्बन्ध सूत्र टूटिकऽ खण्डित भऽ जाइत अछि तँ मानवीय मूल्यबोध पर प्रश्नचिह्न ठाढ़ भऽ जाइत अछि। एही ठाम साहित्यकारक दायित्वबोध कठिनसँ कठिनतर भऽ जटिल समस्याकेँ उत्पन्न करैत अछि। हिनक लेखनी नि:सृत की होइत अछि जे मानवीय मूल्यबोधक चिन्ता स्वाभाविक रूपेँ सामाजिक-चेतनामे फलित होइत अछि।

ई सत्य थिक जे सामाजिक जीवनक सौन्दर्यमे जेना जेना कमीक आभास होइत अछि तेना तेना मूल्यबोधमे ह्रास होइत अछि।

मनमीत कुटीर/राजपूत कालोनी
मौलागंज/दरभंगा – 846004
बिहार
मो. 9430640883



जँ मनुक्खक संवेदनशील मोन-प्राणकेँ जुड़बैत भाव-प्रवण दृष्टिएँ ठोस यथार्थक अभिव्यक्ति होयत तँ निश्चिते कोनो विचारमे आबद्ध भऽ मोन-प्राणकेँ जुड़ेबे करत। स्वाभाविक थिक जे नव अनुभूतिमे नव स्वादकेँ जगयबाक निमित्त यथार्थबोधक संग समयसँ जुड़ैये पड़त। एहि लेल मनुक्खक भावना ओ आवेगकेँ बुझबाक सामर्थ्यबोध विकसित करय पड़त।

ओना मनुक्खक संवेदनशील मोनकेँ छुबाक प्रयास राजनीति सेहो करैत अछि जे भाषणक कलाबाजीमे लोककेँ उद्वेलित कऽ लैत अछि। मुदा, अखबारी भाषण ओ लेखनक प्रभाव किछु काल धरिमे समेटिकऽ रहि जाइत अछि। जे साहित्यकार राजनीतिक बल-बुत्ता पर अपनाकेँ स्थापित कऽ लैत अछि से टटका लाभ अबस्से उठा लैत अछि, मुदा स्थायित्वक अभावेँ टिकि नहि पबैत अछि। तेँ साहित्यकारक दृष्टि-सजगता ओ सम्पन्नताक बात उठैत अछि।

मनुक्खकेँ मनुक्ख बुझि मानवीय मूल्यक पक्षधरताक क्रममे सदति मानवीय हितक लेल समयसँ संवाद उपस्थापित करबेक चाही। लोक सत्यक प्रति प्रतिबद्धताक क्रममे आचरण ओ व्यवहारमे एकमेव होयब आवश्यके। समय सचकेँ जनैत-परेखैत जँ दृष्टि सम्पन्नतामे सचढ़ता, स्वतंत्रता आ मौलिकताक सन्निवेश होभयत तँ निश्चिते मुक्तिक नव सनेस विलहबे करत। तेँ कोनो ठोस विचार उभरिकऽ रचनामे आयब आवश्यके जे मानवीय मूल्यबोधक संवाहक बनि नव दृष्टि प्रदान कऽ सकय। क्रान्तिकारी चेतनासँ लैश भऽ समयसँ मुठभेड़ करब युगक माङ्ग थिक। घुरि-फिरिकऽ पाछाँ पलटिकऽ ताकब तँ बाट टपब मोश्किल। तेँ कन्डेरिये तकितो जाइ आ आगाँ डेग उठबैत जयबाक अछि आ यैह युगक अनुकूल थिक। मूल्यबोधक प्रगतिशीलक बाट पर सदति आगाँ बढ़ैत लेखनी वस्तुत: साहित्यिक सर्जनाक उर्ध्वशिखा थिक।

प्रदर्शनी सँ मुक्त भऽ साहित्यिक सौन्दर्यमे जीवनकेँ व्याख्यायित करैत अछि। एहन रचना कालजयी होइत अछि जे भविष्यक बाट फोलैत अछि। तात्कालीकतासँ फराक दीर्घजीवी होयबाक गुण कोनो रचनाकारक सार्थकता थिक। एहन रचनाक अनुगूँज देर-देर तक सुनाय पड़ैत अछि। रचनाक यैह वैशिष्ट्य थिक जे चुप्पीकेँ तोड़य। एकर अर्थ ई नहि जे गर्दमगोल कऽ हो-हल्ला मचबाय। एतेक तँ सत्य अछि जे जाहि रचनाक अनुगूँजमे मौनकेँ प्रखर होयबाक सम्भावना विशेष अछि से अबस्से पाठकीय चुप्पीकेँ तोड़ैत सामर्थ्य-शक्तिकेँ आरो उर्जस्वित करैत अछि।

आजुक मनुक्खक जीवन ततेक संश्लिष्ट भऽ आयल अछि जे अस्त-व्यस्त जीवन जीवाक लेल विवश अछि। स्वार्थलिप्सामे मदान्ध, भौतिकवादी सुख-सुविधा लेल अपस्याँत, टाकाक पाछाँ बेहाल ओकर कुत्सित मोनमे रंग-बिरही योजना सब दौगैत अछि। योजना बनायब नीक गुण थिक, मुदा सभमे अपने फायदा ताकब अधलाह। खासकऽ मानवीय मूल्यकेँ ताख पर राखिकऽ बजारक वस्तु बना देब तँ आरो निम्नस्तरीय थिक। फल भेटल अछि जे आइ-काल्हिमे मनुक्ख विसंगतिसँ भरपूर जीवन जीवाक लेल विवश अछि। ओ असन्तोष, पीड़ा, अवसादजन्य तनाओपूर्ण जीवन जीवैत-भोगैत अछि। एहि विकट स्थितिमे मनुक्खक मनुक्ख प्रति घृणा ओ द्वेष पनुगैत अछि। जँ मनुक्खकेँ मनुक्ख नहि बुझल जाइत अछि तँ एक दोसरक प्रति अविश्वासक भाव पनुगैत अछि जे सन्देहक खधियाकेँ आरो चाकर-चौरस करैत अछि। कहि सकैत छी जे भोगवादी प्रवृत्ति मनुक्खकेँ गीड़ैत अछि। जैँकि रागात्मक ओ भावात्मक सम्बन्ध सूत्र टूटिकऽ खण्डित भऽ जाइत अछि तँ मानवीय मूल्यबोध पर प्रश्नचिह्न ठाढ़ भऽ जाइत अछि। एही ठाम साहित्यकारक दायित्वबोध कठिनसँ कठिनतर भऽ जटिल समस्याकेँ उत्पन्न करैत अछि। हिनक लेखनी नि:सृत की होइत अछि जे मानवीय मूल्यबोधक चिन्ता स्वाभाविक रूपेँ सामाजिक-चेतनामे फलित होइत अछि।

ई सत्य थिक जे सामाजिक जीवनक सौन्दर्यमे जेना जेना कमीक आभास होइत अछि तेना तेना मूल्यबोधमे ह्रास होइत अछि।

मनमीत कुटीर/राजपूत कालोनी
मौलागंज/दरभंगा - 846004
बिहार
मो. 9430640883



प्रदर्शनी सँ मुक्त भऽ साहित्यिक सौन्दर्यमे जीवनकेँ व्याख्यायित करैत अछि। एहन रचना कालजयी होइत अछि जे भविष्यक बाट फोलैत अछि। तात्कालीकतासँ फराक दीर्घजीवी होयबाक गुण कोनो रचनाकारक सार्थकता थिक। एहन रचनाक अनुगूँज देर-देर तक सुनाय पड़ैत अछि। रचनाक यैह वैशिष्ट्य थिक जे चुप्पीकेँ तोड़य। एकर अर्थ ई नहि जे गर्दमगोल कऽ हो-हल्ला मचबाय। एतेक तँ सत्य अछि जे जाहि रचनाक अनुगूँजमे मौनकेँ प्रखर होयबाक सम्भावना विशेष अछि से अबस्से पाठकीय चुप्पीकेँ तोड़ैत सामर्थ्य-शक्तिकेँ आरो उर्जस्वित करैत अछि।

आजुक मनुक्खक जीवन ततेक संश्लिष्ट भऽ आयल अछि जे अस्त-व्यस्त जीवन जीवाक लेल विवश अछि। स्वार्थलिप्सामे मदान्ध, भौतिकवादी सुख-सुविधा लेल अपस्याँत, टाकाक पाछाँ बेहाल ओकर कुत्सित मोनमे रंग-बिरही योजना सब दौगैत अछि। योजना बनायब नीक गुण थिक, मुदा सभमे अपने फायदा ताकब अधलाह। खासकऽ मानवीय मूल्यकेँ ताख पर राखिकऽ बजारक वस्तु बना देब तँ आरो निम्नस्तरीय थिक। फल भेटल अछि जे आइ-काल्हिमे मनुक्ख विसंगतिसँ भरपूर जीवन जीवाक लेल विवश अछि। ओ असन्तोष, पीड़ा, अवसादजन्य तनाओपूर्ण जीवन जीवैत-भोगैत अछि। एहि विकट स्थितिमे मनुक्खक मनुक्ख प्रति घृणा ओ द्वेष पनुगैत अछि। जँ मनुक्खकेँ मनुक्ख नहि बुझल जाइत अछि तँ एक दोसरक प्रति अविश्वासक भाव पनुगैत अछि जे सन्देहक खधियाकेँ आरो चाकर-चौरस करैत अछि। कहि सकैत छी जे भोगवादी प्रवृत्ति मनुक्खकेँ गीड़ैत अछि। जैँकि रागात्मक ओ भावात्मक सम्बन्ध सूत्र टूटिकऽ खण्डित भऽ जाइत अछि तँ मानवीय मूल्यबोध पर प्रश्नचिह्न ठाढ़ भऽ जाइत अछि। एही ठाम साहित्यकारक दायित्वबोध कठिनसँ कठिनतर भऽ जटिल समस्याकेँ उत्पन्न करैत अछि। हिनक लेखनी नि:सृत की होइत अछि जे मानवीय मूल्यबोधक चिन्ता स्वाभाविक रूपेँ सामाजिक-चेतनामे फलित होइत अछि।

ई सत्य थिक जे सामाजिक जीवनक सौन्दर्यमे जेना जेना कमीक आभास होइत अछि तेना तेना मूल्यबोधमे ह्रास होइत अछि। जँ मनुक्खक संवेदनशील मोन-प्राणकेँ जुड़बैत भाव-प्रवण दृष्टिएँ ठोस यथार्थक अभिव्यक्ति होयत तँ निश्चिते कोनो विचारमे आबद्ध भऽ मोन-प्राणकेँ जुड़ेबे करत। स्वाभाविक थिक जे नव अनुभूतिमे नव स्वादकेँ जगयबाक निमित्त यथार्थबोधक संग समयसँ जुड़ैये पड़त। एहि लेल मनुक्खक भावना ओ आवेगकेँ बुझबाक सामर्थ्यबोध विकसित करय पड़त।

ओना मनुक्खक संवेदनशील मोनकेँ छुबाक प्रयास राजनीति सेहो करैत अछि जे भाषणक कलाबाजीमे लोककेँ उद्वेलित कऽ लैत अछि। मुदा, अखबारी भाषण ओ लेखनक प्रभाव किछु काल धरिमे समेटिकऽ रहि जाइत अछि। जे साहित्यकार राजनीतिक बल-बुत्ता पर अपनाकेँ स्थापित कऽ लैत अछि से टटका लाभ अबस्से उठा लैत अछि, मुदा स्थायित्वक अभावेँ टिकि नहि पबैत अछि। तेँ साहित्यकारक दृष्टि-सजगता ओ सम्पन्नताक बात उठैत अछि।

मनुक्खकेँ मनुक्ख बुझि मानवीय मूल्यक पक्षधरताक क्रममे सदति मानवीय हितक लेल समयसँ संवाद उपस्थापित करबेक चाही। लोक सत्यक प्रति प्रतिबद्धताक क्रममे आचरण ओ व्यवहारमे एकमेव होयब आवश्यके। समय सचकेँ जनैत-परेखैत जँ दृष्टि सम्पन्नतामे सचढ़ता, स्वतंत्रता आ मौलिकताक सन्निवेश होभयत तँ निश्चिते मुक्तिक नव सनेस विलहबे करत। तेँ कोनो ठोस विचार उभरिकऽ रचनामे आयब आवश्यके जे मानवीय मूल्यबोधक संवाहक बनि नव दृष्टि प्रदान कऽ सकय। क्रान्तिकारी चेतनासँ लैश भऽ समयसँ मुठभेड़ करब युगक माङ्ग थिक। घुरि-फिरिकऽ पाछाँ पलटिकऽ ताकब तँ बाट टपब मोश्किल। तेँ कन्डेरिये तकितो जाइ आ आगाँ डेग उठबैत जयबाक अछि आ यैह युगक अनुकूल थिक। मूल्यबोधक प्रगतिशीलक बाट पर सदति आगाँ बढ़ैत लेखनी वस्तुत: साहित्यिक सर्जनाक उर्ध्वशिखा थिक।

मनमीत कुटीर/राजपूत कालोनी
मौलागंज/दरभंगा - 846004
बिहार
मो. 9430640883



साहित्य

मैथिली उपन्यास साहित्यमे दलित पात्रक चित्रण

शिव कुमार झा 'टिल्लू'



उपन्यास कोनो गद्य साहित्य रूपी व्यष्टिकक आत्मा मानल जाइत अछि। मैथिली साहित्यमे लगभग सए वर्ख पूर्व धरि उपन्यास विधाक रचना लगभग शून्य छल। एहि कारण ओहि अवधि धरि मैथिलीकेँ पूर्ण साहित्यिक भाषा नहि मानल जाइत छल। जनसीदन जी एहि भाषा साहित्यिक पहिल मान्य उपन्यासकार छथि। हिनक पाँच गोट उपन्यासक पश्चात् एखन धरि देसिल वयनामे साहित्यक समग्र विधाक चित्रण करैत बहुत रास उपन्यास पाठक धरि पहुँचल अछि। परंच एहि साहित्यक संग सभसँ पैघ बिडम्वना रहल जे पछातिक समाज जकरा सामाजिक शब्दमे दलित कहल जाइत अछि, ओकर महिमामंडनक गप्प तँ दूर प्रायः एहि साहित्यमे अकस्मात् अवांछित अभ्यागत्तक रूपमे क्षणप्रभा जकाँ कतहु-कतहु चर्चित अछि। दलित वर्ग तँ सामाजिक, सांस्कृतिक आ शैक्षणिक रूपेँ सम्पूर्ण आर्यावर्त्तमे पिछड़ल छथि, मुदा मिथिला-मैथिलीमे हिनक स्थानक विवेचन हिनका सबहक जाति जकाँ अछोप अछि। एकर प्रमुख कारण मिथिलामे धर्मसुधार आन्दोलन, विधवा विवाहक



साहित्य

मैथिली उपन्यास साहित्यमे दलित पात्रक चित्रण

शिव कुमार झा 'टिल्लू'



उपन्यास कोनो गद्य साहित्य रूपी व्यष्टिकक आत्मा मानल जाइत अछि। मैथिली साहित्यमे लगभग सए वर्ख पूर्व धरि उपन्यास विधाक रचना लगभग शून्य छल। एहि कारण ओहि अवधि धरि मैथिलीकेँ पूर्ण साहित्यिक भाषा नहि मानल जाइत छल। जनसीदन जी एहि भाषा साहित्यिक पहिल मान्य उपन्यासकार छथि। हिनक पाँच गोट उपन्यासक पश्चात् एखन धरि देसिल वयनामे साहित्यक समग्र विधाक चित्रण करैत बहुत रास उपन्यास पाठक धरि पहुँचल अछि। परंच एहि साहित्यक संग सभसँ पैघ बिडम्वना रहल जे पछातिक समाज जकरा सामाजिक शब्दमे दलित कहल जाइत अछि, ओकर महिमामंडनक गप्प तँ दूर प्रायः एहि साहित्यमे अकस्मात् अवांछित अभ्यागत्तक रूपमे क्षणप्रभा जकाँ कतहु-कतहु चर्चित अछि। दलित वर्ग तँ सामाजिक, सांस्कृतिक आ शैक्षणिक रूपेँ सम्पूर्ण आर्यावर्त्तमे पिछड़ल छथि, मुदा मिथिला-मैथिलीमे हिनक स्थानक विवेचन हिनका सबहक जाति जकाँ अछोप अछि। एकर प्रमुख कारण मिथिलामे धर्मसुधार आन्दोलन, विधवा विवाहक



साहित्य

मैथिली उपन्यास साहित्यमे दलित पात्रक चित्रण

शिव कुमार झा 'टिल्लू'



उपन्यास कोनो गद्य साहित्य रूपी व्यष्टिकक आत्मा मानल जाइत अछि। मैथिली साहित्यमे लगभग सए वर्ख पूर्व धरि उपन्यास विधाक रचना लगभग शून्य छल। एहि कारण ओहि अवधि धरि मैथिलीकेँ पूर्ण साहित्यिक भाषा नहि मानल जाइत छल। जनसीदन जी एहि भाषा साहित्यिक पहिल मान्य उपन्यासकार छथि। हिनक पाँच गोट उपन्यासक पश्चात् एखन धरि देसिल वयनामे साहित्यक समग्र विधाक चित्रण करैत बहुत रास उपन्यास पाठक धरि पहुँचल अछि। परंच एहि साहित्यक संग सभसँ पैघ बिडम्वना रहल जे पछातिक समाज जकरा सामाजिक शब्दमे दलित कहल जाइत अछि, ओकर महिमामंडनक गप्प तँ दूर प्राय: एहि साहित्यमे अकस्मात् अवांछित अभ्यागत्तक रूपमे क्षणप्रभा जकाँ कतहु-कतहु चर्चित अछि। दलित वर्ग तँ सामाजिक, सांस्कृतिक आ शैक्षणिक रूपेँ सम्पूर्ण आर्यावर्त्तमे पिछड़ल छथि, मुदा मिथिला-मैथिलीमे हिनक स्थानक विवेचन हिनका सबहक जाति जकाँ अछोप अछि। एकर प्रमुख कारण मिथिलामे धर्मसुधार आन्दोलन, विधवा विवाहक

सकारात्मक दृष्टकोण प्राय: मृतप्राय रहि गेल। दार्शनिक उदयानाचार्य, भारती-मंडन, अयाचीक एहि भूमिपर सनातन संस्कृतिक पुनरूद्धार तँ भेल, मुदा एहि पुनरूद्धारपर आडंवर धर्मी व्यवस्थाक अमरतत्ती मूल सांस्कृतिक बिम्बकेँ सुखा देलक। समाजक साम्यवादी सोच भगजोगिनी बनि सवर्ण-दलितक मध्य भिन्न सामाजिक दशाक मध्य मात्र टिमटिमाइत रहल। एहि कारण सम्यक दृष्टिकोण रहितहुँ मैथिली भाषाक स्थापित रचनाकारक लेखनी व्यथित आ शोषित दलितक मर्मस्पर्शी जीवन गाथाकेँ प्रकाशित नहि कऽ सकल। कथा-कविता आ गल्पमे तँ दलितक चित्रण भेटैत अछि, मुदा उपन्यसमे अत्यल्प। अपन व्यथाक विवेचन दलित वर्गक साहित्यकार सेहो नहि कऽ सकलाह, किएक तँ हिनक संख्या एखन धरि नगन्य अछि। संभवत: दलित रचनाकारक उपन्यास अपन वयनामे मैथिलीकेँ एखन धरि नहि भेटलनि।

सभसँ जनप्रिय उपन्यासकार हरिमोहन झाक साहित्यमे दलित वर्ग अनुपस्थित जकाँ छथि। यात्रीक बलचनमा ओना एहि वर्ग दिस संकेत करैत अछि ओहिना जेना ललितक पृथ्वीपूत्र, धूमकेतुक मोड़ पर आ रमानंद रेणुक दूध-फूल। यात्रीक पारो आ नवतुरिया विषयक चयनक कारण दलित वर्ग दिस ध्यान नहि दऽ सकल। धीरेश्वर झा 'धीरेन्द्र'क 'कादो ओ कोयला' छोट लोकक विरनीक कथा कहैत अछि तँ हुनकर 'ठुमकि बहू कमला' मे दलित वर्गक संघर्षक कथा ठीठर आ रामकिसुनक माध्यमसँ कहल गेल अछि। मणिपद्मक उपन्यासक राजा सहलेस दलित दुसाधक नायक सहलेसक कथा कहैत अछि तँ 'लोरिक विजय' उपन्यासक नायक तँ यादव छथि मुदा हुनका मित्र वर्गमे बंठा चमार, वारू पासवान, राजल धोबी, ई सभ दलित वर्गक छथि- लोरिकक किछु विरोधी सेहो दलित वर्गक शासक छथि- मोचलि-गजभीमलि, हरवा आदि बंठाक संहार परिस्थितिवश करैत छथि आ ताहिसँ लोरिक विजयमे दलित कथाक ढेर रास प्रसंग आएल अछि। नैका बनिजारामे सेहो नैकाक पत्नी फुलेश्वकारीकेँ किनवाक वर्णन अछि। हुनकर फुटपाथ भिखमंगा सबहक कथा कहैत अछि तँ लिलीरेक पटाक्षेप भूमिहीनक नक्सलवाड़ी आन्दोलनक कथा कहैत अछि।

आधुनिक कालक प्रसिद्ध उपन्यासकार विद्यानाथ झा 'विदित'जी एहि विषयपर अपन लेखनीकेँ कोशीक भदैया धार जकाँ झमाड़ि कऽ प्रयोग कएलनि। ओना तँ विदित जी एखन धरि आठ-नौ गोट उपन्यासक रचना कएलनि अछि, परंच हिनक तीन गोट उपन्यासमे दलितक दशाक चित्रण मैथिली साहित्यक लेल अपूर्व निधि मानल जा सकैछ। हिनक विप्लवी बेसराक कथामे आदिवासीक कथा धौना, टेकू सुफल, बांसुरी, मोहरीलाल, गौरी, मारसक संग सफलता पूर्वक कहल गेल अछि। 'कौसिलिया' उपन्यासमे तँ फुलिया चमैनक पात्रताक चित्रण अनुपमेय अछि। विदित जीक तेसर उपन्यास 'मानव कल्प' मे मिथिला, अंग आ झारखंडक आँचरमे बसल लगभग सम्पूर्ण दलित समाजक विवेचन कएल गेल।

ओना तँ श्रीमती शेफालिका वर्मा जी मानव धर्मी रचनाकार छथि। हिनक समग्र साहित्यिक कृतिमे 'जाति' शब्द भूमंडलीकृत अछि। 'नाग फांस' उपन्यासमे जातिवादी व्यवस्थासँ शेफालिका जी बचबाक प्रयास कएलनि, परंच एहि उपन्यासक एकटा पात्र आकाशक पत्नी तरंगक प्रकृतिसँ बुझना जाइत अछि, जे ओ दलित छथि।

कहबाक लेल तँ सभ साहित्यकार अपनाकेँ साम्यवादी कहैत छथि मुदा साम्यवादी जीवन शैलीक जौँ चर्च कएल जाए तँ संभवत: मैथिलीक सर्वकालीन साहित्यमे ध्रुवताराक स्थान श्री जगदीश प्रसाद मंडल जीकेँ भेटबाक चाही। हिनक सभ उपन्यास (मौलाइल गाछक फूल, जिनगीक जीत, जीवन-मरण, जीवन-संघर्ष, उत्थान-पतन) मे दलितक चित्रण अनायास भेटि जाइत अछि। लिखवाक शैली ओ विम्वक चयन ततेक पारदर्शी जे सवर्ण-दलितक मध्य कोनो खाधि नहि। सम्पूर्ण समाजमे सकारात्मक तारतम्य स्थापित करवाक जगदीश जीक स्वप्न मात्र उपन्यासमे नहि रहत, एहिसँ मिथिलाक समाजिक परिस्थितिमे भविष्यसमे 'सर्वे भवन्तु सुखिन... सिद्धान्तक स्थापना अवश्य हएत। हिनक अविरल मर्मस्पर्शी आ प्रयोगधर्मी कृति 'मौलाइल गाछक फूल' मे दलित समाजक महादलित मुसहर जातिक रोगही, बेंगवा, कबुतरीक मनोदशा आ नित्यकर्मसँ समाजमे शांतिक ज्योति जगएबाक कल्पना अनमोल अछि। दड़िभंगाक प्लेटफार्मपर सँ भंगी डोमक मानवीय भावनाक मारीचिका एकठाँ भक्क दऽ उगि जाइत अछि। भजुआ, झोलिया आ कुसेसरी सभ सेहो डोम जातिक छथि जिनकर सहायता सम्यक सोचबला ब्राह्मण रमाकान्त जी करैत छथि। एहि कृतिक सभसँ अजगुत पात्र छथि रमाकान्तजी। हिनक छोट पुत्र कालक डाँगसँ अधमरू वनिता सुजाता जे धोविन छथि तिनकासँ विवाह कऽ लैत छथि। विवाह टा नहि विवाहसँ शिक्षा ग्रहन करवाक लेल प्रेरणा आ अर्थ सेहो सुजाताकेँ भेटलनि जाहिसँ ओ डॉ. सुजाता बनि गेली। गाममे रहनिहार आ अपन मातृभूमिक प्रति असीम श्रद्धा रखनिहार रमाकान्त बाबूकेँ अपन पुत्र महेन्द्रहक एहि निर्णएसँ कोनो पीड़ा नहि भेलनि। हिनक सम्पूर्ण परिवार एहि निर्णएकेँ सह्रदय स्वीकार कऽ लेलकनि।

जगदीश बाबूक दोसर उपन्यास 'जीवन-मरण' मे हेलन-गुदरी डोम दम्पतिक चर्च कएल गेल अछि। जीबछ, छीतन, रंगलाल चमार जातिसँ सम्बन्ध रखैत छथि। जिनगीक जीत उपन्यासमे पलहनिक नेपथ्यक पात्रता दर्शित अछि।

गजेन्द्र ठाकुरक 'सहस्त्रबाढ़नि' मे दम्माक जड़ी एकटा आदिवासी द्वारा आनव आ किछु वर्ख वाद ओ जड़ी जंगलमे नै भेटब वोन कम होएवा दिस संकेत करैत अछि तँ हुनकर 'सहस्त्रशीर्षा' मिथिलाक लगभग सभ दलित जातिक विष्तृत विवेचना करैत अछि। तीनटा घरक रहलोपर धोविया टोली एकटा टोल बनि गेल अछि। झंझारपुर धरि मारवाड़ीक कपड़ा एतए साफ कएल जाइत अछि। महिसवार ब्रह्मण सभ जे बरियातीमे बेलवटम झाड़ि कऽ सीटि-सीटि कऽ निकलैत छथि से कोनो अपन कपड़ा पहिरि कऽ। बैह मंगनिया कपड़ा, महगौआ मारवाड़ी सभक।

सकारात्मक दृष्टकोण प्राय: मृतप्राय रहि गेल। दार्शनिक उदयानाचार्य, भारती-मंडन, अयाचीक एहि भूमिपर सनातन संस्कृतिक पुनरूद्धार तँ भेल, मुदा एहि पुनरूद्धारपर आडंवर धर्मी व्वस्थाक अमरतत्ती मूल सांस्कृतिक बिम्बकेँ सुखा देलक। समाजक साम्यवादी सोच भगजोगिनी बनि सवर्ण-दलितक मध्य भिन्न सामाजिक दशाक मध्य मात्र टिमटिमाइत रहल। एहि कारण सम्यक दृष्टिकोण रहितहुँ मैथिली भाषाक स्थापित रचनाकारक लेखनी व्यथित आ शोषित दलितक मर्मस्पर्शी जीवन गाथाकेँ प्रकाशित नहि कऽ सकल। कथा-कविता आ गल्पमे तँ दलितक चित्रण भेटैत अछि, मुदा उपन्यसमे अत्यल्प। अपन व्यथाक विवेचन दलित वर्गक साहित्यकार सेहो नहि कऽ सकलाह, किएक तँ हिनक संख्या एखन धरि नगन्य अछि। संभवत: दलित रचनाकारक उपन्यास अपन वयनामे मैथिलीकेँ एखन धरि नहि भेटलनि।

सभसँ जनप्रिय उपन्यासकार हरिमोहन झाक साहित्यमे दलित वर्ग अनुपस्थित जकाँ छथि। यात्रीक बलचनमा ओना एहि वर्ग दिस संकेत करैत अछि ओहिना जेना ललितक पृथ्वीपूत्र, धूमकेतुक मोड़ पर आ रमानंद रेणुक दूध-फूल। यात्रीक पारो आ नवतुरिया विषयक चयनक कारण दलित वर्ग दिस ध्यान नहि दऽ सकल। धीरेश्वर झा 'धीरेन्द्र'क 'कादो ओ कोयला' छोट लोकक विरनीक कथा कहैत अछि तँ हुनकर 'ठुमकि बहू कमला' मे दलित वर्गक संघर्षक कथा ठीठर आ रामकिसुनक माध्यमसँ कहल गेल अछि। मणिपद्मक उपन्यासक राजा सहलेस दलित दुसाधक नायक सहलेसक कथा कहैत अछि तँ 'लोरिक विजय' उपन्यासक नायक तँ यादव छथि मुदा हुनका मित्र वर्गमे बंठा चमार, वारू पासवान, राजल धोबी, ई सभ दलित वर्गक छथि- लोरिकक किछु विरोधी सेहो दलित वर्गक शासक छथि- मोचलि-गजभीमलि, हरवा आदि बंठाक संहार परिस्थितिवश करैत छथि आ ताहिसँ लोरिक विजयमे दलित कथाक ढेर रास प्रसंग आएल अछि। नैका बनिजारामे सेहो नैकाक पत्नी फुलेश्वकारीकेँ किनवाक वर्णन अछि। हुनकर फुटपाथ भिखमंगा सबहक कथा कहैत अछि तँ लिलीरेक पटाक्षेप भूमिहीनक नक्सलवाड़ी आन्दोलनक कथा कहैत अछि।

आधुनिक कालक प्रसिद्ध उपन्यासकार विद्यानाथ झा 'विदित'जी एहि विषयपर अपन लेखनीकेँ कोशीक भदैया धार जकाँ झमाड़ि कऽ प्रयोग कएलनि। ओना तँ विदित जी एखन धरि आठ-नौ गोट उपन्यासक रचना कएलनि अछि, परंच हिनक तीन गोट उपन्यासमे दलितक दशाक चित्रण मैथिली साहित्यक लेल अपूर्व निधि मानल जा सकैछ। हिनक विप्लवी बेसराक कथामे आदिवासीक कथा धौना, टेकू सुफल, बांसुरी, मोहरीलाल, गौरी, मारसक संग सफलता पूर्वक कहल गेल अछि। 'कौसिलिया' उपन्यासमे तँ फुलिया चमैनक पात्रताक चित्रण अनुपमेय अछि। विदित जीक तेसर उपन्यास 'मानव कल्प' मे मिथिला, अंग आ झारखंडक आँचरमे बसल लगभग सम्पूर्ण दलित समाजक विवेचन कएल गेल।

ओना तँ श्रीमती शेफालिका वर्मा जी मानव धर्मी रचनाकार छथि। हिनक समग्र साहित्यिक कृतिमे 'जाति' शब्द भूमंडलीकृत अछि। 'नाग फांस' उपन्यासमे जातिवादी व्यवस्थासँ शेफालिका जी बचबाक प्रयास कएलनि, परंच एहि उपन्यासक एकटा पात्र आकाशक पत्नी तरंगक प्रकृतिसँ बुझना जाइत अछि, जे ओ दलित छथि।

कहबाक लेल तँ सभ साहित्यकार अपनाकेँ साम्यवादी कहैत छथि मुदा साम्यवादी जीवन शैलीक जौं चर्च कएल जाए तँ संभवत: मैथिलीक सर्वकालीन साहित्यमे ध्रुवताराक स्थान श्री जगदीश प्रसाद मंडल जीकेँ भेटबाक चाही। हिनक सभ उपन्यास (मौलाइल गाछक फूल, जिनगीक जीत, जीवन-मरण, जीवन-संघर्ष, उत्थान-पतन) मे दलितक चित्रण अनायास भेटि जाइत अछि। लिखवाक शैली ओ विम्वक चयन ततेक पारदर्शी जे सवर्ण-दलितक मध्य कोनो खाधि नहि। सम्पूर्ण समाजमे सकारात्मक तारतम्य स्थापित करवाक जगदीश जीक स्वप्न मात्र उपन्यासमे नहि रहत, एहिसँ मिथिलाक समाजिक परिस्थितिमे भविष्यसमे 'सर्वे भवन्तु सुखिन... सिद्धान्तक स्थापना अवश्य हएत। हिनक अविरल मर्मस्पर्शी आ प्रयोगधर्मी कृति 'मौलाइल गाछक फूल' मे दलित समाजक महादलित मुसहर जातिक रोगही, बेंगवा, कबुतरीक मनोदशा आ नित्यकर्मसँ समाजमे शांतिक ज्योति जगएबाक कल्पना अनमोल अछि। दड़िभंगाक प्लेटफार्मपर सँ भंगी डोमक मानवीय भावनाक मारीचिका एकठॉ भक्क दऽ उगि जाइत अछि। भजुआ, झोलिया आ कुसेसरी सभ सेहो डोम जातिक छथि जिनकर सहायता सम्यक सोचबला ब्राह्मण रमाकान्त जी करैत छथि। एहि कृतिक सभसँ अजगुत पात्र छथि रमाकान्तजी। हिनक छोट पुत्र कालक डाँगसँ अधमरू वनिता सुजाता जे धोविन छथि तिनकासँ विवाह कऽ लैत छथि। विवाह टा नहि विवाहसँ शिक्षा ग्रहन करवाक लेल प्रेरणा आ अर्थ सेहो सुजाताकेँ भेटलनि जाहिसँ ओ डॉ. सुजाता बनि गेली। गाममे रहनिहार आ अपन मातृभूमिक प्रति असीम श्रद्धा रखनिहार रमाकान्त बाबूकेँ अपन पुत्र महेन्द्रहक एहि निर्णएसँ कोनो पीड़ा नहि भेलनि। हिनक सम्पूर्ण परिवार एहि निर्णएकेँ सह्दय स्वीकार कऽ लेलकनि।

जगदीश बाबूक दोसर उपन्यास 'जीवन-मरण' मे हेलन-गुदरी डोम दम्पतिक चर्च कएल गेल अछि। जीबछ, छीतन, रंगलाल चमार जातिसँ सम्बन्ध रखैत छथि। जिनगीक जीत उपन्यासमे पलहनिक नेपथ्यक पात्रता दर्शित अछि।

गजेन्द्र ठाकुरक 'सहस्त्ररबाढ़नि' मे दम्माक जड़ी एकटा आदिवासी द्वारा आनव आ किछु वर्ख वाद ओ जड़ी जंगलमे नै भेटब वोन कम होएवा दिस संकेत करैत अछि तँ हुनकर 'सहस्त्रशीर्षा' मिथिलाक लगभग सभ दलित जातिक विष्तृत विवेचना करैत अछि। तीनटा घरक रहलोपर धोविया टोली एकटा टोल बनि गेल अछि। झंझारपुर धरि मारवाड़ीक कपड़ा एतए साफ कएल जाइत अछि। महिसवार ब्रह्मण सभ जे बरियातीमे बेलवटम झाड़ि कऽ सीटि-सीटि कऽ निकलैत छथि से कोनो अपन कपड़ा पहिरि कऽ। बैह मंगनिया कपड़ा, महगौआ मारवाड़ी सभक।

सकारात्मक दृष्टकोण प्राय: मृतप्राय रहि गेल। दार्शनिक उदयानाचार्य, भारती-मंडन, अयाचीक एहि भूमिपर सनातन संस्कृतिक पुनरूद्वार तँ भेल, मुदा एहि पुनरूद्वारपर आडंवर धर्मी व्वस्थाक अमरतत्ती मूल सांस्कृतिक बिम्बकैँ सुखा देलक। समाजक साम्यवादी सोच भगजोगिनी बनि सवर्ण-दलितक मध्य भिन्न सामाजिक दशाक मध्य मात्र टिमटिमाइत रहल। एहि कारण सम्यक दृष्टिकोण रहितहुँ मैथिली भाषाक स्थापित रचनाकारक लेखनी व्यथित आ शोषित दलितक मर्मस्पर्शी जीवन गाथाकैँ प्रकाशित नहि कऽ सकल। कथा-कविता आ गल्पमे तँ दलितक चित्रण भेटैत अछि, मुदा उपन्यसमे अत्यल्प। अपन व्यथाक विवेचन दलित वर्गक साहित्यकार सेहो नहि कऽ सकलाह, किएक तँ हिनक संख्या एखन धरि नगन्य अछि। संभवत: दलित रचनाकारक उपन्यास अपन वयनामे मैथिलीकैँ एखन धरि नहि भेटलनि।

सभसँ जनप्रिय उपन्यासकार हरिमोहन झाक साहित्यमे दलित वर्ग अनुपस्थित जकाँ छथि। यात्रीक बलचनमा ओना एहि वर्ग दिस संकेत करैत अछि ओहिना जेना ललितक पृथ्वीपूत्र, धूमकेतुक मोड़ पर आ रमानंद रेणुक दूध-फूल। यात्रीक पारो आ नवतुरिया विषयक चयनक कारण दलित वर्ग दिस ध्यान नहि दऽ सकल। धीरेश्वर झा 'धीरेन्द्र'क 'कादो ओ कोयला' छोट लोकक विरनीक कथा कहैत अछि तँ हुनकर 'ठुमकि बहू कमला' मे दलित वर्गक संघर्षक कथा ठीठर आ रामकिसुनक माध्यमसँ कहल गेल अछि। मणिपद्मक उपन्यासक राजा सहलेस दलित दुसाधक नायक सहलेसक कथा कहैत अछि तँ 'लोरिक विजय' उपन्यासक नायक तँ यादव छथि मुदा हुनका मित्र वर्गमे बंठा चमार, वारू पासवान, राजल धोबी, ई सभ दलित वर्गक छथि- लोरिकक किछु विरोधी सेहो दलित वर्गक शासक छथि- मोचलि-गजभीमलि, हरवा आदि बंठाक संहार परिस्थितिवश करैत छथि आ ताहिसँ लोरिक विजयमे दलित कथाक ढेर रास प्रसंग आएल अछि। नैका बनिजारामे सेहो नैकाक पत्नी फुलेश्वकारीकैँ किनवाक वर्णन अछि। हुनकर फुटपाथ भिखमंगा सबहक कथा कहैत अछि तँ लिलीरेक पटाक्षेप भूमिहीनक नक्सलवाड़ी आन्दोलनक कथा कहैत अछि।

आधुनिक कालक प्रसिद्ध उपन्यासकार विद्यानाथ झा 'विदित'जी एहि विषयपर अपन लेखनीकैँ कोशीक भदैया धार जकाँ झमाड़ि कऽ प्रयोग कएलनि। ओना तँ विदित जी एखन धरि आठ-नौ गोट उपन्यासक रचना कएलनि अछि, परंच हिनक तीन गोट उपन्यासमे दलितक दशाक चित्रण मैथिली साहित्यक लेल अपूर्व निधि मानल जा सकैछ। हिनक विप्लवी बेसराक कथामे आदिवासीक कथा धौना, टेकू सुफल, बांसुरी, मोहरीलाल, गौरी, मारसक संग सफलता पूर्वक कहल गेल अछि। 'कौसिलिया' उपन्यासमे तँ फुलिया चमैनक पात्रताक चित्रण अनुपमेय अछि। विदित जीक तेसर उपन्यास 'मानव कल्प' मे मिथिला, अंग आ झारखंडक आँचरमे बसल लगभग सम्पूर्ण दलित समाजक विवेचन कएल गेल।

ओना तँ श्रीमती शेफालिका वर्मा जी मानव धर्मी रचनाकार छथि। हिनक समग्र साहित्यिक कृतिमे 'जाति' शब्द भूमंडलीकृत अछि। 'नाग फांस' उपन्यासमे जातिवादी व्यवस्थासँ शेफालिका जी बचबाक प्रयास कएलनि, परंच एहि उपन्यासक एकटा पात्र आकाशक पत्नी तरंगक प्रकृतिसँ बुझना जाइत अछि, जे ओ दलित छथि।

कहबाक लेल तँ सभ साहित्यकार अपनाकैँ साम्यवादी कहैत छथि मुदा साम्यवादी जीवन शैलीक जौँ चर्च कएल जाए तँ संभवत: मैथिलीक सर्वकालीन साहित्यमे ध्रुवताराक स्थान श्री जगदीश प्रसाद मंडल जीकैँ भेटबाक चाही। हिनक सभ उपन्यास (मौलाइल गाछक फूल, जिनगीक जीत, जीवन-मरण, जीवन-संघर्ष, उत्थान-पतन) मे दलितक चित्रण अनायास भेटि जाइत अछि। लिखवाक शैली ओ विम्वक चयन ततेक पारदर्शी जे सवर्ण-दलितक मध्य कोनो खाधि नहि। सम्पूर्ण समाजमे सकारात्मक तारतम्य स्थापित करवाक जगदीश जीक स्वप्न मात्र उपन्यासमे नहि रहत, एहिसँ मिथिलाक समाजिक परिस्थितिमे भविष्यसमे 'सर्वे भवन्तु सुखिन... सिद्धान्तक स्थापना अवश्य हएत। हिनक अविरल मर्मस्पर्शी आ प्रयोगधर्मी कृति 'मौलाइल गाछक फूल' मे दलित समाजक महादलित मुसहर जातिक रोगही, बेंगवा, कबुतरीक मनोदशा आ नित्यकर्मसँ समाजमे शांतिक ज्योति जगएबाक कल्पना अनमोल अछि। दड़िभंगाक प्लेटफार्मपर सँ भंगी डोमक मानवीय भावनाक मारीचिका एकठाँ भक्क दऽ उगि जाइत अछि। भजुआ, झोलिया आ कुसेसरी सभ सेहो डोम जातिक छथि जिनकर सहायता सम्यक सोचबला ब्राह्मण रमाकान्त जी करैत छथि। एहि कृतिक सभसँ अजगुत पात्र छथि रमाकान्तजी। हिनक छोट पुत्र कालक डाँगसँ अधमरू वनिता सुजाता जे धोविन छथि तिनकासँ विवाह कऽ लैत छथि। विवाह टा नहि विवाहसँ शिक्षा ग्रहन करवाक लेल प्रेरणा आ अर्थ सेहो सुजाताकैँ भेटलनि जाहिसँ ओ डॉ. सुजाता बनि गेली। गाममे रहनिहार आ अपन मातृभूमिक प्रति असीम श्रद्धा रखनिहार रमाकान्त बाबूकैँ अपन पुत्र महेन्द्रहक एहि निर्णएसँ कोनो पीड़ा नहि भेलनि। हिनक सम्पूर्ण परिवार एहि निर्णएकैँ सहृदय स्वीकार कऽ लेलकनि।

जगदीश बाबूक दोसर उपन्यास 'जीवन-मरण' मे हेलन-गुदरी डोम दम्पतिक चर्च कएल गेल अछि। जीबछ, छीतन, रंगलाल चमार जातिसँ सम्बन्ध रखैत छथि। जिनगीक जीत उपन्यासमे पलहनिक नेपथ्यक पात्रता दर्शित अछि।

गजेन्द्र ठाकुरक 'सहस्त्रबाढ़नि' मे दम्माक जड़ी एकटा आदिवासी द्वारा आनव आ किछु वर्ख वाद ओ जड़ी जंगलमे नै भेटब वोन कम होएवा दिस संकेत करैत अछि तँ हुनकर 'सहस्त्रशीर्षा' मिथिलाक लगभग सभ दलित जातिक विष्तृत विवेचना करैत अछि। तीनटा घरक रहलोपर धोविया टोली एकटा टोल बनि गेल अछि। झंझारपुर धरि मारवाड़ीक कपड़ा एतए साफ कएल जाइत अछि। महिसवार ब्राह्मण सभ जे बरियातीमे बेलवटम झाड़ि कऽ सीटि-सीटि कऽ निकलैत छथि से कोनो अपन कपड़ा पहिरि कऽ। बैह मंगनिया कपड़ा, महगौआ मारवाड़ी सभक।

मारवाड़ी सभक ई कपड़ा रजक भाय दू दिन लेल भाड़ापर हिनका सभकेँ दैत छथिन्ह। कोरैल बुधन आ डोमी साफी, धोवि डोमी, साफी आब डोमी दास छथि, कारण कबीरपंथी जोतै छथि। फेर एकटा आर टोल, चमरटोली अछि। चमार- मुखदेब राम आ कपिलदेव राम। पहिने गामसँ बाहर रहए, बसबिट्टीक बाद। मुदा आब तँ सभ बॉस काटि कऽ उपटाए देने अछि आ लोकक वसोबास बढ़ैत-बढ़ैत एहि चमरटोली धरि आबि गेल अछि। घरहट आ ईंटा-पजेबा सभ अगल-बगलमे खसिते रहैत अछि। ढोलहो देबासँ लऽ कऽ सिंगा बजेबा धरिमे हिनकर सबहक सहयोग अपेक्षित। गाए-माल मरलाक बाद जा धरि ई सभ उठा कऽ नहि लऽ जाइत छथि लोकक घरमे छुतका लागले रहैत अछि। भोला पासवान आ मुकेश पासवान, दुसाध। गेना हजीक निचुलका खाड़ीक संबंधी। वएह गेना हजारी जे कुशेश्वर स्थानमे एकटा कुशपर गाए द्वरा आबि कऽ दूध दैत देखने रहथि तँ ओहि स्थानकेँ कोड़ए लगलाह, महादेव नीचाँ होइत गेलाह, सीतापुत्र कुश द्वारा स्थापित ई महादेव गेना हजारीक ताकल।

मुकेश पासवानक बेटी मालती बैंक अधिकारी छथिन्हा आ जमाए मथुरानंद डी.पी.एस. स्कूलक प्राचार्य छथि, वसंत-कुंज लग फार्म हाउसमे रहै जाइ छथि। भोला पासवान आ मुकेश पासवान गामेमे रहै जाइ छथि।

1967ई.क अकालमे जखन सभटा पोखरि, गड़खै सुखा गेल मुदा डकही पोखरि नहि सुखाएल प्रधानमंत्री आएल रहथि तँ हुनका देखेने रहन्हि सभ जे कोना एतए सँ बिसॉढ़ कोड़ि कऽ मुसहर सभ खाइत छथि। चर्मकार मुखदेव रामक बेटा उमेश सेहो ओहि मुक्ताकाश सैलूनक बगलमे अपन असला-खसला खसा लेने अछि, रहैए मुदा किशनगढ़मे। चप्पल, जुताक मरो-म्मातिक अलावे तालाक डुप्लीकेट चाभी बनेबाक हुनर सेहो सीखि लेने अछि। कुंजी अछि तँ ओकर डुप्लीकेट पंद्रह टाकामे। कुंजी हेरा गेल अछि तँ तकर डुप्लीकेट सए टाकामे। आ जे घर लऽ जएवन्हि तँ तकर फीस दू सए टाका अतिरिक्त। मुसहर बिचकुन सदायक बेटा रघुवीर ड्राइवरी सीखि लेने अछि। वसंत कुंजक एकटा व्यावसायीक ओहिठाम ड्राइवरी करैए आ रहैत अछि किसनगढ़मे। डोमटोलीक बौधा मल्लिक बेटा श्रीमंत सेक्टरक मेन्टेन्सक ठेका लेने छथि। हुनका लग दू सए गोटे छैन्ह जे सभ क्वार्टरक कूड़ा सभ दिन भोरमे उठेवाक संग रोड आ पार्किंगक भोरे-भोर सफाइ करै छथि। एहिमे सँ किछु गोटे विशेष कऽ नेपालक भोरे-भोर लोकक शीसा महिनवारी दू सए टाकामे पोछै छथि आ अखबारक होकर बनल छथि। रहै छथि किशनगढ़मे मुदा अपन मकानमे- मुसहर बिचकुन सदाय।

दलित संस्कृतिक प्रति उदासीनताक मुख्य कारण अछि समाजमे पसरल छूति व्यवस्था। ओना तँ एहि प्रकारक अवस्था प्रायः सम्पूर्ण आर्यावर्त्तमे रहल अछि, परंच आन ठामक जनभाषासँ दोसर धर्मक लोकक हृदयगत स्पर्शक कारण दलित संस्कारकक चित्रण आन भाषामे मैथिलीसँ वेसी भेटैत अछि। मिथिलामे तँ इस्लाम धर्मी छथि, परंच मातृभाषा मैथिली रहलाक वादो हुनका सबहक मध्य साहित्यक सृजनशीलता उदासीन रहल। एकरा मैथिलीक दुर्भाग्य मानल जा सकैत अछि जे एखन धरि एहि भाषामे दलित वर्गसँ उपजल साहित्यकार उपन्यास नहि लिखि सकलनि। प्रायः यएह स्थिति इस्लाम धर्मी साहित्याकारक संग सेहो अछि। फजलुर रहमान हासमी, मंजर सुलेमान सन साहित्यकार तँ मैथिलीकेँ आत्मसात कएलनि परंच उपन्यासकार नहि बनि सकलाह। ई लिखबाक तात्पर्य जे इस्लाममे जातिवादी व्यवस्था सनातन सांस्कृतिक अपेक्षाकृत न्यूईन अछि। दलित वर्गक संख्या मिथिलामे लगभग आठ आना अछि, संपूर्ण समाजक मातृभाषा मैथिली, मुदा शिक्षा-चेतनाक अभावक कारण एहि वर्गमे मैथिली साहित्यक प्रति सृजनात्मक दृष्टिकोण नहि पनपि सकल। आगाँक जातिमे सम्यक विचारक अभाव रहल अछि, किछु साहित्यकार एहि परिधिसँ तँ बाहर छथि परंच वर्गक बीचक खाधि लक्ष्मण रेखा बनि हुनको सभमे जनभाषा वाचकक प्रति सिनेह नहि आबए देलक। संभवतः मैथिली आर्यभाषा समूहक पहिल जनभाषा थिक जकरापर जातिवादी कलंक लागल अछि। संस्कृतक संग यएह विडंवना रहल परंच ओ कहिओ जनभाषा नहि रहल। जखन कि मैथिली वर्तमान कालमे सवर्णसँ बेसी दलित-पछातिक मातृभाषा अछि। पलायन तँ सभ जाति समूहमे भऽ रहल अछि परंच मजदूरी केनिहार दलित प्रवासमे सेहो मैथिलीकेँ आत्मसात कएने छथि। एकर विपरीत मिथिलामे रहनिहार सवर्ण परिवारक आधुनिक पिरहीक नेना वर्गमे मातृभाषाक स्थान हिन्दी लऽ रहल अछि। 'ज्योतिक-कोखि अन्हार' जकाँ मातृभाषाक वास्तविक संरक्षकक विवेचन एहि साहित्यक उन्नयनक नहि कऽ रहल छथि। उतर बिहारक बेस रास स्थानमे पसरल मैथिली तँ कखनो-कखनो मात्र मधुबनी दड़िभंगाक मातृभाषा प्रमाणित कएल जाइत अछि।

रचनाकारक दृष्किोण रचनामे किछु आर आ वास्तविक जीवनमे किछु आर रहल। साम्यवादी व्यवस्थापर सियाहीक प्रयोग केनिहार उपन्यासकारमे वास्तविकता जौं रूढ़िवादी रहत तँ सम्यक समाजक कल्पनो करब असंभव। व्यथा वएह बूझि सकैत अछि जकरामे जीवन्त अविरल हृदय हो वा स्वयं व्यथित हुअए।

निष्कर्षतः आशक संग-संग विश्वास अछि जे वर्तमान युगक साहित्यकार समाजक कात लागल वर्गक प्रति सिनेही बनि मैथिली साहित्यकेँ गरिमामयी बनाबथु। पूर्वाग्रहकेँ अनुगृहीत करबाक पश्चात एहेन कल्पना-वास्तविक भऽ सकैत अछि। जौं अपमानित अछोपकेँ सम्माानित कएल जाए तँ मिथिला पुनि ओहि मिथिलामे परिणत भऽ सकैत अछि जतए राजा जनक परिवार, समाज आ राज्यहितमे धर्मक पालनक हेतु राजासँ हरबाह बनि गेलनि।

- गाम,पोस्ट- करियन

भाया- इलमासपुर जिला- समस्तीपुर

मोबाइल- 7870397011

मारवाड़ी सभक ई कपड़ा रजक भाय दू दिन लेल भाड़ापर हिनका सभकेँ दैत छथिन्ह। कोरैल बुधन आ डोमी साफी, धोवि डोमी, साफी आब डोमी दास छथि, कारण कबीरपंथी जोतै छथि। फेर एकटा आर टोल, चमरटोली अछि। चमार- मुखदेब राम आ कपिलदेव राम। पहिने गामसँ बाहर रहए, बसबिट्टीक बाद। मुदा आब तँ सभ बॉस काटि कऽ उपटाए देने अछि आ लोकक वसोबास बढ़ैत-बढ़ैत एहि चमरटोली धरि आबि गेल अछि। घरहट आ ईंटा-पजेबा सभ अगल-बगलमे खसिते रहैत अछि। ढोलहो देबासँ लऽ कऽ सिंगा बजेबा धरिमे हिनकर सबहक सहयोग अपेक्षित। गाए-माल मरलाक बाद जा धरि ई सभ उठा कऽ नहि लऽ जाइत छथि लोकक घरमे छुतका लागले रहैत अछि। भोला पासवान आ मुकेश पासवान, दुसाध। गेना हजीक निचुलका खाड़ीक संबंधी। वएह गेना हजारी जे कुशेश्वर स्थानमे एकटा कुशपर गाए द्वरा आबि कऽ दूध दैत देखने रहथि तँ ओहि स्थानकेँ कोड़ए लगलाह, महादेव नीचाँ होइत गेलाह, सीतापुत्र कुश द्वारा स्थापित ई महादेव गेना हजारीक ताकल।

मुकेश पासवानक बेटी मालती बैंक अधिकारी छथिन्हा आ जमाए मथुरानंद डी.पी.एस. स्कूलक प्राचार्य छथि, वसंत-कुंज लग फार्म हाउसमे रहै जाइ छथि। भोला पासवान आ मुकेश पासवान गामेमे रहै जाइ छथि।

1967ई.क अकालमे जखन सभटा पोखरि, गड़खै सुखा गेल मुदा डकही पोखरि नहि सुखाएल प्रधानमंत्री आएल रहथि तँ हुनका देखेने रहन्हि सभ जे कोना एतए सँ बिसॉढ़ कोडि़ कऽ मुसहर सभ खाइत छथि। चर्मकार मुखदेव रामक बेटा उमेश सेहो ओहि मुक्ताकाश सैलूनक बगलमे अपन असला-खसला खसा लेने अछि, रहैए मुदा किशनगढ़मे। चप्पल, जुताक मरो-म्मातिक अलावे तालाक डुप्लीकेट चाभी बनेबाक हुनर सेहो सीखि लेने अछि। कुंजी अछि तँ ओकर डुप्लीकेट पंद्रह टाकामे। कुंजी हेरा गेल अछि तँ तकर डुप्लीकेट सए टाकामे। आ जे घर लऽ जएवन्हि तँ तकर फीस दू सए टाका अतिरिक्त। मुसहर बिचकुन सदायक बेटा रघुवीर ड्राइवरी सीखि लेने अछि। वसंत कुंजक एकटा व्यावसायीक ओहिठाम ड्राइवरी करैए आ रहैत अछि किसनगढ़मे। डोमटोलीक बौधा मल्लिक बेटा श्रीमंत सेक्टरक मेन्टेन्सक ठेका लेने छथि। हुनका लग दू सए गोटे छैन्ह जे सभ क्वार्टरक कूड़ा सभ दिन भोरमे उठेवाक संग रोड आ पार्किगक भोरे-भोर सफाइ करै छथि। एहिमे सँ किछु गोटे विशेष कऽ नेपालक भोरे-भोर लोकक शीसा महिनवारी दू सए टाकामे पोछै छथि आ अखबारक होकर बनल छथि। रहै छथि किशनगढ़मे मुदा अपन मकानमे- मुसहर बिचकुन सदाय।

दलित संस्कृतिक प्रति उदासीनताक मुख्य कारण अछि समाजमे पसरल छूति व्यवस्था। ओना तँ एहि प्रकारक अवस्था प्रायः सम्पूर्ण आर्यावर्त्तमे रहल अछि, परंच आन ठामक जनभाषासँ दोसर धर्मक लोकक हृदयगत स्पर्शक कारण दलित संस्काकरक चित्रण आन भाषामे मैथिलीसँ वेसी भेटैत अछि। मिथिलामे तँ इस्लाम धर्मी छथि, परंच मातृभाषा मैथिली रहलाक वादो हुनका सबहक मध्य साहित्यक सृजनशीलता उदासीन रहल। एकरा मैथिलीक दुर्भाग्य मानल जा सकैत अछि जे एखन धरि एहि भाषामे दलित वर्गसँ उपजल साहित्यकार उपन्यास नहि लिखि सकलनि। प्रायः यएह स्थिति इस्लाम धर्मी साहित्याकारक संग सेहो अछि। फजलुर रहमान हासमी, मंजर सुलेमान सन साहित्यकार तँ मैथिलीकेँ आत्मसात कएलनि परंच उपन्यासकार नहि बनि सकलाह। ई लिखबाक तात्पर्य जे इस्लाममे जातिवादी व्यवस्था सनातन सांस्कृतिक अपेक्षाकृत न्यूईन अछि। दलित वर्गक संख्या मिथिलामे लगभग आठ आना अछि, संपूर्ण समाजक मातृभाषा मैथिली, मुदा शिक्षा-चेतनाक अभावक कारण एहि वर्गमे मैथिली साहित्यक प्रति सृजनात्मक दृष्टिकोण नहि पनपि सकल। आगाँक जातिमे सम्यक विचारक अभाव रहल अछि, किछु साहित्यकार एहि परिधिसँ तँ बाहर छथि परंच वर्गक बीचक खाधि लक्ष्मण रेखा बनि हुनको सभमे जनभाषा वाचकक प्रति सिनेह नहि आबए देलक। संभवतः मैथिली आर्यभाषा समूहक पहिल जनभाषा थिक जकरापर जातिवादी कलंक लागल अछि। संस्कृतक संग यएह विडंवना रहल परंच ओ कहिओ जनभाषा नहि रहल। जखन कि मैथिली वर्तमान कालमे सवर्णसँ बेसी दलित-पछातिक मातृभाषा अछि। पलायन तँ सभ जाति समूहमे भऽ रहल अछि परंच मजदूरी केनिहार दलित प्रवासमे सेहो मैथिलीकेँ आत्मसात कएने छथि। एकर विपरीत मिथिलामे रहनिहार सवर्ण परिवारक आधुनिक पिरहीक नेना वर्गमे मातृभाषाक स्थान हिन्दी लऽ रहल अछि। 'ज्योतिक-कोखि अन्हार' जकाँ मातृभाषाक वास्तविक संरक्षकक विवेचन एहि साहित्यक उन्नयनक नहि कऽ रहल छथि। उतर बिहारक बेस रास स्थानमे पसरल मैथिली तँ कखनो-कखनो मात्र मधुबनी दड़िभंगाक मातृभाषा प्रमाणित कएल जाइत अछि।

रचनाकारक दृष्किोण रचनामे किछु आर आ वास्तविक जीवनमे किछु आर रहल। साम्यवादी व्यवस्थापर सियाहीक प्रयोग केनिहार उपन्यासकारमे वास्तविकता जौं रूढ़िवादी रहत तँ सम्यक समाजक कल्पनो करब असंभव। व्यथा वएह बूझि सकैत अछि जकरामे जीवन्त अविरल हृदय हो वा स्वयं व्यथित हुअए।

निष्कर्षतः आशक संग-संग विश्वास अछि जे वर्तमान युगक साहित्यकार समाजक कात लागल वर्गक प्रति सिनेही बनि मैथिली साहित्यकेँ गरिमामयी बनाबथु। पूर्वाग्रहकेँ अनुगृहीत करबाक पश्चात एहेन कल्पना-वास्तविक भऽ सकैत अछि। जौं अपमानित अछोपकेँ सम्मााानित कएल जाए तँ मिथिला पुनि ओहि मिथिलामे परिणत भऽ सकैत अछि जतए राजा जनक परिवार, समाज आ राज्यहितमे धर्मक पालनक हेतु राजासँ हरबाह बनि गेलनि।

- गाम, पोस्ट- करियन
भाया- इलमासपुर जिला- समस्तीपुर
मोबाइल- 7870397011

मारवाड़ी सभक ई कपड़ा रजक भाय दू दिन लेल भाड़ापर हिनका सभकेँ दैत छथिन्ह। कोरैल बुधन आ डोमी साफी, धोवि डोमी, साफी आब डोमी दास छथि, कारण कबीरपंथी जोतै छथि। फेर एकटा आर टोल, चमरटोली अछि। चमार- मुखदेब राम आ कपिलदेव राम। पहिने गामसँ बाहर रहए, बसबिट्टीक बाद। मुदा आब तँ सभ बॉस काटि कऽ उपटाए देने अछि आ लोकक वसोबास बढ़ैत-बढ़ैत एहि चमरटोली धरि आबि गेल अछि। घरहट आ ईंटा-पजेबा सभ अगल-बगलमे खसिते रहैत अछि। ढोलहो देबासँ लऽ कऽ सिंगा बजेबा धरिमे हिनकर सबहक सहयोग अपेक्षित। गाए-माल मरलाक बाद जा धरि ई सभ उठा कऽ नहि लऽ जाइत छथि लोकक घरमे छुतका लागले रहैत अछि। भोला पासवान आ मुकेश पासवान, दुसाध। गेना हजीक निचुलका खाड़ीक संबंधी। वएह गेना हजारी जे कुशेश्वर स्थानमे एकटा कुशपर गाए द्वरा आबि कऽ दूध दैत देखने रहथि तँ ओहि स्थानकेँ कोड़ए लगलाह, महादेव नीचाँ होइत गेलाह, सीतापुत्र कुश द्वारा स्थापित ई महादेव गेना हजारीक ताकल।

मुकेश पासवानक बेटी मालती बैंक अधिकारी छथिन्हा आ जमाए मथुरानंद डी.पी.एस. स्कूलक प्राचार्य छथि, वसंत-कुंज लग फार्म हाउसमे रहै जाइ छथि। भोला पासवान आ मुकेश पासवान गामेमे रहै जाइ छथि।

1967ई.क अकालमे जखन सभटा पोखरि, गड़खै सुखा गेल मुदा डकही पोखरि नहि सुखाएल प्रधानमंत्री आएल रहथि तँ हुनका देखेने रहन्हि सभ जे कोना एतए सँ बिसॉढ़ कोड़ि कऽ मुसहर सभ खाइत छथि। चर्मकार मुखदेव रामक बेटा उमेश सेहो ओहि मुक्ताकाश सैलूनक बगलमे अपन असला-खसला खसा लेने अछि, रहैए मुदा किशनगढ़मे। चप्पल, जुताक मरो-म्मातिक अलावे तालाक डुप्लीकेट चाभी बनेबाक हुनर सेहो सीखि लेने अछि। कुंजी अछि तँ ओकर डुप्लीकेट पंद्रह टाकामे। कुंजी हेरा गेल अछि तँ तकर डुप्लीकेट सए टाकामे। आ जे घर लऽ जएवन्हि तँ तकर फीस दू सए टाका अतिरिक्त। मुसहर बिचकुन सदायक बेटा रघुवीर ड्राइवरी सीखि लेने अछि। वसंत कुंजक एकटा व्यावसायीक ओहिठाम ड्राइवरी करैए आ रहैत अछि किसनगढ़मे। डोमटोलीक बौधा मल्लिक बेटा श्रीमंत सेक्टरक मेन्टेन्सक ठेका लेने छथि। हुनका लग दू सए गोटे छैन्ह जे सभ क्वार्टरक कूड़ा सभ दिन भोरमे उठेवाक संग रोड आ पार्किगक भोरे-भोर सफाइ करै छथि। एहिमे सँ किछु गोटे विशेष कऽ नेपालक भोरे-भोर लोकक शीसा महिनवारी दू सए टाकामे पोछै छथि आ अखबारक होकर बनल छथि। रहै छथि किशनगढ़मे मुदा अपन मकानमे- मुसहर बिचकुन सदाय।

दलित संस्कृतिक प्रति उदासीनताक मुख्य कारण अछि समाजमे पसरल छूति व्यवस्था। ओना तँ एहि प्रकारक अवस्था प्रायः सम्पूर्ण आर्यावर्त्तमे रहल अछि, परंच आन ठामक जनभाषासँ दोसर धर्मक लोकक हृदयगत स्पर्शक कारण दलित संस्कारक चित्रण आन भाषामे मैथिलीसँ वेसी भेटैत अछि। मिथिलामे तँ इस्लाम धर्मी छथि, परंच मातृभाषा मैथिली रहलाक वादो हुनका सबहक मध्य साहित्यक सृजनशीलता उदासीन रहल। एकरा मैथिलीक दुर्भाग्य मानल जा सकैत अछि जे एखन धरि एहि भाषामे दलित वर्गसँ उपजल साहित्यकार उपन्यास नहि लिखि सकलनि। प्रायः यएह स्थिति इस्लाम धर्मी साहित्याकारक संग सेहो अछि। फजलुर रहमान हासमी, मंजर सुलेमान सन साहित्यकार तँ मैथिलीकेँ आत्मसात कएलनि परंच उपन्यासकार नहि बनि सकलाह। ई लिखबाक तात्पर्य जे इस्लाममे जातिवादी व्यवस्था सनातन सांस्कृतिक अपेक्षाकृत न्यूईन अछि। दलित वर्गक संख्या मिथिलामे लगभग आठ आना अछि, संपूर्ण समाजक मातृभाषा मैथिली, मुदा शिक्षा-चेतनाक अभावक कारण एहि वर्गमे मैथिली साहित्यक प्रति सृजनात्मक दृष्टिकोण नहि पनपि सकल। आगाँक जातिमे सम्यक विचारक अभाव रहल अछि, किछु साहित्यकार एहि परिधिसँ तँ बाहर छथि परंच वर्गक बीचक खाधि लक्ष्मण रेखा बनि हुनको सभमे जनभाषा वाचकक प्रति सिनेह नहि आबए देलक। संभवतः मैथिली आर्यभाषा समूहक पहिल जनभाषा थिक जकरापर जातिवादी कलंक लागल अछि। संस्कृतक संग यएह विडंवना रहल परंच ओ कहिओ जनभाषा नहि रहल। जखन कि मैथिली वर्तमान कालमे सवर्णसँ बेसी दलित-पछातिक मातृभाषा अछि। पलायन तँ सभ जाति समूहमे भऽ रहल अछि परंच मजदूरी केनिहार दलित प्रवासमे सेहो मैथिलीकेँ आत्मसात कएने छथि। एकर विपरीत मिथिलामे रहनिहार सवर्ण परिवारक आधुनिक पिरहीक नेना वर्गमे मातृभाषाक स्थान हिन्दी लऽ रहल अछि। 'ज्योतिक-कोखि अन्हार' जकाँ मातृभाषाक वास्तविक संरक्षकक विवेचन एहि साहित्यक उन्नयनक नहि कऽ रहल छथि। उतर बिहारक बेस रास स्थानमे पसरल मैथिली तँ कखनो-कखनो मात्र मधुबनी दड़िभंगाक मातृभाषा प्रमाणित कएल जाइत अछि।

रचनाकारक दृष्किोण रचनामे किछु आर आ वास्तविक जीवनमे किछु आर रहल। साम्यवादी व्यवस्थापर सियाहीक प्रयोग केनिहार उपन्यासकारमे वास्तविकता जौं रूढ़िवादी रहत तँ सम्यक समाजक कल्पनो करब असंभव। व्यथा वएह बूझि सकैत अछि जकरामे जीवन्त अविरल हृदय हो वा स्वयं व्यथित हुअए।

निष्कर्षतः आशक संग-संग विश्वास अछि जे वर्तमान युगक साहित्यकार समाजक कात लागल वर्गक प्रति सिनेही बनि मैथिली साहित्यकेँ गरिमामयी बनाबथु। पूर्वाग्रहकेँ अनुगृहीत करबाक पश्चात एहेन कल्पना-वास्तविक भऽ सकैत अछि। जौं अपमानित अछोपकेँ सम्माानित कएल जाए तँ मिथिला पुनि ओहि मिथिलामे परिणत भऽ सकैत अछि जतए राजा जनक परिवार, समाज आ राज्यहितमे धर्मक पालनक हेतु राजासँ हरबाह बनि गेलनि।

- गाम,पोस्ट- करियन

भाया- इलमासपुर जिला- समस्तीपुर

मोबाइल- 7870397011



व्यक्तित्व

एक प्रवासी मैथिलक नजरिमे डा. 'रमण'

सीतराम झा



डा. रमणसँ हमर तात्पर्य डा. रमानन्द झा 'रमण'सँ अछि जे मैथिली साहित्य सागरमे हेलि ओहिमे सँ मोती, मणि आ दोसर बहुमूल्य रत्नादि आनि हमरा सभक समक्ष प्रस्तुत कएलनि अछि। ओ एक नीक समीक्षक, अनुवादक, सम्पादक, भेंटवार्ताकार आ अन्वेषक छथि। मैथिली साहित्यमे अधिकांश लेखक बहुविधावादी छथि, मुदा डा. रमणक लेखनक मुख्य क्षेत्र समीक्षा आ अनुसन्धान अछि। ओ नीक अनुवादक (अनुवाद–मैलियरक दू नाटक, अओ बिगहा आठ कट्ठा एवं यूनोस्कोक वेव साइट लेल सार्वभौम मानवाधिकार घोषणा) छथि। अनुवाद लेल भारतीय भाषा संस्थान, मैसूरसँ 'भाषा भारती सम्मान' प्राप्त भेल छनि। ओ भेटवार्ता साहित्यसँ सेहो मैथिली साहित्यक श्रीवृद्ध कएलनि अछि। मुदा साहित्यक शोध कार्यमे बेसी रुचि छनि। मैथिलीक प्रथम पत्रिका 'मैथिल हितसाधन' सँ लए कें आइ धरि जतेक पत्रिका मैथिलीमे प्रकाशित भेल अछि, आवश्यकता अनुसार सभक उद्धरण हिनक अनुसन्धानपरक लेख भेटि जाएत। मैथिलीक पहिल पत्रिका 'मैथिल हितसाधन' जे 1905 ई. मे जयपुर सँ प्रकाशित भेल, हमरा सन प्रवासी मैथिल लेल बड़ गौरवक विषय अछि। डा. रमणक लेख सभमे वाराणसीसँ प्रकाशित 'मिथिला मोद' एवं दरभंगासँ प्रकाशित 'मिथिला मिहिर' मे



व्यक्तित्व

एक प्रवासी मैथिलक नजरिमे डा. 'रमण'

सीतराम झा



डा. रमणसँ हमर तात्पर्य डा. रमानन्द झा 'रमण'सँ अछि जे मैथिली साहित्य सागरमे हेलि ओहिमे सँ मोती, मणि आ दोसर बहुमूल्य रत्नादि आनि हमरा सभक समक्ष प्रस्तुत कएलनि अछि। ओ एक नीक समीक्षक, अनुवादक, सम्पादक, भेंटवार्ताकार आ अन्वेषक छथि। मैथिली साहित्यमे अधिकांश लेखक बहुविधावादी छथि, मुदा डा. रमणक लेखनक मुख्य क्षेत्र समीक्षा आ अनुसन्धान अछि। ओ नीक अनुवादक (अनुवाद-मैलियरक दू नाटक, अओ बिगहा आठ कट्ठा एवं यूनोस्कोक वेव साइट लेल सार्वभौम मानवाधिकार घोषणा) छथि। अनुवाद लेल भारतीय भाषा संस्थान, मैसूरसँ 'भाषा भारती सम्मान' प्राप्त भेल छनि। ओ भेटवार्ता साहित्यसँ सेहो मैथिली साहित्यक श्रीवृद्ध कएलनि अछि। मुदा साहित्यक शोध कार्यमे बेसी रुचि छनि। मैथिलीक प्रथम पत्रिका 'मैथिल हितसाधन' सँ लए कें आइ धरि जतेक पत्रिका मैथिलीमे प्रकाशित भेल अछि, आवश्यकता अनुसार सभक उद्धरण हिनक अनुसन्धानपरक लेख भेटि जाएत। मैथिलीक पहिल पत्रिका 'मैथिल हितसाधन' जे 1905 ई. मे जयपुर सँ प्रकाशित भेल, हमरा सन प्रवासी मैथिल लेल बड़ गौरवक विषय अछि। डा. रमणक लेख सभमे वाराणसीसँ प्रकाशित 'मिथिला मोद' एवं दरभंगासँ प्रकाशित 'मिथिला मिहिर' मे



व्यक्तित्व

एक प्रवासी मैथिलक नजरिमे डा. 'रमण'

सीतराम झा



डा. रमणसँ हमर तात्पर्य डा. रमानन्द झा 'रमण'सँ अछि जे मैथिली साहित्य सागरमे हेलि ओहिमे सँ मोती, मणि आ दोसर बहुमूल्य रत्नादि आनि हमरा सभक समक्ष प्रस्तुत कएलनि अछि। ओ एक नीक समीक्षक, अनुवादक, सम्पादक, भेंटवार्ताकार आ अन्वेषक छथि। मैथिली साहित्यमे अधिकांश लेखक बहुविधावादी छथि, मुदा डा. रमणक लेखनक मुख्य क्षेत्र समीक्षा आ अनुसन्धान अछि। ओ नीक अनुवादक (अनुवाद-मैलियरक दू नाटक, अओ बिगहा आठ कट्ठा एवं यूनोस्कोक वेव साइट लेल सार्वभौम मानवाधिकार घोषणा) छथि। अनुवाद लेल भारतीय भाषा संस्थान, मैसूरसँ 'भाषा भारती सम्मान' प्राप्त भेल छनि। ओ भेटवार्ता साहित्यसँ सेहो मैथिली साहित्यक श्रीवृद्ध कएलनि अछि। मुदा साहित्यक शोध कार्यमे बेसी रुचि छनि। मैथिलीक प्रथम पत्रिका 'मैथिल हितसाधन' सँ लए कें आइ धरि जतेक पत्रिका मैथिलीमे प्रकाशित भेल अछि, आवश्यकता अनुसार सभक उद्धरण हिनक अनुसन्धानपरक लेख भेटि जाएत। मैथिलीक पहिल पत्रिका 'मैथिल हितसाधन' जे 1905 ई. मे जयपुर सँ प्रकाशित भेल, हमरा सन प्रवासी मैथिल लेल बड़ गौरवक विषय अछि। डा. रमणक लेख सभमे वाराणसीसँ प्रकाशित 'मिथिला मोद' एवं दरभंगासँ प्रकाशित 'मिथिला मिहिर' मे

समय-समय पर प्रकाशित विषय-वस्तुक प्रसंग दर्लुभ, विस्तृत एवं प्रामाणिक जानकारी भेटैत अछि। कहबाक तात्पर्य जे ओ पुरानसँ पुरान मैथिली पत्रिका सबहक अध्ययन एक अन्वेषकक रुपमे कएलनि अलनि अथवा अल्प छलनि।

डा. रमणक अध्ययन एवं लेखन पत्रिका धरि सीमित नहि अछि। मैथिलीक किछु पोथी जे प्रकाशित भेलाक बादो सर्वथा अनुपलब्ध भए गेल छल आ ओकर विशेषतासँ आजुक पाठक सर्वथा अनभिज्ञ छलाह तकरहु ओ ताकि सम्पादित एवं प्रकाशित कएल अछि। 1925 ई. मे प्रकाशित पुण्यानन्द झाक 'मिथिलाक दर्पण'क पुनर्प्रकाशन एकर प्रत्यक्ष उदाहरण थिक। एहि कोटिमे मैथिलीक अन्य उपन्यास, जे ओ सम्पादित प्रकाशित कएल अछि, से थिक जनार्दन झा 'जनसीदन' कृत निर्दयी सासु (1914) एवं पुनर्विवाह (1926), 1984, जीवछ मिश्र कृत 'रामेश्वर' (1916), 1996, रासबिहारी लाल दासकृत 'सुमति' (1918) 1996 आदि। किछु पोथी एहनहु छल जे कोनहु कारणवश प्रकाशित नहि भए सकल। ओहि सभक पाण्डुलिपिक पता लगौलनि आ स्वच्छ करबाक उपरान्त प्रकाशित कएल। एहि श्रेणीक पोथीमे अछि तेजनाथ झा लिखित 'सुर राजविजय नाटक' (1919 ई.) एवं श्रीबल्लभ झा कृत 'विद्यापति विवरण'। 'विद्यापति विवरण' तँ एक अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रकाशन थिक। ('विद्यापति विवरण'क लोकार्पण मिथिला सांस्कृतिक समन्वय समिति. गुवाहाटीक तत्वावधानमे गुवाहाटीमे भेल छल- सम्पादक) एहिमे विद्यापतिक साहित्य पाण्डित्यपूर्ण विवेचन तँ अछिए, ई मिथिलाक्षर (लेखक हाथक लिखल) आ देवनागरी दूनूमे छपल अछि। एहिना ओ दू टा महत्वपूर्ण रचनावलीक संकलन सम्पादन कए बिसरल साहित्कारक कृतिकें समक्ष आनल अछि। एहिक्रममे अछि 'श्यामानन्द रचनावली' (1981) एवं यदुवर रचनावली (2003)। 'यदवुर रचनावली' प्रवासी लोकनिक संस्था, मिथिला सांस्कृतिक समन्वय समिति, गुवाहाटी छापि एक महत्पवूर्ण काज कएलक अछि। एहि क्रममे



अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं नवीनतम उपलब्धि थिकनि जर्मनीक एक पत्रिकामे 1885 ई. मे जार्ज अब्राहम ग्रिअर्सन द्वारा संकलित, अनुवादित एवं सम्पादित 'गीत दीनाभद्री ओ गीत नेबार' ओतय सँ उपलब्ध कराए सम्पादन एवं प्रकाशन।

एहि विषयमे हम एक बात कहए चाहैत छी, जे साहित्यकार शिक्षण कार्यसँ जुड़ल छथि, ओ एहि सभ काज करबामे बेसी सुविधाजनक स्थितिमे होइत छथि। कारण, हुनका अधिक अवकाश भेटैत छनि। जाहि विषय पर काज करैत छथि ओहि विषय पर अपन विद्यार्थी आ सहकर्मी अध्यापक लोकनिसँ विचार-विमर्श कए आओरो उपयोगी बनेबाक पर्याप्त अवसर भेटैत छनि। पुस्तक तैआर होएबाक बाद हुनकर पोथी प्रकाशित करबाक लेल कतेको प्रकाशक सदिखन उपलब्ध रहैत छथि। बिक्रयमे सुविधा सेहो होइत छनि। किछु अपवाद छोड़ि एकर विपरीत ओ लेकनि जे शिक्षण पेशासँ जुड़ल नहि छथि एहन एहन सुविधासँ वंचित रहैत छथि। डा. रमणक पेशा शिक्षण कार्य नहि छल। ओ एक बैंक अधिकारी रहथि। बैंकक एक अधिकारीक की व्यस्तता आ दायित्व रहैत छैक, ओहिसँ केओ अपरिचित नहि छी। बैंकमे अपन काज कएलाक बाद जे पलखति भेटैत रहलनि ओहिमे पारिवारिक दायित्व निर्वाहक संग सामाजिक कार्य सेहो करैत रहथि। ओ दक्षतापूर्वक सबहि कैँ सम्पन्न कएलनि अछि। जे व्यक्ति शिक्षण जगतसँ जुड़ल नहि छथि, ओएह व्यक्ति नीक जकाँ जानि सकैत छथि जे साहित्यिक काज करबामे कतेक कठिनाइक सामना करए पड़ैत छैक। मुदा डा. रमणक प्रकाशन आ लेखन-व्याप्ति देखि प्रतीत होइछ जे ओ समय प्रबन्धनमे सेहो पटु छथि। सभ काज बिना कठिनाइक सम्पादित करैत रहलाह। ओ समस्त मैथिली साहित्यकैँ मथि-मथि नव-नव पोथी सँ अपन मातृभाषाक शृंगार कएलनि अछि। डॉ. रमणक ई योगदान कौखन बिसरल नहि जाए सकैत अछि।

डा. रमणक साहित्यिक आलोचनाक अनेक पोथी प्रकाशित अछि, जेना नवीन मैथिली कविता (1981), मैथिली नऽव कविता (1993), अखियासल (1995), मैथिली साहित्य ओ राजनीति (1994), बेसाहल (2003) एवं भजारल (2005)। एकर अतिरिक्त 'मैथिलीक आरम्भिक कथा' (1978) आ 'मैथिलीक आरम्भिक यात्रा साहित्य' (2009) सेहो सम्पादित-प्रकाशित कएल अछि। एहि पोथी सर्जनात्मक गतिविधिक अध्ययन विवेचन भेटैत अछि ओहनहि तल्लीनतासँ मैथिलीक आरम्भिक साहित्य सेहो विवेचन कएल अछि। ई सामंजस्य बड़ कम समीक्षकमे भेटैत अछि।

जेना कहल गेल अछि डा. रमण मैथिलीक एक समीक्षक छथि। समीक्षक ई दायित्व भए जाइत छैक जे ओ पक्षपात रहित

समय-समय पर प्रकाशित विषय-वस्तुक प्रसंग दर्लुभ, विस्तृत एवं प्रामाणिक जानकारी भेटैत अछि। कहबाक तात्पर्य जे ओ पुरानसँ पुरान मैथिली पत्रिका सबहक अध्ययन एक अन्वेषकक रुपमे कएलनि अलनि अथवा अल्प छलनि।

डा. रमणक अध्ययन एवं लेखन पत्रिका धरि सीमित नहि अछि। मैथिलीक किछु पोथी जे प्रकाशित भेलाक बादो सर्वथा अनुपलब्ध भए गेल छल आ ओकर विशेषतासँ आजुक पाठक सर्वथा अनभिज्ञ छलाह तकरहु ओ ताकि सम्पादित एवं प्रकाशित कएल अछि। 1925 ई. मे प्रकाशित पुण्यानन्द झाक 'मिथिलाक दर्पण'क पुनर्प्रकाशन एकर प्रत्यक्ष उदाहरण थिक। एहि कोटिमे मैथिलीक अन्य उपन्यास, जे ओ सम्पादित प्रकाशित कएल अछि, से थिक जनार्दन झा 'जनसीदन' कृत निर्दयी सासु (1914) एवं पुनर्विवाह (1926), 1984, जीवछ मिश्र कृत 'रामेश्वर' (1916), 1996, रासबिहारी लाल दासकृत 'सुमति' (1918) 1996 आदि। किछु पोथी एहनहु छल जे कोनहु कारणवश प्रकाशित नहि भए सकल। ओहि सभक पाण्डुलिपिक पता लगौलनि आ स्वच्छ करबाक उपरान्त प्रकाशित कएल। एहि श्रेणीक पोथीमे अछि तेजनाथ झा लिखित 'सुर राजविजय नाटक' (1919 ई.) एवं श्रीबल्लभ झा कृत 'विद्यापति विवरण'। 'विद्यापति विवरण' तँ एक अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रकाशन थिक। ('विद्यापति विवरण'क लोकार्पण मिथिला सांस्कृतिक समन्वय समिति. गुवाहाटीक तत्वावधानमे गुवाहाटीमे भेल छल- सम्पादक) एहिमे विद्यापतिक साहित्य पाण्डित्यपूर्ण विवेचन तँ अछिए, ई मिथिलाक्षर (लेखक हाथक लिखल) आ देवनागरी दूनूमे छपल अछि। एहिना ओ दू टा महत्वपूर्ण रचनावलीक संकलन सम्पादन कए बिसरल साहित्कारक कृतिकें समक्ष आनल अछि। एहिक्रममे अछि 'श्यामानन्द रचनावली' (1981) एवं यदुवर रचनावली (2003)। 'यदवुर रचनावली' प्रवासी लोकनिक संस्था, मिथिला सांस्कृतिक समन्वय समिति, गुवाहाटी छापि एक महत्पवूर्ण काज कएलक अछि। एहि क्रममे



अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं नवीनतम उपलब्धि थिकनि जर्मनीक एक पत्रिकामे 1885 ई. मे जार्ज अब्राहम ग्रिअर्सन द्वारा संकलित, अनुवादित एवं सम्पादित 'गीत दीनाभद्री ओ गीत नेबार' ओतय सँ उपलब्ध कराए सम्पादन एवं प्रकाशन।

एहि विषयमे हम एक बात कहए चाहैत छी, जे साहित्यकार शिक्षण कार्यसँ जुड़ल छथि, ओ एहि सभ काज करबामे बेसी सुविधाजनक स्थितिमे होइत छथि। कारण, हुनका अधिक अवकाश भेटैत छनि। जाहि विषय पर काज करैत छथि ओहि विषय पर अपन विद्यार्थी आ सहकर्मी अध्यापक लोकनिसँ विचार-विमर्श कए आओरो उपयोगी बनेबाक पर्याप्त अवसर भेटैत छनि। पुस्तक तैआर होएबाक बाद हुनकर पोथी प्रकाशित करबाक लेल कतेको प्रकाशक सदिखन उपलब्ध रहैत छथि। बिक्रयमे सुविधा सेहो होइत छनि। किछु अपवाद छोड़ि एकर विपरीत ओ लेकनि जे शिक्षण पेशासँ जुड़ल नहि छथि एहन एहन सुविधासँ वंचित रहैत छथि। डा. रमणक पेशा शिक्षण कार्य नहि छल। ओ एक बैंक अधिकारी रहथि। बैंकक एक अधिकारीक की व्यस्तता आ दायित्व रहैत छैक, ओहिसँ केओ अपरिचित नहि छी। बैंकमे अपन काज कएलाक बाद जे पलखति भेटैत रहलनि ओहिमे पारिवारिक दायित्व निर्वाहक संग सामाजिक कार्य सेहो करैत रहथि। ओ दक्षतापूर्वक सबहि कैँ सम्पन्न कएलनि अछि। जे व्यक्ति शिक्षण जगतसँ जुड़ल नहि छथि, ओएह व्यक्ति नीक जकाँ जानि सकैत छथि जे साहित्यिक काज करबामे कतेक कठिनाइक सामना करए पड़ैत छैक। मुदा डा. रमणक प्रकाशन आ लेखन-व्याप्ति देखि प्रतीत होइछ जे ओ समय प्रबन्धनमे सेहो पटु छथि। सभ काज बिना कठिनाइक सम्पादित करैत रहलाह। ओ समस्त मैथिली साहित्यकेँ मथि-मथि नव-नव पोथी सँ अपन मातृभाषाक शृंगार कएलनि अछि। डॉ. रमणक ई योगदान कौखन बिसरल नहि जाए सकैत अछि।

डा. रमणक साहित्यिक आलोचनाक अनेक पोथी प्रकाशित अछि, जेना नवीन मैथिली कविता (1981), मैथिली नऽव कविता (1993), अखियासल (1995), मैथिली साहित्य ओ राजनीति (1994), बेसाहल (2003) एवं भजारल (2005)। एकर अतिरिक्त 'मैथिलीक आरम्भिक कथा' (1978) आ 'मैथिलीक आरम्भिक यात्रा साहित्य' (2009) सेहो सम्पादित-प्रकाशित कएल अछि। एहि पोथी सर्जनात्मक गतिविधिक अध्ययन विवेचन भेटैत अछि ओहनहि तल्लीनतासँ मैथिलीक आरम्भिक साहित्य सेहो विवेचन कएल अछि। ई सामंजस्य बड़ कम समीक्षकमे भेटैत अछि।

जेना कहल गेल अछि डा. रमण मैथिलीक एक समीक्षक छथि। समीक्षक ई दायित्व भए जाइत छैक जे ओ पक्षपात रहित

समय-समय पर प्रकाशित विषय-वस्तुक प्रसंग दर्लुभ, विस्तृत एवं प्रामाणिक जानकारी भेटैत अछि। कहबाक तात्पर्य जे ओ पुरानसँ पुरान मैथिली पत्रिका सबहक अध्ययन एक अन्वेषकक रुपमे कएलनि अलनि अथवा अल्प छलनि।

डा. रमणक अध्ययन एवं लेखन पत्रिका धरि सीमित नहि अछि। मैथिलीक किछु पोथी जे प्रकाशित भेलाक बादो सर्वथा अनुपलब्ध भए गेल छल आ ओकर विशेषतासँ आजुक पाठक सर्वथा अनभिज्ञ छलाह तकरहु ओ ताकि सम्पादित एवं प्रकाशित कएल अछि। 1925 ई. मे प्रकाशित पुण्यानन्द झाक 'मिथिलाक दर्पण'क पुनर्प्रकाशन एकर प्रत्यक्ष उदाहरण थिक। एहि कोटिमे मैथिलीक अन्य उपन्यास, जे ओ सम्पादित प्रकाशित कएल अछि, से थिक जनार्दन झा 'जनसीदन' कृत निर्दयी सासु (1914) एवं पुनर्विवाह (1926), 1984, जीवछ मिश्र कृत 'रामेश्वर' (1916), 1996, रासबिहारी लाल दासकृत 'सुमति' (1918) 1996 आदि। किछु पोथी एहनहु छल जे कोनहु कारणवश प्रकाशित नहि भए सकल। ओहि सभक पाण्डुलिपिक पता लगौलनि आ स्वच्छ करबाक उपरान्त प्रकाशित कएल। एहि श्रेणीक पोथीमे अछि तेजनाथ झा लिखित 'सुर राजविजय नाटक' (1919 ई.) एवं श्रीबल्लभ झा कृत 'विद्यापति विवरण'। 'विद्यापति विवरण' तँ एक अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रकाशन थिक। ('विद्यापति विवरण'क लोकार्पण मिथिला सांस्कृतिक समन्वय समिति. गुवाहाटीक तत्वावधानमे गुवाहाटीमे भेल छल- सम्पादक) एहिमे विद्यापतिक साहित्य पाण्डित्यपूर्ण विवेचन तँ अछिए, ई मिथिलाक्षर (लेखक हाथक लिखल) आ देवनागरी दूनूमे छपल अछि। एहिना ओ दू टा महत्वपूर्ण रचनावलीक संकलन सम्पादन कए बिसरल साहित्कारक कृतिकें समक्ष आनल अछि। एहिक्रममे अछि 'श्यामानन्द रचनावली' (1981) एवं यदुवर रचनावली (2003)। 'यदवुर रचनावली' प्रवासी लोकनिक संस्था, मिथिला सांस्कृतिक समन्वय समिति, गुवाहाटी छापि एक महत्पवूर्ण काज कएलक अछि। एहि क्रममे



अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं नवीनतम उपलब्धि थिकनि जर्मनीक एक पत्रिकामे 1885 ई. मे जार्ज अब्राहम ग्रिअर्सन द्वारा संकलित, अनुवादित एवं सम्पादित 'गीत दीनाभद्री ओ गीत नेबार' ओतय सँ उपलब्ध कराए सम्पादन एवं प्रकाशन।

एहि विषयमे हम एक बात कहए चाहैत छी, जे साहित्यकार शिक्षण कार्यसँ जुड़ल छथि, ओ एहि सभ काज करबामे बेसी सुविधाजनक स्थितिमे होइत छथि। कारण, हुनका अधिक अवकाश भेटैत छनि। जाहि विषय पर काज करैत छथि ओहि विषय पर अपन विद्यार्थी आ सहकर्मी अध्यापक लोकनिसँ विचार-विमर्श कए आओरो उपयोगी बनेबाक पर्याप्त अवसर भेटैत छनि। पुस्तक तैआर होएबाक बाद हुनकर पोथी प्रकाशित करबाक लेल कतेको प्रकाशक सदिखन उपलब्ध रहैत छथि। बिक्रयमे सुविधा सेहो होइत छनि। किछु अपवाद छोड़ि एकर विपरीत ओ लेकनि जे शिक्षण पेशासँ जुड़ल नहि छथि एहन एहन सुविधासँ वंचित रहैत छथि। डा. रमणक पेशा शिक्षण कार्य नहि छल। ओ एक बैंक अधिकारी रहथि। बैंकक एक अधिकारीक की व्यस्तता आ दायित्व रहैत छैक, ओहिसँ केओ अपरिचित नहि छी। बैंकमे अपन काज कएलाक बाद जे पलखति भेटैत रहलनि ओहिमे पारिवारिक दायित्व निर्वाहक संग सामाजिक कार्य सेहो करैत रहथि। ओ दक्षतापूर्वक सबहि कैँ सम्पन्न कएलनि अछि। जे व्यक्ति शिक्षण जगतसँ जुड़ल नहि छथि, ओएह व्यक्ति नीक जकाँ जानि सकैत छथि जे साहित्यिक काज करबामे कतेक कठिनाइक सामना करए पड़ैत छैक। मुदा डा. रमणक प्रकाशन आ लेखन-व्याप्ति देखि प्रतीत होइछ जे ओ समय प्रबन्धनमे सेहो पटु छथि। सभ काज बिना कठिनाइक सम्पादित करैत रहलाह। ओ समस्त मैथिली साहित्यकैँ मथि-मथि नव-नव पोथी सँ अपन मातृभाषाक शृंगार कएलनि अछि। डॉ. रमणक ई योगदान कौखन बिसरल नहि जाए सकैत अछि।

डा. रमणक साहित्यिक आलोचनाक अनेक पोथी प्रकाशित अछि, जेना नवीन मैथिली कविता (1981), मैथिली नऽव कविता (1993), अखियासल (1995), मैथिली साहित्य ओ राजनीति (1994), बेसाहल (2003) एवं भजारल (2005)। एकर अतिरिक्त 'मैथिलीक आरम्भिक कथा' (1978) आ 'मैथिलीक आरम्भिक यात्रा साहित्य' (2009) सेहो सम्पादित-प्रकाशित कएल अछि। एहि पोथी सर्जनात्मक गतिविधिक अध्ययन विवेचन भेटैत अछि ओहनहि तल्लीनतासँ मैथिलीक आरम्भिक साहित्य सेहो विवेचन कएल अछि। ई सामंजस्य बड़ कम समीक्षकमे भेटैत अछि।

जेना कहल गेल अछि डा. रमण मैथिलीक एक समीक्षक छथि। समीक्षक ई दायित्व भए जाइत छैक जे ओ पक्षपात रहित

भए साहित्यक समीक्षित पोथीमे जँ कोनो त्रुटि छैक तँ बिना कोनो हिचकिचाहटि तकरा करथि। जँ प्रशंसनीय छैक, ओकर मुक्त कंठे प्रशंसा करथि। ई बात सिद्धान्तक भेल, मुदा वास्तविक जीवनमे ई अति दुर्लभ छैक। कारण, समीक्षक सेहो एक व्यक्ति होइत छथि। हुनक अपन स्वयंक विचार होइत छनि। जँ समीक्षित पोथिसँ विचार मिलि गेल वा समीक्षित पोथीक लेखक प्रियपात्र वा अपन लोक छथि तँ प्रशंसामे अपन कलम तोड़ि दैत छथि। जँ विचार नहि मिलल वा ओकर लेखक अपन लोक नहि छथि तँ अपन आलोचनात्मक लेखनीकेँ तीव्र गति दए दैत छथि। एक साहित्यकार होएबाक कारणेँ डा. रमणक अपन विचार सेहो छनि। 'यदुवरक साहित्यक विवेचनसँ स्पष्ट अछि जे हुनक चेतनामे राष्ट्रीयता कूटि-कूटिकेँ भरल छल।' मुदा लिखल अछि जे ओ अपन गीतमे (मंगल कामना) यदुवरजी जार्ज पंचम आ हुनक पत्नी मेरीक स्तुति करैत छथि-

'जीवथु श्रीमहाराजाधिराज,

श्री भारत भूमण्डलनायक भूपगणक सिरताज।'

ओहि रचनावलीमे आओरो ठाम जार्ज पंचम आ मेरीक भूरि-भूरि प्रशंसा कएल गेल अछि। जार्ज पंचम जखन महाराज भेलाह, ओहि उपलक्ष्यमे मंगलाचरण गीत लिखलनि-

'मोर सकल मनोरथ पूरल आज पंचम जार्ज महराज

बृटिश भूमि भारत चहु ओर सुनितहि भ गेल परम इजोर।'

डा. रमणकेँ जनसीदनजी आ प्रो. हरिमोहन झाजीसँ एकटा शिकाइत छइन जे ओ लोकनि स्वतन्त्रता आन्दोलन विषयमे किछु नहि कहलनि वा नहि लिखलनि। हुनक कहब छनि जे प्रो. हरिमोहन झा सन संवेदनशील साहित्यकार राष्ट्रक दासत्वसँ कोना अप्रभावित रहि गेलाह से आश्चर्यक विषय अवश्य थिक। आगू ओ लिखैत छथि 'स्वाधीनतासँ पूर्व प्रकाशित प्रो. हरिमोहन झाक साहित्यमे जेना स्वाधीनता संग्रामक धाह नहि अछि, ओहिना स्वतन्त्रता प्राप्तिक

> @UÂÚLô•Ì çßáØ×ð ãU×ÚU •¤ãUÕÁð âæçãUˆØ•¤æÚU¥ÂÙ âæçãUˆØ×ð âæ×æçÁ•¤ •éÚUèçÌ•ð¡¤ÃØ¢‚Ø•¤ çßáØÕÙæÜçÙÐ ãéUÙ•¤ âÖ•¤ â×ÿæ â×æÁ×ð •éÚUèçÌ ÀUÜñ•¤Ð¥ôçãU •éÚUèçÌ âÖ×ð ÕãéUçßßæãU, ¥Ù×ðÜ çßßæãU,ÕæÜ çßßæãU, S˜æè»‡æ ¥æ Ì$Íæ•¤çÍÌ çÙ•Ùß‡æü•¤ àæôá‡æ ¥æ ¥˜Øæ¿æÚU ÂýÍé¹ ÀUÜñ•¤Ð Âç‡ÇUÌ Âé‡ØæÙ‹Î Ûææ•ëÌ Òç×çÍÜæ ÎÂü‡æÓ×ð ÅUãUÜæ °ß¢ ¥ô ÖôÎé¥æ•¤ ØæÌÙæ Îðç¹ ãU×ÚUæ âÙ ÂæÆU•¤•ð¡¤ ÙôÚU ¥æçÕ ÁæÕÌ ÀñU•¤Ð

पछातिओ हुनक रचनामे स्वाधीन राष्ट्रक एक रचनाकारक सम्मानबोध अथवा जनजीवनक उल्लासक अभाव खटकैत अछि।'

जनसीदन जीक विषयमे हुनक कहब छनि- ''बंगला, हिन्दी एवं मैथिली साहित्यक गतिविधिसँ पूर्ण परिचित जनार्दन झा 'जनसीदन' राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्रामक पजरैत पसाहीमे एकोटा काठी नहि देलनि।'' ओ लिखैत छथि- ''स्वाधीनतासँ पूर्व एक सुविधा प्राप्त वर्ग छल जे विदेशी सरकारक स्थायित्व लेल भगवानसँ प्रार्थना करैत अछि।''

उपरोक्त विषयमे हमर कहब जे साहित्यकार अपन साहित्यमे सामाजिक कुरीतिकेँ व्यंग्यक विषय बनौलनि। हुनक सभक समक्ष समाजमे कुरीति छलैक। ओहि कुरीति सभमे बहुविवाह, अनमेल विवाह,बाल विवाह, स्त्रीगण आ तथाकथित निम्नवर्णक शोषण आ अत्याचार प्रमुख छलैक। पण्डित पुण्यानन्द झाकृत 'मिथिला दर्पण' मे टहला एवं ओ भोदुआक यातना देखि हमरा सन पाठककेँ नोर आबि जाइत छैक। भए सकैछ ओ सभ पराधीनतासँ बेसी एहि कुरीति सभकेँ घातक बुझैत होएताह। जनसीदन जी हरिसिंहदेवी व्यवस्थाक विरोध छलाह। ई व्यवस्था बहुत सीमा धरि विवाह, अनमेल विवाह, आ बहुविवाहक उत्तरदायी छलैक। ओहि समय मैथिल समाज हँसीक पात्र छलैक। समयक डेगमे डेग मिलेबामे बहुत पाछू रहि गेल छल। तँ ओ सभ कुरीति सभकेँ इंगित कएलनि जाहिसँ समाज आगू बढ़ि सकए। संगहि जे साहित्यकार स्वाधीनता संग्रामक विषयमे नहि लिखलनि, ओकर तात्पर्य ई नहि जे ओ स्वतंत्रताक विरोधी छलाह। जहाँ धरि पक्ष अथवा ओकालति करबाक प्रश्न थिक से भिन्न बात भेल मुदा एहिमे कोनो अतिशयोक्ति नहि जे मैथिली साहित्यमे हुनक कम योगदान छनि। एहि बातकेँ डा. रमण स्वयं मानैत छथि। साहित्यकारक विषय भिन्न-भिन्न भए सकैछ मुदा लक्ष्य एक होइछ- भाषाक संवर्द्धन। ओहिमे ओ सभ सफल भेलाह। जनसीदन जी 'निर्दयी सासु' आ 'पुनर्विवाह' लिखि मैथिली सहित्यमे उपन्यासक श्रीगणेश कएलनि। साहित्यक इतिहासमे इतिहास-पुरुष भए गेलाह। प्रो. हरिमोहन झा 'कन्यादान', 'द्विरागमन', 'खट्टर काकाक तरंग' आदि पोथी लिखि मैथिली साहित्यक स्तम्भ भए गेलाह। दर्शनशास्त्रक प्रोफेसर अङरेजीक माध्यमसँ पढ़ल-लिखल होएबाक बादहु मातृभाषाक प्रति आकर्षित होएब हुनक सभसँ पैघ राष्ट्रीयता होइछ। पोथीक महत्ता ओकर संस्करण आ मोट-पातर होएबा पर नहि करैछ। पोथीक आत्मा विषय-वस्तु थिक, आवरण नहि।

हम डा. रमण जीकेँ हुनक साहित्य सेवाक लेल कोटिशः धन्यवाद ज्ञापित करैत छिअनि आ ईश्वर सँ प्रार्थना करैत छिअनि, ओ सपरिवार दीर्घायु होथु आ एहिना मा मैथिलीक सेवा करैत रहथु।

सम्पर्क :
सी-211 'मिथिला'
गुजैनी
कानपुर-22
मो. 09336731249

भए साहित्यक समीक्षित पोथीमे जँ कोनो त्रुटि छैक तँ बिना कोनो हिचकिचाहटि तकरा करथि। जँ प्रशंसनीय छैक, ओकर मुक्त कंठे प्रशंसा करथि। ई बात सिद्धान्तक भेल, मुदा वास्तविक जीवनमे ई अति दुर्लभ छैक। कारण, समीक्षक सेहो एक व्यक्ति होइत छथि। हुनक अपन स्वयंक विचार होइत छनि। जँ समीक्षित पोथिसँ विचार मिलि गेल वा समीक्षित पोथीक लेखक प्रियपात्र वा अपन लोक छथि तँ प्रशंसामे अपन कलम तोड़ि दैत छथि। जँ विचार नहि मिलल वा ओकर लेखक अपन लोक नहि छथि तँ अपन आलोचनात्मक लेखनीकेँ तीव्र गति दए दैत छथि। एक साहित्यकार होएबाक कारणेँ डा. रमणक अपन विचार सेहो छनि। 'यदुवरक साहित्यक विवेचनसँ स्पष्ट अछि जे हुनक चेतनामे राष्ट्रीयता कूटि-कूटिकेँ भरल छल।' मुदा लिखल अछि जे ओ अपन गीतमे (मंगल कामना) यदुवरजी जार्ज पंचम आ हुनक पत्नी मेरीक स्तुति करैत छथि-

'जीवथु श्रीमहाराजाधिराज,

श्री भारत भूमण्डलनायक भूपगणक सिरताज।'

ओहि रचनावलीमे आओरो ठाम जार्ज पंचम आ मेरीक भूरि-भूरि प्रशंसा कएल गेल अछि। जार्ज पंचम जखन महाराज भेलाह, ओहि उपलक्ष्यमे मंगलाचरण गीत लिखलनि-

'मोर सकल मनोरथ पूरल आज पंचम जार्ज महराज

बृटिश भूमि भारत चहु ओर सुनितहि भ गेल परम इजोर।'

डा. रमणकेँ जनसीदनजी आ प्रो. हरिमोहन झाजीसँ एकटा शिकाइत छइन जे ओ लोकनि स्वतन्त्रता आन्दोलन विषयमे किछु नहि कहलनि वा नहि लिखलनि। हुनक कहब छनि जे प्रो. हरिमोहन झा सन संवेदनशील साहित्यकार राष्ट्रक दासत्वसँ कोना अप्रभावित रहि गेलाह से आश्चर्यक विषय अवश्य थिक। आगू ओ लिखैत छथि 'स्वाधीनतासँ पूर्व प्रकाशित प्रो. हरिमोहन झाक साहित्यमे जेना स्वाधीनता संग्रामक धाह नहि अछि, ओहिना स्वतन्त्रता प्राप्तिक पछातिओ हुनक रचनामे स्वाधीन राष्ट्रक एक रचनाकारक सम्मानबोध अथवा जनजीवनक उल्लासक अभाव खटकैत अछि।'

जनसीदन जीक विषयमे हुनक कहब छनि- ''बंगला, हिन्दी एवं मैथिली साहित्यक गतिविधिसँ पूर्ण परिचित जनार्दन झा 'जनसीदन' राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्रामक पजरैत पसाहीमे एकोटा काठी नहि देलनि।'' ओ लिखैत छथि- ''स्वाधीनतासँ पूर्व एक सुविधा प्राप्त वर्ग छल जे विदेशी सरकारक स्थायित्व लेल भगवानसँ प्रार्थना करैत अछि।''

उपरोक्त विषयमे हमर कहब जे साहित्यकार अपन साहित्यमे सामाजिक कुरीतिकेँ व्यंग्यक विषय बनौलनि। हुनक सभक समक्ष समाजमे कुरीति छलैक। ओहि कुरीति सभमे बहुविवाह, अनमेल विवाह,बाल विवाह, स्त्रीगण आ तथाकथित निम्नवर्णक शोषण आ अत्याचार प्रमुख छलैक। पण्डित पुण्यानन्द झाकृत 'मिथिला दर्पण' मे टहला एवं ओ भोदुआक यातना देखि हमरा सन पाठककेँ नोर आबि जाइत छैक। भए सकैछ ओ सभ पराधीनतासँ बेसी एहि कुरीति सभकेँ घातक बुझैत होएताह। जनसीदन जी हरिसिंहदेवी व्यवस्थाक विरोध छलाह। ई व्यवस्था बहुत सीमा धरि विवाह, अनमेल विवाह, आ बहुविवाहक उत्तरदायी छलैक। ओहि समय मैथिल समाज हँसीक पात्र छलैक। समयक डेगमे डेग मिलेबामे बहुत पाछू रहि गेल छल। तँ ओ सभ कुरीति सभकेँ इंगित कएलनि जाहिसँ समाज आगू बड़ि सकए। संगहि जे साहित्यकार स्वाधीनता संग्रामक विषयमे नहि लिखलनि, ओकर तात्पर्य ई नहि जे ओ स्वतंत्रताक विरोधी छलाह। जहाँ धरि पक्ष अथवा ओकालति करबाक प्रश्न थिक से भिन्न बात भेल मुदा एहिमे कोनो अतिशयोक्ति नहि जे मैथिली साहित्यमे हुनक कम योगदान छनि। एहि बातकेँ डा. रमण स्वयं मानैत छथि। साहित्यकारक विषय भिन्न-भिन्न भए सकैछ मुदा लक्ष्य एक होइछ- भाषाक संवर्द्धन। ओहिमे ओ सभ सफल भेलाह। जनसीदन जी 'निर्दयी सासु' आ 'पुनर्विवाह' लिखि मैथिली सहित्यमे उपन्यासक श्रीगणेश कएलनि। साहित्यक इतिहासमे इतिहास-पुरुष भए गेलाह। प्रो. हरिमोहन झा 'कन्यादान', 'द्विरागमन', 'खट्टर काकाक तरंग' आदि पोथी लिखि मैथिली साहित्यक स्तम्भ भए गेलाह। दर्शनशास्त्रक प्रोफेसर अङरेजीक माध्यमसँ पढ़ल-लिखल होएबाक बादहु मातृभाषाक प्रति आकर्षित होएब हुनक सभसँ पैघ राष्ट्रीयता होइछ। पोथीक महत्ता ओकर संस्करण आ मोट-पातर होएबा पर नहि करैछ। पोथीक आत्मा विषय-वस्तु थिक, आवरण नहि।

हम डा. रमण जीकेँ हुनक साहित्य सेवाक लेल कोटिशः धन्यवाद ज्ञापित करैत छिअनि आ ईश्वर सँ प्रार्थना करैत छिअनि, ओ सपरिवार दीर्घायु होथु आ एहिना मा मैथिलीक सेवा करैत रहथु।

सम्पर्क :
सी-211 'मिथिला'
गुजैनी
कानपुर-22
मो. 09336731249

भए साहित्यक समीक्षित पोथीमे जँ कोनो त्रुटि छैक तँ बिना कोनो हिचकिचाहटि तकरा करथि। जँ प्रशंसनीय छैक, ओकर मुक्त कंठे प्रशंसा करथि। ई बात सिद्धान्तक भेल, मुदा वास्तविक जीवनमे ई अति दुर्लभ छैक। कारण, समीक्षक सेहो एक व्यक्ति होइत छथि। हुनक अपन स्वयंक विचार होइत छनि। जँ समीक्षित पोथिसँ विचार मिलि गेल वा समीक्षित पोथीक लेखक प्रियपात्र वा अपन लोक छथि तँ प्रशंसामे अपन कलम तोड़ि दैत छथि। जँ विचार नहि मिलल वा ओकर लेखक अपन लोक नहि छथि तँ अपन आलोचनात्मक लेखनीकेँ तीव्र गति दए दैत छथि। एक साहित्यकार होएबाक कारणेँ डा. रमणक अपन विचार सेहो छनि। 'यदुवरक साहित्यक विवेचनसँ स्पष्ट अछि जे हुनक चेतनामे राष्ट्रीयता कूटि-कूटिकेँ भरल छल।' मुदा लिखल अछि जे ओ अपन गीतमे (मंगल कामना) यदुवरजी जार्ज पंचम आ हुनक पत्नी मेरीक स्तुति करैत छथि-

'जीवथु श्रीमहाराजाधिराज,

श्री भारत भूमण्डलनायक भूपगणक सिरताज।'

ओहि रचनावलीमे आओरो ठाम जार्ज पंचम आ मेरीक भूरि-भूरि प्रशंसा कएल गेल अछि। जार्ज पंचम जखन महाराज भेलाह, ओहि उपलक्ष्यमे मंगलाचरण गीत लिखलनि-

'मोर सकल मनोरथ पूरल आज पंचम जार्ज महराज

बृटिश भूमि भारत चहु ओर सुनितहि भ गेल परम इजोर।'

डा. रमणकेँ जनसीदनजी आ प्रो. हरिमोहन झाजीसँ एकटा शिकाइत छइन जे ओ लोकनि स्वतन्त्रता आन्दोलन विषयमे किछु नहि कहलनि वा नहि लिखलनि। हुनक कहब छनि जे प्रो. हरिमोहन झा सन संवेदनशील साहित्यकार राष्ट्रक दासत्वसँ कोना अप्रभावित रहि गेलाह से आश्चर्यक विषय अवश्य थिक। आगू ओ लिखैत छथि 'स्वाधीनतासँ पूर्व प्रकाशित प्रो. हरिमोहन झाक साहित्यमे जेना स्वाधीनता संग्रामक धाह नहि अछि, ओहिना स्वतन्त्रता प्राप्तिक

@UÂÚUô•Ì çßáØ×ð ãU×ÚU ·¤ãUÕ Áð âæçãUˆØ·¤æÚU ¥ÂÙ âæçãUˆØ×ð âæ×æçÁ·¤ ·é¤ÚUèçÌ·ð¤¡ ÃØ¢,Ø·¤ çßáØ ÕÙõÜçÙÐ ãéUÙ·¤ âÖ·¤ â×ÿæ â×æÁ×ð ·é¤ÚUèçÌ ÀUÜñ·¤Ð¥ôçãU ·é¤ÚUèçÌ âÖ×ð ÕãéUçßßæãU, ¥Ù×ðÜ çßßæãU,ÕæÜ çßßæãU, S˜æèx‡æ ¥æ ÌÍæ·¤çÍÌ çÙ•Ùß‡æü·¤ àæôá‡æ ¥æ ¥˜Øæ¿æÚU ÂýÜé¹ ÀUÜñ·¤Ð Âç‡ÇUÌ Âé‡Øæ٢Π—ææ·ë¤Ì Ôç×çÍÜæ ÎÂü‡æÕ ×ð ÅUãUÜæ °ß¢ ¥ô ÖôÎé¥æ·¤ ØæÌÙæ Îðç¹ ãU×ÚUæ âÙ ÂæÆU·¤·ð¤¡ ÙôÚU ¥æçß Áæ§Ì ÀñU·¤Ð

पछातिओ हुनक रचनामे स्वाधीन राष्ट्रक एक रचनाकारक सम्मानबोध अथवा जनजीवनक उल्लासक अभाव खटकैत अछि।'

जनसीदन जीक विषयमे हुनक कहब छनि- ''बंगला, हिन्दी एवं मैथिली साहित्यक गतिविधिसँ पूर्ण परिचित जनार्दन झा 'जनसीदन' राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्रामक पजरैत पसाहीमे एकोटा काठी नहि देलनि।'' ओ लिखैत छथि- ''स्वाधीनतासँ पूर्व एक सुविधा प्राप्त वर्ग छल जे विदेशी सरकारक स्थायित्व लेल भगवानसँ प्रार्थना करैत अछि।''

उपरोक्त विषयमे हमर कहब जे साहित्यकार अपन साहित्यमे सामाजिक कुरीतिकेँ व्यंग्यक विषय बनौलनि। हुनक सभक समक्ष समाजमे कुरीति छलैक। ओहि कुरीति सभमे बहुविवाह, अनमेल विवाह,बाल विवाह, स्त्रीगण आ तथाकथित निम्नवर्णक शोषण आ अत्याचार प्रमुख छलैक। पण्डित पुण्यानन्द झाकृत 'मिथिला दर्पण' मे टहला एवं ओ भोदुआक यातना देखि हमरा सन पाठककेँ नोर आबि जाइत छैक। भए सकैछ ओ सभ पराधीनतासँ बेसी एहि कुरीति सभकेँ घातक बुझैत होएताह। जनसीदन जी हरिसिंहदेवी व्यवस्थाक विरोध छलाह। ई व्यवस्था बहुत सीमा धरि विवाह, अनमेल विवाह, आ बहुविवाहक उत्तरदायी छलैक। ओहि समय मैथिल समाज हँसीक पात्र छलैक। समयक डेगमे डेग मिलेबामे बहुत पाछू रहि गेल छल। तँ ओ सभ कुरीति सभकेँ इंगित कएलनि जाहिसँ समाज आगू बड़ि सकए। संगहि जे साहित्यकार स्वाधीनता संग्रामक विषयमे नहि लिखलनि, ओकर तात्पर्य ई नहि जे ओ स्वतंत्रताक विरोधी छलाह। जहाँ धरि पक्ष अथवा ओकालति करबाक प्रश्न थिक से भिन्न बात भेल मुदा एहिमे कोनो अतिशयोक्ति नहि जे मैथिली साहित्यमे हुनक कम योगदान छनि। एहि बातकेँ डा. रमण स्वयं मानैत छथि। साहित्यकारक विषय भिन्न-भिन्न भए सकैछ मुदा लक्ष्य एक होइछ- भाषाक संवर्द्धन। ओहिमे ओ सभ सफल भेलाह। जनसीदन जी 'निर्दयी सासु' आ 'पुनर्विवाह' लिखि मैथिली सहित्यमे उपन्यासक श्रीगणेश कएलनि। साहित्यक इतिहासमे इतिहास-पुरुष भए गेलाह। प्रो. हरिमोहन झा 'कन्यादान', 'द्विरागमन', 'खट्टर काकाक तरंग' आदि पोथी लिखि मैथिली साहित्यक स्तम्भ भए गेलाह। दर्शनशास्त्रक प्रोफेसर अङरेजीक माध्यमसँ पढ़ल-लिखल होएबाक बादहु मातृभाषाक प्रति आकर्षित होएब हुनक सभसँ पैघ राष्ट्रीयता होइछ। पोथीक महत्ता ओकर संस्करण आ मोट-पातर होएबा पर नहि करैछ। पोथीक आत्मा विषय-वस्तु थिक, आवरण नहि।

हम डा. रमण जीकेँ हुनक साहित्य सेवाक लेल कोटिश: धन्यवाद ज्ञापित करैत छिअनि आ ईश्वर सँ प्रार्थना करैत छिअनि, ओ सपरिवार दीर्घायु होथु आ एहिना मा मैथिलीक सेवा करैत रहथु।

सम्पर्क :

सी-211 'मिथिला'

गुजैनी

कानपुर-22

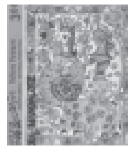
मो. 09336731249



प्रतियोगिता परीक्षा हेतु विशेष

मैथिली साहित्यक धार्मिक, आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि

डा. नारायण झा



मिथिलाक परंपरागत सीमाक उल्लेख 5 शताब्दीक वृहत् विष्णु पुराणक मिथिला महात्म्य-खंडमे वर्णित अछि जकर अनुवाद कवीश्वर चन्दा झा एहि रूपेँ कयलनि:-

''गंगा बहथि जनिक दक्षिण दिशि पूर्व कौशिकी धारा।

पश्चिम बहथि गण्डकी उत्तर हिमवत बल-विस्तारा॥''

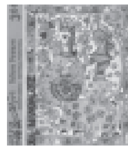
अर्थात् मिथिलाक उत्तरमे हिमालय, दक्षिणमे गंगा, पूर्वमे कोसी एवं पश्चिमे गण्डकी नदी बहैत अछि। वृहत् विष्णु पुराणमे मिथिलाक 12 गोट नामक उल्लेख भेटैत



प्रतियोगिता परीक्षा हेतु विशेष

मैथिली साहित्यक धार्मिक, आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि

डा. नारायण झा



मिथिलाक परंपरागत सीमाक उल्लेख 5 शताब्दीक वृहत् विष्णु पुराणक मिथिला महात्म्य-खंडमे वर्णित अछि जकर अनुवाद कवीश्वर चन्दा झा एहि रूपेँ कयलनि:-

''गंगा बहथि जनिक दक्षिण दिशि पूर्व कौशिकी धारा।

पश्चिम बहथि गण्डकी उत्तर हिमवत बल-विस्तारा॥''

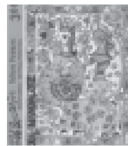
अर्थात् मिथिलाक उत्तरमे हिमालय, दक्षिणमे गंगा, पूर्वमे कोसी एवं पश्चिमे गण्डकी नदी बहैत अछि। वृहत् विष्णु पुराणमे मिथिलाक 12 गोट नामक उल्लेख भेटैत



प्रतियोगिता परीक्षा हेतु विशेष

मैथिली साहित्यक धार्मिक, आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि

डा. नारायण झा



मिथिलाक परंपरागत सीमाक उल्लेख 5 शताब्दीक वृहत् विष्णु पुराणक मिथिला महात्म्य-खंडमे वर्णित अछि जकर अनुवाद कवीश्वर चन्दा झा एहि रूपेँ कयलनि:-

''गंगा बहथि जनिक दक्षिण दिशि पूर्व कौशिकी धारा।

पश्चिम बहथि गण्डकी उत्तर हिमवत बल-विस्तारा॥''

अर्थात् मिथिलाक उत्तरमे हिमालय, दक्षिणमे गंगा, पूर्वमे कोसी एवं पश्चिमे गण्डकी नदी बहैत अछि। वृहत् विष्णु पुराणमे मिथिलाक 12 गोट नामक उल्लेख भेटैत

अछि, यथा- विदेह, तिरहुत, मिथिला, तीरभुक्ति आदि। वर्त्तमानमे मिथिला आ तिरहुत चर्चित नाम अछि।

एहि भू-भागक धार्मिक, आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक पक्षक जानकारी मैथिली साहित्य तथा आन भाषाक साहित्य सँ वृहत रूपेँ भेटैत अछि। सांस्कृतिक दृष्टिएँ प्राचीनकाल सँ समृद्ध अछि। एहि भू-भाग पर सर्वप्रथम आर्य संस्कृतिक प्रसार भेल। उपरांत जैन ओ बौद्ध धर्मक प्रचार-प्रसार भेल। जैन ओ बौद्ध धर्मक प्रसार-प्रचार हेवाक कारणें आर्य संस्कृतिक विकासमे गतिरोध अपन भेल मुदा पुन: वैदिक धर्मक उत्थान भेल। बुद्ध कैँ विष्णुक नवम अवतार मानि हिन्दू धर्मक देवता मानल गेल किन्तु कट्टर बौद्ध धर्मावलंबी अपन स्वतंत्र अस्तित्वक रक्षा आ बौद्ध धर्मक प्रचार-प्रसारक लेल संघर्ष करैत रहलाह। मिथिलाक जनजीवन मे वैदिक धर्मक जड़ि एतेक जमि गेल छल जे जैन-बुद्ध युगहुँमे ओकर विकासधारा शिथिल नहि भेल। वैदिक ब्राह्मण धर्मावलंबी नरपतिक अधीन मिथिलाक स्वर्णकाल उपस्थित भेल। उपर्युक्त संघर्षक वर्णन ज्योतिरीश्वर कृत 'वर्णरत्नाकर' मे भेटैत अछि।

मिथिला पर आर्य लोकनिक आधिपत्य भेला सँ एतय वैदिक धर्म ओ आर्य संस्कृतिक प्रसार भेल। एकरा बाद मैथिली साहित्यमे मुसलमान आक्रमणक संघर्षपूर्ण स्थितिक चर्चा भेटैत अछि किन्तु मिथिलावासी अपन धार्मिक ओ सांस्कृतिक रक्षार्थ संघर्ष कयलनि। मुसलमानक सांस्कृतिक जीवन हिन्दू धर्मावलंबी मिथिलावासी कैँ अवश्य प्रभावित कयलक किन्तु हिन्दू धर्ममे विश्वास करैत रहलाह आ हिन्दू देवी-देवताक प्रति अपन भक्ति, श्रद्धा, आस्था ओ विश्वास कैँ अर्पित करैत रहलाह। एहि प्रकारक चर्चा विद्यापति कृत कीर्तिलता ओ कीर्ति पताकामे अछि यथा-
''हिन्दू तुलुकमिलल वास, एकक धम्मे अओकाक हास।

कतहुँ बाँग कतहु वेद, कतहु बिसमिल कतहु छेद।

कतहु ओझा कतहु खोजा, कतहु नकत कतहु रोजा।



मिथिलामे प्राचीनकाल सँ शिव, शक्ति आ विष्णुक पूजा होइत आबि रहल अछि। जनसमुदाय मुख्य रूपेँ एहि तीनू देवी-देवताक उपासक रहल। मिथिलाक लोकक एकहि माथ पर त्रिपुंड चंदन, सिंदुरक ठोप एवं गलामे विभूत लागल भेटैत अछि जे मिथिलाक धार्मिक विशेषताक द्योतक अछि, अर्थात् मिथिलामे समान रूप सँ सभ देवी-देवताक पूजा अर्चना कयल जाइत अछि।

मिथिलाक जनजीवनमे शिवपूजा बड़ प्रशस्त अछि। सभ जाति ओ वर्गक लोक शिव आराधना सँ जुड़ल रहैत छथि। माँटिक महादेव बनाए पूजा करबाक पद्धति एतय प्राचीनकाल सँ प्रचलित अछि। मिथिलाक कोनो एहन गाम नहि जतय महादेवक मंदिर वा मठ नहि हुअए, अर्थात् मिथिलाक लोक प्राचीनकाल सँ शिव भक्त मानल जाइत छथि। एहि कारणेँ मिथिलामे शिव विषयक विद्यापतिक महेशवाणी ओ नचारी बड़ प्रसिद्ध भेल यथा-

''कखन हरब दु:ख मोर हे भोलेनाथ''

(महेशवाणी)

हम नहि आजु रहब अही आँगन जँ बुढ़ होइत जमाई।''

(नचारी)

मिथिलामे शक्तिक उपासना सेहो प्राचीनकाल सँ रहल अछि। शिव जँ मुक्तिदाता छथि तँ शक्ति सिद्धि-दात्री। एहि सिद्धि-सँ शक्तिक उपासक अलौकिक एवं चमत्कारी शक्ति प्राप्त करैत अछि। सिद्धि प्राप्तिक हेतु शक्ति उपासनामे तंत्र-साधना सेहो प्रयोजनीय होएत अछि। एहि कारणेँ भारतक प्रमुख शक्ति-पीठ उग्र तारा (महिषी), उच्चैठ (मधुबनी), जयमंगला कात्यायनी मिथिलामे अवस्थित अछि। तंत्र-उपासनाक चर्चा सिद्ध-साहित्य ओ 'वर्णरत्नाकर' मे सेहो भेटैत अछि। मिथिलामे शाक्त भावना कतेक प्रबल छल जे कोनहुँ बालक कैँ सर्वप्रथम ई श्लोक सिखाओल जाइत अछि-

''सा ते भवतु सुप्रीता देवी शिखरवासिनी।
उग्रें तपसा लब्धो यया पशुपति: पति:॥''

मैथिली साहित्यमे शक्ति आराधनाक परिचायक अछि गोसाउनिक गीत, जकर गायन सँ शुभकार्यक आरंभ होएत अछि।

शिव ओ शक्तिक तुलनामे विष्णुक भक्तिक प्रचार मिथिलामे अपेक्षाकृत कम भेल। ओना भागवत ओ हरिवंश आदिक प्रचार मिथिलामे अवश्य भेल। विष्णु संबंधी व्रत उपवास मिथिलामे एखनहुँ प्रचलित अछि। एहि सँ सिद्ध होएत अछि जे मिथिला मध्य वैष्णव भक्ति महत्वपूर्ण रहल। वस्तुत: मिथिलाक धार्मिक जीवनक मुख्यधारा शिव ओ शक्ति मूलक अछि।

मैथिली साहित्यक अध्ययन सँ मिथिलाक आर्थिक पक्षक विशद जानकारी भेटैत अछि। सिद्ध-साहित्य, वर्णरत्नाकर ओ डाकवचनावलीक आधार पर इ कहब उचित होएत जे मिथिला कृषि प्रधान क्षेत्र रहल अछि। एहि क्षेत्रक अर्थव्यवस्थाक मुख्य आधार कृषि छल, जाहि पर सब वर्गक रूपमे वैश्य तथा श्रमिक वर्गक रूपमे शूद्र जातिक वर्णन भेटैत अछि। कृषि व्यवस्था उन्नत आ समृद्ध छल मुदा एकर विकासमे सभ सँ पैघ बाधा प्राकृतिक आपदा छल आ अछि जेना - बाढ़, दहार, सुखाड़ आदि जकर वर्णन प्राचीन आ आधुनिक मैथिली साहित्यमे भरल अछि। प्राकृतिक विपदा कारणेँ मिथिला समाजमे अकाल पड़ैत छल जकर मार्मिक चित्रण यात्रीक ''कंकालेकंकाल'' शीर्षक कवितामे भेल अछि जेना:-

अछि, यथा- विदेह, तिरहुत, मिथिला, तीरभुक्ति आदि। वर्त्तमानमे मिथिला आ तिरहुत चर्चित नाम अछि।

एहि भू-भागक धार्मिक, आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक पक्षक जानकारी मैथिली साहित्य तथा आन भाषाक साहित्य सँ वृहत रूपेँ भेटैत अछि। सांस्कृतिक दृष्टिएँ प्राचीनकाल सँ समृद्ध अछि। एहि भू-भाग पर सर्वप्रथम आर्य संस्कृतिक प्रसार भेल। उपरांत जैन ओ बौद्ध धर्मक प्रचार-प्रसार भेल। जैन ओ बौद्ध धर्मक प्रसार-प्रचार हेवाक कारणें आर्य संस्कृतिक विकासमे गतिरोध अपन भेल मुदा पुन: वैदिक धर्मक उत्थान भेल। बुद्ध कैँ विष्णुक नवम अवतार मानि हिन्दू धर्मक देवता मानल गेल किन्तु कट्टर बौद्ध धर्मावलंबी अपन स्वतंत्र अस्तित्वक रक्षा आ बौद्ध धर्मक प्रचार-प्रसारक लेल संघर्ष करैत रहलाह। मिथिलाक जनजीवन मे वैदिक धर्मक जड़ि एतेक जमि गेल छल जे जैन-बुद्ध युगहुँमे ओकर विकासधारा शिथिल नहि भेल। वैदिक ब्राह्मण धर्मावलंबी नरपतिक अधीन मिथिलाक स्वर्णकाल उपस्थित भेल। उपर्युक्त संघर्षक वर्णन ज्योतिरीश्वर कृत 'वर्णरत्नाकर' मे भेटैत अछि।

मिथिला पर आर्य लोकनिक आधिपत्य भेला सँ एतय वैदिक धर्म ओ आर्य संस्कृतिक प्रसार भेल। एकरा बाद मैथिली साहित्यमे मुसलमान आक्रमणक संघर्षपूर्ण स्थितिक चर्चा भेटैत अछि किन्तु मिथिलावासी अपन धार्मिक ओ सांस्कृतिक रक्षार्थ संघर्ष कयलनि। मुसलमानक सांस्कृतिक जीवन हिन्दू धर्मावलंबी मिथिलावासी कैँ अवश्य प्रभावित कयलक किन्तु हिन्दू धर्ममे विश्वास करैत रहलाह आ हिन्दू देवी-देवताक प्रति अपन भक्ति, श्रद्धा, आस्था ओ विश्वास कैँ अर्पित करैत रहलाह। एहि प्रकारक चर्चा विद्यापति कृत कीर्तिलता ओ कीर्ति पताकामे अछि यथा-

''हिन्दू तुलुकमिलल वास, एकक धम्मे अओकाक हास।

कतहुँ बाँग कतहु वेद, कतहु बिसमिल कतहु छेद।

कतहु ओझा कतहु खोजा, कतहु नकत कतहु रोजा।



मिथिलामे प्राचीनकाल सँ शिव, शक्ति आ विष्णुक पूजा होइत आबि रहल अछि। जनसमुदाय मुख्य रूपेँ एहि तीनू देवी-देवताक उपासक रहल। मिथिलाक लोकक एकहि माथ पर त्रिपुंड चंदन, सिंदुरक ठोप एवं गलामे विभूत लागल भेटैत अछि जे मिथिलाक धार्मिक विशेषताक द्योतक अछि, अर्थात् मिथिलामे समान रूप सँ सभ देवी-देवताक पूजा अर्चना कयल जाइत अछि।

मिथिलाक जनजीवनमे शिवपूजा बड़ प्रशस्त अछि। सभ जाति ओ वर्गक लोक शिव आराधना सँ जुड़ल रहैत छथि। माँटिक महादेव बनाए पूजा करबाक पद्धति एतय प्राचीनकाल सँ प्रचलित अछि। मिथिलाक कोनो एहन गाम नहि जतय महादेवक मंदिर वा मठ नहि हुअए, अर्थात् मिथिलाक लोक प्राचीनकाल सँ शिव भक्त मानल जाइत छथि। एहि कारणेँ मिथिलामे शिव विषयक विद्यापतिक महेशवाणी ओ नचारी बड़ प्रसिद्ध भेल यथा-

''कखन हरब दु:ख मोर हे भोलेनाथ''

(महेशवाणी)

हम नहि आजु रहब अही आँगन जँ बुढ़ होइत जमाई।''

(नचारी)

मिथिलामे शक्तिक उपासना सेहो प्राचीनकाल सँ रहल अछि। शिव जँ मुक्तिदाता छथि तँ शक्ति सिद्धि-दात्री। एहि सिद्धि-सँ शक्तिक उपासक अलौकिक एवं चमत्कारी शक्ति प्राप्त करैत अछि। सिद्धि प्राप्तिक हेतु शक्ति उपासनामे तंत्र-साधना सेहो प्रयोजनीय होएत अछि। एहि कारणेँ भारतक प्रमुख शक्ति-पीठ उग्र तारा (महिषी), उच्चैठ (मधुबनी), जयमंगला कात्यायनी मिथिलामे अवस्थित अछि। तंत्र-उपासनाक चर्चा सिद्ध-साहित्य ओ 'वर्णरत्नाकर' मे सेहो भेटैत अछि। मिथिलामे शाक्त भावना कतेक प्रबल छल जे कोनहुँ बालक कैँ सर्वप्रथम ई श्लोक सिखाओल जाइत अछि-

''सा ते भवतु सुप्रीता देवी शिखरवासिनी।
उग्रें तपसा लब्धो यया पशुपति: पति:॥''

मैथिली साहित्यमे शक्ति आराधनाक परिचायक अछि गोसाउनिक गीत, जकर गायन सँ शुभकार्यक आरंभ होएत अछि।

शिव ओ शक्तिक तुलनामे विष्णुक भक्तिक प्रचार मिथिलामे अपेक्षाकृत कम भेल। ओना भागवत ओ हरिवंश आदिक प्रचार मिथिलामे अवश्य भेल। विष्णु संबंधी व्रत उपवास मिथिलामे एखनहुँ प्रचलित अछि। एहि सँ सिद्ध होएत अछि जे मिथिला मध्य वैष्णव भक्ति महत्वपूर्ण रहल। वस्तुत: मिथिलाक धार्मिक जीवनक मुख्यधारा शिव ओ शक्ति मूलक अछि।

मैथिली साहित्यक अध्ययन सँ मिथिलाक आर्थिक पक्षक विशद जानकारी भेटैत अछि। सिद्ध-साहित्य, वर्णरत्नाकर ओ डाकवचनावलीक आधार पर इ कहब उचित होएत जे मिथिला कृषि प्रधान क्षेत्र रहल अछि। एहि क्षेत्रक अर्थव्यवस्थाक मुख्य आधार कृषि छल, जाहि पर सब वर्गक रूपमे वैश्य तथा श्रमिक वर्गक रूपमे शूद्र जातिक वर्णन भेटैत अछि। कृषि व्यवस्था उन्नत आ समृद्ध छल मुदा एकर विकासमे सभ सँ पैघ बाधा प्राकृतिक आपदा छल आ अछि जेना - बाढ़, दहार, सुखाड़ आदि जकर वर्णन प्राचीन आ आधुनिक मैथिली साहित्यमे भरल अछि। प्राकृतिक विपदा कारणेँ मिथिला समाजमे अकाल पड़ैत छल जकर मार्मिक चित्रण यात्रीक ''कंकालेकंकाल'' शीर्षक कवितामे भेल अछि जेना:-

अछि, यथा- विदेह, तिरहुत, मिथिला, तीरभुक्ति आदि। वर्त्तमानमे मिथिला आ तिरहुत चर्चित नाम अछि।

एहि भू-भागक धार्मिक, आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक पक्षक जानकारी मैथिली साहित्य तथा आन भाषाक साहित्य सँ वृहत रूपेँ भेटैत अछि। सांस्कृतिक दृष्टिएँ प्राचीनकाल सँ समृद्ध अछि। एहि भू-भाग पर सर्वप्रथम आर्य संस्कृतिक प्रसार भेल। उपरांत जैन ओ बौद्ध धर्मक प्रचार-प्रसार भेल। जैन ओ बौद्ध धर्मक प्रसार-प्रचार हेवाक कारणें आर्य संस्कृतिक विकासमे गतिरोध अपन भेल मुदा पुन: वैदिक धर्मक उत्थान भेल। बुद्ध कैँ विष्णुक नवम अवतार मानि हिन्दू धर्मक देवता मानल गेल किन्तु कट्टर बौद्ध धर्मावलंबी अपन स्वतंत्र अस्तित्वक रक्षा आ बौद्ध धर्मक प्रचार-प्रसारक लेल संघर्ष करैत रहलाह। मिथिलाक जनजीवन मे वैदिक धर्मक जड़ि एतेक जमि गेल छल जे जैन-बुद्ध युगहुँमे ओकर विकासधारा शिथिल नहि भेल। वैदिक ब्राह्मण धर्मावलंबी नरपतिक अधीन मिथिलाक स्वर्णकाल उपस्थित भेल। उपर्युक्त संघर्षक वर्णन ज्योतिरीश्वर कृत 'वर्णरत्नाकर' मे भेटैत अछि।

मिथिला पर आर्य लोकनिक आधिपत्य भेला सँ एतय वैदिक धर्म ओ आर्य संस्कृतिक प्रसार भेल। एकरा बाद मैथिली साहित्यमे मुसलमान आक्रमणक संघर्षपूर्ण स्थितिक चर्चा भेटैत अछि किन्तु मिथिलावासी अपन धार्मिक ओ सांस्कृतिक रक्षार्थ संघर्ष कयलनि। मुसलमानक सांस्कृतिक जीवन हिन्दू धर्मावलंबी मिथिलावासी कैँ अवश्य प्रभावित कयलक किन्तु हिन्दू धर्ममे विश्वास करैत रहलाह आ हिन्दू देवी-देवताक प्रति अपन भक्ति, श्रद्धा, आस्था ओ विश्वास कैँ अर्पित करैत रहलाह। एहि प्रकारक चर्चा विद्यापति कृत कीर्तिलता ओ कीर्ति पताकामे अछि यथा-
''हिन्दू तुलुकमिलल वास, एकक धम्मे अओकाक हास।

कतहुँ बाँग कतहु वेद, कतहु बिसमिल कतहु छेद।

कतहु ओझा कतहु खोजा, कतहु नकत कतहु रोजा।



मिथिलामे प्राचीनकाल सँ शिव, शक्ति आ विष्णुक पूजा होइत आबि रहल अछि। जनसमुदाय मुख्य रूपेँ एहि तीनू देवी-देवताक उपासक रहल। मिथिलाक लोकक एकहि माथ पर त्रिपुंड चंदन, सिंदुरक ठोप एवं गलामे विभूत लागल भेटैत अछि जे मिथिलाक धार्मिक विशेषताक द्योतक अछि, अर्थात् मिथिलामे समान रूप सँ सभ देवी-देवताक पूजा अर्चना कयल जाइत अछि।

मिथिलाक जनजीवनमे शिवपूजा बड़ प्रशस्त अछि। सभ जाति ओ वर्गक लोक शिव आराधना सँ जुड़ल रहैत छथि। माँटिक महादेव बनाए पूजा करबाक पद्धति एतय प्राचीनकाल सँ प्रचलित अछि। मिथिलाक कोनो एहन गाम नहि जतय महादेवक मंदिर वा मठ नहि हुअए, अर्थात् मिथिलाक लोक प्राचीनकाल सँ शिव भक्त मानल जाइत छथि। एहि कारणेँ मिथिलामे शिव विषयक विद्यापतिक महेशवाणी ओ नचारी बड़ प्रसिद्ध भेल यथा-

''कखन हरब दु:ख मोर हे भोलेनाथ''

(महेशवाणी)

हम नहि आजु रहब अही आँगन जँ बुढ़ होइत जमाई।''

(नचारी)

मिथिलामे शक्तिक उपासना सेहो प्राचीनकाल सँ रहल अछि। शिव जँ मुक्तिदाता छथि तँ शक्ति सिद्धि-दात्री। एहि सिद्धि-सँ शक्तिक उपासक अलौकिक एवं चमत्कारी शक्ति प्राप्त करैत अछि। सिद्धि प्राप्तिक हेतु शक्ति उपासनामे तंत्र-साधना सेहो प्रयोजनीय होएत अछि। एहि कारणेँ भारतक प्रमुख शक्ति-पीठ उग्र तारा (महिषी), उच्चैठ (मधुबनी), जयमंगला कात्यायनी मिथिलामे अवस्थित अछि। तंत्र-उपासनाक चर्चा सिद्ध-साहित्य ओ 'वर्णरत्नाकर' मे सेहो भेटैत अछि। मिथिलामे शाक्त भावना कतेक प्रबल छल जे कोनहुँ बालक कैँ सर्वप्रथम ई श्लोक सिखाओल जाइत अछि-

''सा ते भवतु सुप्रीता देवी शिखरवासिनी।
उग्रें तपसा लब्धो यया पशुपति: पति:॥''

मैथिली साहित्यमे शक्ति आराधनाक परिचायक अछि गोसाउनिक गीत, जकर गायन सँ शुभकार्यक आरंभ होएत अछि।

शिव ओ शक्तिक तुलनामे विष्णुक भक्तिक प्रचार मिथिलामे अपेक्षाकृत कम भेल। ओना भागवत ओ हरिवंश आदिक प्रचार मिथिलामे अवश्य भेल। विष्णु संबंधी व्रत उपवास मिथिलामे एखनहुँ प्रचलित अछि। एहि सँ सिद्ध होएत अछि जे मिथिला मध्य वैष्णव भक्ति महत्वपूर्ण रहल। वस्तुत: मिथिलाक धार्मिक जीवनक मुख्यधारा शिव ओ शक्ति मूलक अछि।

मैथिली साहित्यक अध्ययन सँ मिथिलाक आर्थिक पक्षक विशद जानकारी भेटैत अछि। सिद्ध-साहित्य, वर्णरत्नाकर ओ डाकवचनावलीक आधार पर इ कहब उचित होएत जे मिथिला कृषि प्रधान क्षेत्र रहल अछि। एहि क्षेत्रक अर्थव्यवस्थाक मुख्य आधार कृषि छल, जाहि पर सब वर्गक रूपमे वैश्य तथा श्रमिक वर्गक रूपमे शूद्र जातिक वर्णन भेटैत अछि। कृषि व्यवस्था उन्नत आ समृद्ध छल मुदा एकर विकासमे सभ सँ पैघ बाधा प्राकृतिक आपदा छल आ अछि जेना - बाढ़, दहार, सुखाड़ आदि जकर वर्णन प्राचीन आ आधुनिक मैथिली साहित्यमे भरल अछि। प्राकृतिक विपदा कारणेँ मिथिला समाजमे अकाल पड़ैत छल जकर मार्मिक चित्रण यात्रीक ''कंकालेकंकाल'' शीर्षक कवितामे भेल अछि जेना:-

'भरि भरि आँजुर, भरि-भरि मुट्ठी
दाना मिश्रित धूरा उठबैत कंकाल।

मैथिलीक आरंभिक 'सिद्ध-साहित्य', 'डाक ओ घाघ वचनावली' तथा 'वर्णरत्नाकर'क अध्ययन सँ मिथिलाक सामाजिक जीवनक वर्णन भेटैत अछि। समाजमे वर्णाश्रम धर्मक प्रचलन छल। बादमे वर्ण जातिक रूपकेँ ग्रहण कयलक जाहिमे सर्वोच्च स्थान ब्राह्मणक छल तत्पश्चात क्षत्रिय, वैश्य ओ शूद्र जाति कैँ स्थान भेटलनि। समाजक सभ जाति सामाजिक एवं आर्थिक आवश्यकताक लेल एक-दोसर पर आश्रित रहैत छलाह। एहि व्यवस्थामे शोषण एवं दोहनक प्रवृत्ति सेहो छल मुदा समाजमे आपसी कोनो द्वेष नहि छल। 14 शताब्दी मे मुसलमानक आक्रमण सँ मिथिला समाजमे सामाजिक उथल-पुथल भेल जकर वर्णन विद्यापति कृत कीर्तिलता ओ कीर्तिपताकामे भेटैत अछि।

मिथिलामे प्रारंभकाल सँ स्त्रीक स्थिति कमजोर एवं निम्न छल। पुरुष प्रधान सामाजिक सोचक ओटमे नारीक दोहन, शोषण होइत छल। बाल-विवाह, वृद्ध-विवाह, वैश्य-प्रथा, पर्दा-प्रथा, सती-प्रथा आदि समाजमे अवस्थित छल, जकर वर्णन वर्णरत्नाकरमे भेटैत अछि। आधुनिक मैथिली साहित्यमे सेहो एहि सामाजिक कुप्रथाक वर्णन भेटैत अछि।

ओना पढ़ल-लिखल विदुषी आ वीरत्व भावना सँ ओत-प्रोत वर्णन भेटैत अछि।

यथा: ई की कैल उठाक ल आनल
कमलक कोढ़ीक लेल ढेंग कोकनल
बेटीकैँ बेचलऊँ मडुआक दोबर
बूढ़ बकलेल सँ भरलऊँ कोबर।''

मिथिलाक समाजमे पंजी प्रबंध आ कुलीन प्रथा सेहो प्रचलित छल, जकर आरंभिक वर्णन 'वर्णरत्नाकर' मे भेटैत अछि। पंजी प्रबन्धक अन्तर्गत सामाजिक जीवनमे वंशावली लिखि कए रखबाक प्रथाक विकास भेल। ई प्रथा एखन मुख्यत: ब्राह्मण आ कायस्थ लोकनिक मध्य प्रचलित अछि।

मिथिला अनादिकाल सँ सांस्कृतिक दृष्टि सँ धनी भू-भाग मानल जाएत अछि। विदेह शासक मिथिला नरेश राजा जनकक समय सँ सबल सांस्कृतिक पक्षक प्रदर्शन होएत आबि रहल अछि। एहि बातक साक्ष्य चन्दा झा रचित 'मिथिला भाषा रामायण' मे भेटैत अछि। मैथिली साहित्यमे भक्तिओ शृंगार मूलक पद विद्यापति द्वारा लिखित गेल जे गीति-काव्यक नाम सँ जानल जाइत अछि। एहि गीतक महत्व मिथिलाक सांस्कृतिक जीवनमे सर्वोपरि अछि। मैथिली साहित्यक विकास गीति काव्य सँ मानल जाइत अछि एकर प्रमाण सिद्ध-साहित्य, डाक वचनावली एवं वर्णरत्नाकरमे भेटैत अछि। एहि गीति काव्यक कारणेँ विद्यापति लोकप्रिय तथा जनकवि भेलाह, मध्यकालमे सेहो गीत आ नृत्य सँ नाट्य परंपराक विकास भेल, जकरा मिथिलामे कीर्तनिया, आसाममे अंकिया आ नेपालमे नेपाली नाटक कहल जाइत अछि। एकर सभहक विषय धार्मिक रहितहुँ सांस्कृतिक पक्षक सबल प्रदर्शन प्रस्तुत करैत अछि। मैथिली साहित्यमे जे भक्ति ओ शृंगार मूलक गीत काव्य प्रचलित अछि ताहिमे प्रमुख अछि- महेशवाणी, नचारी, गोसाउनिक गीत, विष्णु पद, शिव पद, सलहेस, लोरिक आ दीनाभद्रीक गीत, सोहर, समदाउन, योग, उचिती, बटगवनी, बारहमासा, छओ मासा, चौमासा, लगनी, चैतावर, मलार, रास, मान आदि। एकर अतिरिक्त गणेश, सूर्य, गंगा आदिक गीत सेहो प्रचलित अछि।



मिथिलाक सांस्कृतिक स्वरूपक विकासमे राजा जनक, पाल वंश, कर्नाट वंश, ओईनवार वंश आ दरभंगा महाराज तथा नेपाल स्थित राजवंशक पैघ योगदान अछि। हिनका सभहक संरक्षणमे मिथिलाक कतेको विद्वान अनेक पोथीक रचना कयलनि, जाहिमे मिथिलाक संस्कृति प्रस्फुटित भेल। मिथिलामे लोककथा, लोकगाथा आ लोकनाट्यक सशक्त प्रचलन रहल जाहि सँ विभिन्न रीति-रिवाजक परिचय भेटल। व्रत, त्यौहार रूपमे छठ, जितिया, सामा-चकेबा, मधुश्रावणी, भरदुतिया आदिक प्रचलन सँ संस्कृति कैँ सबलता भेटैत अछि।

निष्कर्षत: मैथिली साहित्यक अध्ययन ओ विवेचन सँ ज्ञात होइत अछि जे मिथिलामे प्रारंभकाल सँ धार्मिक ओ सांस्कृतिक पक्षक सबल स्वरूप विद्यमान छल। समृद्ध सांस्कृतिक स्वरूपक कारणेँ मिथिला संसारक मानचित्र पर प्रतिष्ठित रहल। संगहि सामाजिक ओ आर्थिक पक्षक वर्णन सेहो मैथिली साहित्यमे यत्र-तत्र उपलब्ध होइत अछि जाहि सँ मिथिलाक सामाजिक ओ आर्थिक पक्षक विशद जानकारी भेटैत अछि। अतएव प्राचीनकाल सँ एखन धरि मिथिलामे धार्मिक ओ सांस्कृतिक समृद्धि बनल अछि।

प्राध्यापक, मैथिली -विभाग
सी.एम. कॉलेज, दरभंगा
मो. नं. - 09431421457
08969789133

'भरि भरि आँजुर, भरि-भरि मुट्ठी
दाना मिश्रित धूरा उठबैत कंकाल।

मैथिलीक आरंभिक 'सिद्ध-साहित्य', 'डाक ओ घाघ वचनावली' तथा 'वर्णरत्नाकर'क अध्ययन सँ मिथिलाक सामाजिक जीवनक वर्णन भेटैत अछि। समाजमे वर्णाश्रम धर्मक प्रचलन छल। बादमे वर्ण जातिक रूपकेँ ग्रहण कयलक जाहिमे सर्वोच्च स्थान ब्राह्मणक छल तत्पश्चात क्षत्रिय, वैश्य ओ शूद्र जाति केँ स्थान भेटलनि। समाजक सभ जाति सामाजिक एवं आर्थिक आवश्यकताक लेल एक-दोसर पर आश्रित रहैत छलाह। एहि व्यवस्थामे शोषण एवं दोहनक प्रवृत्ति सेहो छल मुदा समाजमे आपसी कोनो द्वेष नहि छल। 14 शताब्दी मे मुसलमानक आक्रमण सँ मिथिला समाजमे सामाजिक उथल-पुथल भेल जकर वर्णन विद्यापति कृत कीर्तिलता ओ कीर्तिपताकामे भेटैत अछि।

मिथिलामे प्रारंभकाल सँ स्त्रीक स्थिति कमजोर एवं निम्न छल। पुरुष प्रधान सामाजिक सोचक ओटमे नारीक दोहन, शोषण होइत छल। बाल-विवाह, वृद्ध-विवाह, वैश्य-प्रथा, पर्दा-प्रथा, सती-प्रथा आदि समाजमे अवस्थित छल, जकर वर्णन वर्णरत्नाकरमे भेटैत अछि। आधुनिक मैथिली साहित्यमे सेहो एहि सामाजिक कुप्रथाक वर्णन भेटैत अछि।

ओना पढ़ल-लिखल विदुषी आ वीरत्व भावना सँ ओत-प्रोत वर्णन भेटैत अछि।

यथा: ई की कैल उठाक ल आनल
कमलक कोढ़ीक लेल ढेंग कोकनल
बेटीकेँ बेचलऊँ मडुआक दोबर
बूढ़ बकलेल सँ भरलऊँ कोबर।''

मिथिलाक समाजमे पंजी प्रबंध आ कुलीन प्रथा सेहो प्रचलित छल, जकर आरंभिक वर्णन 'वर्णरत्नाकर' मे भेटैत अछि। पंजी प्रबन्धक अन्तर्गत सामाजिक जीवनमे वंशावली लिखि कए रखबाक प्रथाक विकास भेल। ई प्रथा एखन मुख्यत: ब्राह्मण आ कायस्थ लोकनिक मध्य प्रचलित अछि।

मिथिला अनादिकाल सँ सांस्कृतिक दृष्टि सँ धनी भू-भाग मानल जाएत अछि। विदेह शासक मिथिला नरेश राजा जनकक समय सँ सबल सांस्कृतिक पक्षक प्रदर्शन होएत आबि रहल अछि। एहि बातक साक्ष्य चन्दा झा रचित 'मिथिला भाषा रामायण' मे भेटैत अछि। मैथिली साहित्यमे भक्तिओ शृंगार मूलक पद विद्यापति द्वारा लिखित गेल जे गीति-काव्यक नाम सँ जानल जाइत अछि। एहि गीतक महत्व मिथिलाक सांस्कृतिक जीवनमे सर्वोपरि अछि। मैथिली साहित्यक विकास गीति काव्य सँ मानल जाइत अछि एकर प्रमाण सिद्ध-साहित्य, डाक वचनावली एवं वर्णरत्नाकरमे भेटैत अछि। एहि गीति काव्यक कारणेँ विद्यापति लोकप्रिय तथा जनकवि भेलाह, मध्यकालमे सेहो गीत आ नृत्य सँ नाट्य परंपराक विकास भेल, जकरा मिथिलामे कीर्तनिया, आसाममे अंकिया आ नेपालमे नेपाली नाटक कहल जाइत अछि। एकर सभहक विषय धार्मिक रहितहुँ सांस्कृतिक पक्षक सबल प्रदर्शन प्रस्तुत करैत अछि। मैथिली साहित्यमे जे भक्ति ओ शृंगार मूलक गीत काव्य प्रचलित अछि ताहिमे प्रमुख अछि- महेशवाणी, नचारी, गोसाउनिक गीत, विष्णु पद, शिव पद, सलहेस, लोरिक आ दीनाभद्रीक गीत, सोहर, समदाउन, योग, उचिती, बटगवनी, बारहमासा, छओ मासा, चौमासा, लगनी, चैतावर, मलार, रास, मान आदि। एकर अतिरिक्त गणेश, सूर्य, गंगा आदिक गीत सेहो प्रचलित अछि।



मिथिलाक सांस्कृतिक स्वरूपक विकासमे राजा जनक, पाल वंश, कर्नाट वंश, ओईनवार वंश आ दरभंगा महाराज तथा नेपाल स्थित राजवंशक पैघ योगदान अछि। हिनका सभहक संरक्षणमे मिथिलाक कतेको विद्वान अनेक पोथीक रचना कयलनि, जाहिमे मिथिलाक संस्कृति प्रस्फुटित भेल। मिथिलामे लोककथा, लोकगाथा आ लोकनाट्यक सशक्त प्रचलन रहल जाहि सँ विभिन्न रीति-रिवाजक परिचय भेटल। व्रत, त्यौहार रूपमे छठ, जितिया, सामा-चकेबा, मधुश्रावणी, भरदुतिया आदिक प्रचलन सँ संस्कृति केँ सबलता भेटैत अछि।

निष्कर्षत: मैथिली साहित्यक अध्ययन ओ विवेचन सँ ज्ञात होइत अछि जे मिथिलामे प्रारंभकाल सँ धार्मिक ओ सांस्कृतिक पक्षक सबल स्वरूप विद्यमान छल। समृद्ध सांस्कृतिक स्वरूपक कारणेँ मिथिला संसारक मानचित्र पर प्रतिष्ठित रहल। संगहि सामाजिक ओ आर्थिक पक्षक वर्णन सेहो मैथिली साहित्यमे यत्र-तत्र उपलब्ध होइत अछि जाहि सँ मिथिलाक सामाजिक ओ आर्थिक पक्षक विशद जानकारी भेटैत अछि। अतएव प्राचीनकाल सँ एखन धरि मिथिलामे धार्मिक ओ सांस्कृतिक समृद्धि बनल अछि।

प्राध्यापक, मैथिली -विभाग
सी.एम. कॉलेज, दरभंगा
मो. नं. - 09431421457
08969789133

'भरि भरि आँजुर, भरि-भरि मुट्ठी
दाना मिश्रित धूरा उठबैत कंकाल।

मैथिलीक आरंभिक 'सिद्ध-साहित्य', 'डाक ओ घाघ वचनावली' तथा 'वर्णरत्नाकर'क अध्ययन सँ मिथिलाक सामाजिक जीवनक वर्णन भेटैत अछि। समाजमे वर्णाश्रम धर्मक प्रचलन छल। बादमे वर्ण जातिक रूपकेँ ग्रहण कयलक जाहिमे सर्वोच्च स्थान ब्राह्मणक छल तत्पश्चात क्षत्रिय, वैश्य ओ शूद्र जाति केँ स्थान भेटलनि। समाजक सभ जाति सामाजिक एवं आर्थिक आवश्यकताक लेल एक-दोसर पर आश्रित रहैत छलाह। एहि व्यवस्थामे शोषण एवं दोहनक प्रवृत्ति सेहो छल मुदा समाजमे आपसी कोनो द्वेष नहि छल। 14 शताब्दी मे मुसलमानक आक्रमण सँ मिथिला समाजमे सामाजिक उथल-पुथल भेल जकर वर्णन विद्यापति कृत कीर्तिलता ओ कीर्तिपताकामे भेटैत अछि।

मिथिलामे प्रारंभकाल सँ स्त्रीक स्थिति कमजोर एवं निम्न छल। पुरुष प्रधान सामाजिक सोचक ओटमे नारीक दोहन, शोषण होइत छल। बाल-विवाह, वृद्ध-विवाह, वैश्य-प्रथा, पर्दा-प्रथा, सती-प्रथा आदि समाजमे अवस्थित छल, जकर वर्णन वर्णरत्नाकरमे भेटैत अछि। आधुनिक मैथिली साहित्यमे सेहो एहि सामाजिक कुप्रथाक वर्णन भेटैत अछि।

ओना पढ़ल-लिखल विदुषी आ वीरत्व भावना सँ ओत-प्रोत वर्णन भेटैत अछि।

यथा: ई की कैल उठाक ल आनल
कमलक कोढ़ीक लेल ढेंग कोकनल
बेटीकेँ बेचलऊँ मडुआक दोबर
बूढ़ बकलेल सँ भरलऊँ कोबर।''

मिथिलाक समाजमे पंजी प्रबंध आ कुलीन प्रथा सेहो प्रचलित छल, जकर आरंभिक वर्णन 'वर्णरत्नाकर' मे भेटैत अछि। पंजी प्रबन्धक अन्तर्गत सामाजिक जीवनमे वंशावली लिखि कए रखबाक प्रथाक विकास भेल। ई प्रथा एखन मुख्यत: ब्राह्मण आ कायस्थ लोकनिक मध्य प्रचलित अछि।

मिथिला अनादिकाल सँ सांस्कृतिक दृष्टि सँ धनी भू-भाग मानल जाएत अछि। विदेह शासक मिथिला नरेश राजा जनकक समय सँ सबल सांस्कृतिक पक्षक प्रदर्शन होएत आबि रहल अछि। एहि बातक साक्ष्य चन्दा झा रचित 'मिथिला भाषा रामायण' मे भेटैत अछि। मैथिली साहित्यमे भक्तिओ शृंगार मूलक पद विद्यापति द्वारा लिखित गेल जे गीति-काव्यक नाम सँ जानल जाइत अछि। एहि गीतक महत्व मिथिलाक सांस्कृतिक जीवनमे सर्वोपरि अछि। मैथिली साहित्यक विकास गीति काव्य सँ मानल जाइत अछि एकर प्रमाण सिद्ध-साहित्य, डाक वचनावली एवं वर्णरत्नाकरमे भेटैत अछि। एहि गीति काव्यक कारणेँ विद्यापति लोकप्रिय तथा जनकवि भेलाह, मध्यकालमे सेहो गीत आ नृत्य सँ नाट्य परंपराक विकास भेल, जकरा मिथिलामे कीर्तनिया, आसाममे अंकिया आ नेपालमे नेपाली नाटक कहल जाइत अछि। एकर सभहक विषय धार्मिक रहितहुँ सांस्कृतिक पक्षक सबल प्रदर्शन प्रस्तुत करैत अछि। मैथिली साहित्यमे जे भक्ति ओ शृंगार मूलक गीत काव्य प्रचलित अछि ताहिमे प्रमुख अछि- महेशवाणी, नचारी, गोसाउनिक गीत, विष्णु पद, शिव पद, सलहेस, लोरिक आ दीनाभद्रीक गीत, सोहर, समदाउन, योग, उचिती, बटगवनी, बारहमासा, छओ मासा, चौमासा, लगनी, चैतावर, मलार, रास, मान आदि। एकर अतिरिक्त गणेश, सूर्य, गंगा आदिक गीत सेहो प्रचलित अछि।



मिथिलाक सांस्कृतिक स्वरूपक विकासमे राजा जनक, पाल वंश, कर्नाट वंश, ओईनवार वंश आ दरभंगा महाराज तथा नेपाल स्थित राजवंशक पैघ योगदान अछि। हिनका सभहक संरक्षणमे मिथिलाक कतेको विद्वान अनेक पोथीक रचना कयलनि, जाहिमे मिथिलाक संस्कृति प्रस्फुटित भेल। मिथिलामे लोककथा, लोकगाथा आ लोकनाट्यक सशक्त प्रचलन रहल जाहि सँ विभिन्न रीति-रिवाजक परिचय भेटल। व्रत, त्यौहार रूपमे छठ, जितिया, सामा-चकेबा, मधुश्रावणी, भरदुतिया आदिक प्रचलन सँ संस्कृति केँ सबलता भेटैत अछि।

निष्कर्षत: मैथिली साहित्यक अध्ययन ओ विवेचन सँ ज्ञात होइत अछि जे मिथिलामे प्रारंभकाल सँ धार्मिक ओ सांस्कृतिक पक्षक सबल स्वरूप विद्यमान छल। समृद्ध सांस्कृतिक स्वरूपक कारणेँ मिथिला संसारक मानचित्र पर प्रतिष्ठित रहल। संगहि सामाजिक ओ आर्थिक पक्षक वर्णन सेहो मैथिली साहित्यमे यत्र-तत्र उपलब्ध होइत अछि जाहि सँ मिथिलाक सामाजिक ओ आर्थिक पक्षक विशद जानकारी भेटैत अछि। अतएव प्राचीनकाल सँ एखन धरि मिथिलामे धार्मिक ओ सांस्कृतिक समृद्धि बनल अछि।

प्राध्यापक, मैथिली -विभाग
सी.एम. कॉलेज, दरभंगा
मो. नं. - 09431421457
08969789133



दूटा कविता - अरुणाभ सौरभ

(एक)

हेराएल कातिक पूर्णिमा

कातिक पूर्णिमा मे
मोन कसमसा जाइछ
परदेश मे
जे गाम मे रहितहुँ
तँ अखन बहिनँक फोड़ितहुँ सामा
आ निश्चिते कनैत हेति बहिन सेहो
परदेश मे
अपना गाम मे
आब सामा मे
नहि रहैत अछि
भाय आ बहिन
भारतक अलग-अलग
कोने मे बसि गेल
भाय आ बहिन
तँ माटिक सामा
चलि गेली रसातल
भरदुतियाक पान सुखा गेल
आबक दुनिया मे
हेराएल जा रहत
अप्पन एक-एक चीज
सामा-चकेवा,
भरदुतिया
वृंदावनउ, चुगला
अथरो पथरो
ढेंगा-पानी
आबक दुनिया केर
हैरायल जाइत वस्तु मे
यत्किचिंत
जरूरे छै शामिल
सामा-चकेवा
किछु दिनुक बाद
बेटा चरिआयातए कि
पप्पा कातिक पूर्णिमा मे
चानो नहि भेटल
अइ बेर
से देखियौ

(दू)

गामक लोक बिहारी

गामक लोक सभ
आब शहर मे
रोजे-रोज-
गारि सुनै छै
बात सुनै छै
मारि खाएत छै
फुसि बजै छै
टका कमबै छै
डींग हँकै छै
खूब खटै छै
बूढ़ माय-बाप कैँ
छोड़ि आबै छै
गाम-जवार
कर-कुटमैती
बिसुरि जाय छै



दूटा कविता - अरुणाभ सौरभ

(एक)

हेराएल कातिक पूर्णिमा

कातिक पूर्णिमा मे
मोन कसमसा जाइछ
परदेश मे
जे गाम मे रहितहुँ
तँ अखन बहिनँक फोड़ितहुँ सामा
आ निश्चिते कनैत हेति बहिन सेहो
परदेश मे
अपना गाम मे
आब सामा मे
नहि रहैत अछि
भाय आ बहिन
भारतक अलग-अलग
कोने मे बसि गेल
भाय आ बहिन
तँ माटिक सामा
चलि गेली रसातल
भरदुतियाक पान सुखा गेल
आबक दुनिया मे
हेराएल जा रहत
अप्पन एक-एक चीज
सामा-चकेवा,
भरदुतिया
वृंदावनउ, चुगला
अथरो पथरो
ढेंगा-पानी
आबक दुनिया केर
हैरायल जाइत वस्तु मे
यत्किचिंत
जरूरे छै शामिल
सामा-चकेवा
किछु दिनुक बाद
बेटा चरिआयातए कि
पप्पा कातिक पूर्णिमा मे
चानो नहि भेटल
अइ बेर
से देखियौ

(दू)

गामक लोक बिहारी

गामक लोक सभ
आब शहर मे
रोजे-रोज-
गारि सुनै छै
बात सुनै छै
मारि खाएत छै
फुसि बजै छै
टका कमबै छै
डींग हँकै छै
खूब खटै छै
बूढ़ माय-बाप कँे
छोड़ि आबै छै
गाम-जवार
कर-कुटमैती
बिसुरि जाय छै



दूटा कविता - अरुणाभ सौरभ

(एक)

हेराएल कातिक पूर्णिमा

कातिक पूर्णिमा मे
मोन कसमसा जाइछ
परदेश मे
जे गाम मे रहितहुँ
तँ अखन बहिनँक फोड़ितहुँ सामा
आ निश्चिते कनैत हेति बहिन सेहो
परदेश मे
अपना गाम मे
आब सामा मे
नहि रहैत अछि
भाय आ बहिन
भारतक अलग-अलग
कोने मे बसि गेल
भाय आ बहिन
तँ माटिक सामा
चलि गेली रसातल
भरदुतियाक पान सुखा गेल
आबक दुनिया मे
हेराएल जा रहत
अप्पन एक-एक चीज
सामा-चकेवा,
भरदुतिया
वृंदावनउ, चुगला
अथरो पथरो
ढेंगा-पानी
आबक दुनिया केर
हैरायल जाइत वस्तु मे
यत्किचिंत
जरूरे छै शामिल
सामा-चकेवा
किछु दिनुक बाद
बेटा चरिआयातए कि
पप्पा कातिक पूर्णिमा मे
चानो नहि भेटल
अइ बेर
से देखियौ

(दू)

गामक लोक बिहारी

गामक लोक सभ
आब शहर मे
रोजे-रोज-
गारि सुनै छै
बात सुनै छै
मारि खाएत छै
फुसि बजै छै
टका कमबै छै
डींग हँकै छै
खूब खटै छै
बूढ़ माय-बाप कैँ
छोड़ि आबै छै
गाम-जवार
कर-कुटमैती
बिसुरि जाय छै



आब गामक लोक
बहरा गेल शहर
आ सभ शहर मे ओ
'भ' गेल - बिहारी
नवका नाम - 'बिहारी'
मतलब -चोर-चिल्लड़,
पाकेटमार, बदमाश
आ एकटा बिखिन गारि - 'बिहारी'
आब अपना गामक लोक
बहरा गेल शहर
आ सभ शहर मे ओ
'भ' गेल - बिहारी

द्वारा - केन्द्रीय विद्यालय,
ए.एफ.एस.
बोरझार माउन्टेन शैडो, अजरा
गुवाहाटी-781017
मो. 9957833171

दूटा कविता - ज्योति सुनीत चौधरी

(एक)

एकटा नौकरी चाही

एकटा नोकरीक ताकिमे छी
जतए काज हुअए अपन मोनक
समएपर जाइ आबै लेल
नहि कखनो जोर चलै आनक
जगह होइ महल सन आ
बॉस हुअय अपन पसिन्नक
आन्हर एवम् बहिर होअए आ
महिलाकेँ नहि भेटै ई अवसर
वेतन तँ तेहेन चोटगर हुअए जे
ललाइत रहए दुनियाक सभ मिलियनेयर
कम्पनीक कर्ता धर्ता हम बनी
बॉस अनुसरण करए अज्ञाक हमर
सभ दिन ऑफिस आबै लेल सेहो तैयार छी
जँ लुक होइ ओकर रितेश देशमुखक
बात सुनाबक हिम्मत नहि करए
मुस्काइत रहए हमर सभ बातपर
फेर विश्वास नहि तोड़ै कखनो
दरमाहा नहि रोकै कम्पनीक बंन्न भेलोपर

(दू)

पनिभरनी

पनिभरनी आएल भोरहरबामे
छल कनकनीसँ भरल बसात
केवाड़क खटखटीसँ निन्न खुजल
मेघक आवरणमे प्रकाशहीन प्रात
बरतन बासन राखलक बाहर
भन्सा घरकेँ निपलाक पश्चात
डोल सभकेँ लटकेने विदा भेल
पानि भरै लेल इनारक कात
पानि उपछैत नहि अघायल
काज लग सोहेलै नहि कोनो बात
रोजी रोटीक प्रयोजन छल
फुर्तीसँ जाड़केँ धांगैत लात
आवश्यकता ऊर्जा श्रम आभूषण
अपर्याप्त वस्त्र सहैत ऋतुक आघात
मृदुलता आ कोमलताक प्रतीक स्त्री
कर्त्तव्यपथपर देलक प्रकृतिकें मात।



आब गामक लोक
बहरा गेल शहर
आ सभ शहर मे ओ
'भ' गेल – बिहारी
नवका नाम – 'बिहारी'
मतलब –चोर–चिल्लड़,
पाकेटमार, बदमाश
आ एकटा बिखिन गारि – 'बिहारी'
आब अपना गामक लोक
बहरा गेल शहर
आ सभ शहर मे ओ
'भ' गेल – बिहारी

द्वारा – केन्द्रीय विद्यालय,
ए.एफ.एस.
बोरझार माउन्टेन शैडो, अजरा
गुवाहाटी–781017
मो. 9957833171

दूटा कविता – ज्योति सुनीत चौधरी

(एक)

एकटा नौकरी चाही

एकटा नोकरीक ताकिमे छी
जतए काज हुअए अपन मोनक
समएपर जाइ आबै लेल
नहि कखनो जोर चलै आनक
जगह होइ महल सन आ
बॉस हुअय अपन पसिन्नक
आन्हर एवम् बहिर होअए आ
महिलाकेँ नहि भेटै ई अवसर
वेतन तँ तेहेन चोटगर हुअए जे
ललाइत रहए दुनियाक सभ मिलियनेयर
कम्पनीक कर्ता धर्ता हम बनी
बॉस अनुसरण करए अज्ञाक हमर
सभ दिन ऑफिस आबै लेल सेहो तैयार छी
जँ लुक होइ ओकर रितेश देशमुखक
बात सुनाबक हिम्मत नहि करए
मुस्काइत रहए हमर सभ बातपर
फेर विश्वास नहि तोड़ै कखनो
दरमाहा नहि रोकै कम्पनीक बंन्न भेलोपर

(दू)

पनिभरनी

पनिभरनी आएल भोरहरबामे
छल कनकनीसँ भरल बसात
केवाड़क खटखटीसँ निन्न खुजल
मेघक आवरणमे प्रकाशहीन प्रात
बरतन बासन राखलक बाहर
भन्सा घरकेँ निपलाक पश्चात
डोल सभकेँ लटकेने विदा भेल
पानि भरै लेल इनारक कात
पानि उपछैत नहि अघायल
काज लग सोहेलै नहि कोनो बात
रोजी रोटीक प्रयोजन छल
फुर्तीसँ जाड़केँ धांगैत लात
आवश्यकता ऊर्जा श्रम आभूषण
अपर्याप्त वस्त्र सहैत ऋतुक आघात
मृदुलता आ कोमलताक प्रतीक स्त्री
कर्त्तव्यपथपर देलक प्रकृतिकें मात।



आब गामक लोक
बहरा गेल शहर
आ सभ शहर मे ओ
'भ' गेल – बिहारी
नवका नाम – 'बिहारी'
मतलब –चोर–चिल्लड़,
पाकेटमार, बदमाश
आ एकटा बिखिन गारि – 'बिहारी'
आब अपना गामक लोक
बहरा गेल शहर
आ सभ शहर मे ओ
'भ' गेल – बिहारी

द्वारा – केन्द्रीय विद्यालय,
ए.एफ.एस.
बोरझार माउन्टेन शैडो, अजरा
गुवाहाटी–781017
मो. 9957833171

दूटा कविता – ज्योति सुनीत चौधरी

(एक)

एकटा नौकरी चाही

एकटा नोकरीक ताकिमे छी
जतए काज हुअए अपन मोनक
समएपर जाइ आबै लेल
नहि कखनो जोर चलै आनक
जगह होइ महल सन आ
बॉस हुअय अपन पसिन्नक
आन्हर एवम् बहिर होअए आ
महिलाकेँ नहि भेटै ई अवसर
वेतन तँ तेहेन चोटगर हुअए जे
ललाइत रहए दुनियाक सभ मिलियनेयर
कम्पनीक कर्ता धर्ता हम बनी
बॉस अनुसरण करए अज्ञाक हमर
सभ दिन ऑफिस आबै लेल सेहो तैयार छी
जँ लुक होइ ओकर रितेश देशमुखक
बात सुनाबक हिम्मत नहि करए
मुस्काइत रहए हमर सभ बातपर
फेर विश्वास नहि तोड़ै कखनो
दरमाहा नहि रोकै कम्पनीक बंन्न भेलोपर

(दू)

पनिभरनी

पनिभरनी आएल भोरहरबामे
छल कनकनीसँ भरल बसात
केवाड़क खटखटीसँ निन्न खुजल
मेघक आवरणमे प्रकाशहीन प्रात
बरतन बासन राखलक बाहर
भन्सा घरकेँ निपलाक पश्चात
डोल सभकेँ लटकेने विदा भेल
पानि भरै लेल इनारक कात
पानि उपछैत नहि अघायल
काज लग सोहेलै नहि कोनो बात
रोजी रोटीक प्रयोजन छल
फुर्तीसँ जाड़केँ धांगैत लात
आवश्यकता ऊर्जा श्रम आभूषण
अपर्याप्त वस्त्र सहैत ऋतुक आघात
मृदुलता आ कोमलताक प्रतीक स्त्री
कर्त्तव्यपथपर देलक प्रकृतिकें मात।

दूटा कविता- शम्भूनाथ झा 'साँवरिया'

(एक)

गोपी विरह

कृष्णा गेला तजि मथुरा
कोना बचबै
अपने मथुराक राजा बनला
हमरा लोकनि भिखारी।
परम मुदित मन राज राज चलावछि
विपदा देलनि भारी,
पठबथि एको नहि पतिया, कोना बचबै। कृष्णा.....
वृन्दावन के कुंज गली मे
खगमृग कोकिल सारी,
घास पात मे घूमि-घूमि सूँघै,
भेटए नहि बनवारी।
चरतै ककरा संग मे गैया
कोना बचबै। कृष्णा.....
बन बन आकुल-व्याकुल भटकै,
गोकुल के नर नारी,
ग्वालबाल सब माथा पटकै,
कतए गेला गिरिधारी,
खेलबै ककरा संग रे कन्हैया
कोना बचबै। कृष्णा......
कदम्ब गाछ के झूला कानए
कानै राधा प्यारी
घाट-घाट पै यमुना कानै, बचबै नहि हौ बिहार्र
सुनबै कहिया फेर मुरलिया, कोनो बचबै
पवन गवन करि ताप बढ़ावै
जड़लौ पै झरकावै,
चान इजोरिया अनल बुझावै
रहि-रहि जिया जड़ावै,
रिझला कुब्जा संग सँवरिया, कोना बचबै।
कृष्णा.....



(दू)

फगुआ

जुति मार' हौ लाल जुनि मार' हो लाल
फागुन मे झटका जुनि मार'।
देहिया हमर ई आमक गछिया,
मंजर झहरए हजारो हजार
फागुन मे....
हमरो जुआनी लबालब पानी
भट दे खसबह तू मुंहे बजार
फागुन....
छौड़वा के डुर नै, ढेढ़वा क' डर नै
कनखी मारै ई बुढ़बा छिनार...
फागुन...

ग्राम-बघवा, पो. गोपालपुर
जिला- सहरसा (बिहार)

दूटा कविता- मनोज कुमार मण्डल

(एक)

बेटी

बेटी धनक सिंगार अछि
मान, प्रतिष्ठा, इज्जत, आवरू
सजल सरक ताज अछि
भेटल मिथिलाक मैथिली
बेटी रूप मुस्कान अछि।
कतबो सताबैत बेटीक
सुध गाए बनि सुनैत रहैत
सुख-दुखमे सम बनि
माए-बापक मान रखैत अछि
बुझितो पराया बनब
अप्पन बनल रहैत अछि।
पुरखक समाज अवला कहलन्हि
बनि अबला ओ रहैत अछि
गुलाबक पंखुरी जकाँ
टन-दिन भखरैत अछि
स्वाभिमान, इज्जतक प्रश्न पर
नागीन बनि उभरैत अछि।
बेटा-बेटीक अंतर रहितो
अपन अधिकार समटैत अछि
माए-बाप मनक बुझितो
भायसँ प्रेम करैत अछि
बापोक ठोह फाटए लगैत
जखन हृदएसँ टुकड़ा अलग होइत अछि।

(दू)

नारी चरित्र

शक्तिक प्रतिक नारी रहल
धनसँ भड़ल बखारी

दूटा कविता- शम्भूनाथ झा 'साँवरिया'

(एक)

गोपी विरह

कृष्णा गेला तजि मथुरा
कोना बचबै
अपने मथुराक राजा बनला
हमरा लोकनि भिखारी।
परम मुदित मन राज राज चलावछि
विपदा देलनि भारी,
पठबथि एको नहि पतिया, कोना बचबै। कृष्णा.....
वृन्दावन के कुंज गली मे
खगमृग कोकिल सारी,
घास पात मे घूमि-घूमि सूँघै,
भेटए नहि बनवारी।
चरतै ककरा संग मे गैया
कोना बचबै। कृष्णा.....
बन बन आकुल-व्याकुल भटकै,
गोकुल के नर नारी,
ग्वालबाल सब माथा पटकै,
कतए गेला गिरिधारी,
खेलबै ककरा संग रे कन्हैया
कोना बचबै। कृष्णा......
कदम्ब गाछ के झूला कानए
कानै राधा प्यारी
घाट-घाट पै यमुना कानै, बचबै नहि हौ बिहार्र
सुनबै कहिया फेर मुरलिया, कोनो बचबै
पवन गवन करि ताप बढ़ावै
जड़लौ पै झरकावै,
चान इजोरिया अनल बुझावै
रहि-रहि जिया जड़ावै,
रिझला कुब्जा संग सँवरिया, कोना बचबै।
कृष्णा.....



(दू)

फगुआ

जुति मार' हौ लाल जुनि मार' हो लाल
फागुन मे झटका जुनि मार'।
देहिया हमर ई आमक गछिया,
मंजर झहरए हजारो हजार
फागुन मे....

हमरो जुआनी लबालब पानी
भट दे खसबह तू मुंहे बजार
फागुन....
छौड़वा के डुर नै, ढेढ़वा क' डर नै
कनखी मारै ई बुढ़बा छिनार...
फागुन...

ग्राम-बघवा, पो. गोपालपुर
जिला- सहरसा (बिहार)

दूटा कविता- मनोज कुमार मण्डल

(एक)

बेटी

बेटी धनक सिंगार अछि
मान, प्रतिष्ठा, इज्जत, आवरू
सजल सरक ताज अछि
भेटल मिथिलाक मैथिली
बेटी रूप मुस्कान अछि।
कतबो सताबैत बेटीक
सुध गाए बनि सुनैत रहैत
सुख-दुखमे सम बनि
माए-बापक मान रखैत अछि
बुझितो पराया बनब
अप्पन बनल रहैत अछि।
पुरखक समाज अवला कहलन्हि
बनि अबला ओ रहैत अछि
गुलाबक पंखुरी जकाँ
टन-दिन भखरैत अछि
स्वाभिमान, इज्जतक प्रश्न पर
नागीन बनि उभरैत अछि।
बेटा-बेटीक अंतर रहितो
अपन अधिकार समटैत अछि
माए-बाप मनक बुझितो
भायसँ प्रेम करैत अछि
बापोक ठोह फाटए लगैत
जखन ह्दएसँ टुकड़ा अलग होइत अछि।

(दू)

नारी चरित्र

शक्तिक प्रतिक नारी रहल
धनसँ भड़ल बखारी

दूटा कविता- शम्भूनाथ झा 'साँवरिया'

(एक)

गोपी विरह

कृष्णा गेला तजि मथुरा
कोना बचबै
अपने मथुराक राजा बनला
हमरा लोकनि भिखारी।
परम मुदित मन राज राज चलावछि
विपदा देलनि भारी,
पठबथि एको नहि पतिया, कोना बचबै। कृष्णा.....
वृन्दावन के कुंज गली मे
खगमृग कोकिल सारी,
घास पात मे घूमि-घूमि सूँघै,
भेटए नहि बनवारी।
चरतै ककरा संग मे गैया
कोना बचबै। कृष्णा.....
बन बन आकुल-व्याकुल भटकै,
गोकुल के नर नारी,
ग्वालबाल सब माथा पटकै,
कतए गेला गिरिधारी,
खेलबै ककरा संग रे कन्हैया
कोना बचबै। कृष्णा......
कदम्ब गाछ के झूला कानए
कानै राधा प्यारी
घाट-घाट पै यमुना कानै, बचबै नहि हौ बिहार्र
सुनबै कहिया फेर मुरलिया, कोनो बचबै
पवन गवन करि ताप बढ़ावै
जड़लौ पै झरकावै,
चान इजोरिया अनल बुझावै
रहि-रहि जिया जड़ावै,
रिझला कुब्जा संग सँवरिया, कोना बचबै।
कृष्णा.....



(दू)

फगुआ

जुति मार' हौ लाल जुनि मार' हो लाल
फागुन मे झटका जुनि मार'।
देहिया हमर ई आमक गछिया,
मंजर झहरए हजारो हजार
फागुन मे....

हमरो जुआनी लबालब पानी
भट दे खसबह तू मुंहे बजार
फागुन....
छौड़वा के डुर नै, ढेढ़वा क' डर नै
कनखी मारै ई बुढ़बा छिनार...
फागुन...

ग्राम-बघवा, पो. गोपालपुर
जिला- सहरसा (बिहार)

दूटा कविता- मनोज कुमार मण्डल

(एक)

बेटी

बेटी धनक सिंगार अछि
मान, प्रतिष्ठा, इज्जत, आवरू
सजल सरक ताज अछि
भेटल मिथिलाक मैथिली
बेटी रूप मुस्कान अछि।
कतबो सताबैत बेटीक
सुध गाए बनि सुनैत रहैत
सुख-दुखमे सम बनि
माए-बापक मान रखैत अछि
बुझितो पराया बनब
अप्पन बनल रहैत अछि।
पुरखक समाज अवला कहलन्हि
बनि अबला ओ रहैत अछि
गुलाबक पंखुरी जकाँ
टन-दिन भखरैत अछि
स्वाभिमान, इज्जतक प्रश्न पर
नागीन बनि उभरैत अछि।
बेटा-बेटीक अंतर रहितो
अपन अधिकार समटैत अछि
माए-बाप मनक बुझितो
भायसँ प्रेम करैत अछि
बापोक ठोह फाटए लगैत
जखन हृदएसँ टुकड़ा अलग होइत अछि।

(दू)

नारी चरित्र

शक्तिक प्रतिक नारी रहल
धनसँ भड़ल बखारी

विद्याक सागर बनल
दुर्गा, सरस्वती, लक्ष्मी
कहाइत पूजा होएत रहल।
माए-बहीन, भौजाइ-ननदि
काकी, दादी, नानी, बनल
बेटी बनि माए-बापक हृदए
जुराबति रहल आर
जगमे ओ पूजाइत रहल।
श्रद्धाक प्रतीक इज्जतक
मान रखने रहल
नारीक कर्मसँ
पुरूष सदासँ अपन
मूछ फरकबैत रहल
अपन छाती तनने रहल।
पुरूखक भीड़मे नित
अबला-अबला सुनैत रहल
लता बनि हरदम
अबलम्बर खोजैत रहल
आँखि अपन सिकुरैत रहल।
जैधी मौसी, मामी
एक्के नारी सास बनल
केकरो चरण छुएलक
केकरो गारि सुनैत रहल
केकरो लेल देवी बनल
केकरो जाँघतर पड़ल रहल।
सजल सँबरल बनैत मरूत
रूप-अलंकारसँ देवी नाम पड़ल
दया, ममता, सिनेह, प्यारक
जीवन भरि सुमन बिखैरति रहल।
धिरज हेरा डुबाबति अधर
पुरूखक मन ललचाबए लगल
खुट्टा तोड़ि जखन बौराएल
देवीसँ कुल्टा बनल
समाज नीचताक प्रकाष्ठापर
अपन टाँग गरौने रहल।
धन जीवन अनिवार्य
टाका नइ जीवन बनत
जहि टाकासँ मान रहत
टक्के लेल मान घटबैत रहल।
कुल स्वाभिमानी बनैत
पुरूखक ओ पाग बनैत
कोन दुरकाल मनमे उठल
जे कुल कलंकक भार बनल
नारी ममताकेँ सागर
ओ कोना नर काल बनल।

- बेरमा,तमुरिया, मधुबनी



गज़ल

- विजयनाथ झा

मति बैसू सुनू अछि बिकलता जेना,
कामना दग्ध अछि काम व्यंजक तेना।

युग्मता ई हमर पुष्प पैसल भ्रमर,
शब्द नहि-स्वाद बड़ की कही हम कोना।

वस्तुतः राग प्रिय ताग संभाग एहि,
गाथने तन उभय पूर्ण परिकल्पना।

भेल अनुरक्त मन नेह-निधि ज्ञान सन,
प्रेम पथ प्रेयता सुख समर्पण एना।

छी अहाँ यदि निकट आर चाही कथी,
तृप्ति अछि, तोष अछि रूप-रस व्यंजना।

प्रेम पाथेय पथ, प्रेम अनुराग रग,
प्रेम भव-भय शमन प्रेम अनुरंजना।

संपर्क : *बहादुरपुर, पचना-20*

दूटा कविता - राजेश मोहन झा

(एक)

मूड़नक भोज

रसगुल्लमे बिच्चीर, जिलेबी काँच,
गरम तरकारीपर बैसला पूरी पाँच
मूड़नक भोज कएलनि इंजिनियर,
हाथे लोटा बिगड़ल इंटीरियर॥
जेठक दुपहरियामे भागम भाग,
धांगलौं मूंग आ पालॉकी साग।
पेटमे मीठका टीस उठैए
जहिना मकइया सीस झड़ैए॥
हेल्थौ विभाग लगौलनि अनुमान,
गरजक संग बौछार समान।
बाजू मोनसँ केहन लगैए,
सूइया पहाड़पर कंकड़ गड़ैए॥
बिरेन्द्र बचावू, मुन्ना बचावू,
आब एहन नहि भोज देखाउ।
इंजिनियर मास्टर केर कुचक्रमे,

विद्याक सागर बनल
दुर्गा, सरस्वती, लक्ष्मी
कहाइत पूजा होएत रहल।
माए-बहीन, भौजाइ-ननदि
काकी, दादी, नानी, बनल
बेटी बनि माए-बापक हृदए
जुराबति रहल आर
जगमे ओ पूजाइत रहल।
श्रद्धाक प्रतीक इज्जतक
मान रखने रहल
नारीक कर्मसँ
पुरूष सदासँ अपन
मूछ फरकबैत रहल
अपन छाती तनने रहल।
पुरूखक भीड़मे नित
अबला-अबला सुनैत रहल
लता बनि हरदम
अबलम्बर खोजैत रहल
आँखि अपन सिकुरैत रहल।
जैधी मौसी, मामी
एक्के नारी सास बनल
केकरो चरण छुएलक
केकरो गारि सुनैत रहल
केकरो लेल देवी बनल
केकरो जाँघतर पड़ल रहल।
सजल सँबरल बनैत मरूत
रूप-अलंकारसँ देवी नाम पड़ल
दया, ममता, सिनेह, प्यारक
जीवन भरि सुमन बिखैरति रहल।
धिरज हेरा डुबाबति अधर
पुरूखक मन ललचाबए लगल
खुट्टा तोड़ि जखन बौराएल
देवीसँ कुल्टा बनल
समाज नीचताक प्रकाष्ठापर
अपन टाँग गरौने रहल।
धन जीवन अनिवार्य
टाका नइ जीवन बनत
जहि टाकासँ मान रहत
टक्के लेल मान घटबैत रहल।
कुल स्वाभिमानी बनैत
पुरूखक ओ पाग बनैत
कोन दुरकाल मनमे उठल
जे कुल कलंकक भार बनल
नारी ममताकेँ सागर
ओ कोना नर काल बनल।



- बेरमा,तमुरिया, मधुबनी

गज़ल

- विजयनाथ झा

मति बैसू सुनू अछि बिकलता जेना,
कामना दग्ध अछि काम व्यंजक तेना।

युग्मता ई हमर पुष्प पैसल भ्रमर,
शब्द नहि-स्वाद बड़ की कही हम कोना।

वस्तुत: राग प्रिय ताग संभाग एहि,
गाथने तन उभय पूर्ण परिकल्पना।

भेल अनुरक्त मन नेह-निधि ज्ञान सन,
प्रेम पथ प्रेयता सुख समर्पण एना।

छी अहाँ यदि निकट आर चाही कथी,
तृप्ति अछि, तोष अछि रूप-रस व्यंजना।

प्रेम पाथेय पथ, प्रेम अनुराग रग,
प्रेम भव-भय शमन प्रेम अनुरंजना।

संपर्क : *बहादुरपुर, पचना-20*

दूटा कविता - राजेश मोहन झा

(एक)

मूड़नक भोज

रसगुल्लमे बिच्चीर, जिलेबी काँच,
गरम तरकारीपर बैसला पूरी पाँच
मूड़नक भोज कएलनि इंजिनियर,
हाथे लोटा बिगड़ल इंटीरियर॥
जेठक दुपहरियामे भागम भाग,
धांगलौं मूंग आ पालॉकी साग।
पेटमे मीठका टीस उठैए
जहिना मकइया सीस झड़ैए॥
हेल्थौ विभाग लगौलनि अनुमान,
गरजक संग बौछार समान।
बाजू मोनसँ केहन लगैए,
सूइया पहाड़पर कंकड़ गड़ैए॥
बिरेन्द्र बचावू, मुन्ना बचावू,
आब एहन नहि भोज देखाउ।
इंजिनियर मास्टर केर कुचक्रमे,

विद्याक सागर बनल
दुर्गा, सरस्वती, लक्ष्मी
कहाइत पूजा होएत रहल।
माए-बहीन, भौजाइ-ननदि
काकी, दादी, नानी, बनल
बेटी बनि माए-बापक हृदए
जुराबति रहल आर
जगमे ओ पूजाइत रहल।
श्रद्धाक प्रतीक इज्जतक
मान रखने रहल
नारीक कर्मसँ
पुरूष सदासँ अपन
मूछ फरकबैत रहल
अपन छाती तनने रहल।
पुरूखक भीड़मे नित
अबला-अबला सुनैत रहल
लता बनि हरदम
अबलम्बर खोजैत रहल
आँखि अपन सिकुरैत रहल।
जैधी मौसी, मामी
एक्के नारी सास बनल
केकरो चरण छुएलक
केकरो गारि सुनैत रहल
केकरो लेल देवी बनल
केकरो जाँघतर पड़ल रहल।
सजल सँबरल बनैत मरूत
रूप-अलंकारसँ देवी नाम पड़ल
दया, ममता, सिनेह, प्यारक
जीवन भरि सुमन बिखैरति रहल।
धिरज हेरा डुबाबति अधर
पुरूखक मन ललचाबए लगल
खुट्टा तोड़ि जखन बौराएल
देवीसँ कुल्टा बनल
समाज नीचताक प्रकाष्ठापर
अपन टाँग गरौने रहल।
धन जीवन अनिवार्य
टाका नइ जीवन बनत
जहि टाकासँ मान रहत
टक्के लेल मान घटबैत रहल।
कुल स्वाभिमानी बनैत
पुरूखक ओ पाग बनैत
कोन दुरकाल मनमे उठल
जे कुल कलंकक भार बनल
नारी ममताकेँ सागर
ओ कोना नर काल बनल।

- बेरमा,तमुरिया, मधुबनी



गज़ल

- विजयनाथ झा

मति बैसू सुनू अछि बिकलता जेना,
कामना दग्ध अछि काम व्यंजक तेना।

युग्मता ई हमर पुष्प पैसल भ्रमर,
शब्द नहि-स्वाद बड़ की कही हम कोना।

वस्तुतः राग प्रिय ताग संभाग एहि,
गाथने तन उभय पूर्ण परिकल्पना।

भेल अनुरक्त मन नेह-निधि ज्ञान सन,
प्रेम पथ प्रेयता सुख समर्पण एना।

छी अहाँ यदि निकट आर चाही कथी,
तृप्ति अछि, तोष अछि रूप-रस व्यंजना।

प्रेम पाथेय पथ, प्रेम अनुराग रग,
प्रेम भव-भय शमन प्रेम अनुरंजना।

संपर्क : *बहादुरपुर, पचना-20*

दूटा कविता - राजेश मोहन झा

(एक)

मूड़नक भोज

रसगुल्लमे बिच्चीर, जिलेबी काँच,
गरम तरकारीपर बैसला पूरी पाँच
मूड़नक भोज कएलनि इंजिनियर,
हाथे लोटा बिगड़ल इंटीरियर॥
जेठक दुपहरियामे भागम भाग,
धांगलौं मूंग आ पालॉकी साग।
पेटमे मीठका टीस उठैए
जहिना मकइया सीस झड़ैए॥
हेल्थौ विभाग लगौलनि अनुमान,
गरजक संग बौछार समान।
बाजू मोनसँ केहन लगैए,
सूइया पहाड़पर कंकड़ गड़ैए॥
बिरेन्द्र बचावू, मुन्ना बचावू,
आब एहन नहि भोज देखाउ।
इंजिनियर मास्टर केर कुचक्रमे,

अन्हारे हाथे लोटा धेलहुँ॥
आव एहन नहि खाएब जिलेवी,
हजम चूर्ण आ जमैनक सेवी।
भगवान अहाँक आमद बढ़ावथु,
आगाँ बढ़ियॉ भोज खुआबथु॥
सिद्ध अन्न खाएब अहाँ घर जहिया
उकरिन हएब भोज दोससँ तहिया।
सुनू औ कतवो वेतन बढ़तनि,
मुदा नहि खानदानी स्वभाव बदलतनि॥

(दू)

थेथर नेता



गुड्डी फॅसलै, गुड्डी फॅसलै
देखही बौआ, नेता खसलै।
जोर लगावह उठावह हिनका
साहि दहुन डूबैत केर तिनका॥
मोन कनैए, आँखि भरैए,
हिनका कारणे प्रजा मरैए।
भारी भरकम मंत्री संत्री गण,
पेट भूखल आ गहूम सड़ैए॥
आइ सी.सी आ एफसी आइ,
कतेको आइ मे 'यू' निमत्ता।
एक मासमे बनौता दिल्ली,
तोड़ि जोड़ि मचोड़ि केर सत्ता॥
हऽर घऽर आ बेट खरिहार,
मंत्री रहितो ज्योतिष केर जान।
कुटिल मुस्कान लए सदन चलावथि,
भोजन पानि विनु गंगा स्नान॥
हमर सनेश ई सभ जनता केर,
मंहगी बढ़त सम्हारू धोती।
लोकक गरदनिमे फांस लगौलनि,
पहिरथि अपने माला मोती॥
कहथि सुदामा सुनू मुरारी,
एहन थेथर नेता नहि भारी।
बुद्धि हरण भेल भूखे मरै छी,
दौड़ू लाऊ संग सस्ता थारी॥

- गाम,पोस्ट- करियन,
भाया- इलमासपुर, जिला- समस्तीपुर

दूटा कविता - पंकज कुमार झा

(एक)

अईंखक दोख आ कि हृदयक.....

अईंखक कोन दोख,
जे अहाँक सुन्दरता नई देखलक,
ओ त देखै टा मात्र छै,
बुझै नई छै,
बिम्ब आ प्रतिबिम्बक,
बिच फंसल मात्र एकटा परावर्तक छै,
दोस त हृदय के छै,
जे भावना शुन्य छै,
तैं अहाँक सुन्दरताक झीलों मे,
मरुभुमिक दग्धातक देखै छै,
ओना जे आन्हरो छैथ,
से कल्पनाक ब्रश स,
सुन्दरताक सृजन हृदयक भाव स करैत छैथ,
मुदा !
जे भाव विहीन छैथ,
अईंख रहितो,
बिम्ब-प्रतिबिम्ब मे ओझराइल रहैत छैथ,
अई मे हुनको कोनो दोख नई,
जे भाव विहीन छैथ,
यन्त्र बनी बरद जँका,
जीवनक दाउन मे लागल छैथ,
हुनका त आभासों नई छैन,
कि अहू स बिशेष किछ छैई,
मुद्रा-मतलबक डोरी मे बन्हैल,
सुखैल बासि खैक आदि,
स्वक्षताक रस स दूर,
जीवनक मकरजाल मे,
फंसल छैथ, हेराइल छैथ,

(दू)

आतंक मुक्ति अभियान

उठूँ धरा के अमर सपूत,
नवयुग के निर्माण करुँ।
भुतल सऽ आतंक मिटा कऽ
भवजन के कल्याण करुँ॥
हुएँ ने कहीं संहार निरर्थक

अन्हारे हाथे लोटा धेलहुँ॥
आव एहन नहि खाएब जिलेवी,
हजम चूर्ण आ जमैनक सेवी।
भगवान अहाँक आमद बढ़ावथु,
आगाँ बढ़ियॉ भोज खुआबथु॥
सिद्ध अन्न खाएब अहाँ घर जहिया
उकरिन हएब भोज दोससँ तहिया।
सुनू औ कतवो वेतन बढ़तनि,
मुदा नहि खानदानी स्वभाव बदलतनि॥

(दू)

थेथर नेता



गुड्डी फॅसलै, गुड्डी फॅसलै
देखही बौआ, नेता खसलै।
जोर लगावह उठावह हिनका
साहि दहुन डूबैत केर तिनका॥
मोन कनैए, आँखि भरैए,
हिनका कारणे प्रजा मरैए।
भारी भरकम मंत्री संत्री गण,
पेट भूखल आ गहूम सड़ैए॥
आइ सी.सी आ एफसी आइ,
कतेको आइ मे 'यू' निमत्ता।
एक मासमे बनौता दिल्ली,
तोड़ि जोड़ि मचोड़ि केर सत्ता॥
हऽर घऽर आ बेट खरिहार,
मंत्री रहितो ज्योतिष केर जान।
कुटिल मुस्कान लए सदन चलावथि,
भोजन पानि विनु गंगा स्नान॥
हमर सनेश ई सभ जनता केर,
मंहगी बढ़त सम्हारू धोती।
लोकक गरदनिमे फांस लगौलनि,
पहिरथि अपने माला मोती॥
कहथि सुदामा सुनू मुरारी,
एहन थेथर नेता नहि भारी।
बुद्धि हरण भेल भूखे मरै छी,
दौड़ू लाऊ संग सस्ता थारी॥

– गाम,पोस्ट– करियन,
भाया– इलमासपुर, जिला– समस्तीपुर

दूटा कविता – पंकज कुमार झा

(एक)

अईंखक दोख आ कि ह्दयक.....

अईंखक कोन दोख,
जे अहाँक सुन्दरता नई देखलक,
ओ त देखै टा मात्र छै,
बुझै नई छै,
बिम्ब आ प्रतिबिम्बक,
बिच फंसल मात्र एकटा पराबर्तक छै,
दोस त ह्दय के छै,
जे भावना शुन्य छै,
तैं अहाँक सुन्दरताक झीलों मे,
मरुभुमिक दग्धातक देखै छै,
ओना जे आन्हरो छैथ,
से कल्पनाक ब्रश स,
सुन्दरताक सृजन ह्दयक भाव स करैत छैथ,
मुदा !
जे भाव विहीन छैथ,
अईंख रहितो,
बिम्ब–प्रतिबिम्ब मे ओझराइल रहैत छैथ,
अई मे हुनको कोनो दोख नई,
जे भाव विहीन छैथ,
यन्त्र बनी बरद जँका,
जीवनक दाउन मे लागल छैथ,
हुनका त आभासों नई छैन,
कि अहू स बिशेष किछ छैई,
मुद्रा–मतलबक डोरी मे बन्हैल,
सुखैल बासि खैक आदि,
स्वक्षताक रस स दूर,
जीवनक मकरजाल मे,
फंसल छैथ, हेराइल छैथ,

(दू)

आतंक मुक्ति अभियान

उठूँ धरा के अमर सपूत,
नवयुग के निर्माण करुँ।
भुतल सऽ आतंक मिटा कऽ
भवजन के कल्याण करुँ॥
हुएँ ने कहीं संहार निरर्थक

अन्हारे हाथे लोटा धेलहुँ॥
आव एहन नहि खाएब जिलेवी,
हजम चूर्ण आ जमैनक सेवी।
भगवान अहाँक आमद बढ़ावथु,
आगाँ बढ़ियाँ भोज खुआबथु॥
सिद्ध अन्न खाएब अहाँ घर जहिया
उकरिन हएब भोज दोससँ तहिया।
सुनू औ कतवो वेतन बढ़तनि,
मुदा नहि खानदानी स्वभाव बदलतनि॥

(दू)

थेथर नेता



गुड्डी फॅसलै, गुड्डी फॅसलै
देखही बौआ, नेता खसलै।
जोर लगावह उठावह हिनका
साहि दहुन डूबैत केर तिनका॥
मोन कनैए, आँखि भरैए,
हिनका कारणे प्रजा मरैए।
भारी भरकम मंत्री संत्री गण,
पेट भूखल आ गहूम सड़ैए॥
आइ सी.सी आ एफसी आइ,
कतेको आइ मे 'यू' निमत्ता।
एक मासमे बनौता दिल्ली,
तोड़ि जोड़ि मचोड़ि केर सत्ता॥
हऽर घऽर आ बेट खरिहार,
मंत्री रहितो ज्योतिष केर जान।
कुटिल मुस्कान लए सदन चलावथि,
भोजन पानि विनु गंगा स्नान॥
हमर सनेश ई सभ जनता केर,
मंहगी बढ़त सम्हारू धोती।
लोकक गरदनिमे फांस लगौलनि,
पहिरथि अपने माला मोती॥
कहथि सुदामा सुनू मुरारी,
एहन थेथर नेता नहि भारी।
बुद्धि हरण भेल भूखे मरै छी,
दौड़ू लाऊ संग सस्ता थारी॥

- गाम,पोस्ट- करियन,
भाया- इलमासपुर, जिला- समस्तीपुर

दूटा कविता - पंकज कुमार झा

(एक)

अईंखक दोख आ कि हृदयक.....

अईंखक कोन दोख,
जे अहाँक सुन्दरता नई देखलक,
ओ त देखै टा मात्र छै,
बुझै नई छै,
बिम्ब आ प्रतिबिम्बक,
बिच फंसल मात्र एकटा पराबर्तक छै,
दोस त हृदय के छै,
जे भावना शुन्य छै,
तैं अहाँक सुन्दरताक झीलों मे,
मरुभुमिक दग्धातक देखै छै,
ओना जे आन्हरो छैथ,
से कल्पनाक ब्रश स,
सुन्दरताक सृजन हृदयक भाव स करैत छैथ,
मुदा !
जे भाव विहीन छैथ,
अईंख रहितो,
बिम्ब-प्रतिबिम्ब मे ओझराइल रहैत छैथ,
अई मे हुनको कोनो दोख नई,
जे भाव विहीन छैथ,
यन्त्र बनी बरद जँका,
जीवनक दाउन मे लागल छैथ,
हुनका त आभासों नई छैन,
कि अहू स बिशेष किछ छैई,
मुद्रा-मतलबक डोरी मे बन्हैल,
सुखैल बासि खैक आदि,
स्वक्षताक रस स दूर,
जीवनक मकरजाल मे,
फंसल छैथ, हेराइल छैथ,

(दू)

आतंक मुक्ति अभियान

उठूँ धरा के अमर सपूत,
नवयुग के निर्माण करुँ।
भुतल सऽ आतंक मिटा कऽ
भवजन के कल्याण करुँ॥
हुएँ ने कहीं संहार निरर्थक

बेगुनाह इन्सान के।
कोख ने सुन हुए माता के
सुख सुराग सुहागिन के॥
आर्तनाद ने सुनाइ दिये
हे भगवान अनाथों के।
धर्म के रगड़ा–झगड़ा के
टक्कर कुत्सित स्वार्थ के॥
सह अस्तित्व भावना पनपे
एहन शृष्टि विधान करुँ।
उठूँ धरा के अमर सपूत
नवयुग के निर्माण करुँ॥
हे नवयुग के नवऽ सपूत
अइ अहाँक महिमा अपरम्पार।
जगती कि? अम्बर तक अइ
आइ मचल अहाँक जयजयकार॥
अपन युवाशक्ति के युवजन
नाहक नई अहाँ बर्बाद करुँ।
उठूँ धरा के अमर सपूत
नवयुग के निर्माण करुँ॥

– पड़री (दरभंगा), बिहार
मो. 09507429158

यक्ष प्रश्न

– डॉ. नीरा मिश्र



एखनहुँ
मह–मह करैत अछि
महुआ–घटवारिनक कथा
कोशीक अंचल मे
गुलाब बाग भेलाक
बीच
विद्यापति गीनत गबैत
मिरदंगिया एखनहुँ
भाव विभोर भऽ जाइछ
तिलकोराक पात
ओहने कुरकुर
सरिसबक फूल
ओहने पीयर
हरसिंहारक फूलमं
वैह गमगमी
गहुमाक धारक
उएह स्वरूप
कमला कात मे
ओहने काकली
गाछ–पात
घर–आँगन
सर–समांग
सब किछु ओहने
कनेक चेतु!
किएक बदलल
जा रहल
अपन भाषा
अपन मैथिली?'

दूटा कविता – रामसेवक ठाकुर

(एक)

गीत

मिथिला मे जे बास करैये, यवनो डोम, चमार।
मैथिली कोइखक समसपूते, मुसहर कैथ भुमिहार॥
मुसहर कैथ भुमिहार बात नइ ई बभनौआ
जे कहय बाभन केर भाषा, सद्यः दुष्ट बझौआ॥
महिंसक पीठ पर जे गवैये तक्कर भाषा मैथिली
हरकान्ह लऽजे बजैये तक्कर भाषा मैथिली
बाघ वोन जे घास छिलैये तक्कर भाषा मैथिली
जकर भाष मे लगनी सोहर तक्कर भाषा मैथिली॥
जै भाषा सलहेस जनैये, सैह असली मैथिली
जै भाषा मे लोरिक गरजय तक्कर भाषा मैथिली।
आन भाष कैँ जे नहि जानल से भाषा थथमारल।
तिनकहि बल ई मैथिली बगिया एखनहु अछि कुसुमायल॥

(दू)

आ धरि रहती मैथिली, ठिकेदारक मचान पर
झाजीकपान पर मिसर जीक दलान पर
पाठक जीक बथान पर, कर्ण जीक कान पर
ताहि धरि टिटियाइत रहब ताकि आसमान पर॥

जय दियौ मैथिली के मिथिलाक गाम पर
बेचनीक अंगना आ मंगला दलान पर
परिकोंछक हाट आ साहूजीक दोकान पर
यादव जीक घूर भूमिहारक बथान पर
बरैबक पान आ राजपूतक कृपाण पर
मलहोरिक माछ आ गोंढ़ियारीक मखान पर
भाषा क पैन जहन जड़ि में ढ़रेत इ
मैथिलीक झंडा ब्राह्मांड में फहरेतइ॥

— — — — —

बेगुनाह इन्सान के।
कोख ने सुन हुए माता के
सुख सुराग सुहागिन के॥
आर्तनाद ने सुनाइ दिये
हे भगवान अनाथों के।
धर्म के रगड़ा-झगड़ा के
टक्कर कुत्सित स्वार्थ के॥
सह अस्तित्व भावना पनपे
एहन शृष्टि विधान करुँ।
उठूँ धरा के अमर सपूत
नवयुग के निर्माण करुँ॥
हे नवयुग के नवऽ सपूत
अइ अहाँक महिमा अपरम्पार।
जगती कि? अम्बर तक अइ
आइ मचल अहाँक जयजयकार॥
अपन युवाशक्ति के युवजन
नाहक नई अहाँ बर्बाद करुँ।
उठूँ धरा के अमर सपूत
नवयुग के निर्माण करुँ॥

- पड़री (दरभंगा), बिहार
मो. 09507429158

यक्ष प्रश्न

- डॉ. नीरा मिश्र



एखनहुँ
मह-मह करैत अछि
महुआ-घटवारिनक कथा
कोशीक अंचल मे
गुलाब बाग भेलाक
बीच
विद्यापति गीनत गबैत
मिरदंगिया एखनहुँ
भाव विभोर भऽ जाइछ
तिलकोराक पात
ओहने कुरकुर
सरिसबक फूल
ओहने पीयर
हरसिंहारक फूलमं
वैह गमगमी
गहुमाक धारक
उएह स्वरूप
कमला कात मे
ओहने काकली
गाछ-पात
घर-आँगन
सर-समांग
सब किछु ओहने
कनेक चेतु!
किएक बदलल
जा रहल
अपन भाषा
अपन मैथिली?'

दूटा कविता - रामसेवक ठाकुर

(एक)

गीत

मिथिला मे जे बास करैये, यवनो डोम, चमार।
मैथिली कोइखक समसपूते, मुसहर कैथ भुमिहार॥
मुसहर कैथ भुमिहार बात नइ ई बभनौआ
जे कहय बाभन केर भाषा, सद्य: दुष्ट बझौआ॥
महिंसक पीठ पर जे गवैये तक्कर भाषा मैथिली
हरकान्ह लऽजे बजैये तक्कर भाषा मैथिली
बाघ वोन जे घास छिलैये तक्कर भाषा मैथिली
जकर भाष मे लगनी सोहर तक्कर भाषा मैथिली॥
जै भाषा सलहेस जनैये, सैह असली मैथिली
जै भाषा मे लोरिक गरजय तक्कर भाषा मैथिली।
आन भाष कैँ जे नहि जानल से भाषा थथमारल।
तिनकहि बल ई मैथिली बगिया एखनहु अछि कुसुमायल॥

(दू)

आ धरि रहती मैथिली, ठिकेदारक मचान पर
झाजीकपान पर मिसर जीक दलान पर
पाठक जीक बथान पर, कर्ण जीक कान पर
ताहि धरि टिटियाइत रहब ताकि आसमान पर॥

जय दियौ मैथिली के मिथिलाक गाम पर
बेचनीक अंगना आ मंगला दलान पर
परिकोंछक हाट आ साहूजीक दोकान पर
यादव जीक घूर भूमिहारक बथान पर
बरैबक पान आ राजपूतक कृपाण पर
मलहोरिक माछ आ गोंढ़ियारीक मखान पर
भाषा क पैन जहन जड़ि में ढ़रेत इ
मैथिलीक झंडा ब्राह्मांड में फहरेतइ॥

— — — — —

बेगुनाह इन्सान के।
कोख ने सुन हुए माता के
सुख सुराग सुहागिन के॥
आर्तनाद ने सुनाइ दिये
हे भगवान अनाथों के।
धर्म के रगड़ा-झगड़ा के
टक्कर कुत्सित स्वार्थ के॥
सह अस्तित्व भावना पनपे
एहन शृष्टि विधान करुँ।
उठूँ धरा के अमर सपूत
नवयुग के निर्माण करुँ॥
हे नवयुग के नवऽ सपूत
अइ अहाँक महिमा अपरम्पार।
जगती कि? अम्बर तक अइ
आइ मचल अहाँक जयजयकार॥
अपन युवाशक्ति के युवजन
नाहक नई अहाँ बर्बाद करुँ।
उठूँ धरा के अमर सपूत
नवयुग के निर्माण करुँ॥

- पड़री (दरभंगा), बिहार
मो. 09507429158

यक्ष प्रश्न

- डॉ. नीरा मिश्र



एखनहुँ
मह-मह करैत अछि
महुआ-घटवारिनक कथा
कोशीक अंचल मे
गुलाब बाग भेलाक
बीच
विद्यापति गीनत गबैत
मिरदंगिया एखनहुँ
भाव विभोर भऽ जाइछ
तिलकोराक पात
ओहने कुरकुर
सरिसबक फूल
ओहने पीयर
हरसिंहारक फूलमं
वैह गमगमी
गहुमाक धारक
उएह स्वरूप
कमला कात मे
ओहने काकली
गाछ-पात
घर-आँगन
सर-समांग
सब किछु ओहने
कनेक चेतु!
किएक बदलल
जा रहल
अपन भाषा
अपन मैथिली?'

दूटा कविता - रामसेवक ठाकुर

(एक)

गीत

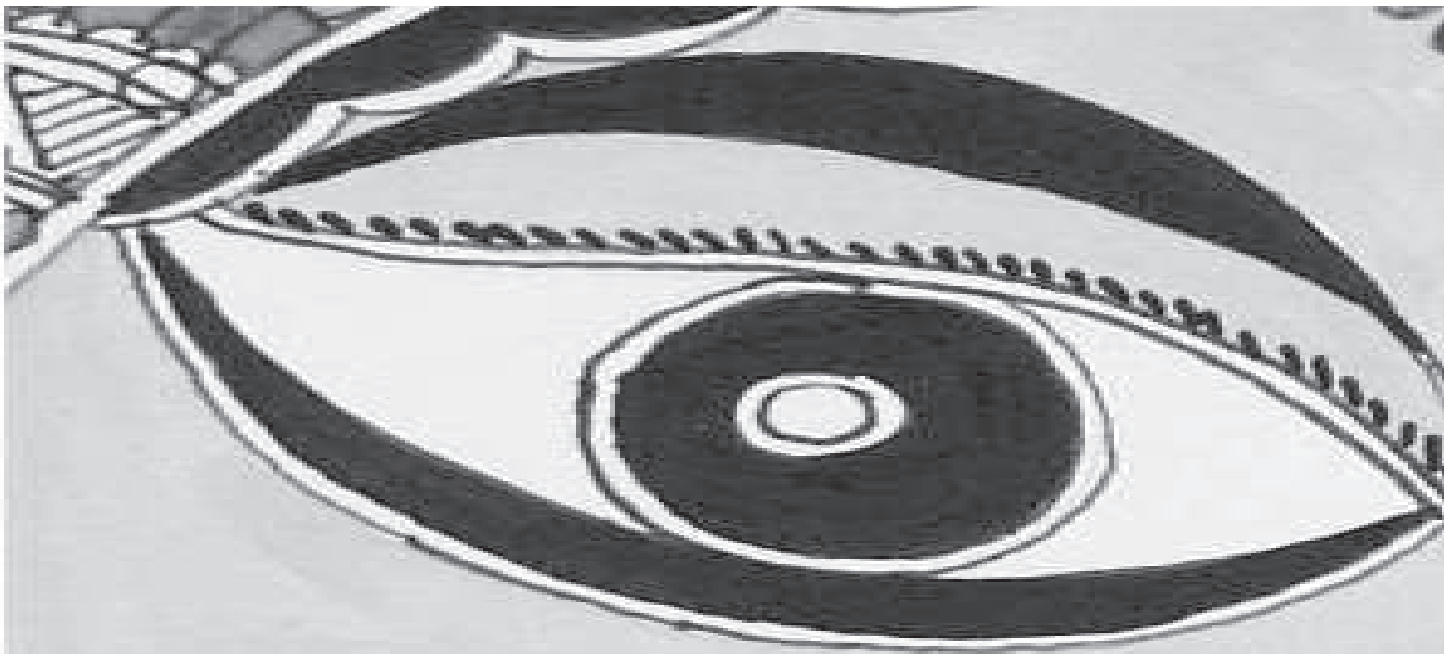
मिथिला मे जे बास करैये, यवनो डोम, चमार।
मैथिली कोइखक समसपूते, मुसहर कैथ भुमिहार॥
मुसहर कैथ भुमिहार बात नइ ई बभनौआ
जे कहय बाभन केर भाषा, सद्य: दुष्ट बझौआ॥
महिंसक पीठ पर जे गवैये तक्कर भाषा मैथिली
हरकान्ह लऽजे बजैये तक्कर भाषा मैथिली
बाघ वोन जे घास छिलैये तक्कर भाषा मैथिली
जकर भाष मे लगनी सोहर तक्कर भाषा मैथिली॥
जै भाषा सलहेस जनैये, सैह असली मैथिली
जै भाषा मे लोरिक गरजय तक्कर भाषा मैथिली।
आन भाष कैँ जे नहि जानल से भाषा थथमारल।
तिनकहि बल ई मैथिली बगिया एखनहु अछि कुसुमायल॥

(दू)

आ धरि रहती मैथिली, ठिकेदारक मचान पर
झाजीकपान पर मिसर जीक दलान पर
पाठक जीक बथान पर, कर्ण जीक कान पर
ताहि धरि टिटियाइत रहब ताकि आसमान पर॥

जय दियौ मैथिली के मिथिलाक गाम पर
बेचनीक अंगना आ मंगला दलान पर
परिकोंछक हाट आ साहूजीक दोकान पर
यादव जीक घूर भूमिहारक बथान पर
बरैबक पान आ राजपूतक कृपाण पर
मलहोरिक माछ आ गोंढ़ियारीक मखान पर
भाषा क पैन जहन जड़ि में ढ़रेत इ
मैथिलीक झंडा ब्राह्मांड में फहरेतइ॥

— — — — —



¥ÂÚæçÁÌæ

– रामजकमल चौधरी

हमर अभिन्न मित्र नागदत्त अपन घरवाली कँ अपराजिता कहैछ। किएक, से कि सोचलो उत्तर एखन धरि बूझस मे आयल अछि? हम धरि हुनका अन्नपूर्णा भौजी कहैत छियनि। जर्दा लेल बड्ड छिछिआयल रही आ ओ खास अवसर पर संकट–मोचन रहथि। ओहुना हमरा मैथिल–बाला सभ मे अन्नपूर्णाक रूप अधिक भेटैत अछि।

मुदा अपराजिता?

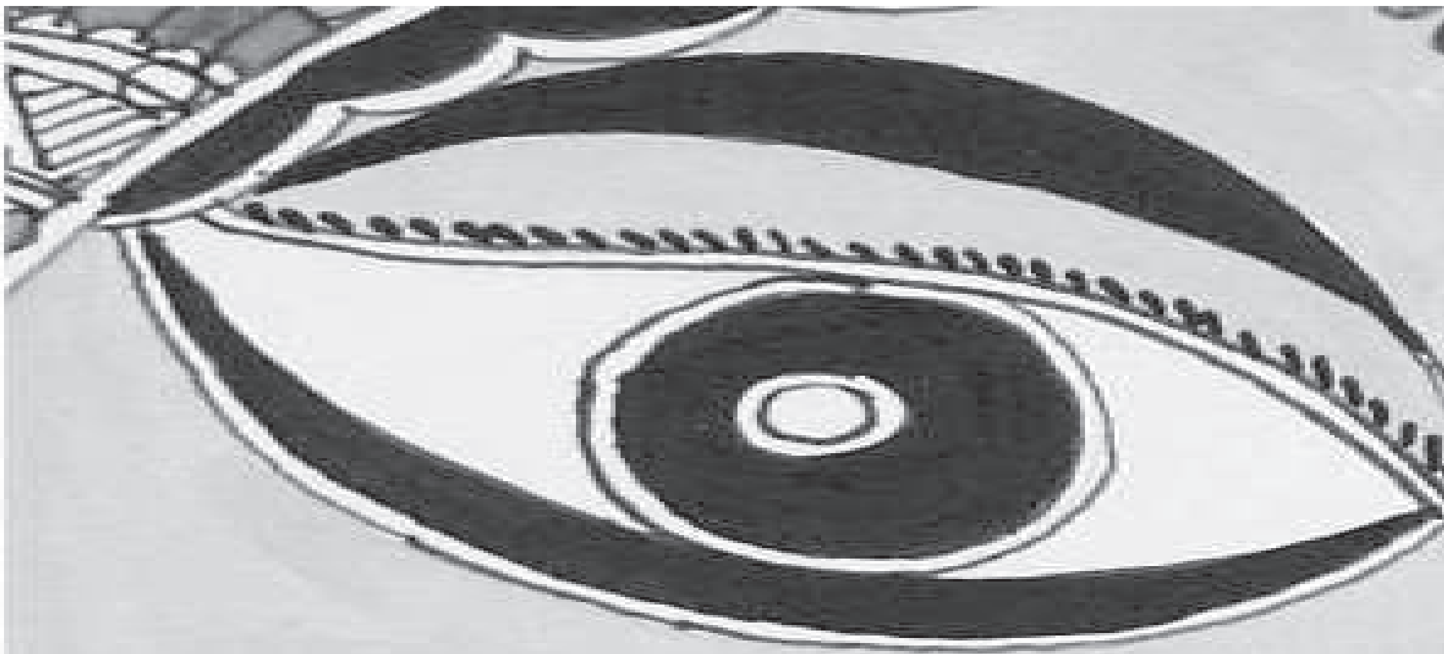
धुः! पत्नीक प्रति ई भाव तँ एक विदेशी भाव थिक। भारतीय सँ एकरा कोनो साम्य छैक? मिसियो भरि ने। भारतीया तँ बेची लाज, बन्धन, आवरण, नियम ओ उपनियम सँ तेना कए जकड़लि रहैछ जे ओ सर्वदा पराजित बनलि रहैछ।

एही सभ मे दहाइत–भसिआइत रही। खिड़की सँ बाहर मिथिलाक श्यामल, सोहागिन, सुहासिन धरती। ट्रेनक खिड़की सँ बाहर देखैत रही।

दिवानाथ धरि मूड़ी निहुड़ौने गारंटी ऑफ पीस मे ओझरायल छल। मुक्ती बाबू ट्रेनक हड़ड़–हड़ड़ मे ताल दैत विद्यापतिक पाँती गबैत रहथि, सखि हे, हमर दुखक नहि ओर।

नागदत्त अपना लगक मोसाफिर संगेँ जोर–जोर सँ बजैत रहय, नइँ महाराज... आन देश मे ई हाल नइँ छैक...अही ठाँम रूस मे देखिऔक गए। विज्ञानक जोर सँ मनुक्ख नदीक धरि कँ अपन इच्छानुसार मोड़ि देलक अछि।

इन्टरक एहि डिब्बा मे आनो–आन यात्री



¥ÂÚæçÁÌæ

– **रामजकमल चौधरी**

हमर अभिन्न मित्र नागदत्त अपन घरवाली कैँ अपराजिता कहैछ। किएक, से कि सोचलो उत्तर एखन धरि बूझस मे आयल अछि? हम धरि हुनका अन्नपूर्णा भौजी कहैत छियनि। जर्दा लेल बड्ड छिछिआयल रही आ ओ खास अवसर पर संकट–मोचन रहथि। ओहुना हमरा मैथिल–बाला सभ मे अन्नपूर्णाक रूप अधिक भेटैत अछि।

मुदा अपराजिता?

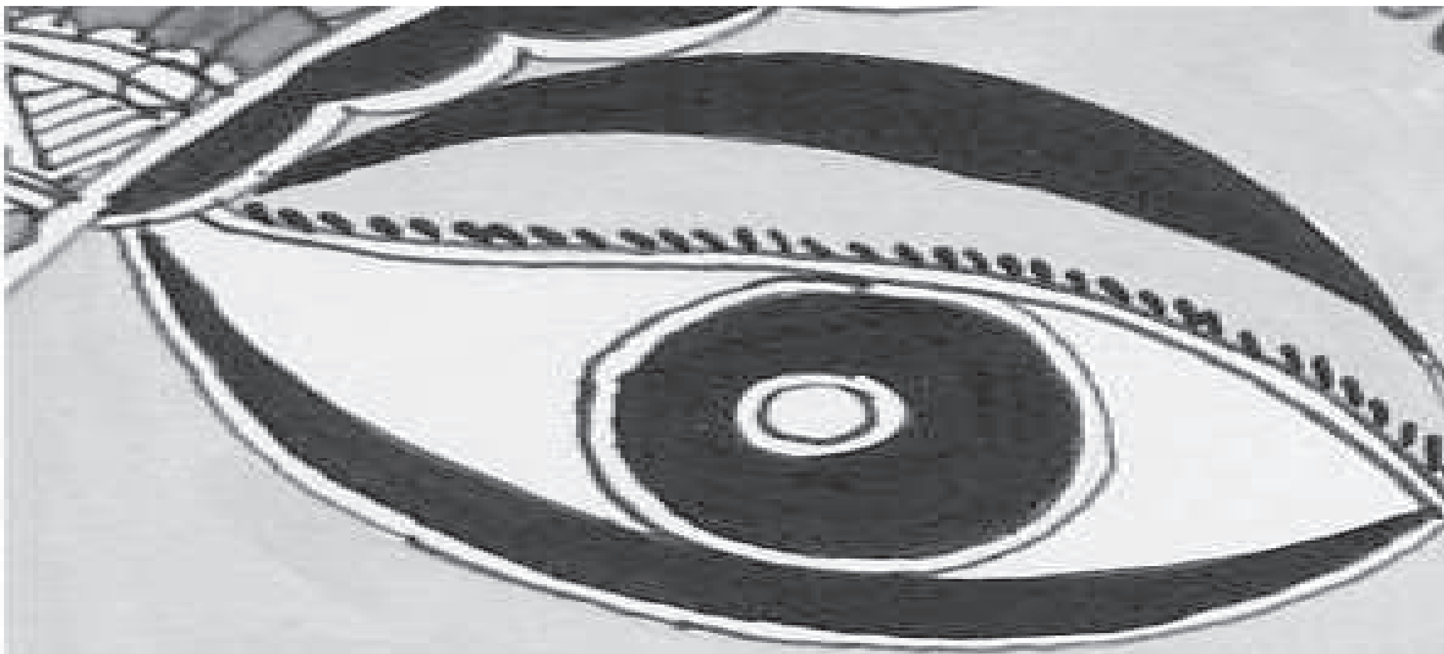
धु:! पत्नीक प्रति ई भाव तँ एक विदेशी भाव थिक। भारतीय सँ एकरा कोनो साम्य छैक? मिसियो भरि ने। भारतीया तँ बेची लाज, बन्धन, आवरण, नियम ओ उपनियम सँ तेना कए जकड़लि रहैछ जे ओ सर्वदा पराजित बनलि रहैछ।

एही सभ मे दहाइत–भसिआइत रही। खिड़की सँ बाहर मिथिलाक श्यामल, सोहागिन, सुहासिन धरती। ट्रेनक खिड़की सँ बाहर देखैत रही।

दिवानाथ धरि मूड़ी निहुड़ौने गारंटी ऑफ पीस मे ओझरायल छल। मुक्ती बाबू ट्रेनक हड़ड़–हड़ड़ मे ताल दैत विद्यापतिक पाँती गबैत रहथि, सखि हे, हमर दुखक नहि ओर।

नागदत्त अपना लगक मोसाफिर संगेँ जोर–जोर सँ बजैत रहय, नइँ महाराज... आन देश मे ई हाल नइँ छैक...अही ठाँम रूस मे देखिऔक गए। विज्ञानक जोर सँ मनुक्ख नदीक धरि कैँ अपन इच्छानुसार मोड़ि देलक अछि।

इन्टरक एहि डिब्बा मे आनो–आन यात्री



¥ÂÚæçÁÌæ

– **रामजकमल चौधरी**

हमर अभिन्न मित्र नागदत्त अपन घरवाली केँ अपराजिता कहैछ। किएक, से कि सोचलो उत्तर एखन धरि बूझस मे आयल अछि? हम धरि हुनका अन्नपूर्णा भौजी कहैत छियनि। जर्दा लेल बड्ड छिछिआयल रही आ ओ खास अवसर पर संकट–मोचन रहथि। ओहुना हमरा मैथिल–बाला सभ मे अन्नपूर्णाक रूप अधिक भेटैत अछि।

मुदा अपराजिता?

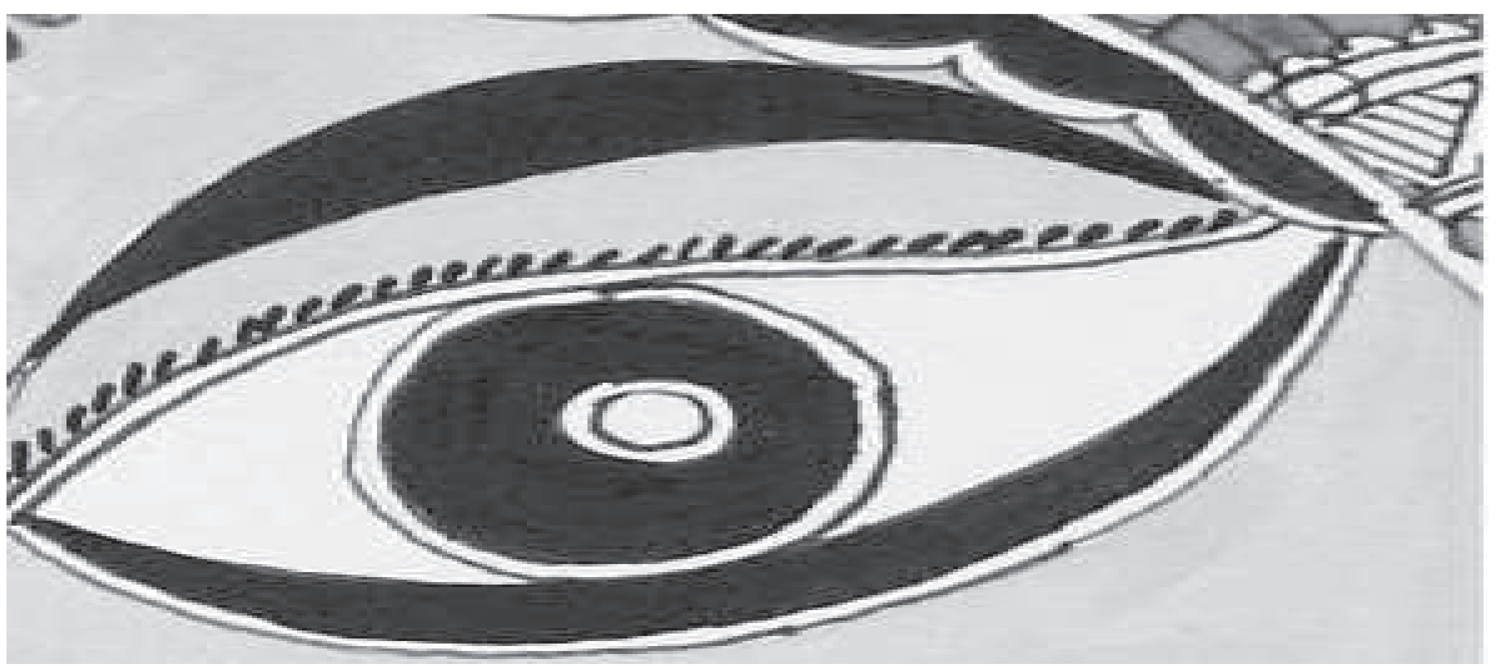
धु:! पत्नीक प्रति ई भाव तँ एक विदेशी भाव थिक। भारतीय सँ एकरा कोनो साम्य छैक? मिसियो भरि ने। भारतीया तँ बेची लाज, बन्धन, आवरण, नियम ओ उपनियम सँ तेना कए जकड़लि रहैछ जे ओ सर्वदा पराजित बनलि रहैछ।

एही सभ मे दहाइत–भसिआइत रही। खिड़की सँ बाहर मिथिलाक श्यामल, सोहागिन, सुहासिन धरती। ट्रेनक खिड़की सँ बाहर देखैत रही।

दिवानाथ धरि मूड़ी निहुड़ौने गारंटी ऑफ पीस मे ओझरायल छल। मुक्ती बाबू ट्रेनक हड़ड़–हड़ड़ मे ताल दैत विद्यापतिक पाँती गबैत रहथि, सखि हे, हमर दुखक नहि ओर।

नागदत्त अपना लगक मोसाफिर संगेँ जोर–जोर सँ बजैत रहय, नइँ महाराज... आन देश मे ई हाल नइँ छैक...अही ठाँम रूस मे देखिऔक गए। विज्ञानक जोर सँ मनुक्ख नदीक धरि केँ अपन इच्छानुसार मोड़ि देलक अछि।

इन्टरक एहि डिब्बा मे आनो–आन यात्री



सभ अपन-अपन गप्प सभ मे तल्लीन रहथि। एकटा बूढ़ दरोगा साहेब अपन सहगामी कैँ कोनो रोमांचकारी डकैतीक खिस्सा कहैत रहथिन। एकटा सेठ अपन अधवयसू मुनीम कैँ सोना-चानीक तेजी-मन्दीक कारण बुझा रहल छलाह, लगहि मे हुनक पत्नी घोघ तनने बैसलि छलीह। ट्रेन समस्तीपुर सँ फूजल। कैप्सटनक डिब्बासँ अन्तिम सिकरेट बहार कए दिवानाथ सुनगाबए चाहैत रहय...सलाइयो रहैक लगहि मे ...मुदा ओ तँ रहय अपन गारंटी ऑफ पीस मे ओझरायल। हमरा हँसी लागल। हम हँसए लगलहुँ। मुक्तीबाबू दोसर गीत गाबए लगलाह, मानिनि आब उचित नहि मान!

हठात खिड़कीसँ हुलकि दिवानाथ चिचिआयल, देख, मणि...देख...अपराजिताक ताण्डव! सभ गोटा हुलकी मारै लागल। सभक आँखि विस्मय-विस्फारित!

गंटी ऑफ पीस खतम छल...विद्यापतिक गीत खतम छल। रूसक कथा खतम छल। डकैतीक कथा थम्हि गेल...सोना-चानीक तेजी-मन्दी सेहो बन्द भऽ गेल रहय। सिकरेटक लगातार धुँआ रहि गेल आ रहि गेल अपराजिता!

सरिपहुँ... बागमती, कमला, बलान, गंडक आ खास कऽ कऽ कोसी तँ अपराजिता अछि ने! ककरो सामर्थ नहि जे एकरा पराजित कऽ सकय। सरकार आओत...चलि जायत..मिनिस्टरी बनत आ टूटत, मुदा ई कोसी...ई बागमती...ई कमला आ बलान...अपन एही प्रलयंकी गति मे गाम कैँ भसिअबैत, हरिअर-हरिअर खेत कैँ उज्जर करैत, माल-जालकैँ नाश करैत, घर-द्वक सत्यानाश करैत बहैत रहत आ बहैत रहत।

वेद मे नदी कैँ मनुक्खक सेविका कहलकैक अछि...मनुक्खक पत्नी कहलकैक अछि...

मुदा,

बहुओ भऽ कऽ कोसी आ बागमती अपराजिता अछि...

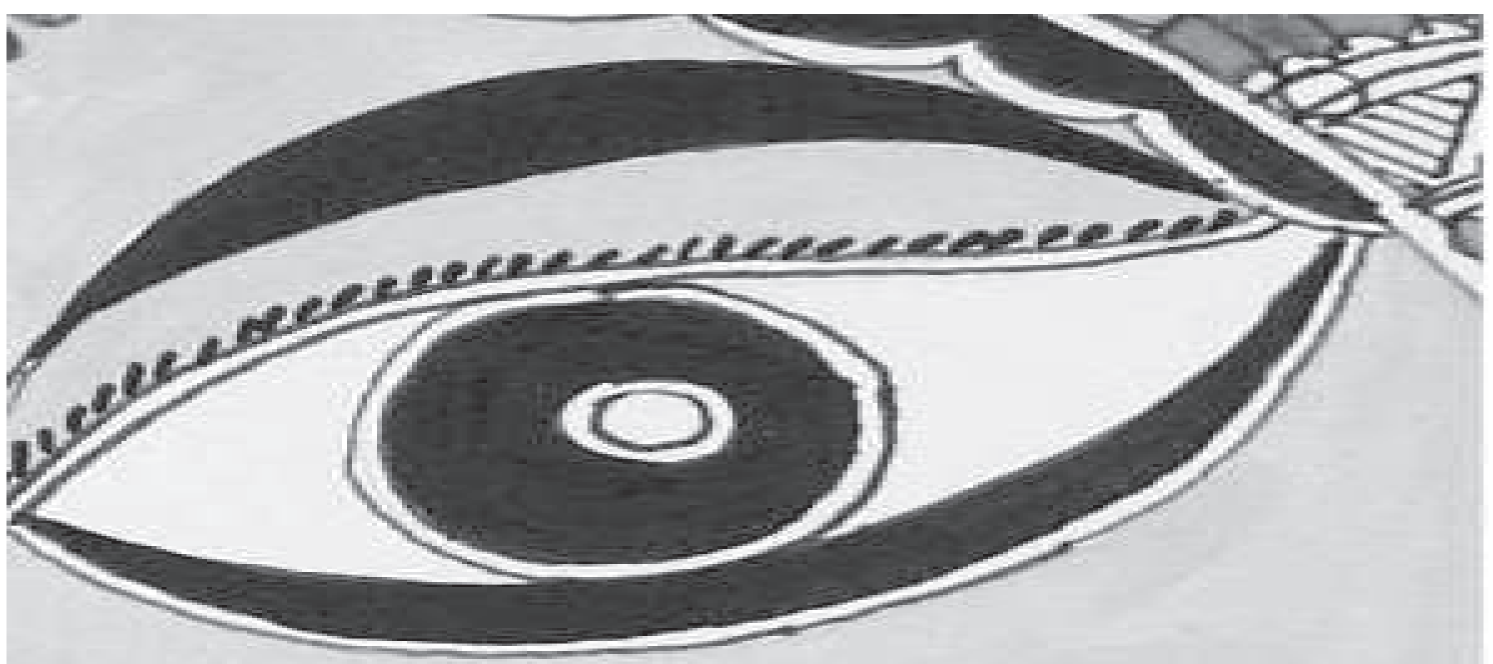
अन्नपूर्णा कहाँ?

रेलवी-सड़कक दुहू कात कोसक कोस पसरल अबाध जल-प्रवाह! दुहू क्षितिज कैँ छुबैत जलक धार!

लगैत अछि, हम सभ ट्रेनपर नहि, मने जहाजपर बैसल होइ। जेना चारू कात विशाल, विकराल, विराट समुद्र हो जे हमर अस्तित्व पर्यन्तकैँ डुबा देलक अछि!, बाजल दिवानाथ। मुक्ती टिपलक, मणि भाइ, कते गामक तँ कोनो थाहो-पता ने लगैत छैक जे एतऽ कहिओ कोनो गामो रहैक। जतऽ ईंटाक पोखरापाटन हवेली रहैक ततऽ की छैक? महाविशाल मोइन आ कुण्ड! जतऽ खेत आ खरिहान रहैक ओहि ठाँ गण्डकी नंगटे नचैए...खरिहानक नाच नहि, श्मसानक नाच!

हाथक ब्लिज कैँ तह दैत एकटा सज्जन बजलाह, आ बाबू...सरकार तँ पटना आ दिल्लीक सचिवालय मे बिजलीक पंखा आ स्प्रिंगदार सोफाक बीच सूतल अछि। मिथिला वा भोजपुर भसिआइए गेल तँ ओकरा की? कोसी सर्वनाशे करइए तँ ओकरा की? ओ तँ इण्डियाक फारेन-पालिसी सोचैत अछि। भीतर सँ भार खुक्ख भऽ रहल अछि...कोकनि रहल अछि, मुदा ओ यू.एन.ओ.क कुर्सी बचाबक फिकिर मे अपस्याँत अछि। दरोगाजी कनिएँ उकडू भऽ बैसि गेलाह आ कान पाथि हमरा लोकनिक गप्प सुनऽ लगलाह। सेठजी अपन धर्मपत्नी दिस व्यग्र भावेँ ताकि बजलाह, रधिया की माँ...जरा इलायची तो देना...सर चकरा रहा है।

दाँत कीचि दिवानाथ गुम्हड़ल- गारंटी ऑफ पीस!! हम सोचलहुँ, हमर देश मे जे गारंटी ऑफ पीस दऽ सकैछ से तँ लालकिलाक मुरेड़ा पर खजबा टोपी, करिया अचकन...चुननद पैजामा पहिरने तिनरंगा छत्ता तनने आराम सँ पड़ल अछि! आ भगवान सँ



सभ अपन-अपन गप्प सभ मे तल्लीन रहथि। एकटा बूढ़ दरोगा साहेब अपन सहगामी कैँ कोनो रोमांचकारी डकैतीक खिस्सा कहैत रहथिन। एकटा सेठ अपन अधवयसू मुनीम कैँ सोना-चानीक तेजी-मन्दीक कारण बुझा रहल छलाह, लगहि मे हुनक पत्नी घोघ तनने बैसलि छलीह। ट्रेन समस्तीपुर सँ फूजल। कैप्सटनक डिब्बासँ अन्तिम सिकरेट बहार कए दिवानाथ सुनगाबए चाहैत रहय...सलाइयो रहैक लगहि मे ...मुदा ओ तँ रहय अपन गारंटी ऑफ पीस मे ओझरायल। हमरा हँसी लागल। हम हँसए लगलहुँ। मुक्तीबाबू दोसर गीत गाबए लगलाह, मानिनि आब उचित नहि मान!

हठात खिड़कीसँ हुलकि दिवानाथ चिचिआयल, देख, मणि...देख...अपराजिताक ताण्डव! सभ गोटा हुलकी मारै लागल। सभक आँखि विस्मय-विस्फारित!

गंटी ऑफ पीस खतम छल...विद्यापतिक गीत खतम छल। रूसक कथा खतम छल। डकैतीक कथा थम्हि गेल...सोना-चानीक तेजी-मन्दी सेहो बन्द भऽ गेल रहय। सिकरेटक लगातार धुँआ रहि गेल आ रहि गेल अपराजिता!

सरिपहुँ... बागमती, कमला, बलान, गंडक आ खास कऽ कऽ कोसी तँ अपराजिता अछि ने! ककरो सामर्थ नहि जे एकरा पराजित कऽ सकय। सरकार आओत...चलि जायत..मिनिस्टरी बनत आ टूटत, मुदा ई कोसी...ई बागमती...ई कमला आ बलान...अपन एही प्रलयंकी गति मे गाम कैँ भसिअबैत, हरिअर-हरिअर खेत कैँ उज्जर करैत, माल-जालकैँ नाश करैत, घर-द्वरक सत्यानाश करैत बहैत रहत आ बहैत रहत।

वेद मे नदी कैँ मनुक्खक सेविका कहलकैक अछि...मनुक्खक पत्नी कहलकैक अछि...

मुदा,

बहुओ भऽ कऽ कोसी आ बागमती अपराजिता अछि...

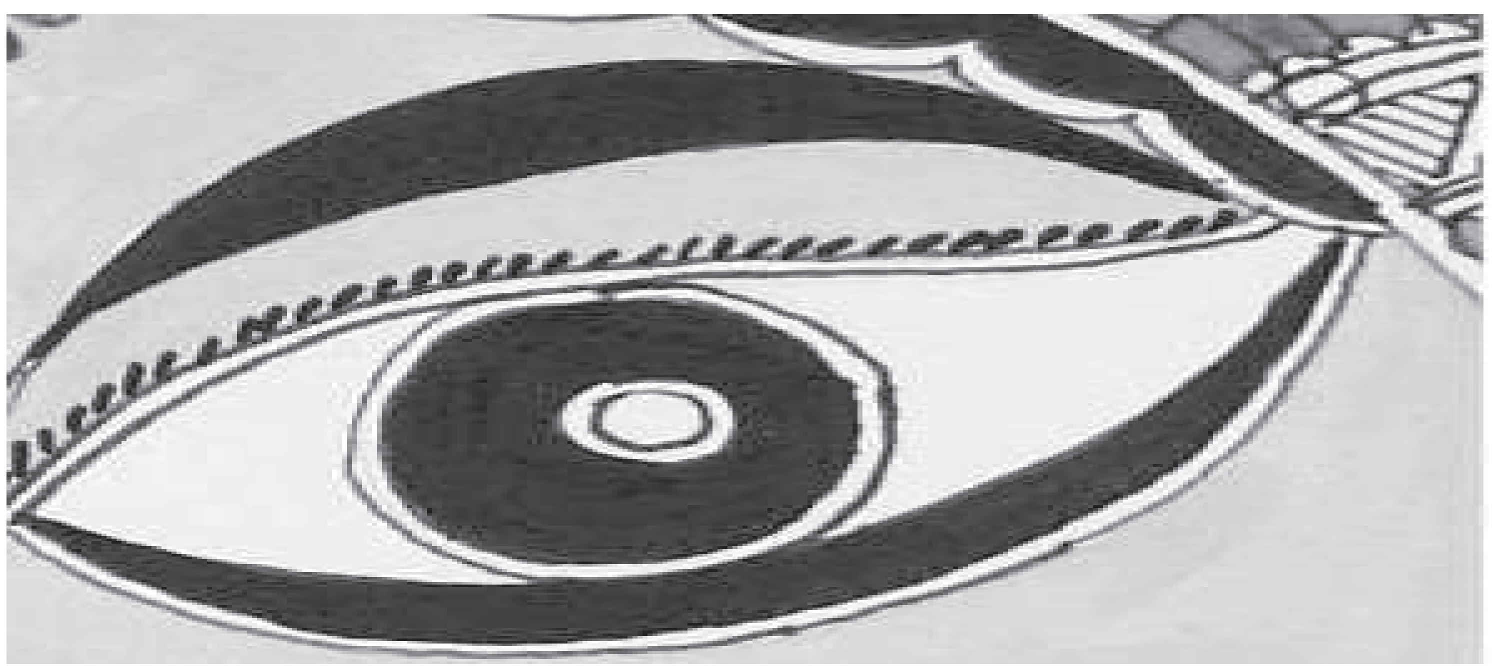
अन्नपूर्णा कहाँ?

रेलवी-सड़कक दुहू कात कोसक कोस पसरल अबाध जल-प्रवाह! दुहू क्षितिज कैँ छुबैत जलक धार!

लगैत अछि, हम सभ ट्रेनपर नहि, मने जहाजपर बैसल होइ। जेना चारू कात विशाल, विकराल, विराट समुद्र हो जे हमर अस्तित्व पर्यन्तकैँ डुबा देलक अछि!, बाजल दिवानाथ। मुक्ती टिपलक, मणि भाइ, कते गामक तँ कोनो थाहो-पता ने लगैत छैक जे एतऽ कहिओ कोनो गामो रहैक। जतऽ ईंटाक पोखरापाटन हवेली रहैक ततऽ की छैक? महाविशाल मोइन आ कुण्ड! जतऽ खेत आ खरिहान रहैक ओहि ठाँ गण्डकी नंगटे नचैए...खरिहानक नाच नहि, श्मसानक नाच!

हाथक ब्लिज कैँ तह दैत एकटा सज्जन बजलाह, आ बाबू...सरकार तँ पटना आ दिल्लीक सचिवालय मे बिजलीक पंखा आ स्प्रिंगदार सोफाक बीच सूतल अछि। मिथिला वा भोजपुर भसिआइए गेल तँ ओकरा की? कोसी सर्वनाशे करइए तँ ओकरा की? ओ तँ इण्डियाक फारेन-पालिसी सोचैत अछि। भीतर सँ भार खुक्ख भऽ रहल अछि...कोकनि रहल अछि, मुदा ओ यू.एन.ओ.क कुर्सी बचाबक फिकिर मे अपस्याँत अछि। दरोगाजी कनिएँ उकड़ू भऽ बैसि गेलाह आ कान पाथि हमरा लोकनिक गप्प सुनऽ लगलाह। सेठजी अपन धर्मपत्नी दिस व्यग्र भावैँ ताकि बजलाह, रधिया की माँ...जरा इलायची तो देना...सर चकरा रहा है।

दाँत कीचि दिवानाथ गुम्हड़ल- गारंटी ऑफ पीस!! हम सोचलहुँ, हमर देश मे जे गारंटी ऑफ पीस दऽ सकैछ से तँ लालकिलाक मुरेड़ा पर खजबा टोपी, करिया अचकन...चुननद पैजामा पहिरने तिनरंगा छत्ता तनने आराम सँ पड़ल अछि! आ भगवान सँ



सभ अपन-अपन गप्प सभ मे तल्लीन रहथि। एकटा बूढ़ दरोगा साहेब अपन सहगामी कैँ कोनो रोमांचकारी डकैतीक खिस्सा कहैत रहथिन। एकटा सेठ अपन अधवयसू मुनीम कैँ सोना-चानीक तेजी-मन्दीक कारण बुझा रहल छलाह, लगहि मे हुनक पत्नी घोघ तनने बैसलि छलीह। ट्रेन समस्तीपुर सँ फूजल। कैप्सटनक डिब्बासँ अन्तिम सिकरेट बहार कए दिवानाथ सुनगाबए चाहैत रहय...सलाइयो रहैक लगहि मे ...मुदा ओ तँ रहय अपन गारंटी ऑफ पीस मे ओझरायल। हमरा हँसी लागल। हम हँसए लगलहुँ। मुक्तीबाबू दोसर गीत गाबए लगलाह, मानिनि आब उचित नहि मान!

हठात खिड़कीसँ हुलकि दिवानाथ चिचिआयल, देख, मणि...देख...अपराजिताक ताण्डव! सभ गोटा हुलकी मारै लागल। सभक आँखि विस्मय-विस्फारित!

गंटी ऑफ पीस खतम छल...विद्यापतिक गीत खतम छल। रूसक कथा खतम छल। डकैतीक कथा थम्हि गेल...सोना-चानीक तेजी-मन्दी सेहो बन्द भऽ गेल रहय। सिकरेटक लगातार धुँआ रहि गेल आ रहि गेल अपराजिता!

सरिपहुँ... बागमती, कमला, बलान, गंडक आ खास कऽ कऽ कोसी तँ अपराजिता अछि ने! ककरो सामर्थ नहि जे एकरा पराजित कऽ सकय। सरकार आओत...चलि जायत..मिनिस्टरी बनत आ टूटत, मुदा ई कोसी...ई बागमती...ई कमला आ बलान...अपन एही प्रलयंकी गति मे गाम कैँ भसिअबैत, हरिअर-हरिअर खेत कैँ उज्जर करैत, माल-जालकैँ नाश करैत, घर-द्वक सत्यानाश करैत बहैत रहत आ बहैत रहत।

वेद मे नदी कैँ मनुक्खक सेविका कहलकैक अछि...मनुक्खक पत्नी कहलकैक अछि...

मुदा,

बहुओ भऽ कऽ कोसी आ बागमती अपराजिता अछि...

अन्नपूर्णा कहाँ?

रेलवी-सड़कक दुहू कात कोसक कोस पसरल अबाध जल-प्रवाह! दुहू क्षितिज कैँ छुबैत जलक धार!

लगैत अछि, हम सभ ट्रेनपर नहि, मने जहाजपर बैसल होइ। जेना चारू कात विशाल, विकराल, विराट समुद्र हो जे हमर अस्तित्व पर्यन्तकैँ डुबा देलक अछि!, बाजल दिवानाथ। मुक्ती टिपलक, मणि भाइ, कते गामक तँ कोनो थाहो-पता ने लगैत छैक जे एतऽ कहिओ कोनो गामो रहैक। जतऽ ईंटाक पोखरापाटन हवेली रहैक ततऽ की छैक? महाविशाल मोइन आ कुण्ड! जतऽ खेत आ खरिहान रहैक ओहि ठाँ गण्डकी नंगटे नचैए...खरिहानक नाच नहि, श्मसानक नाच!

हाथक ब्लिज कैँ तह दैत एकटा सज्जन बजलाह, आ बाबू...सरकार तँ पटना आ दिल्लीक सचिवालय मे बिजलीक पंखा आ स्प्रिंगदार सोफाक बीच सूतल अछि। मिथिला वा भोजपुर भसिआइए गेल तँ ओकरा की? कोसी सर्वनाशे करइए तँ ओकरा की? ओ तँ इण्डियाक फारेन-पालिसी सोचैत अछि। भीतर सँ भार खुक्ख भऽ रहल अछि...कोकनि रहल अछि, मुदा ओ यू.एन.ओ.क कुर्सी बचाबक फिकिर मे अपस्याँत अछि। दरोगाजी कनिएँ उकड़ू भऽ बैसि गेलाह आ कान पाथि हमरा लोकनिक गप्प सुनऽ लगलाह। सेठजी अपन धर्मपत्नी दिस व्यग्र भावेँ ताकि बजलाह, रधिया की माँ...जरा इलायची तो देना...सर चकरा रहा है।

दाँत कीचि दिवानाथ गुम्हड़ल- गारंटी ऑफ पीस!! हम सोचलहुँ, हमर देश मे जे गारंटी ऑफ पीस दऽ सकैछ से तँ लालकिलाक मुरेड़ा पर खजबा टोपी, करिया अचकन...चुननद पैजामा पहिरने तिनरंगा छत्ता तनने आराम सँ पड़ल अछि! आ भगवान सँ

स्वर्ग मे छथि तँ अबस्से दुनियाँ मे सभ वस्तु ठीक छैक।

यद्यपि देशक ई हालत किएक, से सभ जनैत अछि– हमहूँ..अहूँ...नेता आ जनतो! तइयो ई देश अपन दरिद्रा कैँ सोनाक पानि चढ़ाओल डिब्बी मे बन्द कऽ कऽ विदेशक प्रदर्शनीक शो–केस मे सजबैत अछि। रीढ़क अपन हाड़ तोड़ि ताजक रूप मे उपस्थित करैत अछि। फाटल–चीटल केथड़ी जोड़ि आ सजा, भटरंग कऽ प्रति पन्द्रह अगस्त कऽ शाही महल सभ पर धर्मचक्र–सज्जित तिरंगा फहरबैत अछि।

गाड़ी ठाढ़ भऽ गेलैक।

पुल रहैक कोनो मने। फेर चुट्टीक चालि मे घुसकनियाँ काटऽ लागल। सभ मोसाफिर खिड़की आ फाटक पर मुड़िआरी देने बाहर हुलकी मारए लागल–

गण्डक, बागमती, कमला आ कोसीक भयानक रूप। समुद्रक ज्वारि जकाँ विकराल ढेहु उठैत। लगैक मने सौंसे ट्रेनकैँ गीड़ि जायत! लहरिक संगहि–संग कौखन कोनो पुरना नूआक फाटल पाढ़ियुक्त भाग...कौखन काठक सनुकचाक कोनो थौआ भेल भाग...कौखन जानवरक हाड़! घरक ठाठ बहल जा रहल छल...खाट आ चौकी भसिआयल जा रहल छल...इज्जति आ प्रतिष्ठा मिथिलाक नोर मे दहायल जा रहल छल। जीवन भसिआयल जा रहल छल। सीसो–सखुआ–आमक कलमबाग आ बँसबिट्टी डूबि गेल छल।

ऊपर रहैक केवल पीतवसना नागकन्या गण्डकी अपन अति विषाक्त फुफकार छोड़ैत।

मुक्तापुर आबि गेल।

स्टेशनक चारू कात पानिएँ पानि। स्टेशन पर असंख्य गरीब किसान–बोनिह लहालोट होइत। ककरो एक मुट्ठी अन्न नहि...पाँच हाथ वस्त्र नहि...टाँग पसारि कऽ सूतक स्थान नहि। प्लाटफर्म पर आकाशक ठाठ तर असंख्य किसान–परिवार धीया–पूता भूखेँ चिकरैत...माय ओकरा घोघ तर मुँह नुकओने कनैत। एकटा कोनो कांग्रेसी सज्जन स्टेशन–मास्टर कैँ जोर–जोर सँ कहैत रहथिन, अरे, महाज...एहि मे सरकराक कोन कसूर? भगवानक लीला छनि। सरकार की जानऽ गेलैक जे एहन विशाल बाढ़ि आबि रहल छैक। ताहू पर रिलीफ कमेटी बनि रहल छैक। अगिला हप्ता मिनिस्टर लोकनिक टूर प्रोग्राम छनि। आ अलाबे एकर मुख्यमन्त्री दरभंगा, मुजफ्फरपुर आ सहरसाक कलक्टर कैँ त कहबे कयलथिन अछि जे ओ जते चाहथि रिलीफक हेतु खर्च करथि। से नहि आब की करौक?

आ सरिपहुँ सरकार खर्च करैत रहैक से हम देखलिऐक! एकटा गृहस्थ बाजल, चारिम दिन अन्न भेटल छल...मूड़ पीछू दू सेर..ओकर पहिने तँ मात्र जले टा आधार होइक। आ दू सेर चाउर कक्खन धरि? स्त्रीगणकैँ पहिरक कोनो नूआ–फट्टा नइँ। मलेरियाग्रस्त लोक कैँ लहालोट पुरिबा आ जाड़ सँ बचबए क खातिर कम्बल नहि। रेलवे कर्मचारी हाता सँ एकटा ठहुरिओ नइँ काटऽ देनिह। पूछक तँ बड़ इच्छा छल... मुदा गाड़ी फुजि गेलैक।

ब्लिज वला सज्जन बजलाह, बाबू एखन की देखलिऐक अछि, आगाँ ने चलू..किसनपुर..हायाघाट...मोहम्मदपुर..जोगिय..कमतौल दिस आर प्रलय मचल छैक। एहन कोनो परिवार नहि छैक जकर कोनो समाङ कि कोनो बच्चा कि कोनो माल नहि दहा–भसिआ गेल होइक।

हायाघाट स्टेशन! सूर्यास्तक समकाल।

डुबैत सूर्यक लालिमा प्रतीचीक जल कैँ रक्त सन बनओने। लिधुराह पानि..खुनिआ धार मुक्ती बाबू सिकरेट ताकऽ चललाह। दिवानाथ प्लेटफर्म पर अपने घर मे शरणार्थी बनल गृहविहीन सँ गप्प कऽ रहल छल। गाड़ीक इंजन मिझा गेल रहैक। लेहरियासराय सँ त अओतैक तखन ने फुजतैक गाड़ी! हमहूँ उतरलहुँ। देखलिऐक, सौंसे प्लेटफर्म पर चुट्टी ससर एक दौर पर्यन्त नइँ। अँगनइ मे बाँसक पातर सट्टा गाड़ि–गाड़ि ओहि पर पातर पुरान नूआ कि धोती टाँगि कऽ तम्बू सन बनल। एहन–एहन सैकड़ो तम्बू एक पतिआनी सँ ठाढ़। स्त्रीगण सभ लोटे–लोटे स्टेशनक नार सँ पानि अनैत रहथि आ धीया–पूता टुक–टुक ट्रेन दिस तकैत रहय। पानिक कछेड़ मे एकटा बुढ़िया बाढ़ि मे डूबल बेटाक शोक मे बताहि भेलि चिकरैत रहय। ओझरायल केश मुँह पर...नूआ–फट्टाक होस नहि...गाबि–गाबि कानय, हे गण्डक मैया...हे कमला मैया। कतऽ गेलइ हम्मर सुगवा, कतऽ गेलइ हमर लाल!

आ ओम्हर दिवानाथ बूढ़ा दरोगा साहेब कैँ बुझा रहल छलनि...मनुक्ख जे चाहय से कऽ सकैत अछि। एही ठाँ चीन कैँ देखिऔक...ओकर ह्वांगहो कोसिओ सँ भयानक रहैक। मुदा लाल क्रान्तिक दू बरखक बाद ओकरा सघन बान्ह सँ जकड़ि देलकैक, आइ ओ ह्वांगहो चीनक वरदान छैक, अभिशाप नहि। आ दिवानाथक आँखिमे लाल चिनगीक तीक्ष्ण प्रकाश आ ज्वाला। भेल जे अमृतपुत्रक एहि ज्वालामे कोसी भस्म भऽ जयतीह। मुदा एक जोड़ा आँखिक चिनगी सँ नहि। लक्ष–लक्ष जोड़ा आँखिक अंगोर सँ। हमरा एकर चतुर्दिक एहन रक्तिम दाहक चिनगीक जाल बूनऽ पड़त।

मुक्तीबाबू अधजरुआ सिकरेट हमरा दिस बढ़ा बजलाह, मणिबाबू, प्लेटफर्मक ओइ भाग तकिऔ तँ कने...कोना छागर–पाठी जकाँ लोक सभ अछि, मालगाड़ी मे कोंचल। हुँ! कोंढ़ उनटि जाइत अछि।

ट्रेन पार कऽ ओइ पार गेलहुँ। एकटा पूर्ण मालगाड़ी रहैक ठाढ़। डिब्बा मे पुरुष, मौगी, धीआ–पूता, माल–जाल सभ भरल छल। डिब्बे मे चूल्हि सुनगि रहल छल। हाँड़ी सभ चढ़ाओल जा रहल छल। कोसी आ गण्डकी मैया कैँ प्रार्थनाक कोरस सुनाओल जा रहल छलनि। हाहाकार आ रुदनक स्वर गूँजि रहल छल।

मालगाड़ीक डिब्बा सँ एकटा विद्यार्थी बहरायल...कोर मे चारि–पाँच बरखक कनटिरबी कैँ रखने। ओ छौँड़ी बड़ी–बड़ी जोर सँ हिचकैत रहैक। नागदत्त पुछलकैक, अहा–हा...किऐक औ...की भेलैक अछि...किऐक कनैत अछि?

ओ नेनिया कैँ ठोकैत बाजल, एकर माय, बाबू साहेब, डूबि गेलैक एही बाढ़ि मे। कनतैक ने तँ...? सभ गोटा निस्तब्ध भऽ गेल।

युवक बाजल, विद्यर्थी छी अहाँ लोकनि...तँ मन होइछ अहाँ लोकनि सँ गप्प करी। हम सभ एही स्टेशन सँ तीन मील पर रामपुर गामक बासी छी। आब तँ ओ बस्तिए नइँ रहलैक...। सौंसे गाम भसिया कऽ लऽ गेलैक...ई राक्षसी गण्डकी। मारिते रास लोक जमा भऽ गेल, ओकर गप्प सुनऽ लेल। दरोगा साहेब बजलाह, की सौंसे गाम?

स्वर्ग मे छथि तँ अबस्से दुनियाँ मे सभ वस्तु ठीक छैक।

यद्यपि देशक ई हालत किएक, से सभ जनैत अछि– हमहूँ..अहूँ...नेता आ जनतो! तइयो ई देश अपन दरिद्रा कँे सोनाक पानि चढ़ाओल डिब्बी मे बन्द कऽ कऽ विदेशक प्रदर्शनीक शो–केस मे सजबैत अछि। रीढ़क अपन हाड़ तोड़ि ताजक रूप मे उपस्थित करैत अछि। फाटल–चीटल केथड़ी जोड़ि आ सजा, भटरंग कऽ प्रति पन्द्रह अगस्त कऽ शाही महल सभ पर धर्मचक्र–सज्जित तिरंगा फहरबैत अछि।

गाड़ी ठाढ़ भऽ गेलैक।

पुल रहैक कोनो मने। फेर चुट्टीक चालि मे घुसकनियाँ काटऽ लागल। सभ मोसाफिर खिड़की आ फाटक पर मुड़िआरी देने बाहर हुलकी मारए लागल–

गण्डक, बागमती, कमला आ कोसीक भयानक रूप। समुद्रक ज्वारि जकाँ विकराल ढेहु उठैत। लगैक मने सौंसे ट्रेनकँे गीड़ि जायत! लहरिक संगहि–संग कौखन कोनो पुरना नूआक फाटल पाढ़ियुक्त भाग...कौखन काठक सनुकचाक कोनो थौआ भेल भाग...कौखन जानवरक हाड़! घरक ठाठ बहल जा रहल छल...खाट आ चौकी भसिआयल जा रहल छल...इज्जति आ प्रतिष्ठा मिथिलाक नोर मे दहायल जा रहल छल। जीवन भसिआयल जा रहल छल। सीसो–सखुआ–आमक कलमबाग आ बँसबिट्टी डूबि गेल छल।

ऊपर रहैक केवल पीतवसना नागकन्या गण्डकी अपन अति विषाक्त फुफकार छोड़ैत।

मुक्तापुर आबि गेल।

स्टेशनक चारू कात पानिएँ पानि। स्टेशन पर असंख्य गरीब किसान–बोनिह लहालोट होइत। ककरो एक मुट्ठी अन्न नहि...पाँच हाथ वस्त्र नहि...टाँग पसारि कऽ सूतक स्थान नहि। प्लाटफर्म पर आकाशक ठाठ तर असंख्य किसान–परिवार धीया–पूता भूखेँ चिकरैत...माय ओकरा घोघ तर मुँह नुकओने कनैत। एकटा कोनो कांग्रेसी सज्जन स्टेशन–मास्टर कँे जोर–जोर सँ कहैत रहथिन, अरे, महाज...एहि मे सरकराक कोन कसूर? भगवानक लीला छनि। सरकार की जानऽ गेलैक जे एहन विशाल बाढ़ि आबि रहल छैक। ताहू पर रिलीफ कमेटी बनि रहल छैक। अगिला हफ्ता मिनिस्टर लोकनिक टूर प्रोग्राम छनि। आ अलाबे एकर मुख्यमन्त्री दरभंगा, मुजफ्फरपुर आ सहरसाक कलक्टर कँे त कहबे कयलथिन अछि जे ओ जते चाहथि रिलीफक हेतु खर्च करथि। से नहि आब की करौक?

आ सरिपहुँ सरकार खर्च करैत रहैक से हम देखलिऐक! एकटा गृहस्थ बाजल, चारिम दिन अन्न भेटल छल...मूड़ पीछू दू सेर..ओकर पहिने तँ मात्त जले टा आधार होइक। आ दू सेर चाउर कक्खन धरि? स्त्रीगणकँे पहिरक कोनो नूआ–फट्टा नइँ। मलेरियाग्रस्त लोक कँे लहालोट पुरिबा आ जाड़ सँ बचबए क खातिर कम्बल नहि। रेलवे कर्मचारी हाता सँ एकटा ठहुरिओ नइँ काटऽ देनिह। पूछक तँ बड़ इच्छा छल... मुदा गाड़ी फुजि गेलैक।

ब्लिज वला सज्जन बजलाह, बाबू एखन की देखलिऐक अछि, आगाँ ने चलू..किसनपुर..हायाघाट...मोहम्मदपुर..जोगिय..कमतौल दिस आर प्रलय मचल छैक। एहन कोनो परिवार नहि छैक जकर कोनो समाङ कि कोनो बच्चा कि कोनो माल नहि दहा–भसिआ गेल होइक।

हायाघाट स्टेशन! सूर्यास्तक समकाल।

डुबैत सूर्यक लालिमा प्रतीचीक जल कँे रक्त सन बनओने। लिधुराह पानि..खुनिआ धार मुक्ती बाबू सिकरेट ताकऽ चललाह। दिवानाथ प्लेटफर्म पर अपने घर मे शरणार्थी बनल गृहविहीन सँ गप्प कऽ रहल छल। गाड़ीक इंजन मिझा गेल रहैक। लेहरियासराय सँ त अओतैक तखन ने फुजतैक गाड़ी! हमहूँ उतरलहुँ। देखलिऐक, सौंसे प्लेटफर्म पर चुट्टी ससर एक दौर पर्यन्त नइँ। अँगनइ मे बाँसक पातर सट्टा गाड़ि–गाड़ि ओहि पर पातर पुरान नूआ कि धोती टाँगि कऽ तम्बू सन बनल। एहन–एहन सैकड़ो तम्बू एक पतिआनी सँ ठाढ़। स्त्रीगण सभ लोटे–लोटे स्टेशनक नार सँ पानि अनैत रहथि आ धीया–पूता टुक–टुक ट्रेन दिस तकैत रहय। पानिक कछेड़ मे एकटा बुढ़िया बाढ़ि मे डूबल बेटाक शोक मे बताहि भेलि चिकरैत रहय। ओझरायल केश मुँह पर...नूआ–फट्टाक होस नहि...गाबि–गाबि कानय, हे गण्डक मैया...हे कमला मैया। कतऽ गेलइ हम्मर सुगवा, कतऽ गेलइ हमर लाल!

आ ओम्हर दिवानाथ बूढ़ा दरोगा साहेब कँे बुझा रहल छलनि...मनुक्ख जे चाहय से कऽ सकैत अछि। एही ठाँ चीन कँे देखिऔक...ओकर ह्वांगहो कोसिओ सँ भयानक रहैक। मुदा लाल क्रान्तिक दू बरखक बाद ओकरा सघन बान्ह सँ जकड़ि देलकैक, आइ ओ ह्वांगहो चीनक वरदान छैक, अभिशाप नहि। आ दिवानाथक आँखिमे लाल चिनगीक तीक्ष्ण प्रकाश आ ज्वाला। भेल जे अमृतपुत्रक एहि ज्वालामे कोसी भस्म भऽ जयतीह। मुदा एक जोड़ा आँखिक चिनगी सँ नहि। लक्ष–लक्ष जोड़ा आँखिक अंगोर सँ। हमरा एकर चतुर्दिक एहन रक्तिम दाहक चिनगीक जाल बूनऽ पड़त।

मुक्तीबाबू अधजरुआ सिकरेट हमरा दिस बढ़ा बजलाह, मणिबाबू, प्लेटफर्मक ओइ भाग तकिऔ तँ कने...कोना छागर–पाठी जकाँ लोक सभ अछि, मालगाड़ी मे कोंचल। हुँ! कोंढ़ उनटि जाइत अछि।

ट्रेन पार कऽ ओइ पार गेलहुँ। एकटा पूर्ण मालगाड़ी रहैक ठाढ़। डिब्बा मे पुरुष, मौगी, धीआ–पूता, माल–जाल सभ भरल छल। डिब्बे मे चूल्हि सुनगि रहल छल। हाँड़ी सभ चढ़ाओल जा रहल छल। कोसी आ गण्डकी मैया कँे प्रार्थनाक कोरस सुनाओल जा रहल छलनि। हाहाकार आ रुदनक स्वर गूँजि रहल छल।

मालगाड़ीक डिब्बा सँ एकटा विद्यार्थी बहरायल...कोर मे चारि–पाँच बरखक कनटिरबी कँे रखने। ओ छौँड़ी बड़ी–बड़ी जोर सँ हिचकैत रहैक। नागदत्त पुछलकैक, अहा–हा...किऐक औ...की भेलैक अछि...किऐक कनैत अछि?

ओ नेनिया कँे ठोकैत बाजल, एकर माय, बाबू साहेब, डूबि गेलैक एही बाढ़ि मे। कनतैक ने तँ...? सभ गोटा निस्तब्ध भऽ गेल।

युवक बाजल, विद्यर्थी छी अहाँ लोकनि...तँ मन होइछ अहाँ लोकनि सँ गप्प करी। हम सभ एही स्टेशन सँ तीन मील पर रामपुर गामक बासी छी। आब तँ ओ बस्तिए नइँ रहलैक...। सौंसे गाम भसिया कऽ लऽ गेलैक...ई राक्षसी गण्डकी। मारिते रास लोक जमा भऽ गेल, ओकर गप्प सुनऽ लेल। दरोगा साहेब बजलाह, की सौंसे गाम?

स्वर्ग मे छथि तँ अबस्से दुनियाँ मे सभ वस्तु ठीक छैक।

यद्यपि देशक ई हालत किएक, से सभ जनैत अछि- हमहूँ..अहूँ...नेता आ जनतो! तइयो ई देश अपन दरिद्रा कैँ सोनाक पानि चढ़ाओल डिब्बी मे बन्द कऽ कऽ विदेशक प्रदर्शनीक शो-केस मे सजबैत अछि। रीढ़क अपन हाड़ तोड़ि ताजक रूप मे उपस्थित करैत अछि। फाटल-चीटल केथड़ी जोड़ि आ सजा, भटरंग कऽ प्रति पन्द्रह अगस्त कऽ शाही महल सभ पर धर्मचक्र-सज्जित तिरंगा फहरबैत अछि।

गाड़ी ठाढ़ भऽ गेलैक।

पुल रहैक कोनो मने। फेर चुट्टीक चालि मे घुसकनियाँ काटऽ लागल। सभ मोसाफिर खिड़की आ फाटक पर मुड़िआरी देने बाहर हुलकी मारए लागल-

गण्डक, बागमती, कमला आ कोसीक भयानक रूप। समुद्रक ज्वारि जकाँ विकराल ढेहु उठैत। लगैक मने सौंसे ट्रेनकैँ गीड़ि जायत! लहरिक संगहि-संग कौखन कोनो पुरना नूआक फाटल पाढ़ियुक्त भाग...कौखन काठक सनुकचाक कोनो थौआ भेल भाग...कौखन जानवरक हाड़! घरक ठाठ बहल जा रहल छल...खाट आ चौकी भसिआयल जा रहल छल...इज्जति आ प्रतिष्ठा मिथिलाक नोर मे दहायल जा रहल छल। जीवन भसिआयल जा रहल छल। सीसो-सखुआ-आमक कलमबाग आ बँसबिट्टी डूबि गेल छल।

ऊपर रहैक केवल पीतवसना नागकन्या गण्डकी अपन अति विषाक्त फुफकार छोड़ैत।

मुक्तापुर आबि गेल।

स्टेशनक चारू कात पानिएँ पानि। स्टेशन पर असंख्य गरीब किसान-बोनिह लहालोट होइत। ककरो एक मुट्ठी अन्न नहि...पाँच हाथ वस्त्र नहि...टाँग पसारि कऽ सूतक स्थान नहि। प्लाटफर्म पर आकाशक ठाठ तर असंख्य किसान-परिवार धीया-पूता भूखेँ चिकरैत...माय ओकरा घोघ तर मुँह नुकओने कनैत। एकटा कोनो कांग्रेसी सज्जन स्टेशन-मास्टर कैँ जोर-जोर सँ कहैत रहथिन, अरे, महाज...एहि मे सरकराक कोन कसूर? भगवानक लीला छनि। सरकार की जानऽ गेलैक जे एहन विशाल बाढ़ि आबि रहल छैक। ताहू पर रिलीफ कमेटी बनि रहल छैक। अगिला हप्ता मिनिस्टर लोकनिक टूर प्रोग्राम छनि। आ अलाबे एकर मुख्यमन्त्री दरभंगा, मुजफ्फरपुर आ सहरसाक कलक्टर कैँ त कहबे कयलथिन अछि जे ओ जते चाहथि रिलीफक हेतु खर्च करथि। से नहि आब की करौक?

आ सरिपहुँ सरकार खर्च करैत रहैक से हम देखलिऐक! एकटा गृहस्थ बाजल, चारिम दिन अन्न भेटल छल...मूड़ पीछू दू सेर..ओकर पहिने तँ मात्र जले टा आधार होइक। आ दू सेर चाउर कक्खन धरि? स्त्रीगणकैँ पहिरक कोनो नूआ-फट्टा नइँ। मलेरियाग्रस्त लोक कैँ लहालोट पुरिबा आ जाड़ सँ बचबए क खातिर कम्बल नहि। रेलवे कर्मचारी हाता सँ एकटा ठहुरिओ नइँ काटऽ देनिह। पूछक तँ बड़ इच्छा छल... मुदा गाड़ी फुजि गेलैक।

ब्लिज वला सज्जन बजलाह, बाबू एखन की देखलिऐक अछि, आगाँ ने चलू..किसनपुर..हायाघाट...मोहम्मदपुर..जोगिय..कमतौल दिस आर प्रलय मचल छैक। एहन कोनो परिवार नहि छैक जकर कोनो समाङ कि कोनो बच्चा कि कोनो माल नहि दहा-भसिआ गेल होइक।

हायाघाट स्टेशन! सूर्यास्तक समकाल।

डुबैत सूर्यक लालिमा प्रतीचीक जल कैँ रक्त सन बनओने। लिधुराह पानि..खुनिआ धार मुक्ती बाबू सिकरेट ताकऽ चललाह। दिवानाथ प्लेटफर्म पर अपने घर मे शरणार्थी बनल गृहविहीन सँ गप्प कऽ रहल छल। गाड़ीक इंजन मिझा गेल रहैक। लेहरियासराय सँ त अओतैक तखन ने फुजतैक गाड़ी! हमहूँ उतरलहुँ। देखलिऐक, सौंसे प्लेटफर्म पर चुट्टी ससर एक दौर पर्यन्त नइँ। अँगनइ मे बाँसक पातर सट्टा गाड़ि-गाड़ि ओहि पर पातर पुरान नूआ कि धोती टाँगि कऽ तम्बू सन बनल। एहन-एहन सैकड़ो तम्बू एक पतिआनी सँ ठाढ़। स्त्रीगण सभ लोटे-लोटे स्टेशनक नार सँ पानि अनैत रहथि आ धीया-पूता टुक-टुक ट्रेन दिस तकैत रहय। पानिक कछेड़ मे एकटा बुढ़िया बाढ़ि मे डूबल बेटाक शोक मे बताहि भेलि चिकरैत रहय। ओझरायल केश मुँह पर...नूआ-फट्टाक होस नहि...गाबि-गाबि कानय, हे गण्डक मैया...हे कमला मैया। कतऽ गेलइ हम्मर सुगवा, कतऽ गेलइ हमर लाल!

आ ओम्हर दिवानाथ बूढ़ा दरोगा साहेब कैँ बुझा रहल छलनि...मनुक्ख जे चाहय से कऽ सकैत अछि। एही ठाँ चीन कैँ देखिऔक...ओकर ह्वांगहो कोसिओ सँ भयानक रहैक। मुदा लाल क्रान्तिक दू बरखक बाद ओकरा सघन बान्ह सँ जकड़ि देलकैक, आइ ओ ह्वांगहो चीनक वरदान छैक, अभिशाप नहि। आ दिवानाथक आँखिमे लाल चिनगीक तीक्ष्ण प्रकाश आ ज्वाला। भेल जे अमृतपुत्रक एहि ज्वालामे कोसी भस्म भऽ जयतीह। मुदा एक जोड़ा आँखिक चिनगी सँ नहि। लक्ष-लक्ष जोड़ा आँखिक अंगोर सँ। हमरा एकर चतुर्दिक एहन रक्तिम दाहक चिनगीक जाल बूनऽ पड़त।

मुक्तीबाबू अधजरुआ सिकरेट हमरा दिस बढ़ा बजलाह, मणिबाबू, प्लेटफर्मक ओइ भाग तकिऔ तँ कने...कोना छागर-पाठी जकाँ लोक सभ अछि, मालगाड़ी मे कोंचल। हुँ! कोंढ़ उनटि जाइत अछि।

ट्रेन पार कऽ ओइ पार गेलहुँ। एकटा पूर्ण मालगाड़ी रहैक ठाढ़। डिब्बा मे पुरुष, मौगी, धीआ-पूता, माल-जाल सभ भरल छल। डिब्बे मे चूल्हि सुनगि रहल छल। हाँड़ी सभ चढ़ाओल जा रहल छल। कोसी आ गण्डकी मैया कैँ प्रार्थनाक कोरस सुनाओल जा रहल छलनि। हाहाकार आ रुदनक स्वर गूँजि रहल छल।

मालगाड़ीक डिब्बा सँ एकटा विद्यार्थी बहरायल...कोर मे चारि-पाँच बरखक कनटिरबी कैँ रखने। ओ छौँड़ी बड़ी-बड़ी जोर सँ हिचकैत रहैक। नागदत्त पुछलकैक, अहा-हा...किऐक औ...की भेलैक अछि...किऐक कनैत अछि?

ओ नेनिया कैँ ठोकैत बाजल, एकर माय, बाबू साहेब, डूबि गेलैक एही बाढ़ि मे। कनतैक ने तँ...? सभ गोटा निस्तब्ध भऽ गेल।

युवक बाजल, विद्यर्थी छी अहाँ लोकनि...तँ मन होइछ अहाँ लोकनि सँ गप्प करी। हम सभ एही स्टेशन सँ तीन मील पर रामपुर गामक बासी छी। आब तँ ओ बस्तिए नइँ रहलैक...। सौंसे गाम भसिया कऽ लऽ गेलैक...ई राक्षसी गण्डकी। मारिते रास लोक जमा भऽ गेल, ओकर गप्प सुनऽ लेल। दरोगा साहेब बजलाह, की सौंसे गाम?

हँ औ। हठात राति मे आबि गेलैक बाढ़ि। छन-छन पानि बढ़ैत...कोनो तरहेँ स्त्रीगण लोकनि केँ नाह पर लदलहुँ...माल-जाल हँकओलहुँ...वस्तु-जात, अत्यन्त आवश्यक वस्तु सभ कनहा पर लदलहुँ, पड़यलहुँ, स्टेशनक दिस। कतहु भरि डाँड़...कतहु कच्छाछोप, कतहु चपोदण्ड। हेलैत-डुबैत एतऽ पहुँचलहुँ। कतेक नेना-भुटका डूबल। माल-जालक तँ कथे कोन। भसिआयल ठाठ पर हमरा लोकनि स्त्रीगण सभ केँ बैसा कऽ अनलहुँ एतऽ धरि। अयला पर पता लागल जे एहि कनटिरबीक माय डूबि गेलैक। ई हमर भतीजी थिक। मुदा आब की? कने काल चुप भऽ गेल ओ। युवकक आँखि पनिआ गेलैक। फेर बाजल,स्टेशन आबि देखल, ई पहिनहि सँ भरल छल। लगीचक पन्द्रह बीस गामक लोक सभ सँ भरल छल। एहि इलाका मे एकटा ई स्टेशन मात्र छैक ऊँच स्थान। खाली इएह मालगाड़ी रहैक ठाढ़। सभ गोटा एही मे शरण लेल। सम्पूर्ण डिब्बा खाली छल, सभ मे हम सभ भरि गेलहुँ।

दोसर दिन प्लेटफॉर्म पर सेहो पानि आबि गेलैक, तखन लोक सभ बोरा जकाँ एक दोसर पर गेंटल रही। युवक सभ ऊपर छत पर चढ़ि गेलाह, स्त्रीगण आ बूढ़, नेना सभ डिब्बे मे रहलाह।

स्टेशन मास्टर हमरा सभ केँ डेरओलनि, मालगाड़ी खाली कर दो। अहीं लोकनि कहू से कोना होइतैक? हम सभ कतऽ जाइतहुँ? हमरा सभक संग मे पाइ-कौड़ी नहि छल, घर नहि छल, पहिरऽ लेल वस्त्र नहि छल। एतेक कहि युवक फेर रुकि गेल। नहुँए सँ बाजल, हमरा ज्वर अछि। जाड़ भऽ रहल अछि, यदि अपने सभक मे एकटा बीड़ी हो तँ दिअऽ।

मुक्तीबाबू ओकरा सिकरेट देलथिन आ दिवानाथ सलाइ। युवक बाजल, ओ, ई तँ कैप्सटन अछि। फेर बड़े तन्मय भऽ सिकरेटक कश खींचऽ लागल। (एलेक्शनक अवसर पर कैथोलिक पादरी सभ सम्पूर्ण तिरू-कोचीन मे मङनी मे सिकरेट आ चाहक पैकेट बँटने छलाह। पैकेट सभ पर लिखल छल, काँग्रेस को वोट दो।) नागदत्त पुछलथिन, फेर की भेल?

फेर की हेतैक? युवक गाड़ीक कम्पाट सँ ओंगठि कऽ बाजल, फेर पुलिस आबि-आबि कऽ हमरा सभकेँ तंग करऽ लागल। जकरा संग पाइ-कौड़ी छलैक से पाइ-कौड़ी दऽ कऽ पुलिसक ठोकर सँ बचल रहल। रातिखन कऽ युवती सभ गाड़ीक डिब्बा सँ बिलाय लागलि। मुदा हम सभ मालगाड़ीक डिब्बा केँ छोड़लहुँ नहि। छोड़ि कऽ हम सभ कतऽ जैतहुँ? दोसरे दिन समस्तीपुर सँ एकटा बड़का इंजिन आयल।

स्टेशन मास्टर बाजल, तुम लोग गाड़ी खाली कर दो, वरना इंजिन तुम लोगों को लेकर समस्तीपुर चला जाएगा। वहाँ तुम लोगों को जेल हो जायगा, सरकारी गाड़ी पर कब्जा जमाने के जुर्म मे।

बूढ़ सभ कहलथिन जे नीके होयत, ल! चलऽ। कम सँ कम भोजनो तँ भेटत जहल मे। मुदा स्त्रीगण कानऽ लगलीह। नेना सभ चीत्कार मारए लागल। मैथिल स्त्रीगण जे कहियो गामक बाहर पयर नहि रखलनि तनिका हम जेल कोना जाय दितहुँ। आ तखन हम सभ नारा लगओलहुँ, मालगाड़ी नहीं जायगा, नहीं जायगा।

पुलिसक लाठीक मदति सँ ड्राइवर मालगाड़ी मे इंजिन लगओलक। आ एम्हर हम सभ इंजिनक आगाँ आबि कऽ ठाढ़ भऽ गेलहुँ, मालगाड़ी नहीं खुलेगा, नहीं खुलेगा। पुरुष लोकनि छाती तानि कऽ ठाढ़ भऽ गेलाह। स्त्रीगण पड़ि रहलीह। नेना सभ बाँसक फट्ठी मे लाल वस्त्र बान्हि कऽ आगाँ मे ठाढ़ भऽ गेल।

बाँसक फट्ठी मे लाल चेन्ह!

गाड़ी रोकबाक चेन्ह।

अपन अधिकार लेबाक चेन्ह।

युवकक गर्दनि तनि गेलनि, उत्साह सँ बाँहि फड़कऽ लगलनि, आँखि लाल भऽ गेलनि।

सेठजी अपन स्त्रीक कान मे कहलथिन, रधिया की माँ, सूटकेस पास ले आओ, कुछ हो जा सकता है।

दरोगा साहेब गुनगुनयलाह, ठीक कहइ छी।

युवक कहब जारी रखलनि, पुलिस तँ पहिने घबड़ा गेल, ड्राइवर इंजिन बन्द कऽ



देलक। कतेक हजार लोकक रेड़ा पड़ऽ लागल। पुलिस लाठी चार्ज करऽ चाहलक, मुदा हम फरिछा कऽ कहि देलियनि, यदि एकोटा लाठी उठल तँ हम सभ एक-एकटा पुलिस केँ उठा-उठा कऽ गण्डक मे फेँकि देब। कहू तँ, पन्द्रह-बीस पुलिस के की चलितनि एहि क्रुद्ध जनसमुद्र मे?

आ, पुलिस सँ नाक रगड़ैत रहि गेल, मुदा मालगाड़ी नहि जा सकल। दोसर दिन भोरे नाव पर चाउरक बोरा गेंटने स्टूडेंट्स-फेडरेशन आ नौजवान-संघक लोक सभ अयलाह आ ई हम सभ पहिल सहायता पओलहुँ।

आ आब तँ पानि कम भऽ रहल अछि। सरकारी कुम्भकर्णी निन्न टूटि रहल छनि। ओहो दू-दू सेर चाउर बाँटि गेलाह अछि। एतेक कहि युवक चुप्प भऽ गेलाह। वातावरण अशान्त छल, सभक मन युवकक दुःखपूर्ण कथा सुनि खिन्न छलैक। एतबे मे स्टेशनक एकटा कर्मचारी आबि कऽ बाजल-

गाड़ी खुल रही है, डिब्बे मे बैठिए।

अपन बिना मायक भतीजी केँ कोरा मे लऽ कऽ युवक प्लेटफॉर्म पर ठाढ़ रहल।

गाड़ी नहुँ-नहुँ चलऽ लागल, तखन ओ दिवानाथक बामा हाथ दबा कऽ बाजल, मोन राखब बन्धु! हठात बूढ़ दरोगा साहेब अपन सीट पर सँ उठि अपन ऊनी चद्दरि युवकक कान्ह पर धऽ देलथिन आ फेर अवरुद्ध कंठ सँ कहलथिन, अहाँ केँ तँ ज्वर अछि, ई चद्दरि लऽ लिअऽ। आ...।

गाड़ी तेज भऽ गेल।

फेर तँ ओएह चारू कात अथाह अबाध समुद्र छल आ हिलकोरक घोर गर्जन।

हँ औ। हठात राति मे आबि गेलैक बाढ़ि। छन-छन पानि बढ़ैत...कोनो तरहेँ स्त्रीगण लोकनि केँ नाह पर लदलहुँ...माल-जाल हँकओलहुँ...वस्तु-जात, अत्यन्त आवश्यक वस्तु सभ कनहा पर लदलहुँ, पड़यलहुँ, स्टेशनक दिस। कतहु भरि डाँड़...कतहु कच्छाछोप, कतहु चपोदण्ड। हेलैत-डुबैत एतऽ पहुँचलहुँ। कतेक नेना-भुटका डूबल। माल-जालक तँ कथे कोन। भसिआयल ठाठ पर हमरा लोकनि स्त्रीगण सभ केँ बैसा कऽ अनलहुँ एतऽ धरि। अयला पर पता लागल जे एहि कनटिरबीक माय डूबि गेलैक। ई हमर भतीजी थिक। मुदा आब की? कने काल चुप भऽ गेल ओ। युवकक आँखि पनिआ गेलैक। फेर बाजल,स्टेशन आबि देखल, ई पहिनहि सँ भरल छल। लगीचक पन्द्रह बीस गामक लोक सभ सँ भरल छल। एहि इलाका मे एकटा ई स्टेशन मात्र छैक ऊँच स्थान। खाली इएह मालगाड़ी रहैक ठाढ़। सभ गोटा एही मे शरण लेल। सम्पूर्ण डिब्बा खाली छल, सभ मे हम सभ भरि गेलहुँ।

दोसर दिन प्लेटफॉर्म पर सेहो पानि आबि गेलैक, तखन लोक सभ बोरा जकाँ एक दोसर पर गेंटल रही। युवक सभ ऊपर छत पर चढ़ि गेलाह, स्त्रीगण आ बूढ़, नेना सभ डिब्बे मे रहलाह।

स्टेशन मास्टर हमरा सभ केँ डेरओलनि, मालगाड़ी खाली कर दो। अहीं लोकनि कहू से कोना होइतैक? हम सभ कतऽ जाइतहुँ? हमरा सभक संग मे पाइ-कौड़ी नहि छल, घर नहि छल, पहिरऽ लेल वस्त्र नहि छल। एतेक कहि युवक फेर रुकि गेल। नहुँए सँ बाजल, हमरा ज्वर अछि। जाड़ भऽ रहल अछि, यदि अपने सभक मे एकटा बीड़ी हो तँ दिअऽ।

मुक्तीबाबू ओकरा सिकरेट देलथिन आ दिवानाथ सलाइ। युवक बाजल, ओ, ई तँ कैप्सटन अछि। फेर बड़े तन्मय भऽ सिकरेटक कश खींचऽ लागल। (एलेक्शनक अवसर पर कैथोलिक पादरी सभ सम्पूर्ण तिरू-कोचीन मे मङनी मे सिकरेट आ चाहक पैकेट बँटने छलाह। पैकेट सभ पर लिखल छल, काँग्रेस को वोट दो।) नागदत्त पुछलथिन, फेर की भेल?

फेर की हेतैक? युवक गाड़ीक कम्पाट सँ ओंगठि कऽ बाजल, फेर पुलिस आबि-आबि कऽ हमरा सभकेँ तंग करऽ लागल। जकरा संग पाइ-कौड़ी छलैक से पाइ-कौड़ी दऽ कऽ पुलिसक ठोकर सँ बचल रहल। रातिखन कऽ युवती सभ गाड़ीक डिब्बा सँ बिलाय लागलि। मुदा हम सभ मालगाड़ीक डिब्बा केँ छोड़लहुँ नहि। छोड़ि कऽ हम सभ कतऽ जैतहुँ? दोसरे दिन समस्तीपुर सँ एकटा बड़का इंजिन आयल।

स्टेशन मास्टर बाजल, तुम लोग गाड़ी खाली कर दो, वरना इंजिन तुम लोगों को लेकर समस्तीपुर चला जाएगा। वहाँ तुम लोगों को जेल हो जायगा, सरकारी गाड़ी पर कब्जा जमाने के जुर्म मे।

बूढ़ सभ कहलथिन जे नीके होयत, ल! चलऽ। कम सँ कम भोजनो तँ भेटत जहल मे। मुदा स्त्रीगण कानऽ लगलीह। नेना सभ चीत्कार मारए लागल। मैथिल स्त्रीगण जे कहियो गामक बाहर पयर नहि रखलनि तनिका हम जेल कोना जाय दितहुँ। आ तखन हम सभ नारा लगओलहुँ, मालगाड़ी नहीं जायगा, नहीं जायगा।

पुलिसक लाठीक मदति सँ ड्राइवर मालगाड़ी मे इंजिन लगओलक। आ एम्हर हम सभ इंजिनक आगाँ आबि कऽ ठाढ़ भऽ गेलहुँ, मालगाड़ी नहीं खुलेगा, नहीं खुलेगा। पुरुष लोकनि छाती तानि कऽ ठाढ़ भऽ गेलाह। स्त्रीगण पड़ि रहलीह। नेना सभ बाँसक फट्ठी मे लाल वस्त्र बान्हि कऽ आगाँ मे ठाढ़ भऽ गेल।

बाँसक फट्ठी मे लाल चेन्ह!

गाड़ी रोकबाक चेन्ह।

अपन अधिकार लेबाक चेन्ह।

युवकक गर्दनि तनि गेलनि, उत्साह सँ बाँहि फड़कऽ लगलनि, आँखि लाल भऽ गेलनि।

सेठजी अपन स्त्रीक कान मे कहलथिन, रधिया की माँ, सूटकेस पास ले आओ, कुछ हो जा सकता है।

दरोगा साहेब गुनगुनयलाह, ठीक कहइ छी।

युवक कहब जारी रखलनि, पुलिस तँ पहिने घबड़ा गेल, ड्राइवर इंजिन बन्द कऽ



देलक। कतेक हजार लोकक रेड़ा पड़ऽ लागल। पुलिस लाठी चार्ज करऽ चाहलक, मुदा हम फरिछा कऽ कहि देलियनि, यदि एकोटा लाठी उठल तँ हम सभ एक-एकटा पुलिस केँ उठा-उठा कऽ गण्डक मे फेँकि देब। कहू तँ, पन्द्रह-बीस पुलिस के की चलितनि एहि क्रुद्ध जनसमुद्र मे?

आ, पुलिस सँ नाक रगड़ैत रहि गेल, मुदा मालगाड़ी नहि जा सकल। दोसर दिन भोरे नाव पर चाउरक बोरा गेंटने स्टूडेंट्स-फेडरेशन आ नौजवान-संघक लोक सभ अयलाह आ ई हम सभ पहिल सहायता पओलहुँ।

आ आब तँ पानि कम भऽ रहल अछि। सरकारी कुम्भकर्णी निन्न टूटि रहल छनि। ओहो दू-दू सेर चाउर बाँटि गेलाह अछि। एतेक कहि युवक चुप्प भऽ गेलाह। वातावरण अशान्त छल, सभक मन युवकक दुःखपूर्ण कथा सुनि खिन्न छलैक। एतबे मे स्टेशनक एकटा कर्मचारी आबि कऽ बाजल-

गाड़ी खुल रही है, डिब्बे मे बैठिए।

अपन बिना मायक भतीजी केँ कोरा मे लऽ कऽ युवक प्लेटफॉर्म पर ठाढ़ रहल।

गाड़ी नहुँ-नहुँ चलऽ लागल, तखन ओ दिवानाथक बामा हाथ दबा कऽ बाजल, मोन राखब बन्धु! हठात बूढ़ दरोगा साहेब अपन सीट पर सँ उठि अपन ऊनी चद्दरि युवकक कान्ह पर धऽ देलथिन आ फेर अवरुद्ध कंठ सँ कहलथिन, अहाँ केँ तँ ज्वर अछि, ई चद्दरि लऽ लिअऽ। आ...।

गाड़ी तेज भऽ गेल।

फेर तँ ओएह चारू कात अथाह अबाध समुद्र छल आ हिलकोरक घोर गर्जन।

हँ औ। हठात राति मे आबि गेलैक बाढ़ि। छन-छन पानि बढ़ैत...कोनो तरहेँ स्त्रीगण लोकनि केँ नाह पर लदलहुँ...माल-जाल हँकओलहुँ...वस्तु-जात, अत्यन्त आवश्यक वस्तु सभ कनहा पर लदलहुँ, पड़यलहुँ, स्टेशनक दिस। कतहु भरि डाँड़...कतहु कच्छाछोप, कतहु चपोदण्ड। हेलैत-डुबैत एतऽ पहुँचलहुँ। कतेक नेना-भुटका डूबल। माल-जालक तँ कथे कोन। भसिआयल ठाठ पर हमरा लोकनि स्त्रीगण सभ केँ बैसा कऽ अनलहुँ एतऽ धरि। अयला पर पता लागल जे एहि कनटिरबीक माय डूबि गेलैक। ई हमर भतीजी थिक। मुदा आब की? कने काल चुप भऽ गेल ओ। युवकक आँखि पनिआ गेलैक। फेर बाजल,स्टेशन आबि देखल, ई पहिनहि सँ भरल छल। लगीचक पन्द्रह बीस गामक लोक सभ सँ भरल छल। एहि इलाका मे एकटा ई स्टेशन मात्र छैक ऊँच स्थान। खाली इएह मालगाड़ी रहैक ठाढ़। सभ गोटा एही मे शरण लेल। सम्पूर्ण डिब्बा खाली छल, सभ मे हम सभ भरि गेलहुँ।

दोसर दिन प्लेटफॉर्म पर सेहो पानि आबि गेलैक, तखन लोक सभ बोरा जकाँ एक दोसर पर गेंटल रही। युवक सभ ऊपर छत पर चढ़ि गेलाह, स्त्रीगण आ बूढ़, नेना सभ डिब्बे मे रहलाह।

स्टेशन मास्टर हमरा सभ केँ डेरओलनि, मालगाड़ी खाली कर दो। अहीं लोकनि कहू से कोना होइतैक? हम सभ कतऽ जाइतहुँ? हमरा सभक संग मे पाइ-कौड़ी नहि छल, घर नहि छल, पहिरऽ लेल वस्त्र नहि छल। एतेक कहि युवक फेर रुकि गेल। नहुँए सँ बाजल, हमरा ज्वर अछि। जाड़ भऽ रहल अछि, यदि अपने सभक मे एकटा बीड़ी हो तँ दिअऽ।

मुक्तीबाबू ओकरा सिकरेट देलथिन आ दिवानाथ सलाइ। युवक बाजल, ओ, ई तँ कैप्स्टन अछि। फेर बड़े तन्मय भऽ सिकरेटक कश खींचऽ लागल। (एलेक्शनक अवसर पर कैथोलिक पादरी सभ सम्पूर्ण तिरू-कोचीन मे मङनी मे सिकरेट आ चाहक पैकेट बँटने छलाह। पैकेट सभ पर लिखल छल, काँग्रेस को वोट दो।) नागदत्त पुछलथिन, फेर की भेल?

फेर की हेतैक? युवक गाड़ीक कम्पाट सँ ओंगठि कऽ बाजल, फेर पुलिस आबि-आबि कऽ हमरा सभकेँ तंग करऽ लागल। जकरा संग पाइ-कौड़ी छलैक से पाइ-कौड़ी दऽ कऽ पुलिसक ठोकर सँ बचल रहल। रातिखन कऽ युवती सभ गाड़ीक डिब्बा सँ बिलाय लागलि। मुदा हम सभ मालगाड़ीक डिब्बा केँ छोड़लहुँ नहि। छोड़ि कऽ हम सभ कतऽ जैतहुँ? दोसरे दिन समस्तीपुर सँ एकटा बड़का इंजिन आयल।

स्टेशन मास्टर बाजल, तुम लोग गाड़ी खाली कर दो, वरना इंजिन तुम लोगों को लेकर समस्तीपुर चला जाएगा। वहाँ तुम लोगों को जेल हो जायगा, सरकारी गाड़ी पर कब्जा जमाने के जुर्म मे।

बूढ़ सभ कहलथिन जे नीके होयत, ल! चलऽ। कम सँ कम भोजनो तँ भेटत जहल मे। मुदा स्त्रीगण कानऽ लगलीह। नेना सभ चीत्कार मारए लागल। मैथिल स्त्रीगण जे कहियो गामक बाहर पयर नहि रखलनि तनिका हम जेल कोना जाय दितहुँ। आ तखन हम सभ नारा लगओलहुँ, मालगाड़ी नहीं जायगा, नहीं जायगा।

पुलिसक लाठीक मदति सँ ड्राइवर मालगाड़ी मे इंजिन लगओलक। आ एम्हर हम सभ इंजिनक आगाँ आबि कऽ ठाढ़ भऽ गेलहुँ, मालगाड़ी नहीं खुलेगा, नहीं खुलेगा। पुरुष लोकनि छाती तानि कऽ ठाढ़ भऽ गेलाह। स्त्रीगण पड़ि रहलीह। नेना सभ बाँसक फट्ठी मे लाल वस्त्र बान्हि कऽ आगाँ मे ठाढ़ भऽ गेल।

बाँसक फट्ठी मे लाल चेन्ह!

गाड़ी रोकबाक चेन्ह।

अपन अधिकार लेबाक चेन्ह।

युवकक गर्दनि तनि गेलनि, उत्साह सँ बाँहि फड़कऽ लगलनि, आँखि लाल भऽ गेलनि।

सेठजी अपन स्त्रीक कान मे कहलथिन, रधिया की माँ, सूटकेस पास ले आओ, कुछ हो जा सकता है।

दरोगा साहेब गुनगुनयलाह, ठीक कहइ छी।

युवक कहब जारी रखलनि, पुलिस तँ पहिने घबड़ा गेल, ड्राइवर इंजिन बन्द कऽ



देलक। कतेक हजार लोकक रेड़ा पड़ऽ लागल। पुलिस लाठी चार्ज करऽ चाहलक, मुदा हम फरिछा कऽ कहि देलियनि, यदि एकोटा लाठी उठल तँ हम सभ एक-एकटा पुलिस केँ उठा-उठा कऽ गण्डक मे फेँकि देब। कहू तँ, पन्द्रह-बीस पुलिस के की चलितनि एहि क्रुद्ध जनसमुद्र मे?

आ, पुलिस सँ नाक रगड़ैत रहि गेल, मुदा मालगाड़ी नहि जा सकल। दोसर दिन भोरे नाव पर चाउरक बोरा गेंटने स्टूडेंट्स-फेडरेशन आ नौजवान-संघक लोक सभ अयलाह आ ई हम सभ पहिल सहायता पओलहुँ।

आ आब तँ पानि कम भऽ रहल अछि। सरकारी कुम्भकर्णी निन्न टूटि रहल छनि। ओहो दू-दू सेर चाउर बाँटि गेलाह अछि। एतेक कहि युवक चुप्प भऽ गेलाह। वातावरण अशान्त छल, सभक मन युवकक दुःखपूर्ण कथा सुनि खिन्न छलैक। एतबे मे स्टेशनक एकटा कर्मचारी आबि कऽ बाजल-

गाड़ी खुल रही है, डिब्बे मे बैठिए।

अपन बिना मायक भतीजी केँ कोरा मे लऽ कऽ युवक प्लेटफॉर्म पर ठाढ़ रहल।

गाड़ी नहुँ-नहुँ चलऽ लागल, तखन ओ दिवानाथक बामा हाथ दबा कऽ बाजल, मोन राखब बन्धु! हठात बूढ़ दरोगा साहेब अपन सीट पर सँ उठि अपन ऊनी चद्दरि युवकक कान्ह पर धऽ देलथिन आ फेर अवरुद्ध कंठ सँ कहलथिन, अहाँ केँ तँ ज्वर अछि, ई चद्दरि लऽ लिअऽ। आ...।

गाड़ी तेज भऽ गेल।

फेर तँ ओएह चारू कात अथाह अबाध समुद्र छल आ हिलकोरक घोर गर्जन।



असमंजस

– **प्रणय प्रसून**

हम एक दिन दुपहरिया मे एक टा गाछक छाँह के तर विश्राम करैत रही। ठंडा बसातक आनंद मे गोता लगेनाइ शुरू मे कयने रही कि ए हमर एक मित्र ललितजी अपना संगे एक अपरिचितक संग हमरा लग आबि ठाढ़ भ गेला। ललित जीक सान्निध्य हमरा बहुत नीक लगैत अछि। हुनका सँ उचिनी मिनती कयलाक पश्चात हम अपरिचित दिश मुखातिब भयलहुँ त हुनका बजबा सँ पहिनहिँ ललित जी शुरू भऽ गेलाह।

एहि सज्जनक नाम छैन्हि आलोक। ई पछिला किछु साल सँ तरह-तरह के मुसीबत सँ गुजरि रहल छथि। आई जखन हमरा अपन दुखड़ा कहलन्हि त हिनका लऽ कऽ हम घूमए लेल बिदा भेल छी। ताही क्रम मे अहाँ पर नजरि पड़ि गेल। अहाँ त मनोविज्ञान स रुचि रखैत छी तैं हम हिनकर कहानी अहाँ के सुनैय लेल कहि रहल छी। आशा अछि अहाँक सलाह सँ हिनका लेल लाभप्रद भऽ सकैत छै।

हमहुँ आलोक बाबूक आभायुक्त लेकिन पीड़ा मिश्रित चेहरा देखि कहानी सुनबाक वास्ते उत्सुक भ गेलहुँ।

हम तीनू गोटे गाछक छाहरि मे बैसि गेलहुँ। ललित जी कहानी एहि प्रकारे कहलन्हि।

आलोक जी अपन पिताक पहिल संतान छथि। हिनका सँ किछु सालक छोट हिनकर एकटा बहिन छथिन्ह। नाम छैन्हि हुनकर 'गहना'। गहना अपना गृहस्थी मे सफल छथि। कोनो प्रकारक आभाव नहि छैन्हि। आलोकजी अपन सभक हमपेशा छथि यानी कि शिक्षक। एक आदर्श शिक्षकक समस्त विशेषता हिनका मे छैन्हि। दु टा लक्ष्मी एवं एक टा पुत्र सँ सजल हिनकर परिवार हिनकर धर्मपत्नी द्वारा संचालित हिनका सदि देखन



असमंजस

– **प्रणय प्रसून**

हम एक दिन दुपहरिया मे एक टा गाछक छाँह के तर विश्राम करैत रही। ठंडा बसातक आनंद मे गोता लगेनाइ शुरू मे कयने रही कि ए हमर एक मित्र ललितजी अपना संगे एक अपरिचितक संग हमरा लग आबि ठाढ़ भ गेला। ललित जीक सान्निध्य हमरा बहुत नीक लगैत अछि। हुनका सँ उचिनी मिनती कयलाक पश्चात हम अपरिचित दिश मुखातिब भयलहुँ त हुनका बजबा सँ पहिनहिँ ललित जी शुरू भऽ गेलाह।

एहि सज्जनक नाम छैन्हि आलोक। ई पछिला किछु साल सँ तरह-तरह के मुसीबत सँ गुजरि रहल छथि। आई जखन हमरा अपन दुखड़ा कहलन्हि त हिनका लऽ कऽ हम घूमए लेल बिदा भेल छी। ताही क्रम मे अहाँ पर नजरि पड़ि गेल। अहाँ त मनोविज्ञान स रुचि रखैत छी तैं हम हिनकर कहानी अहाँ के सुनैय लेल कहि रहल छी। आशा अछि अहाँक सलाह सँ हिनका लेल लाभप्रद भऽ सकैत छै।

हमहुँ आलोक बाबूक आभायुक्त लेकिन पीड़ा मिश्रित चेहरा देखि कहानी सुनबाक वास्ते उत्सुक भ गेलहुँ।

हम तीनू गोटे गाछक छाहरि मे बैसि गेलहुँ। ललित जी कहानी एहि प्रकारे कहलन्हि।

आलोक जी अपन पिताक पहिल संतान छथि। हिनका सँ किछु सालक छोट हिनकर एकटा बहिन छथिन्ह। नाम छैन्हि हुनकर 'गहना'। गहना अपना गृहस्थी मे सफल छथि। कोनो प्रकारक आभाव नहि छैन्हि। आलोकजी अपन सभक हमपेशा छथि यानी कि शिक्षक। एक आदर्श शिक्षकक समस्त विशेषता हिनका मे छैन्हि। दु टा लक्ष्मी एवं एक टा पुत्र सँ सजल हिनकर परिवार हिनकर धर्मपत्नी द्वारा संचालित हिनका सदि देखन



असमंजस

– **प्रणय प्रसून**

हम एक दिन दुपहरिया मे एक टा गाछक छाँह के तर विश्राम करैत रही। ठंडा बसातक आनंद मे गोता लगेनाइ शुरू मे कयने रही कि ए हमर एक मित्र ललितजी अपना संगे एक अपरिचितक संग हमरा लग आबि ठाढ़ भ गेला। ललित जीक सान्निध्य हमरा बहुत नीक लगैत अछि। हुनका सँ उचिनी मिनती कयलाक पश्चात हम अपरिचित दिश मुखातिब भयलहुँ त हुनका बजबा सँ पहिनहिँ ललित जी शुरू भऽ गेलाह।

एहि सज्जनक नाम छैन्हि आलोक। ई पछिला किछु साल सँ तरह-तरह के मुसीबत सँ गुजरि रहल छथि। आई जखन हमरा अपन दुखड़ा कहलन्हि त हिनका लऽ कऽ हम घूमए लेल बिदा भेल छी। ताही क्रम मे अहाँ पर नजरि पड़ि गेल। अहाँ त मनोविज्ञान स रुचि रखैत छी तैं हम हिनकर कहानी अहाँ के सुनैय लेल कहि रहल छी। आशा अछि अहाँक सलाह सँ हिनका लेल लाभप्रद भऽ सकैत छै।

हमहुँ आलोक बाबूक आभायुक्त लेकिन पीड़ा मिश्रित चेहरा देखि कहानी सुनबाक वास्ते उत्सुक भ गेलहुँ।

हम तीनू गोटे गाछक छाहरि मे बैसि गेलहुँ। ललित जी कहानी एहि प्रकारे कहलन्हि।

आलोक जी अपन पिताक पहिल संतान छथि। हिनका सँ किछु सालक छोट हिनकर एकटा बहिन छथिन्ह। नाम छैन्हि हुनकर ‘गहना’। गहना अपना गृहस्थी मे सफल छथि। कोनो प्रकारक आभाव नहि छैन्हि। आलोकजी अपन सभक हमपेशा छथि यानी कि शिक्षक। एक आदर्श शिक्षकक समस्त विशेषता हिनका मे छैन्हि। दु टा लक्ष्मी एवं एक टा पुत्र सँ सजल हिनकर परिवार हिनकर धर्मपत्नी द्वारा संचालित हिनका सदि देखन

आनंद मे डुबौने रहैत छलैन्हि। समय बितैत गेल। आइ सँ चारि वर्ष पहिने अपन जेठकी पुत्रीक कन्यादान एकटा सुयोग्य ब्राह्मण पुरुषक संग क बहुत हर्षित भेलाह। लेकिन हिनकर ई हर्ष किछु दिनक पश्चात् समाप्त हो मय लगलैन्हि। हिनकर बेटी आओर जमाय के बीच मनमुटाव भऽ गेलैन्हि। लेकिन ई छथिए तेहन जीवतगर जे दु साल तक संघर्ष करैत रहि गेलाह और अंततः अपना बेटी आओर जमाय के गृहस्थी बसायताक बादे दम लेलन्हि। ई तऽ कहानीक भूमिका छल। असल कहानी तऽ आब शुरु होयत। हम पुनः उत्सुक भेलहुँ।

ललित जी कहानीक शरीरक वर्णन करवा सँ पहिने कहलन्हि

धीरज, धर्म, मित्र अरु नारी।

आपद् काल परेखहुँ चारी।

जखन इ, अपने बेटीक समस्या मे उलझल रहथि तऽ सर संबंधी हिनका सँ मुँह फेरि लेलखिन्ह। एहन तक कि माय-बाप सेहो हिनका पर्सनालिटी के मुल्यांकन करबा मे कंजूसी कऽ देलखिन्ह। माय-बाप सँ हिनका एखन वैचारिक मतभेद चलि रहन छैन्हि। ई अपन माय-बाप के कोनो नीक पुत्र जकाँ बहुत प्यार करैत छथिन्ह। लेकिन हिनकर पिता हिनका अनुसारे स्वीकार करबाक अवस्था मे नहि छथिन्ह। एही कारण सँ बेचेरे कखनहुँ क चिंतित भऽ जाइत छथि।

एही बीच मे हिनकर पिताजी एकटा जमीन जे हिनका वास्ते कहियो खरीद कयल गेल रहय ताहि जमीन पर बिना हिनका सँ कोनो राय मशविरा कयने हिनकर बहिन गहना के मकान बनैबाक वास्ते द देलखिन्ह। जखन ई किछु बजबाक प्रयास कयलन्हि त हिनका पर इल्जाम अयलन्हि जे अपन माय-बापक फैसला सँ दुःखी भऽ ई अपना बहिन सँ संबंध नहि राखय चाहैत छथि। लेकिन ई बात सत्य नहि थीक।

आलोक - बाबूजी अपने द्वारा लेल गेल ई फैसला हमरा युक्तिसंगत नहि बुझा रहल अछि।

बाबूजी - कियैक? हम तऽ मात्र आधा हिस्सा देलियक अछि एहि मे अहाँके कोन आपत्ति।

आलोक - जमीनक टुकड़ा के स्वामित्व के लेल हमरा कोन आपत्ति नहिं। दू सहोदर भाय जखन भिन्न भऽ जाइत छथि तऽ दु टा संबंधी एक एक ठाम कोना रहत।

बाबूजी - ई अहाँक समस्या अछि।

आलोक - तऽ एहि समस्याक समाधान हम एखनहि कऽ लैत छी। संबंध कायम रखबाक वास्ते एकटा दाता आओर एकटा ग्राही होयबाक चाही अथवा दूनू के बीच सहभागिता। हमरा गहना द्वारा लेल गेल एहि कदम पर बहुत एतराज अछि जे हमरा ओ कोनो प्रकारक सूचना नहिं देलक। हम जखन कखनो फोन करैत छियैक तऽ ओ फोन पर हमरा सँ बात तक नहिं करैत अछि। तैं एहि संबंध पर एकटा प्रश्नचिह्न लागि गेल। आओर एहि प्रश्नचिह्न के पैघ करबा मे जाने-अनजाने किछु योगदान अपनेक सेहो अछि।

बाबूजी - आलोक बाबू। अपन विचार मे बदलाव आनू।

आलोक - हम बहुत सोच विचार कयलाक बाद अहाँक समक्ष अपन भावना व्यक्त कयलहुँ अछि।

(एहि तरहें पिता-पुत्रक वार्तालाप धीरे-धीरे समाप्त भऽ गेलैन।)

ललित जी बजलाह जे आलोक बाबू तऽ अपना पिता सँ संवाद स्थापित करय गेल रहथि, लेकिन भऽ गेलैन विवाद। हमरा जनैत-

एखन समस्या एतबे अछि जे हिनका अपन पिताक संग स्वस्थ संवाद कोना स्थापित हो। एतबा कहि ललित जी हमरा कहलन्हि जे अहाँ त मानवीय संबंधक रहस्य पर किछु दिन पहिने एकटा लेख प्रकाशित कयने रही तैं हेतु अपने सँ आग्रह जे हिनका ओहि लेख मे सँ किछु अनमोल मोतीक दर्शन करा दिओन्हि जाहि सँ हिनका अपन लक्ष्य प्राप्त करवा मे मदद होन्हि।

एतबा काल धरि हम अपन श्वांस रोकने कहानी मे डूबल रही। ललितजी जखन चुप भऽ गेलाह तखन हम एकटा गहीर सांस छोड़ैत आलोकजीक दिशि तकलहुँ। ओहो हमरा दिशि आशा स तकलन्हि।

हम आलोकजी के कहलयन्हि -

All is well,

Do the best and live the rest.

अहाँ जहनु सर्वोत्तम काज अपना जनैत कऽ लैत छी त आराम के क्षण के जीनाइ सीखू। हुनका हम आओर किछु-किछु बात कहलयनि। फेर हम तीन गोट खुब हँसलहुँ। ताबते मेएकटा कुसियारक रस बेचय वाला हमरा लग आबि व अपन गाड़ी के ठाढ़ कयलक। आलोकजी हमरा सब कँ कुसियारक रस पियोलन्हि। कुसियारक सिट्ठी के जाहि निर्ममता सँ ओ दुकानदार फेकलक हमर विचारक मन एकाएक आंदोलित भऽ गेल, हम आलोक जी के कहलयन्हि

My dear Alokji

Do the best and leave the rest.

मात्र किछुकालक अंतराल मे दुटा विचार जे सुनबा मे एक रंग ने लेकिन अर्थ मे भिन्न आलोकजी चेहरा मे तेज आनि देल। हम सब गोटे उचिती मिनती करैत अपन-अपन घर अयलहुँ। एतबा काल तऽ ललितजी क बात सुनलहुँ। आब हमरा सँ सुनु जे आलोकजी कोना अपन गाड़ी खीच लन्हि।

आलोकजीक दोसर बेटी आओर सबसँ छोट बेटा बड़ तेजस्वी। आलोक अपन बेटा-बेटी के उच्च शिक्षित देखबाक बास्ते दिन-राति मेहनत कयलन्हि। ओर हुनकर बेटी भारतक एकटा प्रतिष्ठित महाविद्यालय मे

आनंद मे डुबौने रहैत छलैन्हि। समय बितैत गेल। आइ सँ चारि वर्ष पहिने अपन जेठकी पुत्रीक कन्यादान एकटा सुयोग्य ब्राह्मण पुरुषक संग क बहुत हर्षित भेलाह। लेकिन हिनकर ई हर्ष किछु दिनक पश्चात् समाप्त हो मय लगलैन्हि। हिनकर बेटी आओर जमाय के बीच मनमुटाव भऽ गेलैन्हि। लेकिन ई छथिए तेहन जीवतगर जे दु साल तक संघर्ष करैत रहि गेलाह और अंततः अपना बेटी आओर जमाय के गृहस्थी बसायताक बादे दम लेलन्हि। ई तऽ कहानीक भूमिका छल। असल कहानी तऽ आब शुरु होयत। हम पुनः उत्सुक भेलहुँ।

ललित जी कहानीक शरीरक वर्णन करवा सँ पहिने कहलन्हि

धीरज, धर्म, मित्र अरु नारी।

आपद् काल परेखहुँ चारी।

जखन इ, अपने बेटीक समस्या मे उलझल रहथि तऽ सर संबंधी हिनका सँ मुँह फेरि लेलखिन्ह। एहन तक कि माय-बाप सेहो हिनका पर्सनालिटी के मुल्यांकन करबा मे कंजूसी कऽ देलखिन्ह। माय-बाप सँ हिनका एखन वैचारिक मतभेद चलि रहन छैन्हि। ई अपन माय-बाप के कोनो नीक पुत्र जकाँ बहुत प्यार करैत छथिन्ह। लेकिन हिनकर पिता हिनका अनुसारे स्वीकार करबाक अवस्था मे नहि छथिन्ह। एही कारण सँ बेचेरे कखनहुँ क चिंतित भऽ जाइत छथि।

एही बीच मे हिनकर पिताजी एकटा जमीन जे हिनका वास्ते कहियो खरीद कयल गेल रहय ताहि जमीन पर बिना हिनका सँ कोनो राय मशविरा कयने हिनकर बहिन गहना के मकान बनैबाक वास्ते द देलखिन्ह। जखन ई किछु बजबाक प्रयास कयलन्हि त हिनका पर इल्जाम अयलन्हि जे अपन माय-बापक फैसला सँ दुःखी भऽ ई अपना बहिन सँ संबंध नहि राखय चाहैत छथि। लेकिन ई बात सत्य नहि थीक।

आलोक - बाबूजी अपने द्वारा लेल गेल ई फैसला हमरा युक्तिसंगत नहि बुझा रहल अछि।

बाबूजी - कियैक? हम तऽ मात्र आधा हिस्सा देलियक अछि एहि मे अहाँके कोन आपत्ति।

> ãU×ÚUæ»ãUÌæ ÜëÜ»ðÜ °çãU ·¤Î×ÂÚU ÕãéUÌ °ÌÚUæÁ ¥çÀUÁð ãU×ÚUæ ¥ôð ·¤æðÙæð Âý·¤æÚU·¤ âê¿Ùæ ÙçãU´ ÎðÜ·¤Ð ãU× ÁÙ ·¤¹Ùæð È¤æðÙ ·¤ÚUñÌ çÀUØñ·¤ ÌÔ¥æð È¤æðÙ ÂÚU ãU×ÚUæ â¡ ÕæÌ Ì·¤ ÙçãU´ ·¤ÚUñÌ ¥çÀUÐ Ìñ´ °çãU â´Õ´Ï ÂÚU °·¤ÅUæ ÂýàÙç¿±Ù Üæç» »ðÜÐ ¥æ¥ôð °çãU ÂýàÙç¿±Ù ·ð¤ Âñ¾æ ·¤ÚUÕæ×ð Áæðð- ¥ÙÁæÙð ç·¤ÀU Øæð»ÎæÙ ¥ÂÙð·¤ âðãUæð ¥çÀUÐ

आलोक - जमीनक टुकड़ा के स्वामित्व के लेल हमरा कोन आपत्ति नहिं। दू सहोदर भाय जखन भिन्न भऽ जाइत छथि तऽ दु टा संबंधी एक एक ठाम कोना रहत।

बाबूजी - ई अहाँक समस्या अछि।

आलोक - तऽ एहि समस्याक समाधान हम एखनहि कऽ लैत छी। संबंध कायम रखबाक वास्ते एकटा दाता आओर एकटा ग्राही होयबाक चाही अथवा दूनू के बीच सहभागिता। हमरा गहना द्वारा लेल गेल एहि कदम पर बहुत एतराज अछि जे हमरा ओ कोनो प्रकारक सूचना नहिं देलक। हम जखन कखनो फोन करैत छियैक तऽ ओ फोन पर हमरा सँ बात तक नहिं करैत अछि। तैं एहि संबंध पर एकटा प्रश्नचिह्न लागि गेल। आओर एहि प्रश्नचिह्न के पैघ करबा मे जाने-अनजाने किछु योगदान अपनेक सेहो अछि।

बाबूजी - आलोक बाबू। अपन विचार मे बदलाव आनू।

आलोक - हम बहुत सोच विचार कयलाक बाद अहाँक समक्ष अपन भावना व्यक्त कयलहुँ अछि।

(एहि तरहें पिता-पुत्रक वार्तालाप धीरे-धीरे समाप्त भऽ गेलैन।)

ललित जी बजलाह जे आलोक बाबू तऽ अपना पिता सँ संवाद स्थापित करय गेल रहथि, लेकिन भऽ गेलैन विवाद। हमरा जनैत-

एखन समस्या एतबे अछि जे हिनका अपन पिताक संग स्वस्थ संवाद कोना स्थापित हो। एतबा कहि ललित जी हमरा कहलन्हि जे अहाँ त मानवीय संबंधक रहस्य पर किछु दिन पहिने एकटा लेख प्रकाशित कयने रही तैं हेतु अपने सँ आग्रह जे हिनका ओहि लेख मे सँ किछु अनमोल मोतीक दर्शन करा दिओन्हि जाहि सँ हिनका अपन लक्ष्य प्राप्त करवा मे मदद होन्हि।

एतबा काल धरि हम अपन श्वांस रोकने कहानी मे डूबल रही। ललितजी जखन चुप भऽ गेलाह तखन हम एकटा गहीर सांस छोड़ैत आलोकजीक दिशि तकलहुँ। ओहो हमरा दिशि आशा स तकलन्हि।

हम आलोकजी के कहलयन्हि -

All is well,

Do the best and live the rest.

अहाँ जहनु सर्वोत्तम काज अपना जनैत कऽ लैत छी त आराम के क्षण के जीनाइ सीखू। हुनका हम आओर किछु-किछु बात कहलयनि। फेर हम तीन गोट खुब हँसलहुँ। ताबते मेएकटा कुसियारक रस बेचय वाला हमरा लग आबि व अपन गाड़ी के ठाढ़ कयलक। आलोकजी हमरा सब कैँ कुसियारक रस पियोलन्हि। कुसियारक सिट्ठी के जाहि निर्ममता सँ ओ दुकानदार फेकलक हमर विचारक मन एकाएक आंदोलित भऽ गेल, हम आलोक जी के कहलयन्हि

My dear Alokji

Do the best and leave the rest.

मात्र किछुकालक अंतराल मे दुटा विचार जे सुनबा मे एक रंग ने लेकिन अर्थ मे भिन्न आलोकजी चेहरा मे तेज आनि देल। हम सब गोटे उचिती मिनती करैत अपन-अपन घर अयलहुँ। एतबा काल तऽ ललितजी क बात सुनलहुँ। आब हमरा सँ सुनु जे आलोकजी कोना अपन गाड़ी खीच लन्हि।

आलोकजीक दोसर बेटी आओर सबसँ छोट बेटा बड़ तेजस्वी। आलोक अपन बेटा-बेटी के उच्च शिक्षित देखबाक बास्ते दिन-राति मेहनत कयलन्हि। ओर हुनकर बेटी भारतक एकटा प्रतिष्ठित महाविद्यालय मे

आनंद मे डुबौने रहैत छलैन्हि। समय बितैत गेल। आइ सँ चारि वर्ष पहिने अपन जेठकी पुत्रीक कन्यादान एकटा सुयोग्य ब्राह्मण पुरुषक संग क बहुत हर्षित भेलाह। लेकिन हिनकर ई हर्ष किछु दिनक पश्चात् समाप्त हो मय लगलैन्हि। हिनकर बेटी आओर जमाय के बीच मनमुटाव भऽ गेलैन्हि। लेकिन ई छथिए तेहन जीवतगर जे दु साल तक संघर्ष करैत रहि गेलाह और अंततः अपना बेटी आओर जमाय के गृहस्थी बसायताक बादे दम लेलन्हि। ई तऽ कहानीक भूमिका छल। असल कहानी तऽ आब शुरु होयत। हम पुनः उत्सुक भेलहुँ।

ललित जी कहानीक शरीरक वर्णन करवा सँ पहिने कहलन्हि

धीरज, धर्म, मित्र अरु नारी।

आपद् काल परेखहुँ चारी।

जखन इ, अपने बेटीक समस्या मे उलझल रहथि तऽ सर संबंधी हिनका सँ मुँह फेरि लेलखिन्ह। एहन तक कि माय-बाप सेहो हिनका पर्सनालिटी के मुल्यांकन करबा मे कंजूसी कऽ देलखिन्ह। माय-बाप सँ हिनका एखन वैचारिक मतभेद चलि रहन छैन्हि। ई अपन माय-बाप के कोनो नीक पुत्र जकाँ बहुत प्यार करैत छथिन्ह। लेकिन हिनकर पिता हिनका अनुसारे स्वीकार करबाक अवस्था मे नहि छथिन्ह। एही कारण सँ बेचेरे कखनहुँ क चिंतित भऽ जाइत छथि।

एही बीच मे हिनकर पिताजी एकटा जमीन जे हिनका वास्ते कहियो खरीद कयल गेल रहय ताहि जमीन पर बिना हिनका सँ कोनो राय मशविरा कयने हिनकर बहिन गहना के मकान बनैबाक वास्ते द देलखिन्ह। जखन ई किछु बजबाक प्रयास कयलन्हि त हिनका पर इल्जाम अयलन्हि जे अपन माय-बापक फैसला सँ दुःखी भऽ ई अपना बहिन सँ संबंध नहि राखय चाहैत छथि। लेकिन ई बात सत्य नहि थीक।

आलोक - बाबूजी अपने द्वारा लेल गेल ई फैसला हमरा युक्तिसंगत नहि बुझा रहल अछि।

बाबूजी - कियैक? हम तऽ मात्र आधा हिस्सा देलियक अछि एहि मे अहाँके कोन आपत्ति।

आलोक - जमीनक टुकड़ा के स्वामित्व के लेल हमरा कोन आपत्ति नहिं। दू सहोदर भाय जखन भिन्न भऽ जाइत छथि तऽ दु टा संबंधी एक एक ठाम कोना रहत।

बाबूजी - ई अहाँक समस्या अछि।

आलोक - तऽ एहि समस्याक समाधान हम एखनहि कऽ लैत छी। संबंध कायम रखबाक वास्ते एकटा दाता आओर एकटा ग्राही होयबाक चाही अथवा दूनू के बीच सहभागिता। हमरा गहना द्वारा लेल गेल एहि कदम पर बहुत एतराज अछि जे हमरा ओ कोनो प्रकारक सूचना नहिं देलक। हम जखन कखनो फोन करैत छियैक तऽ ओ फोन पर हमरा सँ बात तक नहिं करैत अछि। तैं एहि संबंध पर एकटा प्रश्नचिह्न लागि गेल। आओर एहि प्रश्नचिह्न के पैघ करबा मे जाने-अनजाने किछु योगदान अपनेक सेहो अछि।

बाबूजी - आलोक बाबू। अपन विचार मे बदलाव आनू।

आलोक - हम बहुत सोच विचार कयलाक बाद अहाँक समक्ष अपन भावना व्यक्त कयलहुँ अछि।

(एहि तरहें पिता-पुत्रक वार्तालाप धीरे-धीरे समाप्त भऽ गेलैन।)

ललित जी बजलाह जे आलोक बाबू तऽ अपना पिता सँ संवाद स्थापित करय गेल रहथि, लेकिन भऽ गेलैन विवाद। हमरा जनैत-

एखन समस्या एतबे अछि जे हिनका अपन पिताक संग स्वस्थ संवाद कोना स्थापित हो। एतबा कहि ललित जी हमरा कहलन्हि जे अहाँ त मानवीय संबंधक रहस्य पर किछु दिन पहिने एकटा लेख प्रकाशित कयने रही तैं हेतु अपने सँ आग्रह जे हिनका ओहि लेख मे सँ किछु अनमोल मोतीक दर्शन करा दिओन्हि जाहि सँ हिनका अपन लक्ष्य प्राप्त करवा मे मदद होन्हि।

एतबा काल धरि हम अपन श्वांस रोकने कहानी मे डूबल रही। ललितजी जखन चुप भऽ गेलाह तखन हम एकटा गहीर सांस छोड़ैत आलोकजीक दिशि तकलहुँ। ओहो हमरा दिशि आशा स तकलन्हि।

हम आलोकजी के कहलयन्हि -

All is well,

Do the best and live the rest.

अहाँ जहनु सर्वोत्तम काज अपना जनैत कऽ लैत छी त आराम के क्षण के जीनाइ सीखू। हुनका हम आओर किछु-किछु बात कहलयनि। फेर हम तीन गोट खुब हँसलहुँ। ताबते मेएकटा कुसियारक रस बेचय वाला हमरा लग आबि व अपन गाड़ी के ठाढ़ कयलक। आलोकजी हमरा सब कैँ कुसियारक रस पियोलन्हि। कुसियारक सिट्ठी के जाहि निर्ममता सँ ओ दुकानदार फेकलक हमर विचारक मन एकाएक आंदोलित भऽ गेल, हम आलोक जी के कहलयन्हि

My dear Alokji

Do the best and leave the rest.

मात्र किछुकालक अंतराल मे दुटा विचार जे सुनबा मे एक रंग ने लेकिन अर्थ मे भिन्न आलोकजी चेहरा मे तेज आनि देल। हम सब गोटे उचिती मिनती करैत अपन-अपन घर अयलहुँ। एतबा काल तऽ ललितजी क बात सुनलहुँ। आब हमरा सँ सुनु जे आलोकजी कोना अपन गाड़ी खीच लन्हि।

आलोकजीक दोसर बेटी आओर सबसँ छोट बेटा बड़ तेजस्वी। आलोक अपन बेटा-बेटी के उच्च शिक्षित देखबाक बास्ते दिन-राति मेहनत कयलन्हि। ओर हुनकर बेटी भारतक एकटा प्रतिष्ठित महाविद्यालय मे

इंजीनियरिंग के पढ़ाई क रहल छन्हि। बेटा बीबीए क रहल छथिन्ह। अपने अपन धर्मपत्नी क संग समाज मे घुलिमिल क रहि रहल छथि। एहि बेर हिनका दूनू संतान के डिग्री भेटए वाला छैक। यदा-कदा ई एकहिटा बात बजैत छथि -

दु:ख भरे दिन बीते रे भैया - बीते रे भैया।

एक दिन दुपहरिया मे तकिया मे मुँह गाड़ने आलोकजी सुतल छथि। पत्नी हिनका गोरथारी मे बैसल कोनो धार्मिक पुस्तक पढ़ि रहल छथि। ताबते मे हिनकर मोबाइल फोन घनगना उठल। हिनकर पत्नी अलका हिनकर पयर हिलबैत फोन अटेंड करबा लेल कहैत छथिन्ह।

अलका - हेयौ कतेक काल सँ फोन बाजि रहल अछि। देखियो तऽ ककर फोन छैकि।

आलोक - नंबर तऽ अनचिन्हार अछि।

अलका - कोनो ट्यूशन पढ़ए वाला फोन कयने होयत।

आलोक - हँ एखन तऽ पाइक सेहो काज अछि।

बहुत रास समय खाली अछि। किछुए दिन बाद बेटी के डिग्री भेटए वाला अछि। दीक्षांत समारोह मे हम दुनू गोट चलब। यैह सोचैत ओ हेलो कहलन्हि। फोनक दोसर कात हुनकर बहिन गहना छथिन्ह।

गहना - प्रणाम भैया।

आलोक - के, गहना। कोना छी। कोना मोन पड़ल।

पछिला चारि साल सँ हम सोचिते रहि गेलहुँ जे गहना जरूर एक दिन फोन करइत।

गहना - मनोज के विवाह तय भऽ गेल छैक। अहाँक बरियाती जयबाक लेल हकार दऽ रहल छी।

अहाँ जरुर आयब। भौजी के सेहो नेने एबइ।

आलोक - हमर हाथ एखन एकदम खाली अछि भगिनपुतोहु के खाली हाथ कोना देखऽब हमरा जखन उचित अवसर भेटत तऽ हम जरूर आयब। एखन हम सिर्फ आशीर्वाद दऽ सकैत छी।

गहना - एकर मतलब जे अहाँ हमरा सँ



संबंध नहि राखय चाहैत छी।

आलोक - एहन बात नहि छैक। हम सत्य कहि रहल छी।

(एहने बातचीत होइत रहैत छैक और अंत मे बिना कोनो ठोस निर्णय के फोन संबंध विच्छेद भऽ जाइत अछि।

आलोक - अलकाजी, अलकाजी सुनै छी।

अलका - की।

आलोक - मनोजक विवाह भऽ रहल छैक। हकार आयल अछि। किछु फुरा नहि रहल अछि जे की करी आ की नहिं।

अलका - जाऊ। पाग पहिर बरियाती मे बैसि मास्टरी करऽब। मिठाइ कनि कमेक खायब नहि तऽ शुगर फेर बढ़ि जायत।

आलोक - लेकिन जयबाक इच्छा नहिं कऽ रहल अछि।

अलका - बहिन अहाँ के छथि। जे करब से करब। हमरा तऽ नहिए जयबाक अछि। पछिला बेर अपन संगीताक द्विरागमन मे घर पैसक हकार देबए गेलहुँ। हमरा ओहि ठाम नीक नहि लागल।

(आलोक आओर अलका एहने बातचीत करैत फैसला लेलन्हि जे एखन एहिठाम से गेनाइ उचित नहि होयत कियेक त जगह छोड़िने आमदनीक स्रोत बंद भऽ जायत)

एम्हर विवाह समारोह मे आलोकजीक माय-बाप आलोकजी के अनुपस्थित देखि विचलित भऽ गेलाह। लेकिन कोनो तरहें अपना के व्यवस्थित रखैत नाति के विवाह संपन्न करा गाम गेलाह। विवाह तेहन सुंदर भेलैक जे परो पट्टा मे सप्ताह धरि विवाहक चर्चा होइत रहल।

एही बीच आलोकजीक बेटी सपना अपना पिता के ओकरा महाविद्यालय मे होमए बाला दीक्षांत समारोह मे शामिल होयबाक निमंत्रण दैत छथिन्ह। ई खबरि सुनि अलका आओर आलोक खुशी सँ कानय लगैत छथि। आलोक झट द अपन इमर्जेंसी फण्ड मे राखल पाइक हिसाब किताब कारैत रेलवे टिकट बुक करएबाक कार्यक्रम बनवैत छथि।

लेकिन खुशी के जेना आलोक सँ कोना

इंजीनियरिंग के पढ़ाई क रहल छन्हि। बेटा बीबीए क रहल छथिन्ह। अपने अपन धर्मपत्नी क संग समाज मे घुलिमिल क रहि रहल छथि। एहि बेर हिनका दूनू संतान के डिग्री भेटए वाला छैक। यदा-कदा ई एकहिटा बात बजैत छथि -

दु:ख भरे दिन बीते रे भैया - बीते रे भैया।

एक दिन दुपहरिया मे तकिया मे मुँह गाड़ने आलोकजी सुतल छथि। पत्नी हिनका गोरथारी मे बैसल कोनो धार्मिक पुस्तक पढ़ि रहल छथि। ताबते मे हिनकर मोबाइल फोन घनगना उठल। हिनकर पत्नी अलका हिनकर पयर हिलबैत फोन अटेंड करबा लेल कहैत छथिन्ह।

अलका - हेयौ कतेक काल सँ फोन बाजि रहल अछि। देखियो तऽ ककर फोन छैकि।

आलोक - नंबर तऽ अनचिन्हार अछि।

अलका - कोनो ट्यूशन पढ़ए वाला फोन कयने होयत।

आलोक - हँ एखन तऽ पाइक सेहो काज अछि।

बहुत रास समय खाली अछि। किछुए दिन बाद बेटी के डिग्री भेटए वाला अछि। दीक्षांत समारोह मे हम दुनू गोट चलब। यैह सोचैत ओ हेलो कहलन्हि। फोनक दोसर कात हुनकर बहिन गहना छथिन्ह।

गहना - प्रणाम भैया।

आलोक - के, गहना। कोना छी। कोना मोन पड़ल।

पछिला चारि साल सँ हम सोचिते रहि गेलहुँ जे गहना जरूर एक दिन फोन करइत।

गहना - मनोज के विवाह तय भऽ गेल छैक। अहाँक बरियाती जयबाक लेल हकार दऽ रहल छी।

अहाँ जरुर आयब। भौजी के सेहो नेने एबइ।

आलोक - हमर हाथ एखन एकदम खाली अछि भगिनपुतोहु के खाली हाथ कोना देखऽब हमरा जखन उचित अवसर भेटत तऽ हम जरूर आयब। एखन हम सिर्फ आशीर्वाद दऽ सकैत छी।

गहना - एकर मतलब जे अहाँ हमरा सँ संबंध नहि राखय चाहैत छी।



आलोक - एहन बात नहि छैक। हम सत्य कहि रहल छी।

(एहने बातचीत होइत रहैत छैक और अंत मे बिना कोनो ठोस निर्णय के फोन संबंध विच्छेद भऽ जाइत अछि।

आलोक - अलकाजी, अलकाजी सुनै छी।

अलका - की।

आलोक - मनोजक विवाह भऽ रहल छैक। हकार आयल अछि। किछु फुरा नहि रहल अछि जे की करी आ की नहिं।

अलका - जाऊ। पाग पहिर बरियाती मे बैसि मास्टरी करऽब। मिठाइ कनि कमेक खायब नहि तऽ शुगर फेर बढ़ि जायत।

आलोक - लेकिन जयबाक इच्छा नहिं कऽ रहल अछि।

अलका - बहिन अहाँ के छथि। जे करब से करब। हमरा तऽ नहिए जयबाक अछि। पछिला बेर अपन संगीताक द्विरागमन मे घर पैसक हकार देबए गेलहुँ। हमरा ओहि ठाम नीक नहि लागल।

(आलोक आओर अलका एहने बातचीत करैत फैसला लेलन्हि जे एखन एहिठाम से गेनाइ उचित नहि होयत कियेक त जगह छोड़िने आमदनीक स्रोत बंद भऽ जायत)

एम्हर विवाह समारोह मे आलोकजीक माय-बाप आलोकजी के अनुपस्थित देखि विचलित भऽ गेलाह। लेकिन कोनो तरहें अपना के व्यवस्थित रखैत नाति के विवाह संपन्न करा गाम गेलाह। विवाह तेहन सुंदर भेलैक जे परो पट्टा मे सप्ताह धरि विवाहक चर्चा होइत रहल।

एही बीच आलोकजीक बेटी सपना अपना पिता के ओकरा महाविद्यालय मे होमए बाला दीक्षांत समारोह मे शामिल होयबाक निमंत्रण दैत छथिन्ह। ई खबरि सुनि अलका आओर आलोक खुशी सँ कानय लगैत छथि। आलोक झट द अपन इमर्जेंसी फण्ड मे राखल पाइक हिसाब किताब कारैत रेलवे टिकट बुक करएबाक कार्यक्रम बनवैत छथि।

लेकिन खुशी के जेना आलोक सँ कोना

इंजीनियरिंग के पढ़ाई क रहल छन्हि। बेटा बीबीए क रहल छथिन्ह। अपने अपन धर्मपत्नी क संग समाज मे घुलिमिल क रहि रहल छथि। एहि बेर हिनका दूनू संतान के डिग्री भेटए वाला छैक। यदा–कदा ई एकहिटा बात बजैत छथि –

दु:ख भरे दिन बीते रे भैया – बीते रे भैया।

एक दिन दुपहरिया मे तकिया मे मुँह गाड़ने आलोकजी सुतल छथि। पत्नी हिनका गोरथारी मे बैसल कोनो धार्मिक पुस्तक पढ़ि रहल छथि। ताबते मे हिनकर मोबाइल फोन घनगना उठल। हिनकर पत्नी अलका हिनकर पयर हिलबैत फोन अटेंड करबा लेल कहैत छथिन्ह।

अलका – हेयौ कतेक काल सँ फोन बाजि रहल अछि। देखियो तऽ ककर फोन छैकि।

आलोक – नंबर तऽ अनचिन्हार अछि।

अलका – कोनो ट्यूशन पढ़ए वाला फोन कयने होयत।

आलोक – हँ एखन तऽ पाइक सेहो काज अछि।

बहुत रास समय खाली अछि। किछुए दिन बाद बेटी के डिग्री भेटए वाला अछि। दीक्षांत समारोह मे हम दुनू गोट चलब। यैह सोचैत ओ हेलो कहलन्हि। फोनक दोसर कात हुनकर बहिन गहना छथिन्ह।

गहना – प्रणाम भैया।

आलोक – के, गहना। कोना छी। कोना मोन पड़ल।

पछिला चारि साल सँ हम सोचिते रहि गेलहुँ जे गहना जरूर एक दिन फोन करइत।

गहना – मनोज के विवाह तय भऽ गेल छैक। अहाँक बरियाती जयबाक लेल हकार दऽ रहल छी।

अहाँ जरुर आयब। भौजी के सेहो नेने एबइ।

आलोक – हमर हाथ एखन एकदम खाली अछि भगिनपुतोहु के खाली हाथ कोना देखऽब हमरा जखन उचित अवसर भेटत तऽ हम जरूर आयब। एखन हम सिर्फ आशीर्वाद दऽ सकैत छी।

गहना – एकर मतलब जे अहाँ हमरा सँ



¥SÂÌæÜ ×ð ÕæÕêÁè ·¤ §ÜæÁ ãUæðÌ×° Üæ»ÜÐ Îê çÎÙ ·¤ ÕæÎ ¥æÜæð·¤ âðãUæðÂãæðÜUç¿»ðÜæãUÐ¥æÜæð·¤ ·ð¤ÎðçÌðçãUÙ·¤ÚUçÂÌæÕæð·¤æêè Âæç¸U ·¤æÙØÜ»ÜæãUÐ¥æÜæð·¤ âð ãUæð¥ÂÙæ¥æÂ ·ð¤ÚUæðç·¤ÙçãUU â·¤ÜæãUÐÁðÇUæ•ÅUÚU§ÜæÁ ·¤ÚUæÙÚUãUçÏ‹ãU, ·¤ãUÜçÏ‹ãUÁðç¿çÌæ·¤ ·¤æÙæðÕæÌÙçãUÐÕæÉU·¤æÚUæÚUÀÙçãUÐÕðÅUæâ¡¥Ü»æßÕæçÙÌÙçãU ÕðÜçãUÐÎñ¡¥æÜæð·¤Áè °çãUÜÕðÚU¥ãUæ¡çãUÙ·¤æ¥ÂÙðâ¢»ÚUðÜÕðÁæª¢Ð ¥æÜæð·¤Áè °ãUèÌæ·¤×ðÚUãUÜÕð ·¤ÚUçÍÐ

संबंध नहि राखय चाहैत छी।

आलोक – एहन बात नहि छैक। हम सत्य कहि रहल छी।

(एहने बातचीत होइत रहैत छैक और अंत मे बिना कोनो ठोस निर्णय के फोन संबंध विच्छेद भऽ जाइत अछि।

आलोक – अलकाजी, अलकाजी सुनै छी।

अलका – की।

आलोक – मनोजक विवाह भऽ रहल छैक। हकार आयल अछि। किछु फुरा नहि रहल अछि जे की करी आ की नहिं।

अलका – जाऊ। पाग पहिर बरियाती मे बैसि मास्टरी करऽब। मिठाइ कनि कमेक खायब नहि तऽ शुगर फेर बढ़ि जायत।

आलोक – लेकिन जयबाक इच्छा नहिं कऽ रहल अछि।

अलका – बहिन अहाँ के छथि। जे करब से करब। हमरा तऽ नहिए जयबाक अछि। पछिला बेर अपन संगीताक द्विरागमन मे घर पैसक हकार देबए गेलहुँ। हमरा ओहि ठाम नीक नहि लागल।

(आलोक आओर अलका एहने बातचीत करैत फैसला लेलन्हि जे एखन एहिठाम से गेनाइ उचित नहि होयत कियेक त जगह छोड़िने आमदनीक स्रोत बंद भऽ जायत)

एम्हर विवाह समारोह मे आलोकजीक माय–बाप आलोकजी के अनुपस्थित देखि विचलित भऽ गेलाह। लेकिन कोनो तरहें अपना के व्यवस्थित रखैत नाति के विवाह संपन्न करा गाम गेलाह। विवाह तेहन सुंदर भेलैक जे परो पट्टा मे सप्ताह धरि विवाहक चर्चा होइत रहल।

एही बीच आलोकजीक बेटी सपना अपना पिता के ओकरा महाविद्यालय मे होमए बाला दीक्षांत समारोह मे शामिल होयबाक निमंत्रण दैत छथिन्ह। ई खबरि सुनि अलका आओर आलोक खुशी सँ कानय लगैत छथि। आलोक झट द अपन इमर्जेंसी फण्ड मे राखल पाइक हिसाब किताब कारैत रेलवे टिकट बुक करएबाक कार्यक्रम बनवैत छथि।

लेकिन खुशी के जेना आलोक सँ कोना

दुश्मनी होकि। राति नहि बितलैक भोरे भोर माय फोन कयलखिन्ह आ पिता के दुखित होयबाक समाचार देलखिन्ह आ गाम आबए लेल कहलखिन्ह।

आलोक फेर असमंजस मे पड़ि गेलाह। एक दिश सपना हुनकर सपना अपन सपना मानि साकार क समर्पित करबाक वास्ते उत्सुक आओर एक दिशि बीमार बाप। बेटी सँ एहि समस्याक वर्णन कयलन्हि त बेटी एकटा इंजीनियर जकाँ समाधान दैत कहलखिन्ह जे वो अपन पिताक इलाजक वास्ते गाम जाथि आओर माँ के दीक्षांत समाराहे मे अयबाक व्यवस्था कऽ दैथि।

आलोक अपन बेटीक परिपक्वता पर गौरवान्वित होइत गाम जयबाक निर्णय कयलन्हि ताबते मे दूरदर्शन पर समाचार आयल जे शहर मे दंगा भऽ गेल आओर एहतियात के कारण अगिला 24 घंटा तक कर्फ्यु लागल रहत। आलोक के आगु एक बेर फेर अन्हार भऽ गेल।



ओ तुरंत अपन बहिन गहना के पिताजीक समाचार सुनौलन्हि आ बहिन के निर्देश देलखिन्ह जे पिताजी के अपना डेरा पर आनि इलाज प्रारंभ करए। आओर कहलखिन्ह जे कर्फ्यु हटिते हमहुँ पहुंचि रहल छी।

बहिन गहना कहलखिन्ह जे सरोज तऽ आइये भोर मे अपने कॉलेज जा रहल छथि। मनोज अपन पत्नीक संग आइ सांझ मे शिमला जा रहल अछि। आओर मनोजक बाबूजीक छुट्टी समाप्त भऽ गेल छन्हि। तँ अहीं कोनो व्यवस्था करु।

एतबा सुनि आलोक स्तब्ध भऽ गेला आओर पत्नीक संग विचार विमर्श क अपन बेटी जमाय के फोन कयलन्हि जे अहाँ बाबूजी के दरभंगा आनि इलाज प्रारंभ करबाऊ। हमहुँ आबि रहल छी।

अस्पताल मे बाबूजीक इलाज होमए लागल। दू दिनक बाद आलोक सेहो पहुंचि गेलाह। आलोक के देखिते हिनकर पिता भोकासी पाड़ि कानय लगलाह। आलोक सेहो अपना आप के रोकि नहिं सकलाह। जे डाक्टर इलाज करैत रहथिन्ह, कहलथिन्ह जे चिंताक कोनो बात नहिं। बुढ़क शरीर छैन्हि। बेटा सँ अलगाव बर्दाश्त नहि भेलैन्हि। तँ आलोकजी एहिबेर अहाँ हिनका अपने संग नेने जाऊ। आलोक जी एही ताक मे रहबे करथि। तुरंत स्टेशन गेलाह आओर एक सप्ताहक बादक तारीख के रिजर्वेशन करौलन्हि। अस्पताल सँ छुट्टी भेटलाक पश्चात् आलोकजी अपन माय-बापक संग अपन बेटीक घर पहुँचलाह। आलोकक बेटी संगीता अपन बाबाक चमकैत और दमकैत चेहरा देखि प्रसन्नतापूर्वक चाह बनैयबाक वास्ते रसोईघर मे पैर रखिते छथि कि आलोकक फोन एक बेर फेर घनघना उठल -

आलोक - हेलौ।

सपना - बाबूजी प्रणाम।

आलोक - यशस्वी भवऽ।

सपना - बाबूजी ! हम माँ संगे खुब प्रसन्न छी। आइ भोर मे गोलू (आलोक बाबूक बेटा) के फोन आयल छल। कैंपस सेलेक्शन मे ओकर चयन भऽ गेलैक। एक सप्ताह मे अप्वाइंटमेंट लेटर भेटि जयतैक एकरा बादे वो अहाँ लग आयत।

आलोक - लोंग लिव माई सन। अच्छा ई बताऊ जे अहाँ एखन फोन कियक कयलहुँ अछि।

सपना - एक घंटाक पश्चात् दीक्षांत समारोह शुरू होयत अहाँ तुरंत कोनो साइबर कैफे मे जाऊ जतए वेभ कैमरा लागल होइक। अपन मेल चेक करू जरूरी सूचना भरू। तखन ओ कंप्यूटर हमरा लैपटौप सँ कनेक्ट भऽ जायत आओर अहाँ घर बैसल दीक्षांत समारोहक आनंद उठा सकैत छी।

आलोक बेटी कँ आशीर्वाद दैत जमाय सँ आस-पास मे कोनो साइबर कैफे के पता पुछलखिन्ह।

जमाय - बाबूजी, अपना घरे मे सब सुविधा छैक। आलोक बाबूक नातिन तुरंत सब व्यवस्था कयलन्हि। किछुए कालक बाद कंप्यूटर के स्क्रीन पर दीक्षांत समारोहक दृश्य उभरय लागल। आलोकक बाबूजी अपन पोती सपनाक सफलता पर झूमय लगलाह। ताबते मे आलोकक माय अपन पोतीक संग जलपान नेने पहुँचलन्हि सब गोटे संगे-संग जलपान कयलन्हि आओर सपना एवं गोलूक विवाह करयबाक विचार-विमर्श करए लगलाह।

दुश्मनी होकि। राति नहि बितलैक भोरे भोर माय फोन कयलखिन्ह आ पिता के दुखित होयबाक समाचार देलखिन्ह आ गाम आबए लेल कहलखिन्ह।

आलोक फेर असमंजस मे पड़ि गेलाह। एक दिश सपना हुनकर सपना अपन सपना मानि साकार क समर्पित करबाक वास्ते उत्सुक आओर एक दिशि बीमार बाप। बेटी सँ एहि समस्याक वर्णन कयलन्हि त बेटी एकटा इंजीनियर जकाँ समाधान दैत कहलखिन्ह जे वो अपन पिताक इलाजक वास्ते गाम जाथि आओर माँ के दीक्षांत समाराहे मे अयबाक व्यवस्था कऽ दैथि।

आलोक अपन बेटीक परिपक्वता पर गौरवान्वित होइत गाम जयबाक निर्णय कयलन्हि ताबते मे दूरदर्शन पर समाचार आयल जे शहर मे दंगा भऽ गेल आओर एहतियात के कारण अगिला 24 घंटा तक कर्फ्यु लागल रहत। आलोक के आगु एक बेर फेर अन्हार भऽ गेल।

ओ तुरंत अपन बहिन गहना के पिताजीक समाचार सुनौलन्हि आ बहिन के निर्देश देलखिन्ह जे पिताजी के अपना डेरा पर आनि इलाज प्रारंभ करए। आओर कहलखिन्ह जे कर्फ्यु हटिते हमहुँ पहुंचि रहल छी।

बहिन गहना कहलखिन्ह जे सरोज तऽ आइये भोर मे अपने कॉलेज जा रहल छथि। मनोज अपन पत्नीक संग आइ सांझ मे शिमला जा रहल अछि। आओर मनोजक बाबूजीक छुट्टी समाप्त भऽ गेल छन्हि। तँ अहीं कोनो व्यवस्था करु।

एतबा सुनि आलोक स्तब्ध भऽ गेला आओर पत्नीक संग विचार विमर्श क अपन बेटी जमाय के फोन कयलन्हि जे अहाँ बाबूजी के दरभंगा आनि इलाज प्रारंभ करबाऊ। हमहुँ आबि रहल छी।

अस्पताल मे बाबूजीक इलाज होमए लागल। दू दिनक बाद आलोक सेहो पहुंचि गेलाह। आलोक के देखिते हिनकर पिता भोकासी पाड़ि कानय लगलाह। आलोक सेहो अपना आप के रोकि नहिं सकलाह। जे डाक्टर इलाज करैत रहथिन्ह, कहलथिन्ह जे चिंताक कोनो बात नहिं। बुढ़क शरीर छैन्हि।



बेटा सँ अलगाव बर्दाश्त नहि भेलैन्हि। तँ आलोकजी एहिबेर अहाँ हिनका अपने संग नेने जाऊ। आलोक जी एही ताक मे रहबे करथि। तुरंत स्टेशन गेलाह आओर एक सप्ताहक बादक तारीख के रिजर्वेशन करौलन्हि। अस्पताल सँ छुट्टी भेटलाक पश्चात् आलोकजी अपन माय-बापक संग अपन बेटीक घर पहुँचलाह। आलोकक बेटी संगीता अपन बाबाक चमकैत और दमकैत चेहरा देखि प्रसन्नतापूर्वक चाह बनैयबाक वास्ते रसोईघर मे पैर रखिते छथि कि आलोकक फोन एक बेर फेर घनघना उठल -

आलोक - हेलौ।

सपना - बाबूजी प्रणाम।

आलोक - यशस्वी भवऽ।

सपना - बाबूजी ! हम माँ संगे खुब प्रसन्न छी। आइ भोर मे गोलू (आलोक बाबूक बेटा) के फोन आयल छल। कैंपस सेलेक्शन मे ओकर चयन भऽ गेलैक। एक सप्ताह मे अप्वाइंटमेंट लेटर भेटि जयतैक एकरा बादे वो अहाँ लग आयत।

आलोक - लोंग लिव माई सन। अच्छा ई बताऊ जे अहाँ एखन फोन कियक कयलहुँ अछि।

सपना - एक घंटाक पश्चात् दीक्षांत समारोह शुरू होयत अहाँ तुरंत कोनो साइबर कैफे मे जाऊ जतए वेभ कैमरा लागल होइक। अपन मेल चेक करू जरूरी सूचना भरू। तखन ओ कंप्यूटर हमरा लैपटौप सँ कनेक्ट भऽ जायत आओर अहाँ घर बैसल दीक्षांत समारोहक आनंद उठा सकैत छी।

आलोक बेटी कँ आशीर्वाद दैत जमाय सँ आस-पास मे कोनो साइबर कैफे के पता पुछलखिन्ह।

जमाय - बाबूजी, अपना घरे मे सब सुविधा छैक। आलोक बाबूक नातिन तुरंत सब व्यवस्था कयलन्हि। किछुए कालक बाद कंप्यूटर के स्क्रीन पर दीक्षांत समारोहक दृश्य उभरय लागल। आलोकक बाबूजी अपन पोती सपनाक सफलता पर झूमय लगलाह। ताबते मे आलोकक माय अपन पोतीक संग जलपान नेने पहुँचलन्हि सब गोटे संगे-संग जलपान कयलन्हि आओर सपना एवं गोलूक विवाह करयबाक विचार-विमर्श करए लगलाह।

दुश्मनी होकि। राति नहि बितलैक भोरे भोर माय फोन कयलखिन्ह आ पिता के दुखित होयबाक समाचार देलखिन्ह आ गाम आबए लेल कहलखिन्ह।

आलोक फेर असमंजस मे पड़ि गेलाह। एक दिश सपना हुनकर सपना अपन सपना मानि साकार क समर्पित करबाक वास्ते उत्सुक आओर एक दिशि बीमार बाप। बेटी सँ एहि समस्याक वर्णन कयलन्हि त बेटी एकटा इंजीनियर जकाँ समाधान दैत कहलखिन्ह जे वो अपन पिताक इलाजक वास्ते गाम जाथि आओर माँ के दीक्षांत समाराहे मे अयबाक व्यवस्था कऽ दैथि।

आलोक अपन बेटीक परिपक्वता पर गौरवान्वित होइत गाम जयबाक निर्णय कयलन्हि ताबते मे दूरदर्शन पर समाचार आयल जे शहर मे दंगा भऽ गेल आओर एहतियात के कारण अगिला 24 घंटा तक कर्फ्यु लागल रहत। आलोक के आगु एक बेर फेर अन्हार भऽ गेल।

ओ तुरंत अपन बहिन गहना के पिताजीक समाचार सुनौलन्हि आ बहिन के निर्देश देलखिन्ह जे पिताजी के अपना डेरा पर आनि इलाज प्रारंभ करए। आओर कहलखिन्ह जे कर्फ्यु हटिते हमहुँ पहुंचि रहल छी।

बहिन गहना कहलखिन्ह जे सरोज तऽ आइये भोर मे अपने कॉलेज जा रहल छथि। मनोज अपन पत्नीक संग आइ सांझ मे शिमला जा रहल अछि। आओर मनोजक बाबूजीक छुट्टी समाप्त भऽ गेल छन्हि। तँ अहीं कोनो व्यवस्था करु।

एतबा सुनि आलोक स्तब्ध भऽ गेला आओर पत्नीक संग विचार विमर्श क अपन बेटी जमाय के फोन कयलन्हि जे अहाँ बाबूजी के दरभंगा आनि इलाज प्रारंभ करबाऊ। हमहुँ आबि रहल छी।

अस्पताल मे बाबूजीक इलाज होमए लागल। दू दिनक बाद आलोक सेहो पहुंचि गेलाह। आलोक के देखिते हिनकर पिता भोकासी पाड़ि कानय लगलाह। आलोक सेहो अपना आप के रोकि नहिं सकलाह। जे डाक्टर इलाज करैत रहथिन्ह, कहलथिन्ह जे चिंताक कोनो बात नहिं। बुढ़क शरीर छैन्हि।



बेटा सँ अलगाव बर्दाश्त नहि भेलैन्हि। तँ आलोकजी एहिबेर अहाँ हिनका अपने संग नेने जाऊ। आलोक जी एही ताक मे रहबे करथि। तुरंत स्टेशन गेलाह आओर एक सप्ताहक बादक तारीख के रिजर्वेशन करौलन्हि। अस्पताल सँ छुट्टी भेटलाक पश्चात् आलोकजी अपन माय-बापक संग अपन बेटीक घर पहुँचलाह। आलोकक बेटी संगीता अपन बाबाक चमकैत और दमकैत चेहरा देखि प्रसन्नतापूर्वक चाह बनैयबाक वास्ते रसोईघर मे पैर रखिते छथि कि आलोकक फोन एक बेर फेर घनघना उठल -

आलोक - हेलौ।

सपना - बाबूजी प्रणाम।

आलोक - यशस्वी भवऽ।

सपना - बाबूजी ! हम माँ संगे खुब प्रसन्न छी। आइ भोर मे गोलू (आलोक बाबूक बेटा) के फोन आयल छल। कैंपस सेलेक्शन मे ओकर चयन भऽ गेलैक। एक सप्ताह मे अप्वाइंटमेंट लेटर भेटि जयतैक एकरा बादे वो अहाँ लग आयत।

आलोक - लोंग लिव माई सन। अच्छा ई बताऊ जे अहाँ एखन फोन कियक कयलहुँ अछि।

सपना - एक घंटाक पश्चात् दीक्षांत समारोह शुरू होयत अहाँ तुरंत कोनो साइबर कैफे मे जाऊ जतए वेभ कैमरा लागल होइक। अपन मेल चेक करू जरूरी सूचना भरू। तखन ओ कंप्यूटर हमरा लैपटौप सँ कनेक्ट भऽ जायत आओर अहाँ घर बैसल दीक्षांत समारोहक आनंद उठा सकैत छी।

आलोक बेटी कँ आशीर्वाद दैत जमाय सँ आस-पास मे कोनो साइबर कैफे के पता पुछलखिन्ह।

जमाय - बाबूजी, अपना घरे मे सब सुविधा छैक। आलोक बाबूक नातिन तुरंत सब व्यवस्था कयलन्हि। किछुए कालक बाद कंप्यूटर के स्क्रीन पर दीक्षांत समारोहक दृश्य उभरय लागल। आलोकक बाबूजी अपन पोती सपनाक सफलता पर झूमय लगलाह। ताबते मे आलोकक माय अपन पोतीक संग जलपान नेने पहुँचलन्हि सब गोटे संगे-संग जलपान कयलन्हि आओर सपना एवं गोलूक विवाह करयबाक विचार-विमर्श करए लगलाह।



झिझिर कोना

– डॉ. वीरेन्द्र

क्षेत्रीयताक ओ आन्दोलन राजूक जिनगी मे तेहेन ने घाव कय देलकै जे ओ कतहुक नहि रहल। एहि बूढारी मे पाकल मोछ–दाढ़ी लय कोन लाठीक बलें ओ डेग बढाओत दुनियाँ मे सब आब ओकर रहलै के? किछु दिन सँ बम्बई जेना ओकरा काटय दौड़ैक। ओ आब एहि महानगर कें छोड़ि फेर अपन कोशी कातक उजरल उपरत गाम जैबा लेल व्याकुल छल जकरा कहियो ओ विवश भए छोड़िछाड़ि देने रहै। मुदा मोन में वैह प्रश्न घुमय लगै– कौना मुँह लय कय जैब? के चिन्हत? लोक मे की कहबै? आब गाम मे की करब? कुसहा बान्ह टूटलाक बाद तँ गामो कहाँ रहल उजड़िये गेलै।

ससौलाबालीक घरे निपत्ता भए गेलै। सभटा खेत प्रकार बालू सँ भरि गेल रहै। माल–जालक तँ कोनो बाते नहि रहलैं। माने चारु दिस अन्हारे– अन्हारे।

ओना तै दिनक बातो अलग रहै आब तँ बाप–पित्ती छथिन्ह नहि। दर दियाद खेती पथियारी करा दैथि। शुरु मे अगहन मे प्रतिवर्ष राजू गाम अबै छल। किछु दिन रहि चाउर–धान बेचि चल जाइत रहय। मुदा आब तँ से सब बन्न भेला युग भए गेलै। परिस्थिति बदलैत गेलै आ बदलैत गेल राजू। आब गाम अैबा मे नफा कम घटा बेसी रहैक। हजार टाका टेनक रिजर्वेशने मे चलि जाइक एक पीठ मे। तहिया राजू बड़ उम्मीद लय, बड़ उमंग सँ गामक जमीन जायदाद कै छोड़ि कय बम्बई अैल रहय जिन्दगी मे किछु करबा



झिझिर कोना

– डॉ. वीरेन्द्र

क्षेत्रीयताक ओ आन्दोलन राजूक जिनगी मे तेहेन ने घाव कय देलकै जे ओ कतहुक नहि रहल। एहि बूढारी मे पाकल मोछ–दाढ़ी लय कोन लाठीक बलें ओ डेग बढाओत दुनियाँ मे सब आब ओकर रहलै के? किछु दिन सँ बम्बई जेना ओकरा काटय दौड़ैक। ओ आब एहि महानगर कें छोड़ि फेर अपन कोशी कातक उजरल उपरत गाम जैबा लेल व्याकुल छल जकरा कहियो ओ विवश भए छोड़िछाड़ि देने रहै। मुदा मोन में वैह प्रश्न घुमय लगै– कौना मुँह लय कय जैब? के चिन्हत? लोक मे की कहबै? आब गाम मे की करब? कुसहा बान्ह टूटलाक बाद तँ गामो कहाँ रहल उजड़िये गेलै।

ससौलाबालीक घरे निपत्ता भए गेलै। सभटा खेत प्रकार बालू सँ भरि गेल रहै। माल–जालक तँ कोनो बाते नहि रहलैं। माने चारु दिस अन्हारे– अन्हारे।

ओना तै दिनक बातो अलग रहै आब तँ बाप–पित्ती छथिन्ह नहि। दर दियाद खेती पथियारी करा दैथि। शुरु मे अगहन मे प्रतिवर्ष राजू गाम अबै छल। किछु दिन रहि चाउर–धान बेचि चल जाइत रहय। मुदा आब तँ से सब बन्न भेला युग भए गेलै। परिस्थिति बदलैत गेलै आ बदलैत गेल राजू। आब गाम अैबा मे नफा कम घटा बेसी रहैक। हजार टाका टेनक रिजर्वेशने मे चलि जाइक एक पीठ मे। तहिया राजू बड़ उम्मीद लय, बड़ उमंग सँ गामक जमीन जायदाद कै छोड़ि कय बम्बई अैल रहय जिन्दगी मे किछु करबा



झिझिर कोना

– डॉ. वीरेन्द्र

क्षेत्रीयताक ओ आन्दोलन राजूक जिनगी मे तेहेन ने घाव कय देलकै जे ओ कतहुक नहि रहल। एहि बूढारी मे पाकल मोछ–दाढ़ी लय कोन लाठीक बलें ओ डेग बढाओत दुनियाँ मे सब आब ओकर रहलै के? किछु दिन सँ बम्बई जेना ओकरा काटय दौड़ैक। ओ आब एहि महानगर कें छोड़ि फेर अपन कोशी कातक उजरल उपरत गाम जैबा लेल व्याकुल छल जकरा कहियो ओ विवश भए छोड़िछाड़ि देने रहै। मुदा मोन में वैह प्रश्न घुमय लगै– कौना मुँह लय कय जैब? के चिन्हत? लोक मे की कहबै? आब गाम मे की करब? कुसहा बान्ह टूटलाक बाद तँ गामो कहाँ रहल उजड़िये गेलै।

ससौलाबालीक घरे निपत्ता भए गेलै। सभटा खेत प्रकार बालू सँ भरि गेल रहै। माल–जालक तँ कोनो बाते नहि रहलैं। माने चारु दिस अन्हारे– अन्हारे।

ओना तै दिनक बातो अलग रहै आब तँ बाप–पित्ती छथिन्ह नहि। दर दियाद खेती पथियारी करा दैथि। शुरु मे अगहन मे प्रतिवर्ष राजू गाम अबै छल। किछु दिन रहि चाउर–धान बेचि चल जाइत रहय। मुदा आब तँ से सब बन्न भेला युग भए गेलै। परिस्थिति बदलैत गेलै आ बदलैत गेल राजू। आब गाम अैबा मे नफा कम घटा बेसी रहैक। हजार टाका टेनक रिजर्वेशने मे चलि जाइक एक पीठ मे। तहिया राजू बड़ उम्मीद लय, बड़ उमंग सँ गामक जमीन जायदाद कै छोड़ि कय बम्बई अैल रहय जिन्दगी मे किछु करबा

लेल। गाम मे मंदिर लग नस्ता– पानपीयाइक नीक दोकान रहै एकटा टूटली मड़ैया मे। तै दिन छठि, दुर्गा पूजा, चौढचन्द मे खाजा लड्डू आ जिलेबीक खूब बिक्री होईत। ओकर चन्द्रकला नामी रहै। कोजागरा आ मधुश्रावणी मे तँ राजू हलुआईक दूनू हाथ मे लड्डू आ लगनक बाते अलग अनदिनो मुरही, घुघनी, कचरी, लाइ–छोला, कच खुब बिकाइत रहै ओहि चौराहा पर। एहि दोकान बले राजू दू बीगहा खेत अरजने रहय जिनगी भरि संघर्ष करैत राजू थकि गेल रहय। नान्हिहटा छल कि माय मरि गेलै। सतमाय पोसने रहै आ एते टा बनौने रहै। फेर बाप अलग कय देने रहै आ राजू गाम मे अनहरोखे सँ राति धरि खटय। भोरे चुल्हा मे कोइला झोंकि भठी पर जे बेसैय से एकहि बेरि दस बजे राएति मे चैन होइक। दिन भरि वैह मैदा, वेसन चासनी, झाँझ आ कराहीक चमूर मे ओझरैल रहय।

कहियो दोकान मे चीनी घटल तँ कहियो बुनिया लेल चम्पई रंग घटल। दू टा छोट टेहलबा रहै– बड़ी चैंपियन। बाल्टीक बाल्टी पानि उघै आ बासन–कूसन मांजि टेबुल कुर्सी पोछि एकदम फिट कैने रहै। दूनू छौड़ा के पेडा लड्डू फ्री रहै मुदा अपना लेल राजूकें धन सन। जेना ओकरा जिनगी मे कोनो मिठास नहि। टीनक टीन नेपाली डलडा खर्च होइक मुदा ओकरा जिनगीमे कोनो लेसि नहि अपने तँ वैह सुखैल रोटी आ तरकारी। तेहेन ने देह पसरि गैलै आ शुगरक शिकाइत भए गेल रहै जे अकत तीत करैते ओकरा नसीब होइक। अपना दोसरा कें भलहि ओ रंग–विरंगी पूरी–तरकारी खुअैल करय। आब तँ सुध धनीकहा सभ गेस चुल्हा लय बडका होटल खोलि लेलय। जहिया सँ ओहि गाम मे रंग–विरंगी सुधाक मिठाई ठेल देलके आ दूध मे अगबे पानि फेटय लगलैं तहिया सँ राजूक दोकान मकमय लगलै। रसमलाई, चमचम, रसगुला, कालाजामुन, वरफी के आगां के पूछैय लड्डू आ जिलेबी कें? ने आब मुंगवा आ खाजाक भार जाइक आ ने भोज मे जिलेबीक मांग होई। आ राजू के नवका मिठाई बनैबाक लुरि नहि रहै। ताबे तेहेन–तेहेन ने होटल गाम में फूजि गेलै चमचमौआ स्पीकर आ ही लागल–माउस माछ, मुर्गा, समौसा, डोसा, चाह बला, जे राजू हलुआइक मरैया मे आब कुकुरो नहि जाइक आ राजूक जिनगी मे भूरे–भूर भए गेल रहै। पहिने नोकरबा भागि गेलै फेर दोकान मे दीप सँ आगि लागि गेलै। लगन–पाती मे पटनाक कारीगर आबय लगलै आ गाम मे राजू हलुआईक साम्राज्य समाप्त भय गलै।

राजू हलुआई सँ खेतिहर बनि गेल। ने हरवाही अबै आ ने दाउन दोगौन करय अबै। भरि दिन अपने खेत कोड़य मुदा तेहेन ने वाढि अबै से सबटा फसिल दहा जाइक। घरबाली तेहेन ने अलूरि जे कहियो कंसार चढ़ा मुरही सय हाट नहि गेलै। बेटा कें जाउनडीस भए गैले आ गाम मे कियो ऋण पैंच नहि देलकै आ ने खेत बिकेलै से राजूक मोन एकदम टूटी गेलै गाम सँ।

बड़ सोचि विचारि राजू गाम त्यागि मासे दिनक बाद पविारक संग बम्बई आबि गेल। एतय अबिते ओखर कपार चमकि गेलै। समुद्रक कात मे एकटा टी स्टॉल खौललक आ समुद्रक लहरि जकाँ गला मे रुपैया भरय लगलै। देखले दिन मे तीस गज जमीन लए मकान बना लेलक। आब ओखर बेटा कानवेन्ट मे पढय लगलै। खूब फराटा मराठी बजै। गोर–नार नमहर पेंट–सर्ट टाई जूता मे बडकाक धीया पूजता सब मोटर साइकिल पर चलै। आब तँ राजूक पत्नी सेहो बम्बइया सूट सलवार पहिरय। लागल रहै आ राजू वैह धोती कुर्ता गमछा। घर मे ए.सी, कम्पयूटर...

एक जमाना भए गेल हेतै राजूक एतय अैला। बेटा रवि तँ अपन भाषा बिसरिये गेल रहै। कहियो गाम जैबाक नाम कहाँ लैक। ओकरा तँ अपने गाम परदेस लगै।

मुदा तेहेन ने अगराही लगलै जे.. ओहि दिन कोनो परीक्षा रहै आ बिहारी आ मराठी छात्र मे भिडन्त भए गेलै। बिहारी ट्रेन पर पथराव भेलै, सिनेमा हॉल मे आगि लगा देलकै आ बिहारी मजदूरक बस्तीमे की नहि उपद्रवी सबकैलक। फल आ तरकारी दोकानदारक धन इज्जति सभलूटा गेलै। रवि स्कूल तँ अबैत रहय। हल्ला भेलै बिहारी..बिहारिया रवि... आ ओकरा देह पर पेट्रोल छिटि सलाई खररि देलकै आ ओ मुर्गी जकाँ छटफटाइत रहल। पुलिस प्रशासन मौन–बौक बनल रहलै आ सोम दिन रविक अंत। राजू जाहि हाथे रवि कें टोफी– विस्कुट खुऔने रहय ताहि हाथ ओकरा ओकर संस्कार करय पड़ले। राजू एकदम विक्षप्त भए गेल। गाम मे रोजी दुटलै आ शहर मे जिनगी दुटलै।

बम्बईक होटल पर आतंकवादी हमलाक बाद राजू उजड़ि गेलै। आब ओहि इलाका मे दोकान लग महीनो धरि लोकक आन– जान बन्न रहलै। सभ दोकनदार पड़ा गेल छोटका पूंजी बला सभ।

राजू सोचलक जे फेर घूमि गाम चलि जाइक फेर मोन मे अेलै गाम कियै जैत? ओ विचित्र द्वन्द्व मे पड़ि गेल। पत्नी कहने रहथिन्ह– अहाँ गाम मे रहब कतय? अहाँक जमीन अहाँक पितियौत मियाँ हाथे बेचि लेलनि से बैजू नहि परुकाँ फोन कैने रहय... घर कें कोशी मैया निगलि गेली। गाम मे वैह खेत पथार लेल दर–दियाद सँ झंझट मे दूनू गोटेक जिनगी पिसा जैत। अहाँके के हैत अपन? के कय देत पंचौती? कियै दैत कियो अहाँ दिस सँ कचहरी मे गबाही?

आब राजूक मोन आगाँ–पाँचा करय लगलै जाइ... नहि एतहि ठीक छै... जहिना बच्चा मे गाम मे झिझिर कोना झिझिर कोना कोन कोना जाउ खेलाइत छल तहिना आई बूढारी मे सेहो एक बेरि वैह खैल ओ खेलाय लागल आ ओकर माथ शून्य भेल जा रहल छलै ओ कोनो निर्णय नहि लय पबै छल।

(दुल्ली पट्टी मधुबनी बिहार)

लेल। गाम मे मंदिर लग नस्ता– पानपीयाइक नीक दोकान रहै एकटा टूटली मड़ैया मे। तै दिन छठि, दुर्गा पूजा, चौढचन्द मे खाजा लड्डू आ जिलेबीक खूब बिक्री होईत। ओकर चन्द्रकला नामी रहै। कोजागरा आ मधुश्रावणी मे तँ राजू हलुआईक दूनू हाथ मे लड्डू आ लगनक बाते अलग अनदिनो मुरही, घुघनी, कचरी, लाइ–छोला, कच खुब बिकाइत रहै ओहि चौराहा पर। एहि दोकान बले राजू दू बीगहा खेत अरजने रहय जिनगी भरि संघर्ष करैत राजू थकि गेल रहय। नान्हिहटा छल कि माय मरि गेलै। सतमाय पोसने रहै आ एते टा बनौने रहै। फेर बाप अलग कय देने रहै आ राजू गाम मे अनहरोखे सँ राति धरि खटय। भोरे चुल्हा मे कोइला झोंकि भठी पर जे बेसैय से एकहि बेरि दस बजे राएति मे चैन होइक। दिन भरि वैह मैदा, वेसन चासनी, झँाझ आ कराहीक चमूर मे ओझरैल रहय।

कहियो दोकान मे चीनी घटल तँ कहियो बुनिया लेल चम्पई रंग घटल। दू टा छोट टेहलबा रहै– बड़ी चैंपियन। बाल्टीक बाल्टी पानि उघै आ बासन–कूसन मांजि टेबुल कुर्सी पोछि एकदम फिट कैने रहै। दूनू छौड़ा के पेडा लड्डू फ्री रहै मुदा अपना लेल राजूकें धन सन। जेना ओकरा जिनगी मे कोनो मिठास नहि। टीनक टीन नेपाली डलडा खर्च होइक मुदा ओकरा जिनगीमे कोनो लेसि नहि अपने तँ वैह सुखैल रोटी आ तरकारी। तेहेन ने देह पसरि गैलै आ शुगरक शिकाइत भए गेल रहै जे अकत तीत करैते ओकरा नसीब होइक। अपना दोसरा कें भलहि ओ रंग–विरंगी पूरी–तरकारी खुअैल करय। आब तँ सुध धनीकहा सभ गेस चुल्हा लय बडका होटल खोलि लेलय। जहिया सँ ओहि गाम मे रंग–विरंगी सुधाक मिठाई ठेल देलके आ दूध मे अगबे पानि फेटय लगलैं तहिया सँ राजूक दोकान मकमय लगलै। रसमलाई, चमचम, रसगुला, कालाजामुन, वरफी के आगां के पूछैय लड्डू आ जिलेबी कें? ने आब मुंगवा आ खाजाक भार जाइक आ ने भोज मे जिलेबीक मांग होई। आ राजू के नवका मिठाई बनैबाक लुरि नहि रहै। ताबे तेहेन–तेहेन ने होटल गाम में फूजि गेलै चमचमौआ स्पीकर आ ही लागल– माउस माछ, मुर्गा, समौसा, डोसा, चाह बला, जे राजू हलुआइक मरैया मे आब कुकुरो नहि जाइक आ राजूक जिनगी मे भूरे–भूर भए गेल रहै। पहिने नोकरबा भागि गेलै फेर दोकान मे दीप सँ आगि लागि गेलै। लगन–पाती मे पटनाक कारीगर आबय लगलै आ गाम मे राजू हलुआईक साम्राज्य समाप्त भय गलै।

राजू हलुआई सँ खेतिहर बनि गेल। ने हरवाही अबै आ ने दाउन दोगौन करय अबै। भरि दिन अपने खेत कोड़य मुदा तेहेन ने वाढि अबै से सबटा फसिल दहा जाइक। घरबाली तेहेन ने अलूरि जे कहियो कंसार चढ़ा मुरही सय हाट नहि गेलै। बेटा कें जाउनडीस भए गैले आ गाम मे कियो ऋण पैंच नहि देलकै आ ने खेत बिकेलै से राजूक मोन एकदम टूटी गेलै गाम सँ।

बड़ सोचि विचारि राजू गाम त्यागि मासे दिनक बाद पविारक संग बम्बई आबि गेल। एतय अबिते ओखर कपार चमकि गेलै। समुद्रक कात मे एकटा टी स्टॉल खौललक आ समुद्रक लहरि जकाँ गला मे रुपैया भरय लगलै। देखले दिन मे तीस गज जमीन लए मकान बना लेलक। आब ओखर बेटा कानवेन्ट मे पढय लगलै। खूब फराटा मराठी बजै। गोर–नार नमहर पेंट–सर्ट टाई जूता मे बडकाक धीया पूजता सब मोटर साइकिल पर चलै। आब तँ राजूक पत्नी सेहो बम्बइया सूट सलवार पहिरय। लागल रहै आ राजू वैह धोती कुर्ता गमछा। घर मे ए.सी, कम्पयूटर...

एक जमाना भए गेल हेतै राजूक एतय अैला। बेटा रवि तँ अपन भाषा बिसरिये गेल रहै। कहियो गाम जैबाक नाम कहाँ लैक। ओकरा तँ अपने गाम परदेस लगै।

मुदा तेहेन ने अगराही लगलै जे.. ओहि दिन कोनो परीक्षा रहै आ बिहारी आ मराठी छात्र मे भिडन्त भए गेलै। बिहारी ट्रेन पर पथराव भेलै, सिनेमा हॉल मे आगि लगा देलकै आ बिहारी मजदूरक बस्तीमे की नहि उपद्रवी सबकैलक। फल आ तरकारी दोकानदारक धन इज्जति सभलूटा गेलै। रवि स्कूल तँ अबैत रहय। हल्ला भेलै बिहारी..बिहारिया रवि... आ ओकरा देह पर पेट्रोल छिटि सलाई खररि देलकै आ ओ मुर्गी जकाँ छटफटाइत रहल। पुलिस प्रशासन मौन–बौक बनल रहलै आ सोम दिन रविक अंत। राजू जाहि हाथे रवि कें टोफी– विस्कुट खुऔने रहय ताहि हाथ ओकरा ओकर संस्कार करय पड़ले। राजू एकदम विक्षप्त भए गेल। गाम मे रोजी दुटलै आ शहर मे जिनगी दुटलै।

बम्बईक होटल पर आतंकवादी हमलाक बाद राजू उजड़ि गेलै। आब ओहि इलाका मे दोकान लग महीनो धरि लोकक आन– जान बन्न रहलै। सभ दोकनदार पड़ा गेल छोटका पूंजी बला सभ।

राजू सोचलक जे फेर घूमि गाम चलि जाइक फेर मोन मे अेलै गाम कियै जैत? ओ विचित्र द्वन्द्व मे पड़ि गेल। पत्नी कहने रहथिन्ह– अहाँ गाम मे रहब कतय? अहाँक जमीन अहाँक पितियौत मियाँ हाथे बेचि लेलनि से बैजू नहि परुकाँ फोन कैने रहय... घर कें कोशी मैया निगलि गेली। गाम मे वैह खेत पथार लेल दर–दियाद सँ झंझट मे दूनू गोटेक जिनगी पिसा जैत। अहाँके के हैत अपन? के कय देत पंचौती? कियै दैत कियो अहाँ दिस सँ कचहरी मे गबाही?

आब राजूक मोन आगाँ–पाँचा करय लगलै जाइ... नहि एतहि ठीक छै... जहिना बच्चा मे गाम मे झिझिर कोना झिझिर कोना कोन कोना जाउ खेलाइत छल तहिना आई बूढारी मे सेहो एक बेरि वैह खैल ओ खेलाय लागल आ ओकर माथ शून्य भेल जा रहल छलै ओ कोनो निर्णय नहि लय पबै छल।

(दुल्ली पट्टी मधुबनी बिहार)

लेल। गाम मे मंदिर लग नस्ता– पानपीयाइक नीक दोकान रहै एकटा टूटली मड़ैया मे। तै दिन छठि, दुर्गा पूजा, चौढचन्द मे खाजा लड्डू आ जिलेबीक खूब बिक्री होईत। ओकर चन्द्रकला नामी रहै। कोजागरा आ मधुश्रावणी मे तँ राजू हलुआईक दूनू हाथ मे लड्डू आ लगनक बाते अलग अनदिनो मुरही, घुघनी, कचरी, लाइ–छोला, कच खुब बिकाइत रहै ओहि चौराहा पर। एहि दोकान बले राजू दू बीगहा खेत अरजने रहय जिनगी भरि संघर्ष करैत राजू थकि गेल रहय। नान्हिहटा छल कि माय मरि गेलै। सतमाय पोसने रहै आ एते टा बनौने रहै। फेर बाप अलग कय देने रहै आ राजू गाम मे अनहरोखे सँ राति धरि खटय। भोरे चुल्हा मे कोइला झोंकि भठी पर जे बेसैय से एकहि बेरि दस बजे राएति मे चैन होइक। दिन भरि वैह मैदा, वेसन चासनी, झाँझ आ कराहीक चमूर मे ओझरैल रहय।

कहियो दोकान मे चीनी घटल तँ कहियो बुनिया लेल चम्पई रंग घटल। दू टा छोट टेहलबा रहै– बड़ी चैंपियन। बाल्टीक बाल्टी पानि उघै आ बासन–कूसन मांजि टेबुल कुर्सी पोछि एकदम फिट कैने रहै। दूनू छौड़ा के पेडा लड्डू फ्री रहै मुदा अपना लेल राजूकें धन सन। जेना ओकरा जिनगी मे कोनो मिठास नहि। टीनक टीन नेपाली डलडा खर्च होइक मुदा ओकरा जिनगीमे कोनो लेसि नहि अपने तँ वैह सुखैल रोटी आ तरकारी। तेहेन ने देह पसरि गैलै आ शुगरक शिकाइत भए गेल रहै जे अकत तीत करैते ओकरा नसीब होइक। अपना दोसरा कें भलहि ओ रंग–विरंगी पूरी–तरकारी खुऐल करय। आब तँ सुध धनीकहा सभ गेस चुल्हा लय बडका होटल खोलि लेलय। जहिया सँ ओहि गाम मे रंग–विरंगी सुधाक मिठाई ठेल देलके आ दूध मे अगबे पानि फेटय लगलैं तहिया सँ राजूक दोकान मकमय लगलै। रसमलाई, चमचम, रसगुला, कालाजामुन, वरफी के आगां के पूछैय लड्डू आ जिलेबी कें? ने आब मुंगवा आ खाजाक भार जाइक आ ने भोज मे जिलेबीक मांग होई। आ राजू के नवका मिठाई बनैबाक लुरि नहि रहै। ताबे तेहेन–तेहेन ने होटल गाम में फूजि गेलै चमचमौआ स्पीकर आ ही लागल–माउस माछ, मुर्गा, समौसा, डोसा, चाह बला, जे राजू हलुआइक मरैया मे आब कुकुरो नहि जाइक आ राजूक जिनगी मे भूरे–भूर भए गेल रहै। पहिने नोकरबा भागि गेलै फेर दोकान मे दीप सँ आगि लागि गेलै। लगन–पाती मे पटनाक कारीगर आबय लगलै आ गाम मे राजू हलुआईक साम्राज्य समाप्त भय गलै।

राजू हलुआई सँ खेतिहर बनि गेल। ने हरवाही अबै आ ने दाउन दोगौन करय अबै। भरि दिन अपने खेत कोड़य मुदा तेहेन ने वाढि अबै से सबटा फसिल दहा जाइक। घरबाली तेहेन ने अलूरि जे कहियो कंसार चढ़ा मुरही सय हाट नहि गेलै। बेटा कें जाउनडीस भए गैले आ गाम मे कियो ऋण पैंच नहि देलकै आ ने खेत बिकेलै से राजूक मोन एकदम टूटी गेलै गाम सँ।

बड़ सोचि विचारि राजू गाम त्यागि मासे दिनक बाद पविारक संग बम्बई आबि गेल। एतय अबिते ओखर कपार चमकि गेलै। समुद्रक कात मे एकटा टी स्टॉल खौललक आ समुद्रक लहरि जकाँ गला मे रुपैया भरय लगलै। देखले दिन मे तीस गज जमीन लए मकान बना लेलक। आब ओखर बेटा कानवेन्ट मे पढय लगलै। खूब फराटा मराठी बजै। गोर–नार नमहर पेंट–सर्ट टाई जूता मे बडकाक धीया पूजता सब मोटर साइकिल पर चलै। आब तँ राजूक पत्नी सेहो बम्बइया सूट सलवार पहिरय। लागल रहै आ राजू वैह धोती कुर्ता गमछा। घर मे ए.सी, कम्प्यूटर...

एक जमाना भए गेल हेतै राजूक एतय अैला। बेटा रवि तँ अपन भाषा बिसरिये गेल रहै। कहियो गाम जैबाक नाम कहाँ लैक। ओकरा तँ अपने गाम परदेस लगै।

मुदा तेहेन ने अगराही लगलै जे.. ओहि दिन कोनो परीक्षा रहै आ बिहारी आ मराठी छात्र मे भिडन्त भए गेलै। बिहारी ट्रेन पर पथराव भेलै, सिनेमा हॉल मे आगि लगा देलकै आ बिहारी मजदूरक बस्तीमे की नहि उपद्रवी सबकैलक। फल आ तरकारी दोकानदारक धन इज्जति सभलूटा गेलै। रवि स्कूल तँ अबैत रहय। हल्ला भेलै बिहारी..बिहारिया रवि... आ ओकरा देह पर पेट्रोल छिटि सलाई खररि देलकै आ ओ मुर्गी जकाँ छटफटाइत रहल। पुलिस प्रशासन मौन–बौक बनल रहलै आ सोम दिन रविक अंत। राजू जाहि हाथे रवि कें टोफी– विस्कुट खुऔने रहय ताहि हाथ ओकरा ओकर संस्कार करय पड़ले। राजू एकदम विक्षप्त भए गेल। गाम मे रोजी दुटलै आ शहर मे जिनगी दुटलै।

बम्बईक होटल पर आतंकवादी हमलाक बाद राजू उजड़ि गेलै। आब ओहि इलाका मे दोकान लग महीनो धरि लोकक आन– जान बन्न रहलै। सभ दोकनदार पड़ा गेल छोटका पूंजी बला सभ।

राजू सोचलक जे फेर घूमि गाम चलि जाइक फेर मोन मे अेलै गाम कियै जैत? ओ विचित्र द्वन्द्व मे पड़ि गेल। पत्नी कहने रहथिन्ह– अहाँ गाम मे रहब कतय? अहाँक जमीन अहाँक पितियौत मियाँ हाथे बेचि लेलनि से बैजू नहि परुकाँ फोन कैने रहय... घर कें कोशी मैया निगलि गेली। गाम मे वैह खेत पथार लेल दर–दियाद सँ झंझट मे दूनू गोटेक जिनगी पिसा जैत। अहाँके के हैत अपन? के कय देत पंचौती? कियै दैत कियो अहाँ दिस सँ कचहरी मे गबाही?

आब राजूक मोन आगाँ–पाँचा करय लगलै जाइ... नहि एतहि ठीक छै... जहिना बच्चा मे गाम मे झिझिर कोना झिझिर कोना कोन कोना जाउ खेलाइत छल तहिना आई बूढारी मे सेहो एक बेरि वैह खैल ओ खेलाय लागल आ ओकर माथ शून्य भेल जा रहल छलै ओ कोनो निर्णय नहि लय पबै छल।

(दुल्ली पट्टी मधुबनी बिहार)

किसानक पूजी

– कपिलेश्वर राउत

मंगल भोरे धान काटए गेल से दूपहरियामे घरपर अएल। घरपर अविते रौदेलहा धानक दौनी लेल खोंह छिटि तैयारीमे मोस्तैज भऽ गेल।

जहिना सरकार लेल मार्च महिना हिसाव–किताव आ आमद–खर्चक होइत छै तहिना वनिया लेल दिवाली, पंडित–पुरोहित लेल यज्ञ आ दूर्गापूजा तहिना गृहस्तक लेल अगहन। खन धान काटू तँ खन धान तैयार करू, खन गहूमक खेत जोत–कोर करू तँ खन गाए–भैंस–बरदकेँ सानी–कुट्टी लगाऊ। चन तरहक काज रहने मंगल परेसान रहैत छला।

साझू पहर मंगल जोगिन्दरक ओहिठाम आगि तपैले गेल। गप–सप्प होमए लगलै। मंगल बाजल– ''हौ जोगिन्दर भाय गप–सप्प कि करब, काजे ततेक ऐछ जे परेशान–परेशान रहैत छी। झरो फिरेक फुरसत नै रहैत अछि। ताहूमे अगहनमे।''

जोगिन्दर बाजल– ''एतेक परेशान होइक कोन काज छै आब तँ धान खेतक जोताइसँ लऽ कऽ दौनी तकक लेल थ्रेसर, ट्रेक्टर, गहूम बाउग करैले मशीन चन तरहक मशीन सभ भऽ गेलै हैं। तँए परेशान हेबाक कोनो जरूरत नै छै। एकटा कहबी छै जे पूत परदेश गेल देव पितर सभसँ गेल। से नै ने करऽ दिमागसँ काज लएह। आ सभ दिस नजरि राखह।'

मंगल बाजल– ''से तँ ठीके कहै छहक। एकटा परेशानी रहए तब ने। लऽ दऽ कऽ एकटा बेटा ऐछ छोड़ा अवण्ड भऽ गेल ऐछ। केतनो कहै छिऐ जे मन लगा कऽ पढ़–लिख जे दू अक्षरक बोध हेतो तँ अपने काज देतो से करिते ने ऐछ। एकटा मोवाइल किन लेलकहैं आ हरदम गीत–नादक पाछाँ अपसियात रहैत अछि। कि कहब गहूमक बिआ 80 किलो एकटा कोठीमे रखने रही से की केलक तँ कखैन ने कखैन सभटा बीआ बेच लेलक आ एकटा मोवाइल कीन लेलक। तुहीं कहऽ आब खेती केना करब छौड़ा बदमास भऽ गेल।''

जोगिन्द बाजल– ''ई तँ बड़ खराब काज भेलै। जहन पूजिये चोरा कऽ बेच लेत तँ कोनो परिवारकेँ गुजर–वसर आकि उनैत केना हेतै। एक कोठी अनाज तँ पूजी नै ने होएत छै, पूजी तँ बीआक लेल जे राखल जाइत छै सएह ने होइत छै। जैसँ अधिक उपजा आकि आमदनी होइ सएह ने पूजी भेल। जँ पूजीये कियो खा गेल तँ सभटा बस्तु खा गेल।''

मंगल खैनी झारैत आगू बाजल– एक तँ रौदीक मारल छी दू बीघामे धान छल, उपरका खेतक धान तँ मारल गेल, निचला खेतक धान किछु भेल। तैपरसँ छोड़ा बिए बेच लेलक। आब बीआ खरिदू कि खाध खरिदू कि खेत जोताऊ। अही सबहक सोचमे परल छी।''

जोगिन्दर बाजल– ''खएर परेशान हेबाक जरूरत नै छै। एकटा कहबी छै जे चिन्तासँ चतुराइ घटे शोकसँ घटे शरीर, पापसँ लक्ष्मी घटे कह गये दास कबीर। तँए हमरा लगमे गहूमक बीआ ऐछ परूकँ साल उन्नत किसमक बीआसँ खेती केने छलौं। एक साल तकमे बीआ नै ने खराव होइत छै। तँए जे बीआक जरूरत हेतह से हम दऽ देबह। जँ अपना लग नै टाका हूअए तँ हम कहबऽ जे उन्नत किसमक बीआसँ खेती करह। खेतमे जँ हाल नै होइ तँ पटा कऽ खेती करिहह। नहि तँ धानोक खेती मारल गेल आ गहूमोक चलि जेतह। एकटा बात कहह जे तरकारी–फरकारीओ सबहक खेती केने छह कि नै?''

''हँ, हौ भाय तरकारीमे आल्लूँ, मुरै आ फरकारीमे कोबी, भाटा, टमाटरो सबहक खेती केने छी।''

जोगिन्दर– ''से तँ नीक बात छ, नै तँ एहि बेरूका सन खराब समएमे लोक बौआइऐ कऽ ने मरैत। किसानक तँ यएह सभ ने पूजी होइत छैक। समए–साल, आगाँ–पाछाँ देख कऽ खेती–बारी करक चाही। जाहिसँ कखनो मुँह मलीन नै हएत। तँए जे कहबिओ छैक मन हरखित तँ गाबी गीत।''

– गाम– बेरमा
भाया– तमुरिया
जिला– मधुबनी (बिहार)

किसानक पूजी

– कपिलेश्वर राउत

मंगल भोरे धान काटए गेल से दूपहरियामे घरपर अएल। घरपर अविते रौदेलहा धानक दौनी लेल खोंह छिटि तैयारीमे मोस्तैज भऽ गेल।

जहिना सरकार लेल मार्च महिना हिसाव–किताव आ आमद–खर्चक होइत छै तहिना वनिया लेल दिवाली, पंडित–पुरोहित लेल यज्ञ आ दूर्गापूजा तहिना गृहस्तक लेल अगहन। खन धान काटू तँ खन धान तैयार करू, खन गहूमक खेत जोत–कोर करू तँ खन गाए–भैंस–बरदकेँ सानी–कुट्टी लगाऊ। चन तरहक काज रहने मंगल परेसान रहैत छला।

साझू पहर मंगल जोगिन्दरक ओहिठाम आगि तपैले गेल। गप–सप्प होमए लगलै। मंगल बाजल– ''हौ जोगिन्दर भाय गप–सप्प कि करब, काजे ततेक ऐछ जे परेशान–परेशान रहैत छी। झरो फिरेक फुरसत नै रहैत अछि। ताहूमे अगहनमे।''

जोगिन्दर बाजल– ''एतेक परेशान होइक कोन काज छै आब तँ धान खेतक जोताइसँ लऽ कऽ दौनी तकक लेल थ्रेसर, ट्रेक्टर, गहूम बाउग करैले मशीन चन तरहक मशीन सभ भऽ गेलै हैँ। तँए परेशान हेबाक कोनो जरूरत नै छै। एकटा कहबी छै जे पूत परदेश गेल देव पितर सभसँ गेल। से नै ने करऽ दिमागसँ काज लएह। आ सभ दिस नजरि राखह।'

मंगल बाजल– ''से तँ ठीके कहै छहक। एकटा परेशानी रहए तब ने। लऽ दऽ कऽ एकटा बेटा ऐछ छोड़ा अवण्ड भऽ गेल ऐछ। केतनो कहै छिऐ जे मन लगा कऽ पढ़–लिख जे दू अक्षरक बोध हेतो तँ अपने काज देतो से करिते ने ऐछ। एकटा मोवाइल किन लेलकहैँ आ हरदम गीत–नादक पाछाँ अपसियात रहैत अछि। कि कहब गहूमक बिआ 80 किलो एकटा कोठीमे रखने रही से की केलक तँ कखैन ने कखैन सभटा बीआ बेच लेलक आ एकटा मोवाइल कीन लेलक। तुहीं कहऽ आब खेती केना करब छौड़ा बदमास भऽ गेल।''

जोगिन्द बाजल– ''ई तँ बड़ खराब काज भेलै। जहन पूजिये चोरा कऽ बेच लेत तँ कोनो परिवारकेँ गुजर–वसर आकि उनैत केना हेतै। एक कोठी अनाज तँ पूजी नै ने होएत छै, पूजी तँ बीआक लेल जे राखल जाइत छै सएह ने होइत छै। जैसँ अधिक उपजा आकि आमदनी होइ सएह ने पूजी भेल। जँ पूजीये कियो खा गेल तँ सभटा बस्तु खा गेल।''

मंगल खैनी झारैत आगू बाजल– एक तँ रौदीक मारल छी दू बीघामे धान छल, उपरका खेतक धान तँ मारल गेल, निचला खेतक धान किछु भेल। तैपरसँ छोड़ा बिए बेच लेलक। आब बीआ खरिदू कि खाध खरिदू कि खेत जोताऊ। अही सबहक सोचमे परल छी।''

जोगिन्दर बाजल– ''खएर परेशान हेबाक जरूरत नै छै। एकटा कहबी छै जे चिन्तासँ चतुराइ घटे शोकसँ घटे शरीर, पापसँ लक्ष्मी घटे कह गये दास कबीर। तँए हमरा लगमे गहूमक बीआ ऐछ परूकेँ साल उन्नत किसमक बीआसँ खेती केने छलौं। एक साल तकमे बीआ नै ने खराव होइत छै। तँए जे बीआक जरूरत हेतह से हम दऽ देबह। जँ अपना लग नै टाका हूअए तँ हम कहबऽ जे उन्नत किसमक बीआसँ खेती करह। खेतमे जँ हाल नै होइ तँ पटा कऽ खेती करिहह। नहि तँ धानोक खेती मारल गेल आ गहूमोक चलि जेतह। एकटा बात कहह जे तरकारी–फरकारीओ सबहक खेती केने छह कि नै?''

''हँ, हौ भाय तरकारीमे आल्लूँ, मुरै आ फरकारीमे कोबी, भाटा, टमाटरो सबहक खेती केने छी।''

जोगिन्दर– ''से तँ नीक बात छ, नै तँ एहि बेरूका सन खराब समएमे लोक बौआइऐ कऽ ने मरैत। किसानक तँ यएह सभ ने पूजी होइत छैक। समए–साल, आगाँ–पाछाँ देख कऽ खेती–बारी करक चाही। जाहिसँ कखनो मुँह मलीन नै हएत। तँए जे कहबिओ छैक मन हरखित तँ गाबी गीत।''

– गाम– बेरमा

भाया– तमुरिया

जिला– मधुबनी (बिहार)

किसानक पूजी

– कपिलेश्वर राउत

मंगल भोरे धान काटए गेल से दूपहरियामे घरपर अएल। घरपर अविते रौदेलहा धानक दौनी लेल खोंह छिटि तैयारीमे मोस्तैज भऽ गेल।

जहिना सरकार लेल मार्च महिना हिसाव-किताव आ आमद-खर्चक होइत छै तहिना वनिया लेल दिवाली, पंडित-पुरोहित लेल यज्ञ आ दूर्गापूजा तहिना गृहस्तक लेल अगहन। खन धान काटू तँ खन धान तैयार करू, खन गहूमक खेत जोत-कोर करू तँ खन गाए-भैंस-बरदकेँ सानी-कुट्टी लगाऊ। चन तरहक काज रहने मंगल परेसान रहैत छला।

साझू पहर मंगल जोगिन्दरक ओहिठाम आगि तपैले गेल। गप-सप्प होमए लगलै। मंगल बाजल- ''हौ जोगिन्दर भाय गप-सप्प कि करब, काजे ततेक ऐछ जे परेशान-परेशान रहैत छी। झरो फिरेक फुरसत नै रहैत अछि। ताहूमे अगहनमे।''

जोगिन्दर बाजल- ''एतेक परेशान होइक कोन काज छै आब तँ धान खेतक जोताइसँ लऽ कऽ दौनी तकक लेल थ्रेसर, ट्रेक्टर, गहूम बाउग करैले मशीन चन तरहक मशीन सभ भऽ गेलै हैं। तँए परेशान हेबाक कोनो जरूरत नै छै। एकटा कहबी छै जे पूत परदेश गेल देव पितर सभसँ गेल। से नै ने करऽ दिमागसँ काज लएह। आ सभ दिस नजरि राखह।'

मंगल बाजल- ''से तँ ठीके कहै छहक। एकटा परेशानी रहए तब ने। लऽ दऽ कऽ एकटा बेटा ऐछ छोड़ा अवण्ड भऽ गेल ऐछ। केतनो कहै छिऐ जे मन लगा कऽ पढ़-लिख जे दू अक्षरक बोध हेतो तँ अपने काज देतो से करिते ने ऐछ। एकटा मोवाइल किन लेलकहैं आ हरदम गीत-नादक पाछाँ अपसियात रहैत अछि। कि कहब गहूमक बिआ 80 किलो एकटा कोठीमे रखने रही से की केलक तँ कखैन ने कखैन सभटा बीआ बेच लेलक आ एकटा मोवाइल कीन लेलक। तुहीं कहऽ आब खेती केना करब छौड़ा बदमास भऽ गेल।''

जोगिन्द बाजल- ''ई तँ बड़ खराब काज भेलै। जहन पूजिये चोरा कऽ बेच लेत तँ कोनो परिवारकेँ गुजर-वसर आकि उनैत केना हेतै। एक कोठी अनाज तँ पूजी नै ने होएत छै, पूजी तँ बीआक लेल जे राखल जाइत छै सएह ने होइत छै। जैसँ अधिक उपजा आकि आमदनी होइ सएह ने पूजी भेल। जँ पूजीये कियो खा गेल तँ सभटा बस्तु खा गेल।''

मंगल खैनी झारैत आगू बाजल- एक तँ रौदीक मारल छी दू बीघामे धान छल, उपरका खेतक धान तँ मारल गेल, निचला खेतक धान किछु भेल। तैपरसँ छोड़ा बिए बेच लेलक। आब बीआ खरिदू कि खाध खरिदू कि खेत जोताऊ। अही सबहक सोचमे परल छी।''

जोगिन्दर बाजल- ''खएर परेशान हेबाक जरूरत नै छै। एकटा कहबी छै जे चिन्तासँ चतुराइ घटे शोकसँ घटे शरीर, पापसँ लक्ष्मी घटे कह गये दास कबीर। तँए हमरा लगमे गहूमक बीआ ऐछ परूकेँ साल उन्नत किसमक बीआसँ खेती केने छलौं। एक साल तकमे बीआ नै ने खराव होइत छै। तँए जे बीआक जरूरत हेतह से हम दऽ देबह। जँ अपना लग नै टाका हूअए तँ हम कहबऽ जे उन्नत किसमक बीआसँ खेती करह। खेतमे जँ हाल नै होइ तँ पटा कऽ खेती करिहह। नहि तँ धानोक खेती मारल गेल आ गहूमोक चलि जेतह। एकटा बात कहह जे तरकारी-फरकारीओ सबहक खेती केने छह कि नै?''

''हँ, हौ भाय तरकारीमे आल्लूँ, मुरै आ फरकारीमे कोबी, भाटा, टमाटरो सबहक खेती केने छी।''

जोगिन्दर- ''से तँ नीक बात छ, नै तँ एहि बेरूका सन खराब समएमे लोक बौआइऐ कऽ ने मरैत। किसानक तँ यएह सभ ने पूजी होइत छैक। समए-साल, आगाँ-पाछाँ देख कऽ खेती-बारी करक चाही। जाहिसँ कखनो मुँह मलीन नै हएत। तँए जे कहबिओ छैक मन हरखित तँ गाबी गीत।''

– गाम- बेरमा
भाया- तमुरिया
जिला- मधुबनी (बिहार)



भफाईत चाह

–कुमार मनोज कश्यप

कनियाँ के कहि तऽ देलकई जे जे अछि घर मे सैह बनाऊ; मुदा छुच्छ दालि–भात गीड़ल नहिं पार लागि रहल छलै ओकरा। आम अचारक एकटा छोट सन फाड़ा कनियाँ देनहो छलैक तऽ छोटका छौंड़ा किम्हरो सँ आबि कऽ उठा कऽ खाईत पड़ा गेलै।

बड़ ख़राब आदति छै ई छौंड़ा के – अपन चीज नहि खायत आ दोसर के उठा कऽ खाय लागत। खीझ उठलै ओकरा छौंड़ा पर। दाँत तर एकटा आँक़ड़ कट् सन उठलै। सौंसे देह सिहरि उठलै ओकर। तामसे घोर भऽ गेल– सार बनिया सौदा तऽ देत दू नम्बरी; मुदा टाका चाही ठीक पहिली तारीख कऽ। फेर बरसि पड़ल कनियाँ पर– 'भरि दिन घर मे बैसल रहैत छी; चाऊर मे सँ आक़ड़ो बीछब से पार नहि लगैत अछि?' कनियाँ जनैत छलैक जे ओकरा छुच्छ खेनाई पसिन्न नहिं छै तैं क्रोध स्वभावीक। ओ चुप्प रहि ओहि ठाम सँ कोनो लाथें सहटि जायब नीक बुझलकै।



भफाईत चाह

–कुमार मनोज कश्यप

कनियाँ के कहि तऽ देलकई जे जे अछि घर मे सैह बनाऊ; मुदा छुच्छ दालि–भात गीड़ल नहिं पार लागि रहल छलै ओकरा। आम अचारक एकटा छोट सन फाड़ा कनियाँ देनहो छलैक तऽ छोटका छौंड़ा किम्हरो सँ आबि कऽ उठा कऽ खाईत पड़ा गेलै।

बड़ ख़राब आदति छै ई छौंड़ा के – अपन चीज नहि खायत आ दोसर के उठा कऽ खाय लागत। खीझ उठलै ओकरा छौंड़ा पर। दाँत तर एकटा आँक़ड़ कट् सन उठलै। सौंसे देह सिहरि उठलै ओकर। तामसे घोर भऽ गेल– सार बनिया सौदा तऽ देत दू नम्बरी; मुदा टाका चाही ठीक पहिली तारीख कऽ।

फेर बरसि पड़ल कनियाँ पर– ‘भरि दिन घर मे बैसल रहैत छी; चाऊर मे सँ आक़ड़ो बीछब से पार नहि लगैत अछि?’ कनियाँ जनैत छलैक जे ओकरा छुच्छ खेनाई पसिन्न नहिं छै तैं क्रोध स्वभावीक। ओ चुप्प रहि ओहि ठाम सँ कोनो लाथें सहटि जायब नीक बुझलकै।



भफाईत चाह

–कुमार मनोज कश्यप

कनियाँ के कहि तऽ देलकई जे जे अछि घर मे सैह बनाऊ; मुदा छुच्छ दालि–भात गीड़ल नहिं पार लागि रहल छलै ओकरा। आम अचारक एकटा छोट सन फाड़ा कनियाँ देनहो छलैक तऽ छोटका छौंड़ा किम्हरो सँ आबि कऽ उठा कऽ खाईत पड़ा गेलै।

बड़ ख़राब आदति छै ई छौंड़ा के – अपन चीज नहि खायत आ दोसर के उठा कऽ खाय लागत। खीझ उठलै ओकरा छौंड़ा पर। दाँत तर एकटा आँक्रड़ कट् सन उठलै। सौंसे देह सिहरि उठलै ओकर। तामसे घोर भऽ गेल– सार बनिया सौदा तऽ देत दू नम्बरी; मुदा टाका चाही ठीक पहिली तारीख कऽ। फेर बरसि पड़ल कनियाँ पर– 'भरि दिन घर मे बैसल रहैत छी; चाऊर मे सँ आक्रड़ो बीछब से पार नहि लगैत अछि?' कनियाँ जनैत छलैक जे ओकरा छुच्छ खेनाई पसिन्न नहिं छै तैं क्रोध स्वभावीक। ओ चुप्प रहि ओहि ठाम सँ कोनो लाथें सहटि जायब नीक बुझलकै।

[illegible]

कहुना कऽ ओ अधहा पेट खा कऽ उठल– एक लोटा पानि गट–गटा कऽ पीबि गेल। जेब मे आवश्यक कागज–पत्र कें तजबीज करैत ओ बैग उठा कऽ घर सँ बाहर निकलऽ लागल। कनियाँ आने दिन जकाँ दुरुक्खा तक अरियातऽ एलै। फेर डराईत–डराईत नहुँये सँ कहने रहै– 'घर मे कोन टा समान नहि छै। बनियो के ततेक उधारी भऽ गेल छै जे ओहो आब समान देबा मे आनाकानी करैत छै। परसूये दिवाली से छै–कोना कि हेतै? अपने सभ तऽ मोन के बुझा लेब; धिया–पुता के लिलोह कोना होमय देबै?' ओ कनियाँ दिस आश्वासनक मुद्रा मे तकलक। ओकरा अपनो नहि बुझल छलै जे कोना आ कतऽ सँ ब्योंत हेतै, मुदा आश्वासन देबा मे कि जाईत छै। एकटा सामान्य निम्न मध्यम परिवार जकाँ ओहो अपन सीमित आमदनी आ असीमित आवश्यकता के बीच कोनो सम्बंध नहि स्थापित कऽ पबैत अछि। एकटा सरकारी ऑफीसक किरानीक दरमाहे कतेक होईत छै? ताहि पर एतेक झंझट–मकान–किराया, भोजन, वस्त्र, पढ़ाई–लिखाई, बर–बिमारी, कर–कुटुम आ बिछान धेने बूढ़ माय– जखन आकाशे फाटल तखन...! गेट सँ बहराईत काल ओकर नजरि पड़लै कोन मे राखल अपन टुटल साईकिल पर– धुरा–गर्द सँ विकृत भेल। रोज घर अबैत–जाईत काल ओकर नजरि पड़ि जाईत छैक एहि पर– ने ओकरा ओतेक पाई होईत छै, ने साईकिल ठीक करा पबैत अछि .... दू कोस ऑफिस पयरे आबऽ–जाय पड़ैत छै।

अपन कनियाँ के बारे मे सोचऽ लगैत अछि ओ.. केहन देवी सन कनियाँ भेटल छै ओकरा। एतेक सम्पत्तिशाली घरक बेटी कोना ओकरा सन निर्धन संग अभावक जाँता मे पीसाईत दिन काटि रहल छै! कहियो मुँह नहिं मलिन भेल हेतै बेचारी के आ ने कहियो अपन स्थिति सँ कोनो शिकायत केने हेतै। सदिखन ओ एकर गरीबी सँ संघर्ष मे साथे दैत रहलै। ओकर मोन कचोटय लगलै जे बेकार आई बेचारी पर तामसे केलकै। सोचिते–सोचिते ओ कखन ऑफीसक बरंडा धरि पहुँचि गैल; बुझेबो ने केलै।

ऑफीसक हॉल मे केयो फाईल मे ओझरायल तऽ केयो हँसी–ठट्ठा मे मशगूल–किछु सीट खालिये। ओहो अपन कुर्सी–टेबुल कें डस्टर सँ पोछि कऽ बैसि गेल। एकटा फाईल उठा कऽ पन्ना पलटिये रहल छल कि एकटा ठेकेदार ऑफीसक चपरासीक सँग एकटा चमचमाईत पन्नी लपेटल पैकेट हाथ मे नेने नमस्कार कऽ कऽ आगाँ मे ठाढ़ भऽ गेलै। ओ किछु बुझि पबितै ताबते मे चपरासी कठहँसी हँसैत बजलै– 'हम तऽ ठेकेदार साहेब कें पहिने कहैत रहलियैन जे बड़ाबाबू ककरो सँ किछु नहिं लैत छथिन; ईहो नहि लेताह। मुदा ई मानबे नहिं केलनि। कहय लगलाह जे ई कोनो घूस छै; ई तऽ दिवालीक गिफ्ट छै।'

'अहाँ के तऽ बुझल हैत जे हम घूस ओकरा कोनो नाम धरा कऽ देल जाय... के सख्त खिलाफ छी।'

'जी सर....! हम नीक जकाँ जनैत छी। तैं एहन ढ़ीढ़ता करबाक हिम्मतो नहिं कऽ सकैत छी। ई बस धिया–पुता के लेल दिवालीक छोट–छीन उपहार ....। हमर आशिर्वाद रूप मे एकरा स्वीकार कऽ लेल जाओ।' ठेकेदार कऽल जोड़ने ठाढ़ छल।

परसूये दिवाली– जेब मे एको आना नहि–लिलोह होईत बच्चा? ओकरा गुम्म पड़ल देखि चपरासी कहने छलै– 'ठेकेदार साहेब एतेक जीद्द कऽ रहल छथि तऽ राखि ने लेल जाओ, सर।' ओकर मोनक अंतर्द्वंद्व चपरासीक पारखी नजरि साईत पढ़ि नेने छलै। ओ झट दऽ आलमारी खोली पैकेट रखि कऽ ओकरा बन्न कऽ देलकै। फेर बल सँ कठहँसी हँसैत ओ ओकरा नमस्कार करैत ठेकेदार सँ कनफूसकी करैत चल गेल। ओ मुड़ी उठा कऽ देखलक– समूचा हॉलक लोक एकरे दिस तकैत। एकरा मुड़ी उठविते ओ सभ मुड़ी झुका लेलक जेना किछु देखनहिं ने होईक।

ओकरा मोन मे द्वंद मचऽ लगलै– गिफ्ट की; ई तऽ घूसे भेलई– तऽ कि ओ घूस लेबऽ लागल– कतऽ गेलै ओकर हराम के हाथो नहिं लगेबाक प्रण– कि ओ मिथ्या आडम्बर मात्र छलैक। तखने दोसर दिस मोन पड़ि जाईत छै लगीच अबैत दिवाली–खाली हाथ–मारते रास खर्च फट्क्का–मिठाई–मोमवत्ती–दीप आवश्यकता के अभाव सँ कोन सहानुभूति– आस–पड़ोसक सभ बच्चा के फट्क्का फोड़ैत–मिठाई खाईत देखि कऽ एकरो दुनू धिया–पुता कोना मानतै– ओकरा सभ मे हीनभावना नहिं एतै कि?– ओ सोचिते रहि गेल पक्ष–विपक्ष मे।

लंचक समय भऽ गेल छलै। समूचा हौल–सिवाय एक–दू टा कर्मचारी के जे कुर्सीये पर सुतल छल– खाली भऽ गेल छल।

कहुना कऽ ओ अधहा पेट खा कऽ उठल– एक लोटा पानि गट–गटा कऽ पीबि गेल। जेब मे आवश्यक कागज–पत्र कें तजबीज करैत ओ बैग उठा कऽ घर सँ बाहर निकलऽ लागल। कनियाँ आने दिन जकाँ दुरुक्खा तक अरियातऽ एलै। फेर डराईत–डराईत नहुँये सँ कहने रहै– 'घर मे कोन टा समान नहि छै। बनियो के ततेक उधारी भऽ गेल छै जे ओहो आब समान देबा मे आनाकानी करैत छै। परसूये दिवाली से छै– कोना कि हेतै? अपने सभ तऽ मोन के बुझा लेब; धिया–पुता के लिलोह कोना होमय देबै?' ओ कनियाँ दिस आश्वासनक मुद्रा मे तकलक। ओकरा अपनो नहि बुझल छलै जे कोना आ कतऽ सँ ब्योंत हेतै, मुदा आश्वासन देबा मे कि जाईत छै। एकटा सामान्य निम्न मध्यम परिवार जकाँ ओहो अपन सीमित आमदनी आ असीमित आवश्यकता के बीच कोनो सम्बंध नहि स्थापित कऽ पबैत अछि। एकटा सरकारी ऑफीसक किरानीक दरमाहे कतेक होईत छै? ताहि पर एतेक झंझट– मकान–किराया, भोजन, वस्त्र, पढ़ाई–लिखाई, बर–बिमारी, कर–कुटुम आ बिछान धेने बूढ़ माय– जखन आकाशे फाटल तखन...! गेट सँ बहराईत काल ओकर नजरि पड़लै कोन मे राखल अपन टुटल साईकिल पर– धुरा–गर्द सँ विकृत भेल। रोज घर अबैत–जाईत काल ओकर नजरि पड़ि जाईत छैक एहि पर– ने ओकरा ओतेक पाई होईत छै, ने साईकिल ठीक करा पबैत अछि .... दू कोस ऑफिस पयरे आबऽ–जाय पड़ैत छै।

अपन कनियाँ के बारे मे सोचऽ लगैत अछि ओ.. केहन देवी सन कनियाँ भेटल छै ओकरा। एतेक सम्पत्तिशाली घरक बेटी कोना ओकरा सन निर्धन संग अभावक जाँता मे पीसाईत दिन काटि रहल छै! कहियो मुँह नहिं मलिन भेल हेतै बेचारी के आ ने कहियो अपन स्थिति सँ कोनो शिकायत केने हेतै। सदिखन ओ एकर गरीबी सँ संघर्ष मे साथे दैत रहलै। ओकर मोन कचोटय लगलै जे बेकार आई बेचारी पर तामसे केलकै। सोचिते–सोचिते ओ कखन ऑफीसक बरंडा धरि पहुँचि गैल; बुझेबो ने केलै।

¥ô.. ·ð¤ãUÌ Îðß¤èâÙ ·¤çÙØæ¡ ÖðÅUÜ ÀñU¥ô·¤ÚUæÐ °ÌðU·¤ â•Âç•æàææÜè ƒæÚU·¤ ÕðÅUè ·¤ôÙæ ¥ô·¤ÚUæ âÙ çÙÏüÙ â¢» ¥ÖæßU·¤ Áæ¡Ìæ ×ð ÂèâæÁUÌ çÎÙ ·¤æçÅU ÚUãUÜ ÀñU! ·¤çãUØô ×é¡ãU Ùçã¢U ×çÜÙ ÖðÜ ãðUÌñ ÕðÓæÚUè ·ð¤ ¥æ Ùð ·¤çãUØô ¥ÂÙ çSÍçÌ â¡ ·¤ôÙô çàæ·¤æØÌ ·ð¤ÙðU ãðUÌñÐ âçÎç¹Ù ¥ô °·¤ÚU »ÚUèÕè â¡ â¢ƒæáü ×ð âæÍð ÎñÌ ÚUãUÜñÐ ¥ô·¤ÚU ×ôÙ ·¤ÓæôÅUØ Ü»Üñ Áð ÕðU·¤æÚU ¥æ§ü ÕðÓæÚUè ÂÚU Ìæ×âð ·ð¤Ü·ñ¤Ð âôçÓæÌð– âôçÓæÌð¥ô ·¤¹Ù ¥æòÈ¤èâ·¤ ÕÚ¢UÇUæ ÏçÚU Âãé¡UçÓæ »ñÜ; ÕéÛæðÕô Ùð ·ð¤ÜñÐ

ऑफीसक हॉल मे केयो फाईल मे ओझरायल तऽ केयो हँसी–ठट्ठा मे मशगूल– किछु सीट खालिये। ओहो अपन कुर्सी–टेबुल कें डस्टर सँ पोछि कऽ बैसि गेल। एकटा फाईल उठा कऽ पन्ना पलटिये रहल छल कि एकटा ठेकेदार ऑफीसक चपरासीक सँग एकटा चमचमाईत पन्नी लपेटल पैकेट हाथ मे नेने नमस्कार कऽ कऽ आगाँ मे ठाढ़ भऽ गेलै। ओ किछु बुझि पबितै ताबते मे चपरासी कठहँसी हँसैत बजलै– 'हम तऽ ठेकेदार साहेब कें पहिने कहैत रहलियैन जे बड़ाबाबू ककरो सँ किछु नहिं लैत छथिन; ईहो नहि लेताह। मुदा ई मानबे नहिं केलनि। कहय लगलाह जे ई कोनो घूस छै; ई तऽ दिवालीक गिफ्ट छै।'

'अहाँ के तऽ बुझल हैत जे हम घूस ओकरा कोनो नाम धरा कऽ देल जाय... के सख्त खिलाफ छी।'

'जी सर....! हम नीक जकाँ जनैत छी। तैं एहन ढ़ीढ़ता करबाक हिम्मतो नहिं कऽ सकैत छी। ई बस धिया–पुता के लेल दिवालीक छोट–छीन उपहार ....। हमर आशिर्वाद रूप मे एकरा स्वीकार कऽ लेल जाओ।' ठेकेदार कऽल जोड़ने ठाढ़ छल।

परसूये दिवाली– जेब मे एको आना नहि– लिलोह होईत बच्चा? ओकरा गुम्म पड़ल देखि चपरासी कहने छलै– 'ठेकेदार साहेब एतेक जीद्द कऽ रहल छथि तऽ राखि ने लेल जाओ, सर।' ओकर मोनक अंतर्द्वंद्व चपरासीक पारखी नजरि साईत पढ़ि नेने छलै। ओ झट दऽ आलमारी खोली पैकेट रखि कऽ ओकरा बन्न कऽ देलकै। फेर बल सँ कठहँसी हँसैत ओ ओकरा नमस्कार करैत ठेकेदार सँ कनफूसकी करैत चल गेल। ओ मुड़ी उठा कऽ देखलक– समूचा हॉलक लोक एकरे दिस तकैत। एकरा मुड़ी उठविते ओ सभ मुड़ी झुका लेलक जेना किछु देखनहिं ने होईक।

ओकरा मोन मे द्वंद मचऽ लगलै– गिफ्ट की; ई तऽ घूसे भेलई– तऽ कि ओ घूस लेबऽ लागल– कतऽ गेलै ओकर हराम के हाथो नहिं लगेबाक प्रण– कि ओ मिथ्या आडम्बर मात्र छलैक। तखने दोसर दिस मोन पड़ि जाईत छै लगीच अबैत दिवाली–खाली हाथ–मारते रास खर्च फट्क्का–मिठाई–मोमवत्ती–दीप आवश्यकता के अभाव सँ कोन सहानुभूति– आस–पड़ोसक सभ बच्चा के फट्क्का फोड़ैत–मिठाई खाईत देखि कऽ एकरो दुनू धिया–पुता कोना मानतै– ओकरा सभ मे हीनभावना नहिं एतै कि?– ओ सोचिते रहि गेल पक्ष–विपक्ष मे।

लंचक समय भऽ गेल छलै। समूचा हौल–सिवाय एक–दू टा कर्मचारी के जे कुर्सीये पर सुतल छल– खाली भऽ गेल छल।

कहुना कऽ ओ अधहा पेट खा कऽ उठल– एक लोटा पानि गट–गटा कऽ पीबि गेल। जेब मे आवश्यक कागज–पत्र कें तजबीज करैत ओ बैग उठा कऽ घर सँ बाहर निकलऽ लागल। कनियाँ आने दिन जकाँ दुरुक्खा तक अरियातऽ एलै। फेर डराईत–डराईत नहुँये सँ कहने रहै– 'घर मे कोन टा समान नहि छै। बनियो के ततेक उधारी भऽ गेल छै जे ओहो आब समान देबा मे आनाकानी करैत छै। परसूये दिवाली से छै– कोना कि हेतै? अपने सभ तऽ मोन के बुझा लेब; धिया–पुता के लिलोह कोना होमय देबै?' ओ कनियाँ दिस आश्वासनक मुद्रा मे तकलक। ओकरा अपनो नहि बुझल छलै जे कोना आ कतऽ सँ ब्योंत हेतै, मुदा आश्वासन देबा मे कि जाईत छै। एकटा सामान्य निम्न मध्यम परिवार जकाँ ओहो अपन सीमित आमदनी आ असीमित आवश्यकता के बीच कोनो सम्बंध नहि स्थापित कऽ पबैत अछि। एकटा सरकारी ऑफीसक किरानीक दरमाहे कतेक होईत छै? ताहि पर एतेक झंझट– मकान–किराया, भोजन, वस्त्र, पढ़ाई–लिखाई, बर–बिमारी, कर–कुटुम आ बिछान धेने बूढ़ माय– जखन आकाशे फाटल तखन...! गेट सँ बहराईत काल ओकर नजरि पड़लै कोन मे राखल अपन टुटल साईकिल पर– धुरा–गर्द सँ विकृत भेल। रोज घर अबैत–जाईत काल ओकर नजरि पड़ि जाईत छैक एहि पर– ने ओकरा ओतेक पाई होईत छै, ने साईकिल ठीक करा पबैत अछि .... दू कोस ऑफिस पयरे आबऽ–जाय पड़ैत छै।

अपन कनियाँ के बारे मे सोचऽ लगैत अछि ओ.. केहन देवी सन कनियाँ भेटल छै ओकरा। एतेक सम्पत्तिशाली घरक बेटी कोना ओकरा सन निर्धन संग अभावक जाँता मे पीसाईत दिन काटि रहल छै! कहियो मुँह नहिं मलिन भेल हेतै बेचारी के आ ने कहियो अपन स्थिति सँ कोनो शिकायत केने हेतै। सदिखन ओ एकर गरीबी सँ संघर्ष मे साथे दैत रहलै। ओकर मोन कचोटय लगलै जे बेकार आई बेचारी पर तामसे केलकै। सोचिते–सोचिते ओ कखन ऑफीसक बरंडा धरि पहुँचि गैल; बुझेबो ने केलै।

ऑफीसक हॉल मे केयो फाईल मे ओझरायल तऽ केयो हँसी–ठट्ठा मे मशगूल– किछु सीट खालिये। ओहो अपन कुर्सी–टेबुल कें डस्टर सँ पोछि कऽ बैसि गेल। एकटा फाईल उठा कऽ पन्ना पलटिये रहल छल कि एकटा ठेकेदार ऑफीसक चपरासीक सँग एकटा चमचमाईत पन्नी लपेटल पैकेट हाथ मे नेने नमस्कार कऽ कऽ आगाँ मे ठाढ़ भऽ गेलै। ओ किछु बुझि पबितै ताबते मे चपरासी कठहँसी हँसैत बजलै– 'हम तऽ ठेकेदार साहेब कें पहिने कहैत रहलियैन जे बड़ाबाबू ककरो सँ किछु नहिं लैत छथिन; ईहो नहि लेताह। मुदा ई मानबे नहिं केलनि। कहय लगलाह जे ई कोनो घूस छै; ई तऽ दिवालीक गिफ्ट छै।'

'अहाँ के तऽ बुझल हैत जे हम घूस ओकरा कोनो नाम धरा कऽ देल जाय... के सख्त खिलाफ छी।'

'जी सर....! हम नीक जकाँ जनैत छी। तैं एहन ढ़ीढ़ता करबाक हिम्मतो नहिं कऽ सकैत छी। ई बस धिया–पुता के लेल दिवालीक छोट–छीन उपहार ....। हमर आशिर्वाद रूप मे एकरा स्वीकार कऽ लेल जाओ।' ठेकेदार कऽल जोड़ने ठाढ़ छल।

परसूये दिवाली– जेब मे एको आना नहि– लिलोह होईत बच्चा? ओकरा गुम्म पड़ल देखि चपरासी कहने छलै– 'ठेकेदार साहेब एतेक जीद्द कऽ रहल छथि तऽ राखि ने लेल जाओ, सर।' ओकर मोनक अंतर्द्वंद्व चपरासीक पारखी नजरि साईत पढ़ि नेने छलै। ओ झट दऽ आलमारी खोली पैकेट रखि कऽ ओकरा बन्न कऽ देलकै। फेर बल सँ कठहँसी हँसैत ओ ओकरा नमस्कार करैत ठेकेदार सँ कनफूसकी करैत चल गेल। ओ मुड़ी उठा कऽ देखलक– समूचा हॉलक लोक एकरे दिस तकैत। एकरा मुड़ी उठविते ओ सभ मुड़ी झुका लेलक जेना किछु देखनहिं ने होईक।

ओकरा मोन मे द्वंद मचऽ लगलै– गिफ्ट की; ई तऽ घूसे भेलई– तऽ कि ओ घूस लेबऽ लागल– कतऽ गेलै ओकर हराम के हाथो नहिं लगेबाक प्रण– कि ओ मिथ्या आडम्बर मात्र छलैक। तखने दोसर दिस मोन पड़ि जाईत छै लगीच अबैत दिवाली–खाली हाथ–मारते रास खर्च फट्क्का–मिठाई– मोमवत्ती–दीप आवश्यकता के अभाव सँ कोन सहानुभूति– आस–पड़ोसक सभ बच्चा के फट्क्का फोड़ैत–मिठाई खाईत देखि कऽ एकरो दुनू धिया–पुता कोना मानतै– ओकरा सभ मे हीनभावना नहिं एतै कि?– ओ सोचिते रहि गेल पक्ष–विपक्ष मे।

लंचक समय भऽ गेल छलै। समूचा हौल–सिवाय एक–दू टा कर्मचारी के जे कुर्सीये पर सुतल छल– खाली भऽ गेल छल।

ओकरा मोन मे ज़िग्यासा भेलै जे देखियै एतेक टा पैकेट मे कि छई। ओ नहुँये सँ उठल– आलमारी खोलि कऽ पैकेटक पन्नी फाड़ि कऽ पैकेट मे हुल्की देलक– रंग–विरंगक डिब्बा सभ मे काजू, किशमिश, बादाम, अखरोट, पिश्ता भरल। एखटा लिफाफ सेहो जाहि मे एक हजार एक रुपैया। ओ पैकेट के फर सँ ओहिना बंद करबाक प्रयास कऽ कऽ कुर्सी पर आबि कऽ बैसि गेल। चारू कात देखलाक जे केयो देखैत तऽ नहि अछि। आश्वस्त भेल जे केयो देखि नहि रहल छलैक।

दिन भरि कोनो काज नहि कऽ सकल ओ। फाईल उनटबिते ओकरा आगाँ तराजूक पलड़ा नाचऽ लागै– एक पलड़ा पर अभाव आ दोसर पलड़ा पर नैतिकता। कहुखन अभाव पलड़ा झुकि जाई तऽ कहुखन नैतिकताक– एहि दुनु मे सामंजस्य बैसबैत कखन साँझ भऽ गेलै आ समूचा ऑफिस खाली भऽ गेलै ओकरा पतो नहिं लगलै। ओ तऽ फरास केबाड़ी बंद करऽ एलै तऽ ओकरा टोकलकै तखन ओ हड़बड़ा कऽ उठल। आलमारी सँ पैकेट निकाललक आ डेग के निधोख बनबैत घरक रस्ता पकड़ि लेलक– लोकक कोन डऽर?– के नहिं लैत अछि?– जकरा जतहि भेटैत छऐ से ततहि लैत अछि। एकरा नहियो नेने कोनो महानता तऽ नहिये होईत छै। उनटे सभ अदखोई–बदखोई करैत रहैत छै एकर गरीबी के। गरीबीक दंश ई स्वयं तऽ भोगिते अछि परिवारो के अनेरे एकरा संग क्लांत होमय पड़ि रहल छै। सोचैत–सोचैत घरक गेट पर पहुँचले छल की छोटका छौंड़ा दौड़ैत एलै आ ओकरा हाथ सँ पैकेट छिनि कऽ लुत्ती जकाँ घर मे घुसि गेलै– पेकैट के फाड़ि कऽ क्षणे मे एक मुट्ठी काजू मुँह मे भकोसि लेलकै आ एक मुट्ठी पेंटक जेब मे भरि लेलकै– माय जाबे किछु बुझि पबै आ हाँ–हाँ करै ताबे तऽ छौड़ा निपत्ता भऽ गेलै।

आश्चर्य सँ कनियाँ पुछलकै– 'ई सभ कि छियै? कतऽ सँ एलै ई सभ?' ओ थकमकाईत थूक घोंटि कऽ कहने छलै– 'एकटा ठेकेदार...' ओ अपन बात कहियो नहि पओने छलैक कि कनियाँ के जेना सौंसे देह आगि लेस देने होई–ओकर एहन रूप ओ कहियो नहि देखने छलै। ओ तामसे थरथराईत बजलै– ' तऽ कि हम बुझू जे हम सेहो ओहन पति के पत्नी छि जे हरामक कमाई पर जीबैत अछि?' फेर दीर्घ निश्वास छोड़ैत कहऽ लगलै–'हम सभ प्राणी कतेको साँझ भुखल पेट रहलहुँ, गुदड़ी पहिरलहुँ– मुदा आहाँक पसेना के कमाई पर गर्व करैत रहलहुँ। आई सँ पहिने हम छाती ठोकि कऽ कहैत छलियै ते हम गरीब जरूर छी; मुदा मेहनत के रोटी खाईत छी। आई हमर सभ अभिमान मटियामेट भऽ गेल। आई हमरो पति दुनियाँ के भीड़ मे भसिया गेलाह...।' हिचुकि कऽ कानऽ लगलै ओ।

ओ उठि कऽ गेल आ कनियाँ के गरा सँ लगा कऽ चुप्प करैत बाजल 'हमर बात मानू। हम एखनो ईमानदारी पर कायम छी... ई कोनो घूस नहि...।'

'तऽ कि ई आहाँक दरमाहा सँ खरीदल वस्तु अछि? नहि ने? नाम किछु दियौ, उपरी चीज कहेतै तऽ घूसे– चाहे रुपैया होऊक कि वस्तु–जात। एहिना कहियो किछु लैत पुलिस पकड़त– जेल जायब– भ्रष्टाचारक कलंक लागत– एहन दिन देखेबा सँ पहिनहिं हे माँ भगवती! हमरा मृत्यु दऽ दिय।' कहि कऽ ओ आर हिनचकि–हिचकि कऽ कानऽ लगलै।

ओ कनियाँक नोर अपना आँगुर सँ पोछैत बाजल– 'प्रिय! आहाँ आई हमरा पतित होई सँ बँचा लेलहुँ– आहाँ सत्ये देवि छि– हमर उद्धारक।' फेर ओ विदा भऽ गेल पैकेट उठा कऽ बनियाँ दोकान दिस। बनियाँ के नेहोरा केलकै– 'काजू के तौलि कऽ देखहक; पूरा वजन मे जतेक कमी होई से पूरा कऽ दहक। जिनगी–जान बाँचल रहल तऽ तोहर उधारी चुकता भईये जेतह।'

ठेकेदार के विजीटिंग–कार्ड पैकेट पर साटल छलै। फोन कऽ कऽ बजेलकै ओकरा– 'हमरा सँ बड़ पैघ गलती भऽ गेल। आहाँ अपन ई गिफ्ट आपस लऽ जाऊ– हमरा ई सभ नहिं चाही।' ठेकेदार सकपका गेल– 'अपने जे आदेश करबै से पूरा भऽ जेतै... ई भेंट तऽ राखल जाओ, सर!'

'नहिं ठेकेदार साहेब! हमरा किछु नहि चाही... हमरा सभ लग संतोष अछि; यैह हमरा सभ किछु अछि। आई हम संतोष आ ईमानदारी के पथ सँ गिरैत–गिरैत बचलहुँ.....।'

ठेकेदार भारी मोन सँ पैकेट उठा कऽ बाहर निकलि रहल छल। कनियाँ चाहक कप ओकरा दिस बढ़ा देने छलै। भफाईत चाह ओकर आत्मा के शांति दऽ रहल छलै... माथक जेना कोनो पैघ बोझ हल्लुक भऽ गेल होईक। चाह मे आई अमृत सन स्वाद बुझेलै।

5/8 न्यू मिटो रोर्ड हॉस्टल (ब्लॉक–1)
मिंटो रोड कांपलेक्स
नई दिल्ली– 110002
मोबाइल – 09810811850
Email : mail2kmanoj@..mail.com

ओकरा मोन मे ज़िग्यासा भेलै जे देखियै एतेक टा पैकेट मे कि छई। ओ नहुँये सँ उठल– आलमारी खोलि कऽ पैकेटक पन्नी फाड़ि कऽ पैकेट मे हुल्की देलक– रंग–विरंगक डिब्बा सभ मे काजू, किशमिश, बादाम, अखरोट, पिश्ता भरल। एखटा लिफाफ सेहो जाहि मे एक हजार एक रुपैया। ओ पैकेट के फर सँ ओहिना बंद करबाक प्रयास कऽ कऽ कुर्सी पर आबि कऽ बैसि गेल। चारू कात देखलाक जे केयो देखैत तऽ नहि अछि। आश्वस्त भेल जे केयो देखि नहि रहल छलैक।

दिन भरि कोनो काज नहि कऽ सकल ओ। फाईल उनटबिते ओकरा आगाँ तराजूक पलड़ा नाचऽ लागै– एक पलड़ा पर अभाव आ दोसर पलड़ा पर नैतिकता। कहुखन अभाव पलड़ा झुकि जाई तऽ कहुखन नैतिकताक– एहि दुनु मे सामंजस्य बैसबैत कखन साँझ भऽ गेलै आ समूचा ऑफिस खाली भऽ गेलै ओकरा पतो नहिं लगलै। ओ तऽ फरास केबाड़ी बंद करऽ एलै तऽ ओकरा टोकलकै तखन ओ हड़बड़ा कऽ उठल। आलमारी सँ पैकेट निकाललक आ डेग के निधोख बनबैत घरक रस्ता पकड़ि लेलक– लोकक कोन डऽर?– के नहिं लैत अछि?– जकरा जतहि भेटैत छऐ से ततहि लैत अछि। एकरा नहियो नेने कोनो महानता तऽ नहिये होईत छै। उनटे सभ अदखोई–बदखोई करैत रहैत छै एकर गरीबी के। गरीबीक दंश ई स्वयं तऽ भोगिते अछि परिवारो के अनेरे एकरा संग क्लांत होमय पड़ि रहल छै। सोचैत–सोचैत घरक गेट पर पहुँचले छल की छोटका छौंड़ा दौड़ैत एलै आ ओकरा हाथ सँ पैकेट छिनि कऽ लुत्ती जकाँ घर मे घुसि गेलै– पेकैट के फाड़ि कऽ क्षणे मे एक मुट्ठी काजू मुँह मे भकोसि लेलकै आ एक मुट्ठी पेंटक जेब मे भरि लेलकै– माय जाबे किछु बुझि पबै आ हाँ–हाँ करै ताबे तऽ छौड़ा निपत्ता भऽ गेलै।

आश्चर्य सँ कनियाँ पुछलकै– 'ई सभ कि छियै? कतऽ सँ एलै ई सभ?' ओ थकमकाईत थूक घोंटि कऽ कहने छलै– 'एकटा ठेकेदार...' ओ अपन बात कहियो नहि पओने छलैक कि कनियाँ के जेना सौंसे देह आगि लेस देने होई–ओकर एहन रूप ओ कहियो नहि देखने छलै। ओ तामसे थरथराईत बजलै–' तऽ कि हम बुझू जे हम सेहो ओहन पति के पत्नी छि जे हरामक कमाई पर जीबैत अछि?' फेर दीर्घ निश्वास छोड़ैत कहऽ लगलै–'हम सभ प्राणी कतेको साँझ भुखल पेट रहलहुँ, गुदड़ी पहिरलहुँ– मुदा आहाँक पसेना के कमाई पर गर्व करैत रहलहुँ। आई सँ पहिने हम छाती ठोकि कऽ कहैत छलियै ते हम गरीब जरूर छी; मुदा मेहनत के रोटी खाईत छी। आई हमर सभ अभिमान मटियामेट भऽ गेल। आई हमरो पति दुनियाँ के भीड़ मे भसिया गेलाह...।' हिचुकि कऽ कानऽ लगलै ओ।

ओ उठि कऽ गेल आ कनियाँ के गरा सँ लगा कऽ चुप्प करैत बाजल 'हमर बात मानू। हम एखनो ईमानदारी पर कायम छी... ई कोनो घूस नहि...।'

'तऽ कि ई आहाँक दरमाहा सँ खरीदल वस्तु अछि? नहि ने? नाम किछु दियौ, उपरी चीज कहेतै तऽ घूसे– चाहे रुपैया होऊक कि वस्तु–जात। एहिना कहियो किछु लैत पुलिस पकड़त– जेल जायब– भ्रष्टाचारक कलंक लागत– एहन दिन देखेबा सँ पहिनहिं हे माँ भगवती! हमरा मृत्यु दऽ दिय।' कहि कऽ ओ आर हिनचकि–हिचकि कऽ कानऽ लगलै।

ओ कनियाँक नोर अपना आँगुर सँ पोछैत बाजल– 'प्रिय! आहाँ आई हमरा पतित होई सँ बँचा लेलहुँ– आहाँ सत्ये देवि छि– हमर उद्धारक।' फेर ओ विदा भऽ गेल पैकेट उठा कऽ बनियाँ दोकान दिस। बनियाँ के नेहोरा केलकै– 'काजू के तौलि कऽ देखहक; पूरा वजन मे जतेक कमी होई से पूरा कऽ दहक। जिनगी–जान बाँचल रहल तऽ तोहर उधारी चुकता भईये जेतह।'

ठेकेदार के विजीटिंग–कार्ड पैकेट पर साटल छलै। फोन कऽ कऽ बजेलकै ओकरा– 'हमरा सँ बड़ पैघ गलती भऽ गेल। आहाँ अपन ई गिफ्ट आपस लऽ जाऊ– हमरा ई सभ नहिं चाही।' ठेकेदार सकपका गेल– 'अपने जे आदेश करबै से पूरा भऽ जेतै... ई भेंट तऽ राखल जाओ, सर!'

'नहिं ठेकेदार साहेब! हमरा किछु नहि चाही... हमरा सभ लग संतोष अछि; यैह हमरा सभ किछु अछि। आई हम संतोष आ ईमानदारी के पथ सँ गिरैत–गिरैत बचलहुँ.....।'

ठेकेदार भारी मोन सँ पैकेट उठा कऽ बाहर निकलि रहल छल। कनियाँ चाहक कप ओकरा दिस बढ़ा देने छलै। भफाईत चाह ओकर आत्मा के शांति दऽ रहल छलै... माथक जेना कोनो पैघ बोझ हल्लुक भऽ गेल होईक। चाह मे आई अमृत सन स्वाद बुझेलै।

5/8 न्यू मिटो रोर्ड हॉस्टल (ब्लॉक–1)
मिंटो रोड कांपलेक्स
नई दिल्ली– 110002
मोबाइल – 09810811850
Email : mail2kmanoj@..mail.com

ओकरा मोन मे ज़िग्यासा भेलै जे देखियै एतेक टा पैकेट मे कि छई। ओ नहुँये सँ उठल- आलमारी खोलि कऽ पैकेटक पन्नी फाड़ि कऽ पैकेट मे हुल्की देलक- रंग-विरंगक डिब्बा सभ मे काजू, किशमिश, बादाम, अखरोट, पिश्ता भरल। एखटा लिफाफ सेहो जाहि मे एक हजार एक रुपैया। ओ पैकेट के फर सँ ओहिना बंद करबाक प्रयास कऽ कऽ कुर्सी पर आबि कऽ बैसि गेल। चारू कात देखलाक जे केयो देखैत तऽ नहि अछि। आश्वस्त भेल जे केयो देखि नहि रहल छलैक।

दिन भरि कोनो काज नहि कऽ सकल ओ। फाईल उनटबिते ओकरा आगाँ तराजूक पलड़ा नाचऽ लागै- एक पलड़ा पर अभाव आ दोसर पलड़ा पर नैतिकता। कहुखन अभाव पलड़ा झुकि जाई तऽ कहुखन नैतिकताक- एहि दुनु मे सामंजस्य बैसबैत कखन साँझ भऽ गेलै आ समूचा ऑफिस खाली भऽ गेलै ओकरा पतो नहिं लगलै। ओ तऽ फरास केबाड़ी बंद करऽ एलै तऽ ओकरा टोकलकै तखन ओ हड़बड़ा कऽ उठल। आलमारी सँ पैकेट निकाललक आ डेग के निधोख बनबैत घरक रस्ता पकड़ि लेलक- लोकक कोन डऽर?- के नहिं लैत अछि?- जकरा जतहि भेटैत छऐ से ततहि लैत अछि। एकरा नहियो नेने कोनो महानता तऽ नहिये होईत छै। उनटे सभ अदखोई-बदखोई करैत रहैत छै एकर गरीबी के। गरीबीक दंश ई स्वयं तऽ भोगिते अछि परिवारो के अनेरे एकरा संग क्लांत होमय पड़ि रहल छै। सोचैत-सोचैत घरक गेट पर पहुँचले छल की छोटका छौंड़ा दौड़ैत एलै आ ओकरा हाथ सँ पैकेट छिनि कऽ लुत्ती जकाँ घर मे घुसि गेलै- पेकैट के फाड़ि कऽ क्षणे मे एक मुट्ठी काजू मुँह मे भकोसि लेलकै आ एक मुट्‌ठी पेंटक जेब मे भरि लेलकै- माय जाबे किछु बुझि पबै आ हाँ-हाँ करै ताबे तऽ छौड़ा निपत्ता भऽ गेलै।

आश्चर्य सँ कनियाँ पुछलकै- 'ई सभ कि छियै? कतऽ सँ एलै ई सभ?' ओ थकमकाईत थूक घोंटि कऽ कहने छलै- 'एकटा ठेकेदार...' ओ अपन बात कहियो नहि पओने छलैक कि कनियाँ के जेना सौंसे देह आगि लेस देने होई-ओकर एहन रूप ओ कहियो नहि देखने छलै। ओ तामसे थरथराईत बजलै-' तऽ कि हम बुझू जे हम सेहो ओहन पति के पत्नी छि जे हरामक कमाई पर जीबैत अछि?' फेर दीर्घ निश्वास छोड़ैत कहऽ लगलै-'हम सभ प्राणी कतेको साँझ भुखल पेट रहलहुँ, गुदड़ी पहिरलहुँ- मुदा आहाँक पसेना के कमाई पर गर्व करैत रहलहुँ। आई सँ पहिने हम छाती ठोकि कऽ कहैत छलियै ते हम गरीब जरूर छी; मुदा मेहनत के रोटी खाईत छी। आई हमर सभ अभिमान मटियामेट भऽ गेल। आई हमरो पति दुनियाँ के भीड़ मे भसिया गेलाह...।' हिचुकि कऽ कानऽ लगलै ओ।

ओ उठि कऽ गेल आ कनियाँ के गरा सँ लगा कऽ चुप्प करैत बाजल 'हमर बात मानू। हम एखनो ईमानदारी पर कायम छी... ई कोनो घूस नहि...।'

'तऽ कि ई आहाँक दरमाहा सँ खरीदल वस्तु अछि? नहि ने? नाम किछु दियौ, उपरी चीज कहेतै तऽ घूसे- चाहे रुपैया होऊक कि वस्तु-जात। एहिना कहियो किछु लैत पुलिस पकड़त- जेल जायब- भ्रष्टाचारक कलंक लागत- एहन दिन देखेबा सँ पहिनहिं हे माँ भगवती! हमरा मृत्यु दऽ दिय।' कहि कऽ ओ आर हिनचकि-हिचकि कऽ कानऽ लगलै।

ओ कनियाँक नोर अपना आँगुर सँ पोछैत बाजल- 'प्रिय! आहाँ आई हमरा पतित होई सँ बँचा लेलहुँ- आहाँ सत्ये देवि छि- हमर उद्धारक।' फेर ओ विदा भऽ गेल पैकेट उठा कऽ बनियाँ दोकान दिस। बनियाँ के नेहोरा केलकै- 'काजू के तौलि कऽ देखहक; पूरा वजन मे जतेक कमी होई से पूरा कऽ दहक। जिनगी-जान बाँचल रहल तऽ तोहर उधारी चुकता भईये जेतह।'

ठेकेदार के विजीटिंग-कार्ड पैकेट पर साटल छलै। फोन कऽ कऽ बजेलकै ओकरा- 'हमरा सँ बड़ पैघ गलती भऽ गेल। आहाँ अपन ई गिफ्ट आपस लऽ जाऊ- हमरा ई सभ नहिं चाही।' ठेकेदार सकपका गेल- 'अपने जे आदेश करबै से पूरा भऽ जेतै... ई भेंट तऽ राखल जाओ, सर!'

'नहिं ठेकेदार साहेब! हमरा किछु नहि चाही... हमरा सभ लग संतोष अछि; यैह हमरा सभ किछु अछि। आई हम संतोष आ ईमानदारी के पथ सँ गिरैत-गिरैत बचलहूँ.....।'

ठेकेदार भारी मोन सँ पैकेट उठा कऽ बाहर निकलि रहल छल। कनियाँ चाहक कप ओकरा दिस बढ़ा देने छलै। भफाईत चाह ओकर आत्मा के शांति दऽ रहल छलै... माथक जेना कोनो पैघ बोझ हल्लुक भऽ गेल होईक। चाह मे आई अमृत सन स्वाद बुझेलै।

5/8 न्यू मिटो रोर्ड हॉस्टल (ब्लॉक-1)
मिंटो रोड कांपलेक्स
नई दिल्ली- 110002
मोबाइल - 09810811850
Email : mail2kmanoj@..mail.com

चारिटा लघु कथा : अनमोल झा

युग-बोध

बौआ आ बुच्ची दुनू साँझखन डेरा मे पढ़ बैसल रहै। बौआ लोअर नर्सरीमे छलै आ बुची क्लास पाँच मे। बौआक इसकुल मे अंग्रेजी राइम्स याद कके आनै कहने छलै, से हम ओकरा बेर-बेर याद करा रहल छलियै।

थोड़े कालक बाद बौआक तामस उठलै सबटा किताब-कॉपी कात मे फेकि पड़ि रहल। कहलक हम नहि पढ़ब। सब समय हमरे याद करबै छी अहाँ, दीदीक याद नहि करबै छीयै। हम नहि पढ़ब।

हम कनि काल चुप भ' कहलियै-बेटा दीदी त' सासुर चलि जेतै। पढ़ि-लिखि कमा-खटाक अहाँक हमरा सबक' खुआब पड़त तैं ने नीक स' पढ़बै छी।

बौआ कहैत अछि- हमहुँ टैक्सी पकड़ि सासुर चल जाएब.....।



कमाई

- तीस तारीक क' हम गाम जायब।

- यज्ञ मे की।

- हँ।

- त' पाँच हजार रुपैया लैयेक' जायब।

- कियै, की हेतै पाँच हजार।

- आ चन्दा जे लागत।

- एतेक चन्दा! एतेक त' हमर दरमाहो नहि अछि।

- से रहय बा नहि रहय, ओते त' लगबे करत। कहै जाइ छलै गामक मुखिया - सरपंच जे एते स' कम कोनो कमौआ स' नहि लेबै।

- किएक ने कहतै। ओकरे सभ सनक दुनमबरी कमाई घोटालाक रहय तखन ने.......। कहलकै........ जे!!

छीक

भगवान सबक गोड़ लाकि डेरा स' निकलिते छीक देने रहै कियो। आपस भ' चौकी पर कनेकाल बैसि एक गिलास पानी देलखिन पत्नी से पी फेर विदा भेल बौआक इसकुल। नर्सरी बी. मे कएक दिन पहिने एडमिशन टेस्ट भेल रहै तकरे आइ रिजल्ट छलै।

पता नै की हेतै की नइ। ओना अबैत' छलै सबटा मोटा-मोटी बौआक, मुदा टेस्टक समय जखन मम्मी-पपाक गेटे पर ठाढ़ क' ओकरा दू तल्ला पर लके चल गेलै त' ओ बड़ कानल रहै तखन। आ क्लास रूमस' रहि-रहिक पड़ा जाइ बरण्डा पर आ हिचुकि -हिचुकि कानय। फेर मेम अबै आ गट्टा पकड़िक' ल' क' चल जाइ। जखन सब विद्यार्थी जुटलैत' परीक्षा भेलै। आ जखन बौआक गेट पर द' गेलैत' हाथमे बोर्ड, पेन्सिल बक्स, एडमिट कार्ड आ एक हाथे माथा स' निकालल टोपी धेने हिचुकैत रहै ओ।

मम्मी हाँइ-हाँइक कोरा उठा छाती लगा लेने रहै आ पपा पुछने रहै- बेटा की सब पुछलक? बौआ कहलकै जे हमरा माथा स' टोपी निकालि देलक आ पुछलक ई कोन कलर छियै। हम कहलियै रेड त' मेम कहै गुड। आ आर की सब पुछलकौ - मम्मी कहलकै। आर पुछलक ए.बी.सी. हम ए.बी.सी., वन, टू सबटा सुना देलियै। मुदा मम्मी हम नइ एबौ एहि पगला इसकुल। हमरा घिसियाक ल' जाइत छल बरण्डा पर स'। मायक मोन छोट भ' गेल रहै आ पपा हँस' लागल रहै।

से रिजल्ट नोटिस बोर्ड मे टँगा गेल छलै। ओ देखिक' मोन छोट भ' गेल छलै रोल नं. 231 नइ छलै सलेकसन लिस्टमे। आ रहतै कोना? ओकरा त' माथामे घुरिआइत छलै डेरा स' अबैकालमे कियो छीक देने रहै से। मोन त' तखने मानि गेल रहै। बेर-बेर देखय 231 रोल नइ छलै ओहिमे। हँ 233 छलै लेकिन 231 नइ।

शुरू स' कयक बेर देखलक ओकर पपा मुदा नइ भेटलै। जेबीस' एडमिट कार्ड निकालि फेर एक बेर रोल न. देखलक ओ। रोल न. 213 रहै। ओ फेर रिजल्ट सीट पर नजरि खिरेलक 213 ओहिमे सेहो छलै। ओ आब प्रसन्न भ' डेरामे फोन करैत अछि जे बौआ पास क' गेल। मुदा अपना पर ग्लानि होइत छैंक पुरना पाखण्ड क' मानिते छी हमरा सब एहि युग मे सेहो। तै ने आइ ओ बात मोन मे राखि नरभसा गेलौ......!

पंचैती

बड़का दलानक आगाँमे बहुत रास कुर्सी लागल छलै, जाहि पर बहुत गोटा बैसल छलाह आ किछु कुर्सी एखनो खाली छलै जाहि लेल लोक प्रतीक्षा करैत छल जे बड़का बाबू मिसरजी, पाठकजी आदि बड़ा-बड़का लोक नहि एने कोना हैत पंचैती।

लखना चमार समय स' बहुत पहिने आबि पुआरक ढेरीक नीचामे छिड़ियाएल पुआर पर चुकीमाली भ'क' बैसल छल। पंचैती ओकरे उपर मे बैसायल गेल छलै। ओकर दोष छलै जे कएक दिन स' ओ गामक शिवमंदिर मे जाइत अछि आ तमघैल स' जल आनि बाबाक' छूक' पूजा करैत अछि। जाहि स' होइत की अछि- बाबा त' छुआइते छथि पूजा करैत काल, लोक सभ सेहो छुआ जाइत अछि। अन्याय अति अन्याय क' रहल छै लखना। जखन सब पंच आबि गेलाह त' लखना ओतय स' उठिक सभक लग आयल। सभक' भेलै जे आब ओ हाथ जोड़ि सब स' माफी माँगत, आ अपन कयल एहि अन्याय लेल लोकक पायर पकड़िक गिरगिरायत। मुदा ई सब ओ किछु नहि केलक। ओ एहि जुर्म लेल मात्र एकहि टा बात कहलक-

गिरहत औरी अहाँ सब जे कहैत छी हमरा पूजा केला स' महादेव आ अहाँ औरी छुआइत छी से छः मास पहिने जखन हमरा बेटीक बाधमे पंडीजी मालिकक बेटा पकड़ि लेने छलै आ ओकर देहक नोचि-नोचिक खलोदार क' देने छलै तखन अहाँ औरीक महादेव आ बभनत की नै छुआयल छल।

ओ त' धन्य कही दरोगा बाबूक जे हमर केश लिबलनि आ ओ एखन जहलमे अछि बेसी करै जाएबत' हम फेर एहि बात ल' क' चल जैब मधबनी हँ......। आ तकरा बाद सब चुप्प भ' गेल छल, जेना पंच सभक' गरा बकौर लागि गेल हो। आ लखना अपना गाम पर निरविकार भावे चल गेल रहय!

सम्पर्क - ग्राम-पोस्ट - नरुआर
भाया - लोहना रोड
जिला - मधुबनी (मिथिला)
पिन - 847 407
मो. नं. - 094337-53863

चारिटा लघु कथा : अनमोल झा

युग-बोध

बौआ आ बुच्ची दुनू साँझखन डेरा मे पढ़ बैसल रहै। बौआ लोअर नर्सरीमे छलै आ बुची क्लास पाँच मे। बौआक इसकुल मे अंग्रेजी राइम्स याद कके आनै कहने छलै, से हम ओकरा बेर-बेर याद करा रहल छलियै।

थोड़े कालक बाद बौआक तामस उठलै सबटा किताब-कॉपी कात मे फेकि पड़ि रहल। कहलक हम नहि पढ़ब। सब समय हमरे याद करबै छी अहाँ, दीदीक याद नहि करबै छीयै। हम नहि पढ़ब।

हम कनि काल चुप भ' कहलियै-बेटा दीदी त' सासुर चलि जेतै। पढ़ि-लिखि कमा-खटाक अहाँक हमरा सबक' खुआब पड़त तैं ने नीक स' पढ़बै छी।

बौआ कहैत अछि- हमहुँ टैक्सी पकड़ि सासुर चल जाएब.....।



कमाई

- तीस तारीक क' हम गाम जायब।

- यज्ञ मे की।

- हँ।

- त' पाँच हजार रुपैया लैयेक' जायब।

- कियै, की हेतै पाँच हजार।

- आ चन्दा जे लागत।

- एतेक चन्दा! एतेक त' हमर दरमाहो नहि अछि।

- से रहय बा नहि रहय, ओते त' लगबे करत। कहै जाइ छलै गामक मुखिया - सरपंच जे एते स' कम कोनो कमौआ स' नहि लेबै।

- किएक ने कहतै। ओकरे सभ सनक दुनमबरी कमाई घोटालाक रहय तखन ने.......। कहलकै........ जे!!

छीक

भगवान सबक गोड़ लाकि डेरा स' निकलिते छीक देने रहै कियो। आपस भ' चौकी पर कनेकाल बैसि एक गिलास पानी देलखिन पत्नी से पी फेर विदा भेल बौआक इसकुल। नर्सरी बी. मे कएक दिन पहिने एडमिशन टेस्ट भेल रहै तकरे आइ रिजल्ट छलै।

पता नै की हेतै की नइ। ओना अबैत' छलै सबटा मोटा-मोटी बौआक, मुदा टेस्टक समय जखन मम्मी-पपाक गेटे पर ठाढ़ क' ओकरा दू तल्ला पर लके चल गेलै त' ओ बड़ कानल रहै तखन। आ क्लास रूमस' रहि-रहिक पड़ा जाइ बरण्डा पर आ हिचुकि -हिचुकि कानय। फेर मेम अबै आ गट्टा पकड़िक' ल' क' चल जाइ। जखन सब विद्यार्थी जुटलैत' परीक्षा भेलै। आ जखन बौआक गेट पर द' गेलैत' हाथमे बोर्ड, पेन्सिल बक्स, एडमिट कार्ड आ एक हाथे माथा स' निकालल टोपी धेने हिचुकैत रहै ओ।

मम्मी हाँइ-हाँइक कोरा उठा छाती लगा लेने रहै आ पपा पुछने रहै- बेटा की सब पुछलक? बौआ कहलकै जे हमरा माथा स' टोपी निकालि देलक आ पुछलक ई कोन कलर छियै। हम कहलियै रेड त' मेम कहै गुड। आ आर की सब पुछलकौ - मम्मी कहलकै। आर पुछलक ए.बी.सी. हम ए.बी.सी., वन, टू सबटा सुना देलियै। मुदा मम्मी हम नइ एबौ एहि पगला इसकुल। हमरा घिसियाक ल' जाइत छल बरण्डा पर स'। मायक मोन छोट भ' गेल रहै आ पपा हँस' लागल रहै।

से रिजल्ट नोटिस बोर्ड मे टँगा गेल छलै। ओ देखिक' मोन छोट भ' गेल छलै रोल नं. 231 नइ छलै सलेकसन लिस्टमे। आ रहतै कोना? ओकरा त' माथामे घुरिआइत छलै डेरा स' अबैकालमे कियो छीक देने रहै से। मोन त' तखने मानि गेल रहै। बेर-बेर देखय 231 रोल नइ छलै ओहिमे। हँ 233 छलै लेकिन 231 नइ।

शुरू स' कयक बेर देखलक ओकर पपा मुदा नइ भेटलै। जेबीस' एडमिट कार्ड निकालि फेर एक बेर रोल न. देखलक ओ। रोल न. 213 रहै। ओ फेर रिजल्ट सीट पर नजरि खिरेलक 213 ओहिमे सेहो छलै। ओ आब प्रसन्न भ' डेरामे फोन करैत अछि जे बौआ पास क' गेल। मुदा अपना पर ग्लानि होइत छैंक पुरना पाखण्ड क' मानिते छी हमरा सब एहि युग मे सेहो। तै ने आइ ओ बात मोन मे राखि नरभसा गेलौ......!

पंचैती

बड़का दलानक आगाँमे बहुत रास कुर्सी लागल छलै, जाहि पर बहुत गोटा बैसल छलाह आ किछु कुर्सी एखनो खाली छलै जाहि लेल लोक प्रतीक्षा करैत छल जे बड़का बाबू मिसरजी, पाठकजी आदि बड़ा-बड़का लोक नहि एने कोना हैत पंचैती।

लखना चमार समय स' बहुत पहिने आबि पुआरक ढेरीक नीचामे छिड़ियाएल पुआर पर चुकीमाली भ'क' बैसल छल। पंचैती ओकरे उपर मे बैसायल गेल छलै। ओकर दोष छलै जे कएक दिन स' ओ गामक शिवमंदिर मे जाइत अछि आ तमघैल स' जल आनि बाबाक' छूक' पूजा करैत अछि। जाहि स' होइत की अछि- बाबा त' छुआइते छथि पूजा करैत काल, लोक सभ सेहो छुआ जाइत अछि। अन्याय अति अन्याय क' रहल छै लखना। जखन सब पंच आबि गेलाह त' लखना ओतय स' उठिक सभक लग आयल। सभक' भेलै जे आब ओ हाथ जोड़ि सब स' माफी माँगत, आ अपन कयल एहि अन्याय लेल लोकक पायर पकड़िक गिरगिरायत। मुदा ई सब ओ किछु नहि केलक। ओ एहि जुर्म लेल मात्र एकहि टा बात कहलक-

गिरहत औरी अहाँ सब जे कहैत छी हमरा पूजा केला स' महादेव आ अहाँ औरी छुआइत छी से छः मास पहिने जखन हमरा बेटीक बाधमे पंडीजी मालिकक बेटा पकड़ि लेने छलै आ ओकर देहक नोचि-नोचिक खलोदार क' देने छलै तखन अहाँ औरीक महादेव आ बभनत की नै छुआयल छल।

ओ त' धन्य कही दरोगा बाबूक जे हमर केश लिबलनि आ ओ एखन जहलमे अछि बेसी करै जाएबत' हम फेर एहि बात ल' क' चल जैब मधबनी हँ......। आ तकरा बाद सब चुप्प भ' गेल छल, जेना पंच सभक' गरा बकौर लागि गेल हो। आ लखना अपना गाम पर निरविकार भावे चल गेल रहय!

सम्पर्क - ग्राम-पोस्ट - नरुआर
भाया - लोहना रोड
जिला - मधुबनी (मिथिला)
पिन - 847 407
मो. नं. - 094337-53863

चारिटा लघु कथा : अनमोल झा

युग-बोध

बौआ आ बुच्ची दुनू साँझखन डेरा मे पढ़ बैसल रहै। बौआ लोअर नर्सरीमे छलै आ बुची क्लास पाँच मे। बौआक इसकुल मे अंग्रेजी राइम्स याद कके आनै कहने छलै, से हम ओकरा बेर-बेर याद करा रहल छलियै।

थोड़े कालक बाद बौआक तामस उठलै सबटा किताब-कॉपी कात मे फेकि पड़ि रहल। कहलक हम नहि पढ़ब। सब समय हमरे याद करबै छी अहाँ, दीदीक याद नहि करबै छीयै। हम नहि पढ़ब।

हम कनि काल चुप भ' कहलियै-बेटा दीदी त' सासुर चलि जेतै। पढ़ि-लिखि कमा-खटाक अहाँक हमरा सबक' खुआब पड़त तैं ने नीक स' पढ़बै छी।

बौआ कहैत अछि- हमहुँ टैक्सी पकड़ि सासुर चल जाएब.....।



कमाई

- तीस तारीक क' हम गाम जायब।

- यज्ञ मे की।

- हँ।

- त' पाँच हजार रुपैया लैयेक' जायब।

- कियै, की हेतै पाँच हजार।

- आ चन्दा जे लागत।

- एतेक चन्दा! एतेक त' हमर दरमाहो नहि अछि।

- से रहय बा नहि रहय, ओते त' लगबे करत। कहै जाइ छलै गामक मुखिया - सरपंच जे एते स' कम कोनो कमौआ स' नहि लेबै।

- किएक ने कहतै। ओकरे सभ सनक दुनमबरी कमाई घोटालाक रहय तखन ने.......। कहलकै........ जे!!

छीक

भगवान सबक गोड़ लाकि डेरा स' निकलिते छीक देने रहै कियो। आपस भ' चौकी पर कनेकाल बैसि एक गिलास पानी देलखिन पत्नी से पी फेर विदा भेल बौआक इसकुल। नर्सरी बी. मे कएक दिन पहिने एडमिशन टेस्ट भेल रहै तकरे आइ रिजल्ट छलै।

पता नै की हेतै की नइ। ओना अबैत' छलै सबटा मोटा-मोटी बौआक, मुदा टेस्टक समय जखन मम्मी-पपाक गेटे पर ठाढ़ क' ओकरा दू तल्ला पर लके चल गेलै त' ओ बड़ कानल रहै तखन। आ क्लास रूमस' रहि-रहिक पड़ा जाइ बरण्डा पर आ हिचुकि -हिचुकि कानय। फेर मेम अबै आ गट्टा पकड़िक' ल' क' चल जाइ। जखन सब विद्यार्थी जुटलैत' परीक्षा भेलै। आ जखन बौआक गेट पर द' गेलैत' हाथमे बोर्ड, पेन्सिल बक्स, एडमिट कार्ड आ एक हाथे माथा स' निकालल टोपी धेने हिचुकैत रहै ओ।

मम्मी हाँइ-हाँइक कोरा उठा छाती लगा लेने रहै आ पपा पुछने रहै- बेटा की सब पुछलक? बौआ कहलकै जे हमरा माथा स' टोपी निकालि देलक आ पुछलक ई कोन कलर छियै। हम कहलियै रेड त' मेम कहै गुड। आ आर की सब पुछलकौ - मम्मी कहलकै। आर पुछलक ए.बी.सी. हम ए.बी.सी., वन, टू सबटा सुना देलियै। मुदा मम्मी हम नइ एबौ एहि पगला इसकुल। हमरा घिसियाक ल' जाइत छल बरण्डा पर स'। मायक मोन छोट भ' गेल रहै आ पपा हँस' लागल रहै।

से रिजल्ट नोटिस बोर्ड मे टँगा गेल छलै। ओ देखिक' मोन छोट भ' गेल छलै रोल नं. 231 नइ छलै सलेकसन लिस्टमे। आ रहतै कोना? ओकरा त' माथामे घुरिआइत छलै डेरा स' अबैकालमे कियो छीक देने रहै से। मोन त' तखने मानि गेल रहै। बेर-बेर देखय 231 रोल नइ छलै ओहिमे। हँ 233 छलै लेकिन 231 नइ।

शुरू स' कयक बेर देखलक ओकर पपा मुदा नइ भेटलै। जेबीस' एडमिट कार्ड निकालि फेर एक बेर रोल न. देखलक ओ। रोल न. 213 रहै। ओ फेर रिजल्ट सीट पर नजरि खिरेलक 213 ओहिमे सेहो छलै। ओ आब प्रसन्न भ' डेरामे फोन करैत अछि जे बौआ पास क' गेल। मुदा अपना पर ग्लानि होइत छैंक पुरना पाखण्ड क' मानिते छी हमरा सब एहि युग मे सेहो। तै ने आइ ओ बात मोन मे राखि नरभसा गेलौ...... !

पंचैती

बड़का दलानक आगाँमे बहुत रास कुर्सी लागल छलै, जाहि पर बहुत गोटा बैसल छलाह आ किछु कुर्सी एखनो खाली छलै जाहि लेल लोक प्रतीक्षा करैत छल जे बड़का बाबू मिसरजी, पाठकजी आदि बड़ा-बड़का लोक नहि एने कोना हैत पंचैती।

लखना चमार समय स' बहुत पहिने आबि पुआरक ढेरीक नीचामे छिड़ियाएल पुआर पर चुकीमाली भ'क' बैसल छल। पंचैती ओकरे उपर मे बैसायल गेल छलै। ओकर दोष छलै जे कएक दिन स' ओ गामक शिवमंदिर मे जाइत अछि आ तमघैल स' जल आनि बाबाक' छूक' पूजा करैत अछि। जाहि स' होइत की अछि- बाबा त' छुआइते छथि पूजा करैत काल, लोक सभ सेहो छुआ जाइत अछि। अन्याय अति अन्याय क' रहल छै लखना। जखन सब पंच आबि गेलाह त' लखना ओतय स' उठिक सभक लग आयल। सभक' भेलै जे आब ओ हाथ जोड़ि सब स' माफी माँगत, आ अपन कयल एहि अन्याय लेल लोकक पायर पकड़िक गिरगिरायत। मुदा ई सब ओ किछु नहि केलक। ओ एहि जुर्म लेल मात्र एकहि टा बात कहलक-

गिरहत औरी अहाँ सब जे कहैत छी हमरा पूजा केला स' महादेव आ अहाँ औरी छुआइत छी से छः मास पहिने जखन हमरा बेटीक बाधमे पंडीजी मालिकक बेटा पकड़ि लेने छलै आ ओकर देहक नोचि-नोचिक खलोदार क' देने छलै तखन अहाँ औरीक महादेव आ बभनत की नै छुआयल छल।

ओ त' धन्य कही दरोगा बाबूक जे हमर केश लिबलनि आ ओ एखन जहलमे अछि बेसी करै जाएबत' हम फेर एहि बात ल' क' चल जैब मधबनी हँ......। आ तकरा बाद सब चुप्प भ' गेल छल, जेना पंच सभक' गरा बकौर लागि गेल हो। आ लखना अपना गाम पर निरविकार भावे चल गेल रहय!

सम्पर्क - ग्राम-पोस्ट - नरुआर
भाया - लोहना रोड
जिला - मधुबनी (मिथिला)
पिन - 847 407
मो. नं. - 094337-53863

आम आदमीक बजट : कतेक सच्च?

प्रेमकान्त चौधरी





पछिला अठारह फरवरीक किछु लोक प्रतिक्षा करैत छलाह। किछु लोकक्क उत्सुक छलाह आ किछु लोक दिनचर्या सभदिन जकाँ छल। जे लोकनि उत्सुक वा प्रतिक्षारत छलाह ओ अहि कारणे कि श्री प्रणव मुखर्जी, वित्तमंत्री संसद मे बजट 2011-2012 पेश करताह। आ ओहि बजट मे अगिला वर्षक आमदनी आ खर्चक लेखा-जोखा प्रस्तुत होयत। कोन मद मे कतेक खर्च करब तकर प्रस्तुति आम तौर पर आम आदमी जे अपन घरक बजट (महिनवारी खर्च) बनबैत छथि से निर्भरकरैत अछि हुनकर मासिक आय पर बा सलाना कारोबार सऽ जे आय अबैत अछि ताहि पर। मुदा सरकारी बजट पूर्णत: अनुमान पर निर्भर करैत अछि। सरकार वर्ष भरि मे खर्च करत, तकर ओहि वर्ष मे कतेक वगैरह सऽ जे आय औतेक ओहि पर निर्भर करैत अछि। यदि ओहि अनुमानित आय मे कमी होयत छै तऽ अगिला साल घाटा क बजट प्रस्तुत होईत अछि। एकटा आम आदमी हमरा बुझने अतबे बुझैत अछि।

अहिवेरका बजट जे पेश भेल तकर अलग-अलग लोक, संस्थान सब अलग अलग तरहे विश्लेषण केलाह। किछु लोक कहलथि विकाशोन्मुख बजट तऽ किछु गोटे कहलथि जेहन-तेहन। ओना तऽ यदि सर्वे कायल जाय तऽ एहि बातक खुलासा होयत कि ''आम बजट'' के मतलब कतेक लोक बुझैत छथि। एकटा अनुमान केर अनुसार देशक कुल जनसंख्या क 60% सऽ 70% लोक बजट केऽ वास्तविक मतलब नहि बुझैत अछि। जाहि मे कृषि क्षेत्र मजदूर वर्ग, अशिक्षित लोक व छोट मोट व्यापारी आ नौकरी करैबला लोक शामिल अछि। बाकी 40 सऽ 30 प्रतिशत जनसंख्या बजट के मतलब बुझैत छथि से अनुमान अछि। जहिना देश मे लोकतंत्र केऽ मतलब बहुसंख्याक'क लोक नहि बुझैत छथि ठीक ओहिना जेना आई सऽ तीन वर्ष पहिने अचानक एकटा टी.वी. चैनल के पत्रकार संसद भवन के बाहर स्वतंत्रता दिवस केऽ अवसर पर किछु एम.पी. (सांसद) सऽ ई सवाल कैलक जे भारतक राष्ट्रगीत गाऊ आ अपने के ईं जानिक दु:खद आश्चर्य होयत जे करीब बीसो सांसद सऽ ई बात पूछल गेल आ ओहि मऽ सऽ मात्र दू-तीन टा सांसद राष्ट्रगान केऽ कहि सकल। ओहि तरहे देशक बजट। करीब 40-45 प्रतिशत जनता चुनाव मे जाहि तरहे वोट दई लाऽ नहि जाईत छथि तहिना आम जनता केऽ आम बजट सऽ कतेऽ सरोकार अछि तकर अनुमान लगायल जा सकैत अछि। जखन बेसी लोक केऽ अपन-भोजन-भात के इन्तजाम मे भिन्सर सऽ साँझ पड़ि जायत छै तखन''आम आदमी का बजट'' प्रणब बाबूक कहाँ तक सार्थक होयत।

आम बजट सऽ वेसी नीक अकाॅ लोक रेल बजट बुझैत अछि। कारण साधारण लोक साधारण बात नीक जकाँ बुझी जायत अछि। कारण सुश्री ममता बनर्जी रेल बजट प्रस्तुत केलीह आ रेल भाड़ा मे बढ़ोत्तरी नहि भेल वा रेल भाड़ा मे बढ़ोत्तरी भऽ गेल तऽ साधारण

आम आदमीक बजट : कतेक सच्च?



प्रेमकान्त चौधरी



पछिला अठारह फरवरीक किछु लोक प्रतिक्षा करैत छलाह। किछु लोकक्र उत्सुक छलाह आ किछु लोक दिनचर्या सभदिन जकाँ छल। जे लोकनि उत्सुक वा प्रतिक्षारत छलाह ओ अहि कारणे कि श्री प्रणव मुखर्जी, वित्तमंत्री संसद मे बजट 2011-2012 पेश करताह। आ ओहि बजट मे अगिला वर्षक आमदनी आ खर्चक लेखा-जोखा प्रस्तुत होयत। कोन मद मे कतेक खर्च करब तकर प्रस्तुति आम तौर पर आम आदमी जे अपन घरक बजट (महिनवारी खर्च) बनबैत छथि से निर्भरकरैत अछि हुनकर मासिक आय पर बा सलाना कारोबार सऽ जे आय अबैत अछि ताहि पर। मुदा सरकारी बजट पूर्णत: अनुमान पर निर्भर करैत अछि। सरकार वर्ष भरि मे खर्च करत, तकर ओहि वर्ष मे कतेक वगैरह सऽ जे आय औतेक ओहि पर निर्भर करैत अछि। यदि ओहि अनुमानित आय मे कमी होयत छै तऽ अगिला साल घाटा क बजट प्रस्तुत होईत अछि। एकटा आम आदमी हमरा बुझने अतबे बुझैत अछि।

अहिवेरका बजट जे पेश भेल तकर अलग-अलग लोक, संस्थान सब अलग अलग तरहे विश्लेषण केलाह। किछु लोक कहलथि विकाशोन्मुख बजट तऽ किछु गोटे कहलथि जेहन-तेहन। ओना तऽ यदि सर्वे कायल जाय तऽ एहि बातक खुलासा होयत कि ''आम बजट'' के मतलब कतेक लोक बुझैत छथि। एकटा अनुमान केर अनुसार देशक कुल जनसंख्या क 60% सऽ 70% लोक बजट केऽ वास्तविक मतलब नहि बुझैत अछि। जाहि मे कृषि क्षेत्र मजदूर वर्ग, अशिक्षित लोक व छोट मोट व्यापारी आ नौकरी करैबला लोक शामिल अछि। बाकी 40 सऽ 30 प्रतिशत जनसंख्या बजट के मतलब बुझैत छथि से अनुमान अछि। जहिना देश मे लोकतंत्र केऽ मतलब बहुसंख्याक'क लोक नहि बुझैत छथि ठीक ओहिना जेना आई सऽ तीन वर्ष पहिने अचानक एकटा टी.वी. चैनल के पत्रकार संसद भवन के बाहर स्वतंत्रता दिवस केऽ अवसर पर किछु एम.पी. (सांसद) सऽ ई सवाल कैलक जे भारतक राष्ट्रगीत गाऊ आ अपने के ईं जानिक दु:खद आश्चर्य होयत जे करीब बीसो सांसद सऽ ई बात पूछल गेल आ ओहि मऽ सऽ मात्र दू-तीन टा सांसद राष्ट्रगान केऽ कहि सकल। ओहि तरहे देशक बजट। करीब 40-45 प्रतिशत जनता चुनाव मे जाहि तरहे वोट दई लाऽ नहि जाईत छथि तहिना आम जनता केऽ आम बजट सऽ कतेऽ सरोकार अछि तकर अनुमान लगायल जा सकैत अछि। जखन बेसी लोक केऽ अपन-भोजन-भात के इन्तजाम मे भिन्सर सऽ साँझ पड़ि जायत छै तखन''आम आदमी का बजट'' प्रणब बाबूक कहाँ तक सार्थक होयत।

आम बजट सऽ वेसी नीक अकॉ लोक रेल बजट बुझैत अछि। कारण साधारण लोक साधारण बात नीक जकाँ बुझी जायत अछि। कारण सुश्री ममता बनर्जी रेल बजट प्रस्तुत केलीह आ रेल भाड़ा मे बढ़ोत्तरी नहि भेल वा रेल भाड़ा मे बढ़ोत्तरी भऽ गेल तऽ साधारण

आम आदमीक बजट : कतेक सच्च?

प्रेमकान्त चौधरी



पछिला अठारह फरवरीक किछु लोक प्रतिक्षा करैत छलाह। किछु लोकक्क उत्सुक छलाह आ किछु लोक दिनचर्या सभदिन जकाँ छल। जे लोकनि उत्सुक वा प्रतिक्षारत छलाह ओ अहि कारणे कि श्री प्रणव मुखर्जी, वित्तमंत्री संसद मे बजट 2011-2012 पेश करताह। आ ओहि बजट मे अगिला वर्षक आमदनी आ खर्चक लेखा-जोखा प्रस्तुत होयत। कोन मद मे कतेक खर्च करब तकर प्रस्तुति आम तौर पर आम आदमी जे अपन घरक बजट (महिनवारी खर्च) बनबैत छथि से निर्भरकरैत अछि हुनकर मासिक आय पर बा सलाना कारोबार सऽ जे आय अबैत अछि ताहि पर। मुदा सरकारी बजट पूर्णत: अनुमान पर निर्भर करैत अछि। सरकार वर्ष भरि मे खर्च करत, तकर ओहि वर्ष मे कतेक वगैरह सऽ जे आय औतेक ओहि पर निर्भर करैत अछि। यदि ओहि अनुमानित आय मे कमी होयत छै तऽ अगिला साल घाटा क बजट प्रस्तुत होईत अछि। एकटा आम आदमी हमरा बुझने अतबे बुझैत अछि।



अहिवेरका बजट जे पेश भेल तकर अलग-अलग लोक, संस्थान सब अलग अलग तरहे विश्लेषण केलाह। किछु लोक कहलथि विकाशोन्मुख बजट तऽ किछु गोटे कहलथि जेहन-तेहन। ओना तऽ यदि सर्वे कायल जाय तऽ एहि बातक खुलासा होयत कि ''आम बजट'' के मतलब कतेक लोक बुझैत छथि। एकटा अनुमान केर अनुसार देशक कुल जनसंख्या क 60% सऽ 70% लोक बजट केऽ वास्तविक मतलब नहि बुझैत अछि। जाहि मे कृषि क्षेत्र मजदूर वर्ग, अशिक्षित लोक व छोट मोट व्यापारी आ नौकरी करैबला लोक शामिल अछि। बाकी 40 सऽ 30 प्रतिशत जनसंख्या बजट के मतलब बुझैत छथि से अनुमान अछि। जहिना देश मे लोकतंत्र केऽ मतलब बहुसंख्याक'क लोक नहि बुझैत छथि ठीक ओहिना जेना आई सऽ तीन वर्ष पहिने अचानक एकटा टी.वी. चैनल के पत्रकार संसद भवन के बाहर स्वतंत्रता दिवस केऽ अवसर पर किछु एम.पी. (सांसद) सऽ ई सवाल कैलक जे भारतक राष्ट्रगीत गाऊ आ अपने के ईं जानिक दु:खद आश्चर्य होयत जे करीब बीसो सांसद सऽ ई बात पूछल गेल आ ओहि मऽ सऽ मात्र दू-तीन टा सांसद राष्ट्रगान केऽ कहि सकल। ओहि तरहे देशक बजट। करीब 40-45 प्रतिशत जनता चुनाव मे जाहि तरहे वोट दई लाऽ नहि जाईत छथि तहिना आम जनता केऽ आम बजट सऽ कतेऽ सरोकार अछि तकर अनुमान लगायल जा सकैत अछि। जखन बेसी लोक केऽ अपन-भोजन-भात के इन्तजाम मे भिन्सर सऽ साँझ पड़ि जायत छै तखन''आम आदमी का बजट'' प्रणब बाबूक कहाँ तक सार्थक होयत।

आम बजट सऽ वेसी नीक अकाँ लोक रेल बजट बुझैत अछि। कारण साधारण लोक साधारण बात नीक जकाँ बुझी जायत अछि। कारण सुश्री ममता बनर्जी रेल बजट प्रस्तुत केलीह आ रेल भाड़ा मे बढ़ोत्तरी नहि भेल वा रेल भाड़ा मे बढ़ोत्तरी भऽ गेल तऽ साधारण

लोक यानी आम आदमी बहुत नीक जकाँ बुझी जायत अछि जे सरकार की कऽ रहल अछि। प्याजक दाम 80 रुपया प्रति किलो तर-तरकारी के दाम बढ़ि गेल-डीजल-पेट्रोलक दाम बढ़ि गेल तऽ साधआरण लोक के तुंरुत बुझा जायत अछि कि अमुक बस्तुक दाम बढ़ि गेल अछि। सर्व साधारण लोक जकरा आम आदमी कहल जायत अछि ओकर एकटा आओर उदाहरण अछि कैप्टेन गौपीनाथ। कैप्टेन गोपीनाथ साधारण लोक केऽ सस्ता मे हवाई यात्रा करा कऽ ई साबित कऽ देला कि आम आदमी कोना हवाई यात्रा कऽ सकैत छथि। आ आम आदमी एकर लाभ उठेलाह। बहुत एहन लोक सभ एकर लाभ उठा कऽ आनन्दित भेलाह। अहि मे एकटा आओर नव बात आयल जे कोना एरोप्लेन के भीतर एयर हॉस्टेजक (परिचायिका) संख्या कम सऽ कम राखल जाए आ ओकरा सभ सऽ दूकानदारी से हो करायल जाय। यानी खाई-पीबै'क वस्तु प्लेन के भीतर-दूगुना-तीन गुणा दाम मे बेचल जाए। खाश क'क जखन बेरहट केऽ समय होय आ दू-तीन घंटा'क जात्रा। मँहगाई एतेक बढ़ि गेल छै कि लोक केऽ अपन भरण-पोषण केनाई कठिन भऽ रहल छै। मुदा देशक प्रधानमंत्री एतेक नीक अर्थशास्त्री रहि चुकल छथि वित्तमंत्री से हो रहि चुकल छथि। ओ एकटा सवालक जवाब मे बाजलाह जे मँहगाई अहि दूआरे बढ़ि रहल अछि आम आदमी क हाथ मे पाई-कौड़ी आबि गेल छै। प्याज क दाम एतेक अहि दूआरें बढ़ि गेल छै कि आम आदमी व मजदूर प्याजक उपभोग बेसी करऽ लागल अछि। असल मे प्रधानमंत्री के ई नहि बुझल छैन्ह जे अधिकांशतः मजदूर रोटी, नमक-तेल आचार वा प्याजक संग खा कऽ निर्वाह करैत अछि। प्रधानमंत्री तऽ एतेक नीक लोक छथि जे एकटा पत्रकार हुनका सऽ पूछल जे 2 जी घोटाला बारे मे अपने की जनैत छी तऽ हुनकर उत्तर छल जे- हम टू जी जनैत छी- एक सोनिया जी दूसर- राहुल जी। देशक प्रधानमंत्री एतेक लाचार विचार व्यवहार आ सरल स्वभाव के छथि जे आमलोक हुनका सऽ की आश राखत।

अहिबेरका बजट जे पेश भेल तकर अलग-अलग लोक, संस्थान सब अलग अलग तरहे विश्लेषण केलाह। किछु लोक कहलथि विकाशोन्मुख बजट तऽ किछु गोटे कहलथि जेहन-तेहन। ओना तऽ यदि सर्वे कायल जाय तऽ एहि बातक खुलासा होयत कि ''आम बजट'' के मतलब कतेक लोक बुझैत छथि। एकटा अनुमान केर अनुसार देशक कुल जनसंख्या क 60% सऽ 70% लोक बजट केऽ वास्तविक मतलब नहि बुझैत अछि। जाहि मे कृषि क्षेत्र मजदूर वर्ग, अशिक्षित लोक व छोट मोट व्यापारी आ नौकरी करैबला लोक शामिल अछि। बाकी 40 सऽ 30 प्रतिशत जनसंख्या बजट के मतलब बुझैत छथि से अनुमान अछि।

अतः आम बजट आम लोक सऽ कतेक कटल-कटल अछि वा सटल-सटल अछि ई तऽ फेर विश्लेषणक विषय अछि। पाँच राज्य के अगामी विधान सभा चुनाव केऽ ध्यान मे राखैत प्रणव दा बजट प्रस्तुत केलाह। जाहिमे असम पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु, केरल, आ पाँडिचेरी। एहि राज्य सबके विशेष सहायक प्राबधान राखल गेल। बिहारक बाढ़ि आ सूखायल भयावहत। के कोनो प्राबधान नहि। जतऽ आमलोक रहैत अछि।

वाह रे राजनीति

असम सरकार पछिला महिना एकटा पत्रकारक सभा आयोजन केलाह आ एकटा नीति के तहत किछु पत्रकार लोकनि के चयन केलाह कि हुनका सब के लैप टॉप देल जाय। ई कोनो नव बात तऽ नहि भे'ल किन्तु राज्य विधान सभा चुनाव सऽ पहिले किछु खाश चुनींदा पत्रकार केऽ मुफ्त से लैपटॉप बटनाई निष्पक्ष समाचार व पत्रकारिकता पर संदेह उत्पन्न करैत अछि। ओना तऽ किछु अन्य राज्य मे से हो सरकारी योजनाक तहत पत्रकारक लेल किछु-किछु योजनाक लाभ दैत रहल अछि। मेधावी स्कूली बच्चाक बीच मे Computer / Laptop बटनाई तऽ एक बात भेल। मुदा चुनाव सऽ पहिने पत्रकार के Laptop बटनाई ''दाल मे काला'' जकाँ बात अछि। ओना इ आई-काल्हि ''पेड न्यूज'' क प्रचलन बेसी भऽ गेल छैक। ओहि सरकारी अनुदान वाला वस्तु सऽ कोना सरकार केऽ खिलाफ लिखब? ओनाहूँ देखल जाय तऽ कलमक स्याही तऽ पहिने सुखी गेल। इन्टरनेट के जमाना मे कट-पेस्ट बेसी चलैत छैक। एकटा पत्रकार बन्धु गोगई जी के हाथ सऽ Laptop ग्रहण केला के बाद अप्पन उद्‌गार व्यक्त करैल बजलाह- ''22 बरखक पत्रकारिकता के जीवन मे आई पहिल बेर ई बुझना गेल कि हमर पत्रकारिकता जीवन सफल भेल।''

शायद हुनकर विचार शक्ति कमजोर भऽ गेलैन्ह कियाकी 22 बरख सऽ जे ईज्जत-आबरु हुनकर बचल छलैन्ह से 22 हजार टाका क Laptop सऽ सरेआम नीलाम भ गेलैन्ह। हम बुझैत छी जे यदि हुनका पास Laptop पहिने सऽ रहितैन्ह तऽ ओ ओहि सभा मे जाक ई Laptop नहि ग्रहण करितैय। बहुत एहन पत्रकार बन्धु ओहि मे शामिल नहि भेलाह आ राजनीतिक कठपुतली होमऽ सऽ बचि गेलाह।

लोक यानी आम आदमी बहुत नीक जकाँ बुझी जायत अछि जे सरकार की कऽ रहल अछि। प्याजक दाम 80 रुपया प्रति किलो तर-तरकारी के दाम बढ़ि गेल-डीजल-पेट्रोलक दाम बढ़ि गेल तऽ साधआरण लोक के तुंरुत बुझा जायत अछि कि अमुक बस्तुक दाम बढ़ि गेल अछि। सर्व साधारण लोक जकरा आम आदमी कहल जायत अछि ओकर एकटा आओर उदाहरण अछि कैप्टेन गौपीनाथ। कैप्टेन गोपीनाथ साधारण लोक केऽ सस्ता मे हवाई यात्रा करा कऽ ई साबित कऽ देला कि आम आदमी कोना हवाई यात्रा कऽ सकैत छथि। आ आम आदमी एकर लाभ उठेलाह। बहुत एहन लोक सभ एकर लाभ उठा कऽ आनन्दित भेलाह। अहि मे एकटा आओर नव बात आयल जे कोना एरोप्लेन के भीतर एयर हॉस्टेजक (परिचायिका) संख्या कम सऽ कम राखल जाए आ ओकरा सभ सऽ दूकानदारी से हो करायल जाय। यानी खाई-पीबै'क वस्तु प्लेन के भीतर-दूगुना-तीन गुणा दाम मे बेचल जाए। खाश क'क जखन बेरहट केऽ समय होय आ दू-तीन घंटा'क जात्रा। मँहगाई एतेक बढ़ि गेल छै कि लोक केऽ अपन भरण-पोषण केनाई कठिन भऽ रहल छै। मुदा देशक प्रधानमंत्री एतेक नीक अर्थशास्त्री रहि चुकल छथि वित्तमंत्री से हो रहि चुकल छथि। ओ एकटा सवालक जवाब मे बाजलाह जे मँहगाई अहि दूआरे बढ़ि रहल अछि आम आदमी क हाथ मे पाई-कौड़ी आबि गेल छै। प्याज क दाम एतेक अहि दूआरें बढ़ि गेल छै कि आम आदमी व मजदूर प्याजक उपभोग बेसी करऽ लागल अछि। असल मे प्रधानमंत्री के ई नहि बुझल छैन्ह जे अधिकांशतः मजदूर रोटी, नमक-तेल आचार वा प्याजक संग खा कऽ निर्वाह करैत अछि। प्रधानमंत्री तऽ एतेक नीक लोक छथि जे एकटा पत्रकार हुनका सऽ पूछल जे 2 जी घोटाला बारे मे अपने की जनैत छी तऽ हुनकर उत्तर छल जे- हम टू जी जनैत छी- एक सोनिया जी दूसर- राहुल जी। देशक प्रधानमंत्री एतेक लाचार विचार व्यवहार आ सरल स्वभाव के छथि जे आमलोक हुनका सऽ की आश राखत।

अहिवेरका बजट जे पेश भेल तकर अलग-अलग लोक, संस्थान सब अलग अलग तरहे विश्लेषण केलाह। किछु लोक कहलथि विकाशोन्मुख बजट तऽ किछु गोटे कहलथि जेहन-तेहन। ओना तऽ यदि सर्वे कायल जाय तऽ एहि बातक खुलासा होयत कि ''आम बजट'' के मतलब कतेक लोक बुझैत छथि। एकटा अनुमान केर अनुसार देशक कुल जनसंख्या क 60% सऽ 70% लोक बजट केऽ वास्तविक मतलब नहि बुझैत अछि। जाहि मे कृषि क्षेत्र मजदूर वर्ग, अशिक्षित लोक व छोट मोट व्यापारी आ नौकरी करैबला लोक शामिल अछि। बाकी 40 सऽ 30 प्रतिशत जनसंख्या बजट के मतलब बुझैत छथि से अनुमान अछि।

अतः आम बजट आम लोक सऽ कतेक कटल-कटल अछि वा सटल-सटल अछि ई तऽ फेर विश्लेषणक विषय अछि। पाँच राज्य के अगामी विधान सभा चुनाव केऽ ध्यान मे राखैत प्रणव दा बजट प्रस्तुत केलाह। जाहिमे असम पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु, केरल, आ पाँडिचेरी। एहि राज्य सबके विशेष सहायक प्राबधान राखल गेल। बिहारक बाढ़ि आ सूखायल भयावहत। के कोनो प्राबधान नहि। जतऽ आमलोक रहैत अछि।

वाह रे राजनीति

असम सरकार पछिला महिना एकटा पत्रकारक सभा आयोजन केलाह आ एकटा नीति के तहत किछु पत्रकार लोकनि के चयन केलाह कि हुनका सब के लैप टॉप देल जाय। ई कोनो नव बात तऽ नहि भे'ल किन्तु राज्य विधान सभा चुनाव सऽ पहिले किछु खाश चुनींदा पत्रकार केऽ मुफ्त से लैपटॉप बटनाई निष्पक्ष समाचार व पत्रकारिकता पर संदेह उत्पन्न करैत अछि। ओना तऽ किछु अन्य राज्य मे से हो सरकारी योजनाक तहत पत्रकारक लेल किछु-किछु योजनाक लाभ दैत रहल अछि। मेधावी स्कूली बच्चाक बीच मे Computer / Laptop बटनाई तऽ एक बात भेल। मुदा चुनाव सऽ पहिने पत्रकार के Laptop बटनाई ''दाल मे काला'' जकाँ बात अछि। ओना इ आई-काल्हि ''पेड न्यूज'' क प्रचलन बेसी भऽ गेल छैक। ओहि सरकारी अनुदान वाला वस्तु सऽ कोना सरकार केऽ खिलाफ लिखब? ओनाहूँ देखल जाय तऽ कलमक स्याही तऽ पहिने सुखी गेल। इन्टरनेट के जमाना मे कट-पेस्ट बेसी चलैत छैक। एकटा पत्रकार बन्धु गोगई जी के हाथ सऽ Laptop ग्रहण केला के बाद अप्पन उद्‌गार व्यक्त करैल बजलाह- ''22 बरखक पत्रकारिकता के जीवन मे आई पहिल बेर ई बुझना गेल कि हमर पत्रकारिकता जीवन सफल भेल।''

शायद हुनकर विचार शक्ति कमजोर भऽ गेलैन्ह कियाकी 22 बरख सऽ जे ईज्जत-आबरु हुनकर बचल छलैन्ह से 22 हजार टाका क Laptop सऽ सरेआम नीलाम भ गेलैन्ह। हम बुझैत छी जे यदि हुनका पास Laptop पहिने सऽ रहितैन्ह तऽ ओ ओहि सभा मे जाक ई Laptop नहि ग्रहण करितैय। बहुत एहन पत्रकार बन्धु ओहि मे शामिल नहि भेलाह आ राजनीतिक कठपुतली होमऽ सऽ बचि गेलाह।

लोक यानी आम आदमी बहुत नीक जकाँ बुझी जायत अछि जे सरकार की कऽ रहल अछि। प्याजक दाम 80 रुपया प्रति किलो तर-तरकारी के दाम बढ़ि गेल-डीजल-पेट्रोलक दाम बढ़ि गेल तऽ साधआरण लोक के तुंरुत बुझा जायत अछि कि अमुक बस्तुक दाम बढ़ि गेल अछि। सर्व साधारण लोक जकरा आम आदमी कहल जायत अछि ओकर एकटा आओर उदाहरण अछि कैप्टेन गौपीनाथ। कैप्टेन गोपीनाथ साधारण लोक केऽ सस्ता मे हवाई यात्रा करा कऽ ई साबित कऽ देला कि आम आदमी कोना हवाई यात्रा कऽ सकैत छथि। आ आम आदमी एकर लाभ उठेलाह। बहुत एहन लोक सभ एकर लाभ उठा कऽ आनन्दित भेलाह। अहि मे एकटा आओर नव बात आयल जे कोना एरोप्लेन के भीतर एयर हॉस्टेजक (परिचायिका) संख्या कम सऽ कम राखल जाए आ ओकरा सभ सऽ दूकानदारी से हो करायल जाय। यानी खाई-पीबै'क वस्तु प्लेन के भीतर-दूगुना-तीन गुणा दाम मे बेचल जाए। खाश क'क जखन बेरहट केऽ समय होय आ दू-तीन घंटा'क जात्रा। मँहगाई एतेक बढ़ि गेल छै कि लोक केऽ अपन भरण-पोषण केनाई कठिन भऽ रहल छै। मुदा देशक प्रधानमंत्री एतेक नीक अर्थशास्त्री रहि चुकल छथि वित्तमंत्री से हो रहि चुकल छथि। ओ एकटा सवालक जवाब मे बाजलाह जे मँहगाई अहि दूआरे बढ़ि रहल अछि आम आदमी क हाथ मे पाई-कौड़ी आबि गेल छै। प्याज क दाम एतेक अहि दूआरें बढ़ि गेल छै कि आम आदमी व मजदूर प्याजक उपभोग बेसी करऽ लागल अछि। असल मे प्रधानमंत्री के ई नहि बुझल छैन्ह जे अधिकांशतः मजदूर रोटी, नमक-तेल आचार वा प्याजक संग खा कऽ निर्वाह करैत अछि। प्रधानमंत्री तऽ एतेक नीक लोक छथि जे एकटा पत्रकार हुनका सऽ पूछल जे 2 जी घोटाला बारे मे अपने की जनैत छी तऽ हुनकर उत्तर छल जे- हम टू जी जनैत छी- एक सोनिया जी दूसर- राहुल जी। देशक प्रधानमंत्री एतेक लाचार विचार व्यवहार आ सरल स्वभाव के छथि जे आमलोक हुनका सऽ की आश राखत।

अहिवेरका बजट जे पेश भेल तकर अलग-अलग लोक, संस्थान सब अलग अलग तरहे विश्लेषण केलाह। किछु लोक कहलथि विकाशोन्मुख बजट तऽ किछु गोटे कहलथि जेहन-तेहन। ओना तऽ यदि सर्वे कायल जाय तऽ एहि बातक खुलासा होयत कि ''आम बजट'' के मतलब कतेक लोक बुझैत छथि। एकटा अनुमान केर अनुसार देशक कुल जनसंख्या क 60% सऽ 70% लोक बजट केऽ वास्तविक मतलब नहि बुझैत अछि। जाहि मे कृषि क्षेत्र मजदूर वर्ग, अशिक्षित लोक व छोट मोट व्यापारी आ नौकरी करैबला लोक शामिल अछि। बाकी 40 सऽ 30 प्रतिशत जनसंख्या बजट के मतलब बुझैत छथि से अनुमान अछि।

अतः आम बजट आम लोक सऽ कतेक कटल-कटल अछि वा सटल-सटल अछि ई तऽ फेर विश्लेषणक विषय अछि। पाँच राज्य के अगामी विधान सभा चुनाव केऽ ध्यान मे राखैत प्रणव दा बजट प्रस्तुत केलाह। जाहिमे असम पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु, केरल, आ पाँडिचेरी। एहि राज्य सबके विशेष सहायक प्राबधान राखल गेल। बिहारक बाढ़ि आ सूखायल भयावहत। के कोनो प्राबधान नहि। जतऽ आमलोक रहैत अछि।

वाह रे राजनीति

असम सरकार पछिला महिना एकटा पत्रकारक सभा आयोजन केलाह आ एकटा नीति के तहत किछु पत्रकार लोकनि के चयन केलाह कि हुनका सब के लैप टॉप देल जाय। ई कोनो नव बात तऽ नहि भे'ल किन्तु राज्य विधान सभा चुनाव सऽ पहिले किछु खाश चुनींदा पत्रकार केऽ मुफ्त से लैपटॉप बटनाई निष्पक्ष समाचार व पत्रकारिकता पर संदेह उत्पन्न करैत अछि। ओना तऽ किछु अन्य राज्य मे से हो सरकारी योजनाक तहत पत्रकारक लेल किछु-किछु योजनाक लाभ दैत रहल अछि। मेधावी स्कूली बच्चाक बीच मे Computer / Laptop बटनाई तऽ एक बात भेल। मुदा चुनाव सऽ पहिने पत्रकार के Laptop बटनाई ''दाल मे काला'' जकाँ बात अछि। ओना इ आई-काल्हि ''पेड न्यूज'' क प्रचलन बेसी भऽ गेल छैक। ओहि सरकारी अनुदान वाला वस्तु सऽ कोना सरकार केऽ खिलाफ लिखब? ओनाहूँ देखल जाय तऽ कलमक स्याही तऽ पहिने सुखी गेल। इन्टरनेट के जमाना मे कट-पेस्ट बेसी चलैत छैक। एकटा पत्रकार बन्धु गोगई जी के हाथ सऽ Laptop ग्रहण केला के बाद अप्पन उद्‌गार व्यक्त करैल बजलाह- ''22 बरखक पत्रकारिकता के जीवन मे आई पहिल बेर ई बुझना गेल कि हमर पत्रकारिकता जीवन सफल भेल।''

शायद हुनकर विचार शक्ति कमजोर भऽ गेलैन्ह कियाकी 22 बरख सऽ जे ईज्जत-आबरु हुनकर बचल छलैन्ह से 22 हजार टाका क Laptop सऽ सरेआम नीलाम भ गेलैन्ह। हम बुझैत छी जे यदि हुनका पास Laptop पहिने सऽ रहितैन्ह तऽ ओ ओहि सभा मे जाक ई Laptop नहि ग्रहण करितैय। बहुत एहन पत्रकार बन्धु ओहि मे शामिल नहि भेलाह आ राजनीतिक कठपुतली होमऽ सऽ बचि गेलाह।

डॉ. नित्यानन्द लाल दास कैं साहित्य अकादेमीक मैथिली अनुवाद पुरस्कार

डॉ. नित्यानन्द लाल दास कैं साहित्य अकादेमीक मैथिली अनुवाद पुरस्कार 2010 देल जाएत। डॉ. नित्यानन्द लाल दास , पिता स्वर्गीय सूर्यनारायण दास। फारबिसगंज कॉलेज, फारबिसगंज सँ अंग्रेजी विभागाध्यक्ष पदसँ अवकाशप्राप्त।

डॉ. सुरेन्द्र झा ''सुमन'' क संयोजकत्वक कार्यकालमे ''मैथिली परामर्शदातृ समिति'' (साहित्य अकादेमी, दिल्ली)क सदस्य। डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलामक अंग्रेजी पोथी ''इग्नाइटेड माइण्ड्स'' क मैथिलीमे ''प्रज्वलित प्रज्ञा'' नामसँ अनुवाद। मैथिली पत्रिका सभ जेना बटुक, प्रयाग; मिथिला मिहिर, पटना; स्वदेश, दरभंगा; पहुँच, पटना आ परती पलार, अररियामे रचना प्रकाशित।

'टुग्गर' उपन्यास टुग्गर नहि अछि

डा. पशुपति नाथ झा

साहित्यिक संस्था ज्योत्स्ना मण्डलक तत्वावधान मे आर्यकुमार पुस्तकालय जयनगरक सभा भवनमे आयोजित एक साहित्यिक संगोष्ठीमे त्रिभुवन विश्वविद्यालय (नेपाल)क मैथिली विभागाध्यक्ष डा. पशुपतिनाथ झा कहलनि जे वरिष्ठ साहित्यकार डा. कमलकान्त झाक सदा: प्रकाशित उपन्यास 'टुग्गर' एक उत्कृष्ट रचना अछि। ईकोनहु दृष्टिसँ टुग्गर नहि अछि। उपन्यासक नायक बाल्यकालमे अवश्य टुग्गर भऽ गेल छल, किन्तु गरीबीसँ संघर्ष करैत निरन्तर अध्ययनरत रहैत ओ उच्च शिखरधरि पहुँचिगेल तथा युवावर्गक लेल प्रेरणाक स्रोत बनि गेल। ओ कहलनि दर्जनो पुस्तकक रचयिता डा. झा सफल नाटककार, कथालाकर ओ कवि सेहो छथि, जनिक रचना उच्च कोटिक होति छनि। हिनक शोधग्रन्थ 'मैथिली लोकोक्तिक उद्भव अे विकास'क आधारपर अनेक शोधार्थी शोध कऽ प्राप्त कऽ चुकल छथि।

उक्त अवसरपर आयोजित हिन्दी मैथिलीक साझी कार्यक्रमक मुख्य अतिथि पूर्व भारतीय प्रशासनिक अधिकारीओ तीन दर्जन ग्रन्थक रचयिता दैनिक जागरणक स्तम्भलेखक डा. भगवती शरण मिश्र (दिल्ली) कहलनि जे पाश्चात्य सभ्यतासँ प्रभावित भऽ आधुनिक साहित्यकार प्रगतिशीलताक नामपर जे किछु लिखि रहल छथि तकरा समाजक दर्पण नहि कहल जा सकैत अछि। ओहन साहित्य भारतीय संस्कृति पर कुठाराघात करैत अछि तथा युवावर्गकैं दिग्भ्रमित करैत अछि। मुदा ओ कहलनि जे विद्वान लेखक डा. कमल कान्त झाक उपन्यास 'टुग्गर' उक्त दोषसबसँ मुक्त एक उत्कृष्ट रचना अछि, आहिमे नायक पंकजक चरित्रसँ युवावर्गकैं नीक करबाक प्रेरणा भेटैत अछि।

की 'बुच्ची दाय' के भेटत आर्थिक आज़ादी

मिथिला ऐतिहासिक नाम अछि या परंपरा ई बहस के विषय अछि लेकिन ई सवाल दुरुस्त अछि जे आई मिथिलाक पहचान विदेह सं अछि या फिर संस्कृति आ रीती रिवाज सं या फिर शिक्षा सं हर जाति समुदाय आ वर्ग के अलग अलग परंपरा अलग रिवाज लेकिन मर्यादाक रंग एक संस्कृति मे रंगल अछि मिथिलाक हर आयोजन अहि ठामक सांस्कृतिक पर्व सं जुड़ल अछि शायद ई एकर खास पहचान अछि। लेकिन किछु चीज अनोखा अछि। मसलन कन्याक विवाहक तैयारी मिथिला मे लड़की के जन्म लैत शुरू भय जायत अछि। गाम सं वर्षो दूर रहबाक कने 'तुसारी' शब्द हमरा जेहन सं विलोपित भ' गेल छल, लेकिन पड़ोस के परिवार मे तुसारी के लयक मचल घमासान हमरा एकर मर्यादा सं दुबारा परिचय करोलक ..

जीबछ जीक बेटी मेडिकल मे पढैत छथि स्कूली शिक्षा बच्चा सबके कॉन्वेंट स्कूल सं भेटल अछि परिवार मे सांस्कृतिक विद्रोह क' सम्भावना निरंतर बनल रहैत अछि सभ्यता आ संस्कृति मे ततम्य बैठावे मे जीबछ जीक परिवार अप्स्यात छैथ। गामक पृष्ठभूमि मे पलल माय बाप के सबटा रीती रिवाज याद छैन्ह लेकिन अगिला कॉन्वेंट पीढ़ी ओकरा बकबास मानैत अछि आ अहि बेक परंपरा के बिसरे चाहैत अछि लेकिन तुसारिक बहाने जीबछ जीक पत्नी बेटी के अपन परंपरा सं अवगत करबैक लेल उद्यत छैथ। बेटीक सवाल अछि ओ कॉलेज छोड़ि क अहि पूजा मे शामिल नहि भ सकैत अछि दोसर ई पूजाक मकसद की अछि? मकसद साफ़ अछि जे बेटीक विवाह लेल सुयोग्य वर क' कामना कन्या महादेव सं करैत छैथ। ई पूजा कन्या ओही उम्र सं शुरू करैत छैथ जाही उम्र मे हुनका शादी विवाह, वर-कनियाक कोनो ज्ञान नहि होयत छैन्ह लेकिन माय बाप एकरा इश्वर के समक्ष पैरवी मानि अपन कन्या के अहि पूजा के लेल उत्साहित करैत छैथ। कन्यादान के मामला मे लोकक बेचारगी सदियों सं रहल अछि। सुयोग्य वर ढूंढ़नाय वर्षो सं एक जटिल प्रक्रिया रहल अछि से आइओ अछि। से जीबछ जी क पत्नी विवाह योग्य बेटी के तुसारी पूजा के लेल पैरवी कय रहल छैथ।

आभाव के बीच मिथिला मे शादी विवाहक सूत्र आ आधार दहेज़ सं तय होबय लागल। कन्या भले ही आई हरिमोहन बाबूक 'बुच्ची दाय' सं आगू निकली गेल अछि लेकिन जेहने समस्या काल्हि बुच्ची दाय संग छेलैंह तेहने समस्या अइयो नेहा, रूबी आ आरतिक संग अछि। साधन बढ़ल त दहेजक वजन सेहो बढ़ल। फर्क एतेक जरूर आयल जे आई माय बाप भलमानूष के खोज त्याग देने छैथ त पढ़ल लिखल बेटी तुसारी। शायद शिक्षा के बदौलत मिथिलाक बेटी आर्थिक आज़ादी चाहैत अछि लेकिन की समाज अहि के लेल मानसिक रूप सं तैयार अछि?

डॉ. नित्यानन्द लाल दास कैं साहित्य अकादेमीक मैथिली अनुवाद पुरस्कार

डॉ. नित्यानन्द लाल दास कैं साहित्य अकादेमीक मैथिली अनुवाद पुरस्कार 2010 देल जाएत। डॉ. नित्यानन्द लाल दास , पिता स्वर्गीय सूर्यनारायण दास। फारबिसगंज कॉलेज, फारबिसगंज सँ अंग्रेजी विभागाध्यक्ष पदसँ अवकाशप्राप्त।

डॉ. सुरेन्द्र झा ''सुमन'' क संयोजकत्वक कार्यकालमे ''मैथिली परामर्शदातृ समिति'' (साहित्य अकादेमी, दिल्ली) क सदस्य। डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलामक अंग्रेजी पोथी ''इग्नाइटेड माइण्ड्स'' क मैथिलीमे ''प्रज्वलित प्रज्ञा'' नामसँ अनुवाद। मैथिली पत्रिका सभ जेना बटुक, प्रयाग; मिथिला मिहिर, पटना; स्वदेश, दरभंगा; पहुँच, पटना आ परती पलार, अररियामे रचना प्रकाशित।

'टुग्गर' उपन्यास टुग्गर नहि अछि

डा. पशुपति नाथ झा

साहित्यिक संस्था ज्योत्स्ना मण्डलक तत्वावधान मे आर्यकुमार पुस्तकालय जयनगरक सभा भवनमे आयोजित एक साहित्यिक संगोष्ठीमे त्रिभुवन विश्वविद्यालय (नेपाल)क मैथिली विभागाध्यक्ष डा. पशुपतिनाथ झा कहलनि जे वरिष्ठ साहित्यकार डा. कमलकान्त झाक सद्यः प्रकाशित उपन्यास 'टुग्गर' एक उत्कृष्ट रचना अछि। ईकोनहु दृष्टिसँ टुग्गर नहि अछि। उपन्यासक नायक बाल्यकालमे अवश्य टुग्गर भऽ गेल छल, किन्तु गरीबीसँ संघर्ष करैत निरन्तर अध्ययनरत रहैत ओ उच्च शिखरधरि पहुँचिगेल तथा युवावर्गक लेल प्रेरणाक स्रोत बनि गेल। ओ कहलनि दर्जनो पुस्तकक रचयिता डा. झा सफल नाटककार, कथालाकर ओ कवि सेहो छथि, जनिक रचना उच्च कोटिक होति छनि। हिनक शोधग्रन्थ 'मैथिली लोकोक्तिक उद्‌भव अे विकास'क आधारपर अनेक शोधार्थी शोध कऽ प्राप्त कऽ चुकल छथि।

उक्त अवसरपर आयोजित हिन्दी मैथिलीक साझी कार्यक्रमक मुख्य अतिथि पूर्व भारतीय प्रशासनिक अधिकारीओ तीन दर्जन ग्रन्थक रचयिता दैनिक जागरणक स्तम्भलेखक डा. भगवती शरण मिश्र (दिल्ली) कहलनि जे पाश्चात्य सभ्यतासँ प्रभावित भऽ आधुनिक साहित्यकार प्रगतिशीलताक नामपर जे किछु लिखि रहल छथि तकरा समाजक दर्पण नहि कहल जा सकैत अछि। ओहन साहित्य भारतीय संस्कृति पर कुठाराघात करैत अछि तथा युवावर्गकैं दिग्भ्रमित करैत अछि। मुदा ओ कहलनि जे विद्वान लेखक डा. कमल कान्त झाक उपन्यास 'टुग्गर' उक्त दोषसबसँ मुक्त एक उत्कृष्ट रचना अछि, आहिमे नायक पंकजक चरित्रसँ युवावर्गकैं नीक करबाक प्रेरणा भेटैत अछि।

की 'बुच्ची दाय' के भेटत आर्थिक आज़ादी

मिथिला ऐतिहासिक नाम अछि या परंपरा ई बहस के विषय अछि लेकिन ई सवाल दुरुस्त अछि जे आई मिथिलाक पहचान विदेह सं अछि या फिर संस्कृति आ रीती रिवाज सं या फिर शिक्षा सं हर जाति समुदाय आ वर्ग के अलग अलग परंपरा अलग रिवाज लेकिन मर्यादाक रंग एक संस्कृति मे रंगल अछि मिथिलाक हर आयोजन अहि ठामक सांस्कृतिक पर्व सं जुड़ल अछि शायद ई एकर खास पहचान अछि। लेकिन किछु चीज अनोखा अछि। मसलन कन्याक विवाहक तैयारी मिथिला मे लड़की के जन्म लैत शुरू भय जायत अछि। गाम सं वर्षो दूर रहबाक कने 'तुसारी' शब्द हमरा जेहन सं विलोपित भ' गेल छल, लेकिन पड़ोस के परिवार मे तुसारी के लयक मचल घमासान हमरा एकर मर्यादा सं दुबारा परिचय करोलक ..

जीबछ जीक बेटी मेडिकल मे पढैत छथि स्कूली शिक्षा बच्चा सबके कॉन्वेंट स्कूल सं भेटल अछि परिवार मे सांस्कृतिक विद्रोह क' सम्भावना निरंतर बनल रहैत अछि सभ्यता आ संस्कृति मे ततम्य बैठावे मे जीबछ जीक परिवार अप्स्यात छैथ। गामक पृष्ठभूमि मे पलल माय बाप के सबटा रीती रिवाज याद छैन्ह लेकिन अगिला कॉन्वेंट पीढ़ी ओकरा बकबास मानैत अछि आ अहि बेक परंपरा के बिसरे चाहैत अछि लेकिन तुसारिक बहाने जीबछ जीक पत्नी बेटी के अपन परंपरा सं अवगत करबैक लेल उद्यत छैथ। बेटीक सवाल अछि ओ कॉलेज छोड़ि क अहि पूजा मे शामिल नहि भ सकैत अछि दोसर ई पूजाक मकसद की अछि? मकसद साफ़ अछि जे बेटीक विवाह लेल सुयोग्य वर क' कामना कन्या महादेव सं करैत छैथ। ई पूजा कन्या ओही उम्र सं शुरू करैत छैथ जाही उम्र मे हुनका शादी विवाह, वर-कनियाक कोनो ज्ञान नहि होयत छैन्ह लेकिन माय बाप एकरा इश्वर के समक्ष पैरवी मानि अपन कन्या के अहि पूजा के लेल उत्साहित करैत छैथ। कन्यादान के मामला मे लोकक बेचारगी सदियों सं रहल अछि। सुयोग्य वर ढूंढ़नाय वर्षो सं एक जटिल प्रक्रिया रहल अछि से आइओ अछि। से जीबछ जी क पत्नी विवाह योग्य बेटी के तुसारी पूजा के लेल पैरवी कय रहल छैथ।

आभाव के बीच मिथिला मे शादी विवाहक सूत्र आ आधार दहेज़ सं तय होबय लागल। कन्या भले ही आई हरिमोहन बाबूक 'बुच्ची दाय' सं आगू निकली गेल अछि लेकिन जेहने समस्या काल्हि बुच्ची दाय संग छेलैंह तेहने समस्या अइयो नेहा, रूबी आ आरतिक संग अछि। साधन बढ़ल त दहेजक वजन सेहो बढ़ल। फर्क एतेक जरूर आयल जे आई माय बाप भलमानूष के खोज त्याग देने छैथ त पढ़ल लिखल बेटी तुसारी। शायद शिक्षा के बदौलत मिथिलाक बेटी आर्थिक आज़ादी चाहैत अछि लेकिन की समाज अहि के लेल मानसिक रूप सं तैयार अछि?

डॉ. नित्यानन्द लाल दास कैं साहित्य अकादेमीक मैथिली अनुवाद पुरस्कार

डॉ. नित्यानन्द लाल दास कैं साहित्य अकादेमीक मैथिली अनुवाद पुरस्कार 2010 देल जाएत। डॉ. नित्यानन्द लाल दास , पिता स्वर्गीय सूर्यनारायण दास। फारबिसगंज कॉलेज, फारबिसगंज सँ अंग्रेजी विभागाध्यक्ष पदसँ अवकाशप्राप्त।

डॉ. सुरेन्द्र झा ''सुमन'' क संयोजकत्वक कार्यकालमे ''मैथिली परामर्शदातृ समिति'' (साहित्य अकादेमी, दिल्ली) क सदस्य। डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलामक अंग्रेजी पोथी ''इग्नाइटेड माइण्ड्स'' क मैथिलीमे ''प्रज्वलित प्रज्ञा'' नामसँ अनुवाद। मैथिली पत्रिका सभ जेना बटुक, प्रयाग; मिथिला मिहिर, पटना; स्वदेश, दरभंगा; पहुँच, पटना आ परती पलार, अररियामे रचना प्रकाशित।

'टुग्गर' उपन्यास टुग्गर नहि अछि

डा. पशुपति नाथ झा

साहित्यिक संस्था ज्योत्स्ना मण्डलक तत्वावधान मे आर्यकुमार पुस्तकालय जयनगरक सभा भवनमे आयोजित एक साहित्यिक संगोष्ठीमे त्रिभुवन विश्वविद्यालय (नेपाल) क मैथिली विभागाध्यक्ष डा. पशुपतिनाथ झा कहलनि जे वरिष्ठ साहित्यकार डा. कमलकान्त झाक सदाः प्रकाशित उपन्यास 'दुग्गर' एक उत्कृष्ट रचना अछि। ईकोनहु दृष्टिसँ टुग्गर नहि अछि। उपन्यासक नायक बाल्यकालमे अवश्य टुग्गर भऽ गेल छल, किन्तु गरीबीसँ संघर्ष करैत निरन्तर अध्ययनरत रहैत ओ उच्च शिखरधरि पहुँचिगेल तथा युवावर्गक लेल प्रेरणाक स्रोत बनि गेल। ओ कहलनि दर्जनो पुस्तकक रचयिता डा. झा सफल नाटककार, कथालाकर ओ कवि सेहो छथि, जनिक रचना उच्च कोटिक होति छनि। हिनक शोधग्रन्थ 'मैथिली लोकोक्तिक उद्‌भव अे विकास'क आधारपर अनेक शोधार्थी शोध कऽ प्राप्त कऽ चुकल छथि।

उक्त अवसरपर आयोजित हिन्दी मैथिलीक साझी कार्यक्रमक मुख्य अतिथि पूर्व भारतीय प्रशासनिक अधिकारीओ तीन दर्जन ग्रन्थक रचयिता दैनिक जागरणक स्तम्भलेखक डा. भगवती शरण मिश्र (दिल्ली) कहलनि जे पाश्चात्य सभ्यतासँ प्रभावित भऽ आधुनिक साहित्यकार प्रगतिशीलताक नामपर जे किछु लिखि रहल छथि तकरा समाजक दर्पण नहि कहल जा सकैत अछि। ओहन साहित्य भारतीय संस्कृति पर कुठाराघात करैत अछि तथा युवावर्गकैं दिग्भ्रमित करैत अछि। मुदा ओ कहलनि जे विद्वान लेखक डा. कमल कान्त झाक उपन्यास 'टुग्गर' उक्त दोषसबसँ मुक्त एक उत्कृष्ट रचना अछि, आहिमे नायक पंकजक चरित्रसँ युवावर्गकैं नीक करबाक प्रेरणा भेटैत अछि।

की 'बुच्ची दाय' के भेटत आर्थिक आज़ादी

मिथिला ऐतिहासिक नाम अछि या परंपरा ई बहस के विषय अछि लेकिन ई सवाल दुरुस्त अछि जे आई मिथिलाक पहचान विदेह सं अछि या फिर संस्कृति आ रीती रिवाज सं या फिर शिक्षा सं हर जाति समुदाय आ वर्ग के अलग अलग परंपरा अलग रिवाज लेकिन मर्यादाक रंग एक संस्कृति मे रंगल अछि मिथिलाक हर आयोजन अहि ठामक सांस्कृतिक पर्व सं जुड़ल अछि शायद ई एकर खास पहचान अछि। लेकिन किछु चीज अनोखा अछि। मसलन कन्याक विवाहक तैयारी मिथिला मे लड़की के जन्म लैत शुरू भय जायत अछि। गाम सं वर्षो दूर रहबाक कने 'तुसारी' शब्द हमरा जेहन सं विलोपित भ' गेल छल, लेकिन पड़ोस के परिवार मे तुसारी के लयक मचल घमासान हमरा एकर मर्यादा सं दुबारा परिचय करोलक ..

जीबछ जीक बेटी मेडिकल मे पढैत छथि स्कूली शिक्षा बच्चा सबके कॉन्वेंट स्कूल सं भेटल अछि परिवार मे सांस्कृतिक विद्रोह क' सम्भावना निरंतर बनल रहैत अछि सभ्यता आ संस्कृति मे ततम्य बैठावे मे जीबछ जीक परिवार अप्स्यात छैथ। गामक पृष्ठभूमि मे पलल माय बाप के सबटा रीती रिवाज याद छैन्ह लेकिन अगिला कॉन्वेंट पीढ़ी ओकरा बकबास मानैत अछि आ अहि बेक परंपरा के बिसरे चाहैत अछि लेकिन तुसारिक बहाने जीबछ जीक पत्नी बेटी के अपन परंपरा सं अवगत करबैक लेल उद्यत छैथ। बेटीक सवाल अछि ओ कॉलेज छोड़ि क अहि पूजा मे शामिल नहि भ सकैत अछि दोसर ई पूजाक मकसद की अछि? मकसद साफ़ अछि जे बेटीक विवाह लेल सुयोग्य वर क' कामना कन्या महादेव सं करैत छैथ। ई पूजा कन्या ओही उम्र सं शुरू करैत छैथ जाही उम्र मे हुनका शादी विवाह, वर-कनियाक कोनो ज्ञान नहि होयत छैन्ह लेकिन माय बाप एकरा इश्वर के समक्ष पैरवी मानि अपन कन्या के अहि पूजा के लेल उत्साहित करैत छैथ। कन्यादान के मामला मे लोकक बेचारगी सदियों सं रहल अछि। सुयोग्य वर ढूंढ़नाय वर्षो सं एक जटिल प्रक्रिया रहल अछि से आइओ अछि। से जीबछ जी क पत्नी विवाह योग्य बेटी के तुसारी पूजा के लेल पैरवी कय रहल छैथ।

आभाव के बीच मिथिला मे शादी विवाहक सूत्र आ आधार दहेज़ सं तय होबय लागल। कन्या भले ही आई हरिमोहन बाबूक 'बुच्ची दाय' सं आगू निकली गेल अछि लेकिन जेहने समस्या काल्हि बुच्ची दाय संग छेलैंह तेहने समस्या अइयो नेहा, रूबी आ आरतिक संग अछि। साधन बढ़ल त दहेजक वजन सेहो बढ़ल। फर्क एतेक जरूर आयल जे आई माय बाप भलमानूष के खोज त्याग देने छैथ त पढ़ल लिखल बेटी तुसारी। शायद शिक्षा के बदौलत मिथिलाक बेटी आर्थिक आज़ादी चाहैत अछि लेकिन की समाज अहि के लेल मानसिक रूप सं तैयार अछि?

âxÛeõÌæ

– जगदीश प्रसाद मंडल

पात्र परिचय
श्याम (इंजीनियर) सुकान्त (इंजीनियर)
फुलेसर (मध्यम किसान) कुसेसर
मुनेसर
रौदी
अनुप
झोली (पाँचो- बटेदार)
रूपन (कुसेसरक पत्नी)
रेखा (श्यामक पत्नी)

पहिल दृश्य-
(कुसेसरक आंगन)

रूपीनी : कोन लोभमे लटकल छी। गाममे देखै छी जे जेकरो ने किछु छलै ओहो सभ पजेबा घर बना लेलक। कल गड़ा लेलक। नीक-निकुत खाइए। चिक्कन-चिक्कन कपड़ा पहिरैए। अहाँ गाम-गामक रट लगौने छी।

कुसेसर : कहलौं तँ ठीके मुदा गामक लूरि छोड़ि लूरि कोन अछि जे शहर बजार जा करब। ने गाड़ी चलबैक लूरि अछि आ ने करखानाक काजक। तखन जा कऽ की करब। खर्चा कऽ कऽ जएब आ बूलि-टहैल कऽ चलि आएव। तखन तँ आरो कर्जा लदा जएत।

रूपनी : लूरि कि कोनो लोक पेटेसँ सीख कऽ अबैए। काज करैत-करैत लूरि होइ छै। सुखदेवाकेँ कोन लूरि छलै। ढहलेल-बकलेल जकाँ गाममे रहै छलै। मति बदललै, ममिऔत भाए सेने कलकत्ता गेल।

कुसेसर : सुनै छी जे आब कलकत्तामे नै रहैए। गाम ऐबो कएल तँ भेँटि ने भेल।

रूपनी : अहाँकेँ ने नै भेँट भेल। हम तँ भेँट केलिऐ। अंगनामे कुरसीपर चाह पीबैत रहए। जखने देखलक कि कुरसियेपर चाहक कप रखि आबि कऽ दुनू हाथे पकड़ि दोसर कुरसीपर बैइसैले कहलक।

कुसेसर : (मुस्कील दैत) तब तँ अहाँ बड़का लोक भऽ गेलौं?

रूपनी : से कि कुरसीपर बैसलौं। ओसारपर शतरंजी ओछाएल रहै ओइपर बैसलौं। मुदा धैनवाद ओकरा दुनू परानीक विचारकेँ दिऐ। अपने लगमे बैस चाहो-पीबै आ रूदपुरवालीकेँ चाह-विस्कुकट नेने अबैले कहलक।

कुसेसर : की सभ गप भेल?

रूपनी : कोनो कि एकेटा गप भेल। अपने खिस्सा सभ कहए लगल।

कुसेसर : अखैन कते कमाइए?

रूपनी : तेकर ठेकान छै। कहलक जे मालिक तते विसवास करैए। करखानाक मनेजरी दऽ देने अछि। ओइठीनक एक रूपैया अपना सबहक सत्तरि रूपैया होइ छै। मिहनतो करैए ते सुखो होइ छै। अपना सभ जकाँ थोड़े अछि जे पेट साधि खटू आ सुखक बेरमे टुटरूम-टुम।

कुसेसर : की करबै। ओकरा भागमे वएह लिखल छै अपना सबहक भागमे यएह लिखल अछि।

रूपनी : ककरो भाग-तकदीरमे किछु लिखल रहै छै। जँ से रहितै तँ धन ठेरी रहै छै आ बेटा हेबे ने करै छै। जँ लिखल रहितै तँ सभ कुछ ओकरे होइतै।

कुसेसर : तब की करब?

रूपनी : इंजीनियर (श्याम) सहाएबकेँ समाद दऽ दिअनु जे हम खेत-तेत नै करब। हुनकर कि कोनो खेत दहा जाइ छन्हिए आकि रौदीमे जरि जाइ छन्हि। जजात जरैए आ दहाइए बटेदारक। ऋृण पैंच लऽ कऽ खेती करू आ उपजाक कोन बात जे लगतो चलि जाइए।

कुसेसर : कहलौं तँ ठीके मुदा......।

रूपनी : मुदा-तुदा किछु ने। नै समाद पठेवनि तँ नै पठबिअनु। मुदा खेतक आड़िपर जएब छोड़ि दिऔ। जोत-कोड़ छोड़ि दिऔ। जखन गाम औता आ पुछता ते कहि देवनि।

कुसेसर : आशा तँ वएह खेत अछि?

रूपनी : की अछि? ओते महगक खाद कीनै छी, बीआ कीनै छी, खटै छी। तैपर अधा बॉटि दैत छिअनि। की लाभ होइए। दूध महक डारही होइए। खटनी कम लगै छै। ओते जे बोइनपर खटब तँ ओइसँ बेसी हएत।

कुसेसर : एकठाम दस सेर भऽ जाइए। वोइनो करब से सभ दिन काजो थोड़े लगैए?

रूपनी : अपनो काज ठाढ़ कऽ लेब। जै दिन बोइन नै लागत तै दिन अपने काज करब।

कुसेसर : से कना हएत। जँ माले पोसब तँ सभ दिन ने ओकरा चरबए-बझबए पड़त। घास-भूसा करए पड़त। जै दिन काज करए जएब तै दिन अपन काज कना चलत।

रूपनी : तँ की गोला-बड़दक सेबनेसँ, जीवि?
(मुनेसरक प्रवेश)

मुनेसर : कुसेसर, हौ कुसेसर।

कुसेसर : हँ, हँ भैया, अबै छी।

मुनेसर : सोहराइवाली किअए रँगल छथुन्ह?
(कुसेसर छुप्पेह रहैत)

रूपनी : भैया, हम की कोनो अधला बात बजै छी?

कुसेसर : हँ भैया, अपनो मन कखनो-कखनो मानि लइए।

मुनेसर : से की?

कुसेसर : सोहराइयेवालीक सुइत (हँसुली) बन्ह-की लगा कऽ खेती केने छलौं। देखते छहक जे अपना बड़दो नै अछि। हरो जनेपर लइ छी। तैपर सँ खटवो करै छी आ पूँजियो लगैए। रौदी भऽ गेल। एक्को कनमाक आशा रहल।

रूपनी : (तरंगि कऽ) हिनका जे कहबनि भैया से की हिनका नै होइ छन्हि। जेहने बटेदार हम तेहने तँ इहो छथि।

मुनेसर : कहलौं तँ एक-लाखक बात मुदा की उपाए?

रूपनी : छै उपाए भैया?

âXÛeõÏæ

– जगदीश प्रसाद मंडल

पात्र परिचय

श्याम (इंजीनियर) सुकान्त (इंजीनियर)
फुलेसर (मध्यम किसान) कुसेसर
मुनेसर
रौदी
अनुप
झोली (पाँचो- बटेदार)
रूपन (कुसेसरक पत्नी)
रेखा (श्यामक पत्नी)

पहिल दृश्य-

(कुसेसरक आंगन)

रूपीनी : कोन लोभमे लटकल छी। गाममे देखै छी जे जेकरो ने किछु छलै ओहो सभ पजेबा घर बना लेलक। कल गड़ा लेलक। नीक-निकुत खाइए। चिक्कन-चिक्कन कपड़ा पहिरैए। अहाँ गाम-गामक रट लगौने छी।

कुसेसर : कहलौं तँ ठीके मुदा गामक लूरि छोड़ि लूरि कोन अछि जे शहर बजार जा करब। ने गाड़ी चलबैक लूरि अछि आ ने करखानाक काजक। तखन जा कऽ की करब। खर्चा कऽ कऽ जएब आ बूलि-टहैल कऽ चलि आएव। तखन तँ आरो कर्जा लदा जएत।

रूपनी : लूरि कि कोनो लोक पेटेसँ सीख कऽ अबैए। काज करैत-करैत लूरि होइ छै। सुखदेवाकेँ कोन लूरि छलै। ढहलेल-बकलेल जकाँ गाममे रहै छलै। मति बदललै, ममिऔत भाए सेने कलकत्ता गेल।

कुसेसर : सुनै छी जे आब कलकत्तामे नै रहैए। गाम ऐबो कएल तँ भेँट ने भेल।

रूपनी : अहाँकेँ ने नै भेँट भेल। हम तँ भेँट केलिऐ। अंगनामे कुरसीपर चाह पीबैत रहए। जखने देखलक कि कुरसियेपर चाहक कप रखि आबि कऽ दुनू हाथे पकड़ि दोसर कुरसीपर बैइसैले कहलक।

कुसेसर : (मुस्कील दैत) तब तँ अहाँ बड़का लोक भऽ गेलौं?

रूपनी : से कि कुरसीपर बैसलौं। ओसारपर शतरंजी ओछाएल रहै ओइपर बैसलौं। मुदा धैनवाद ओकरा दुनू परानीक विचारकेँ दिऐ। अपने लगमे बैस चाहो-पीबै आ रूदपुरवालीकेँ चाह-विस्कुकट नेने अबैले कहलक।

कुसेसर : की सभ गप भेल?

रूपनी : कोनो कि एकेटा गप भेल। अपने खिस्सा सभ कहए लगल।

कुसेसर : अखैन कते कमाइए?

रूपनी : तेकर ठेकान छै। कहलक जे मालिक तते विसवास करैए। करखानाक मनेजरी दऽ देने अछि। ओइठीनक एक रूपैया अपना सबहक सत्तरि रूपैया होइ छै। मिहनतो करैए ते सुखो होइ छै। अपना सभ जकाँ थोड़े अछि जे पेट साधि खटू आ सुखक बेरमे टुटरूम-टुम।

कुसेसर : की करबै। ओकरा भागमे वएह लिखल छै अपना सबहक भागमे यएह लिखल अछि।

रूपनी : ककरो भाग-तकदीरमे किछु लिखल रहै छै। जँ से रहितै तँ धन ठेरी रहै छै आ बेटा हेबे ने करै छै। जँ लिखल रहितै तँ सभ कुछ ओकरे होइतै।

कुसेसर : तब की करब?

रूपनी : इंजीनियर (श्याम) सहाएबकेँ समाद दऽ दिअनु जे हम खेत-तेत नै करब। हुनकर कि कोनो खेत दहा जाइ छन्हिए आकि रौदीमे जरि जाइ छन्हि। जजात जरैए आ दहाइए बटेदारक। ऋृण पैंच लऽ कऽ खेती करू आ उपजाक कोन बात जे लगतो चलि जाइए।

कुसेसर : कहलौं तँ ठीके मुदा......।

रूपनी : मुदा-तुदा किछु ने। नै समाद पठेवनि तँ नै पठबिअनु। मुदा खेतक आड़िपर जएब छोड़ि दिऔ। जोत-कोड़ छोड़ि दिऔ। जखन गाम औता आ पुछता ते कहि देवनि।

कुसेसर : आशा तँ वएह खेत अछि?

रूपनी : की अछि? ओते महगक खाद कीनै छी, बीआ कीनै छी, खटै छी। तैपर अधा बॉटि दैत छिअनि। की लाभ होइए। दूध महक डारही होइए। खटनी कम लगै छै। ओते जे बोइनपर खटब तँ ओइसँ बेसी हएत।

कुसेसर : एकठाम दस सेर भऽ जाइए। वोइनो करब से सभ दिन काजो थोड़े लगैए?

रूपनी : अपनो काज ठाढ़ कऽ लेब। जै दिन बोइन नै लागत तै दिन अपने काज करब।

कुसेसर : से कना हएत। जँ माले पोसब तँ सभ दिन ने ओकरा चरबए-बझबए पड़त। घास-भूसा करए पड़त। जै दिन काज करए जएब तै दिन अपन काज कना चलत।

रूपनी : तँ की गोला-बड़दक सेबनेसँ, जीवि?

(मुनेसरक प्रवेश)

मुनेसर : कुसेसर, हौ कुसेसर।

कुसेसर : हँ, हँ भैया, अबै छी।

मुनेसर : सोहराइवाली किअए रँगल छथुन्ह? (कुसेसर छुप्पेह रहैत)

रूपनी : भैया, हम की कोनो अधला बात बजै छी?

कुसेसर : हँ भैया, अपनो मन कखनो-कखनो मानि लइए।

मुनेसर : से की?

कुसेसर : सोहराइयेवालीक सुइत (हँसुली) बन्ह-की लगा कऽ खेती केने छलौं। देखते छहक जे अपना बड़दो नै अछि। हरो जनेपर लइ छी। तैपर सँ खटवो करै छी आ पूँजियो लगैए। रौदी भऽ गेल। एक्को कनमाक आशा रहल।

रूपनी : (तरंगि कऽ) हिनका जे कहबनि भैया से की हिनका नै होइ छन्हि। जेहने बटेदार हम तेहने तँ इहो छथि।

मुनेसर : कहलौं तँ एक-लाखक बात मुदा की उपाए?

रूपनी : छै उपाए भैया?

âxÛ¤õÌæ

– जगदीश प्रसाद मंडल

पात्र परिचय
श्याम (इंजीनियर) सुकान्त (इंजीनियर)
फुलेसर (मध्यम किसान) कुसेसर
मुनेसर
रौदी
अनुप
झोली (पाँचो- बटेदार)
रूपन (कुसेसरक पत्नी)
रेखा (श्यामक पत्नी)

पहिल दृश्य-
(कुसेसरक आंगन)

रूपीनी : कोन लोभमे लटकल छी। गाममे देखै छी जे जेकरो ने किछु छलै ओहो सभ पजेबा घर बना लेलक। कल गड़ा लेलक। नीक-निकुत खाइए। चिक्कन-चिक्कन कपड़ा पहिरैए। अहाँ गाम-गामक रट लगौने छी।

कुसेसर : कहलौं तँ ठीके मुदा गामक लूरि छोड़ि लूरि कोन अछि जे शहर बजार जा करब। ने गाड़ी चलबैक लूरि अछि आ ने करखानाक काजक। तखन जा कऽ की करब। खर्चा कऽ कऽ जएब आ बूलि-टहैल कऽ चलि आएव। तखन तँ आरो कर्जा लदा जएत।

रूपनी : लूरि कि कोनो लोक पेटेसँ सीख कऽ अबैए। काज करैत-करैत लूरि होइ छै। सुखदेवाकँ कोन लूरि छलै। ढहलेल-बकलेल जकाँ गाममे रहै छलै। मति बदललै, ममिऔत भाए सेने कलकत्ता गेल।

कुसेसर : सुनै छी जे आब कलकत्तामे नै रहैए। गाम ऐबो कएल तँ भेँट ने भेल।

रूपनी : अहाँकेँ ने नै भेँट भेल। हम तँ भेँट केलिऐ। अंगनामे कुरसीपर चाह पीबैत रहए। जखने देखलक कि कुरसियेपर चाहक कप रखि आबि कऽ दुनू हाथे पकड़ि दोसर कुरसीपर बैइसैले कहलक।

कुसेसर : (मुस्कील दैत) तब तँ अहाँ बड़का लोक भऽ गेलौं?

रूपनी : से कि कुरसीपर बैसलौं। ओसारपर शतरंजी ओछाएल रहै ओइपर बैसलौं। मुदा धैनवाद ओकरा दुनू परानीक विचारकेँ दिऐ। अपने लगमे बैस चाहो-पीबै आ रूदपुरवालीकेँ चाह-विस्कुकट नेने अबैले कहलक।

कुसेसर : की सभ गप भेल?

रूपनी : कोनो कि एकेटा गप भेल। अपने खिस्सा सभ कहए लगल।

कुसेसर : अखैन कते कमाइए?

रूपनी : तेकर ठेकान छै। कहलक जे मालिक तते विसवास करैए। करखानाक मनेजरी दऽ देने अछि। ओइठीनक एक रूपैया अपना सबहक सत्तरि रूपैया होइ छै। मिहनतो करैए ते सुखो होइ छै। अपना सभ जकाँ थोड़े अछि जे पेट साधि खटू आ सुखक बेरमे टुटरूम-टुम।

कुसेसर : की करबै। ओकरा भागमे वएह लिखल छै अपना सबहक भागमे यएह लिखल अछि।

रूपनी : ककरो भाग-तकदीरमे किछु लिखल रहै छै। जँ से रहितै तँ धन ठेरी रहै छै आ बेटा हेबे ने करै छै। जँ लिखल रहितै तँ सभ कुछ ओकरे होइतै।

कुसेसर : तब की करब?

रूपनी : इंजीनियर (श्याम) सहाएबकेँ समाद दऽ दिअनु जे हम खेत-तेत नै करब। हुनकर कि कोनो खेत दहा जाइ छन्हिए आकि रौदीमे जरि जाइ छन्हि। जजात जरैए आ दहाइए बटेदारक। ऋृण पैंच लऽ कऽ खेती करू आ उपजाक कोन बात जे लगतो चलि जाइए।

कुसेसर : कहलौं तँ ठीके मुदा......।

रूपनी : मुदा-तुदा किछु ने। नै समाद पठेवनि तँ नै पठबिअनु। मुदा खेतक आड़िपर जएब छोड़ि दिऔ। जोत-कोड़ छोड़ि दिऔ। जखन गाम औता आ पुछता ते कहि देवनि।

कुसेसर : आशा तँ वएह खेत अछि?

रूपनी : की अछि? ओते महगक खाद कीनै छी, बीआ कीनै छी, खटै छी। तैपर अधा बॉटि दैत छिअनि। की लाभ होइए। दूध महक डारही होइए। खटनी कम लगै छै। ओते जे बोइनपर खटब तँ ओइसँ बेसी हएत।

कुसेसर : एकठाम दस सेर भऽ जाइए। वोइनो करब से सभ दिन काजो थोड़े लगैए?

रूपनी : अपनो काज ठाढ़ कऽ लेब। जै दिन बोइन नै लागत तै दिन अपने काज करब।

कुसेसर : से कना हएत। जँ माले पोसब तँ सभ दिन ने ओकरा चरबए-बझबए पड़त। घास-भूसा करए पड़त। जै दिन काज करए जएब तै दिन अपन काज कना चलत।

रूपनी : तँ की गोला-बड़दक सेबनेसँ, जीवि?

(मुनेसरक प्रवेश)

मुनेसर : कुसेसर, हौ कुसेसर।

कुसेसर : हँ, हँ भैया, अबै छी।

मुनेसर : सोहराइवाली किअए रँगल छथुन्ह? (कुसेसर छुप्पेह रहैत)

रूपनी : भैया, हम की कोनो अधला बात बजै छी?

कुसेसर : हँ भैया, अपनो मन कखनो-कखनो मानि लइए।

मुनेसर : से की?

कुसेसर : सोहराइयेवालीक सुइत (हँसुली) बन्ह-की लगा कऽ खेती केने छलौं। देखते छहक जे अपना बड़दो नै अछि। हरो जनेपर लइ छी। तैपर सँ खटवो करै छी आ पूँजियो लगैए। रौदी भऽ गेल। एक्को कनमाक आशा रहल।

रूपनी : (तरंगि कऽ) हिनका जे कहबनि भैया से की हिनका नै होइ छन्हि। जेहने बटेदार हम तेहने तँ इहो छथि।

मुनेसर : कहलौं तँ एक-लाखक बात मुदा की उपाए?

रूपनी : छै उपाए भैया?

मुनेसर : की?

रूपनी : इंजीनियर सहाएबक खेत छिअनि। दहाउ कि रौदिआउ हुनकर खेत थोड़े चलि जेतनि। मुदा हमरा सबहक तँ लगता चलि जाइए।

मुनेसर : कनियाँ, दू सेरक अशो तँ अछि।

रूपनी : एहेन आशाकेँ मुँह मारौथ। अना जे चुपेचाप खेत छोड़ि देथिन तँ दोखी हेता। हुनका गाम बजा कऽ सभ बात कहबनि। कहाँदन बड़का हाकिम छथीन। बुझता तँ बड़बढ़िया नै तँ हम सभ बिना पूँजिये काहि काटब ओ अछैते पूँजिये काहि कटताह।

मुनेसर : कुसेसर, कनियाँक विचार हमरो जँचैए। दुनू गोटे बुथपर चल। मिलिये कऽ कहबनि।

(दोसर दृश्य)

(श्याम इंजीनियरक डेरा)

श्याम : (चाह पीबैत) कौल्हुके टिकट अछि। दस बजे गाड़ी अछि। तँए सभ कुछ सम्हारि लीअ।

रेखा : (तमसाइत) की सम्हाहरब आ की नै सम्होरब। हजारो दिन कहलौं जे गामक खेत बेच लिअ, तँ जी गारल अछि।

श्याम : कोनो की खगैए जे बेच कऽ गुजर करब। बाप-पुरखाक अरजल छिअनि, जाधरि रहतनि ताधरि ने लोक नाम लेतनि जे फल्लांक छिअनि। ततवे नै अपन लगिते कि अछि मुदा साल भरिक बुतात (चाउर-दालि) तँ चलिते अछि।

रेखा : भरि दिन तँ हिसावे जोड़ै छी कने जोड़ि कऽ देखलिऐ जे कते पूँजीसँ कते आमदनी होइए।

श्याम : सभठाम हिसावे जोड़ने थोड़े काज होइए। इलाकाक-इलाकामे रौदी भऽ जाइ छै, दहार भऽ जाइ छै। अरबो-खरबोक पूँजीसँ एको-पाइ आमदनी नै होइ छै, से लोक बरदास करिते छथि आ हम......।

रेखा : जिनका दोसर रास्ता नै छन्हि ओकि करताह। मुदा अपना तँ अछि।

श्याम : मिथिलाकेँ दिनयाँ देवलोक बुझैए। तइठाम हम छोड़ि कऽ पड़ा जाउँ।

रेखा : हमर बात कहिया सुनलौं जे आइ सुनब।

श्याम : कहिया नै सुनलौं?

रेखा : कहिया सुनलौं?

श्याम : जँ नै सुनलौं तँ आन दिन कहाँ कहियो ई बात कहलौं।

(सुकान्तक प्रवेश)

सुकान्त : भजार छी यौ?

श्याम : हँ, हँ भजार, आउ-आउ। बहुत दिन अहाँ जीवि?

सुकान्त : विचारे कऽ रहल छलौं जे अहाँसँ भेँट करी। काल्हि गाम जएब।

सुकान्त : किअए?

श्याम : बटेदार सभ अबैले कहलक अछि।

रेखा : कहै छिअनि जे कोन लपौड़ीमे पड़ल छी। गामक सभ खेत बेच कऽ अहीठाम मकान बना लिअ। पूँजी ने पूँजी बनवैत अछि। जते सम्पति गाममे अछि ओ जँ ऐठाम आनि चलाएव तँ ओहिसँ कते बर आमदनी हएत।

(रेखाक बात सुनि सुकान्तो मूड़ी डोलबैत। मुदा किछु बजैत नै।)

श्याम : भजार, गुम्म किअए छी?

सुकान्त : ई प्रश्न अपनो संग उठल अछि। मुदा.....?

श्याम : मुदा की?

सुकान्त : जे बात कहि रहल छथि ओ अपनो छल। मुदा रूकि गेलौं।

श्याम : रूकि किअए गेलौं?

सुकान्त : ठीके कहब छैक जे जते लोक तते विचार। मुदा नीक अधलाक विचार तँ करै पड़त।

श्याम : समाजक पढ़ल-लिखल (बुद्धिजीवी वर्ग) लोक तँ अपने सभ छी, अगर अपने सभ आँखि मूनि काज करब तँ जे कम पढ़ल-लिखल वा नै पढ़ल अछि ओ कि करत? तँए ने अहाँसँ पूछैक प्रयोजन।

सुकान्त : की करब अहाँ से तँ हमरा कहने नै करब। मुदा अपन कएल काज कहै छी।

श्याम : हँ, सएह कहू।

सुकान्त : पत्नी लग बजलौं जे गामक खेत बेच एतै आनि खेत कीनि घर बना भाड़ापर लगा देब। कोनो कारोवार जे करए जाहब से तँ नै भऽ सकैए। नोकरियोक ड्यूटी एहेन अछि जे चूर-चूर भऽ जाइ छी।

श्याम : की केलौं?

सुकान्त : पत्नी कहलनि जे खेत-पथार अहाँक कीनल तँ नै छी तखन बेचब किअए। स्त्रीगणक स्वभाव हम बुझै छी। अखन भलेहीं बेच कऽ लऽ आनू मुदा जे स्त्रीगणक गाममे आब औती ओ कि बजती?

रेखा : की बाजत? ककरो बजने कि हेतइ?

श्याम : की बजती?

सुकान्त : अपने नै बुझै छलौं मुदा पत्नी कहलनि जे किछुए दिनक पछाति घरारी घरारिये रहत से बात नै। बाड़ी-चौमास भऽ जाएत। जे कीनत ओ भट्टा उपजाओत कि परती बनाएत तेकर कोनो ठीक छै।

श्याम : हँ, से तँ नहिये छै।

सुकान्त : ककरो कियो मुँहमे ताला लगौत। बाजत जे कुकर्मीक घरारी छिऐ तँए नढ़ियो भुकै छै वा भट्टा उपजाओल जाइ छै।

श्याम : (नमहर साँस छोड़ैत) फेर की केलिऐ?

सुकान्त : मन औना गेल। पुछलिएनि तँ कहलनि जे पनरहो बीघा जमीन गौआँक बीत दए दिअनु। ओ सभ अदलि-बदलि एकठाम कऽ हाइ स्कूल बना लेता। अहाँ तँ नोकरी करिते छी। जाधरि जीवि ताधरि भ तँ सरकार नेनहि अछि।

श्याम : अहाँक काज हमरो जँचैए।

रेखा : कौआसँ खैर लुटाएब कोन कविलती भेल?

सुकान्त : एक्के काजकेँ लोक, अपन-अपन विचारे कते रंगक बुझैए। अपन कएल काज कहलौं। अहाँकेँ मीठ लगए वा तीत ई तँ अहाँक जिह्वा कहत।

रेखा : जिह्वा तँ सबहक एक्के रंग होइ छै?

सुकान्त : देखैमे भलेहीं एक रंग होइ मुदा सुआद फुट-फुट होइ छै। जँ से नै होइतै तँ सभकेँ सभ जीज एक्के

मुनेसर : की?

रूपनी : इंजीनियर सहाएबक खेत छिअनि। दहाउ कि रौदिआउ हुनकर खेत थोड़े चलि जेतनि। मुदा हमरा सबहक तँ लगता चलि जाइए।

मुनेसर : कनियाँ, दू सेरक अशो तँ अछि।

रूपनी : एहेन आशाकेँ मुँह मारौथ। अना जे चुपेचाप खेत छोड़ि देथिन तँ दोखी हेता। हुनका गाम बजा कऽ सभ बात कहबनि। कहाँदन बड़का हाकिम छथीन। बुझता तँ बड़बढ़िया नै तँ हम सभ बिना पूँजिये काहि काटब ओ अछैते पूँजिये काहि कटताह।

मुनेसर : कुसेसर, कनियाँक विचार हमरो जँचैए। दुनू गोटे बुथपर चल। मिलिये कऽ कहबनि।

(दोसर दृश्य)

(श्याम इंजीनियरक डेरा)

श्याम : (चाह पीबैत) कौल्हुके टिकट अछि। दस बजे गाड़ी अछि। तँए सभ कुछ सम्हारि लीअ।

रेखा : (तमसाइत) की सम्हाहरब आ की नै सम्होरब। हजारो दिन कहलौं जे गामक खेत बेच लिअ, तँ जी गारल अछि।

श्याम : कोनो की खगैए जे बेच कऽ गुजर करब। बाप-पुरखाक अरजल छिअनि, जाधरि रहतनि ताधरि ने लोक नाम लेतनि जे फल्लांक छिअनि। ततवे नै अपन लगिते कि अछि मुदा साल भरिक बुतात (चाउर-दालि) तँ चलिते अछि।

रेखा : भरि दिन तँ हिसावे जोड़ै छी कने जोड़ि कऽ देखलिऐ जे कते पूँजीसँ कते आमदनी होइए।

श्याम : सभठाम हिसावे जोड़ने थोड़े काज होइए। इलाकाक-इलाकामे रौदी भऽ जाइ छै, दहार भऽ जाइ छै। अरबो-खरबोक पूँजीसँ एको-पाइ आमदनी नै होइ छै, से लोक बरदास करिते छथि आ हम......।

रेखा : जिनका दोसर रास्ता नै छन्हि ओकि करताह। मुदा अपना तँ अछि।

श्याम : मिथिलाकेँ दिनयाँ देवलोक बुझैए। तइठाम हम छोड़ि कऽ पड़ा जाउँ।

रेखा : हमर बात कहिया सुनलौं जे आइ सुनब।

श्याम : कहिया नै सुनलौं?

रेखा : कहिया सुनलौं?

श्याम : जँ नै सुनलौं तँ आन दिन कहाँ कहियो ई बात कहलौं।

(सुकान्तक प्रवेश)

सुकान्त : भजार छी यौ?

श्याम : हँ, हँ भजार, आउ-आउ। बहुत दिन अहाँ जीवि?

सुकान्त : विचारे कऽ रहल छलौं जे अहाँसँ भेँट करी। काल्हि गाम जएब।

सुकान्त : किअए?

श्याम : बटेदार सभ अबैले कहलक अछि।

रेखा : कहै छिअनि जे कोन लपौड़ीमे पड़ल छी। गामक सभ खेत बेच कऽ अहीठाम मकान बना लिअ। पूँजी ने पूँजी बनवैत अछि। जते सम्पति गाममे अछि ओ जँ ऐठाम आनि चलाएव तँ ओहिसँ कते बर आमदनी हएत।

(रेखाक बात सुनि सुकान्तो मूड़ी डोलबैत। मुदा किछु बजैत नै।)

श्याम : भजार, गुम्म किअए छी?

सुकान्त : ई प्रश्न अपनो संग उठल अछि। मुदा.....?

श्याम : मुदा की?

सुकान्त : जे बात कहि रहल छथि ओ अपनो छल। मुदा रूकि गेलौं।

श्याम : रूकि किअए गेलौं?

सुकान्त : ठीके कहब छैक जे जते लोक तते विचार। मुदा नीक अधलाक विचार तँ करै पड़त।

श्याम : समाजक पढ़ल-लिखल (बुद्धिजीवी वर्ग) लोक तँ अपने सभ छी, अगर अपने सभ आँखि मूनि काज करब तँ जे कम पढ़ल-लिखल वा नै पढ़ल अछि ओ कि करत? तँए ने अहाँसँ पूछैक प्रयोजन।

सुकान्त : की करब अहाँ से तँ हमरा कहने नै करब। मुदा अपन कएल काज कहै छी।

श्याम : हँ, सएह कहू।

सुकान्त : पत्नी लग बजलौं जे गामक खेत बेच एतै आनि खेत कीनि घर बना भाड़ापर लगा देब। कोनो कारोवार जे करए जाहब से तँ नै भऽ सकैए। नोकरियोक ड्यूटी एहेन अछि जे चूर-चूर भऽ जाइ छी।

श्याम : की केलौं?

सुकान्त : पत्नी कहलनि जे खेत-पथार अहाँक कीनल तँ नै छी तखन बेचब किअए। स्त्रीगणक स्वभाव हम बुझै छी। अखन भलेहीं बेच कऽ लऽ आनू मुदा जे स्त्रीगणक गाममे आब औती ओ कि बजती?

रेखा : की बाजत? ककरो बजने कि हेतइ?

श्याम : की बजती?

सुकान्त : अपने नै बुझै छलौं मुदा पत्नी कहलनि जे किछुए दिनक पछाति घरारी घरारिये रहत से बात नै। बाड़ी-चौमास भऽ जाएत। जे कीनत ओ भट्टा उपजाओत कि परती बनाएत तेकर कोनो ठीक छै।

श्याम : हँ, से तँ नहिये छै।

सुकान्त : ककरो कियो मुँहमे ताला लगौत। बाजत जे कुकर्मीक घरारी छिऐ तँए नढ़ियो भुकै छै वा भट्टा उपजाओल जाइ छै।

श्याम : (नमहर साँस छोड़ैत) फेर की केलिऐ?

सुकान्त : मन औना गेल। पुछलिएनि तँ कहलनि जे पनरहो बीघा जमीन गौआँक बीत दए दिअनु। ओ सभ अदलि-बदलि एकठाम कऽ हाइ स्कूल बना लेता। अहाँ तँ नोकरी करिते छी। जाधरि जीवि ताधरि भ तँ सरकार नेनहि अछि।

श्याम : अहाँक काज हमरो जँचैए।

रेखा : कौआसँ खैर लुटाएब कोन कविलती भेल?

सुकान्त : एक्के काजकेँ लोक, अपन-अपन विचारे कते रंगक बुझैए। अपन कएल काज कहलौं। अहाँकेँ मीठ लगए वा तीत ई तँ अहाँक जिह्वा कहत।

रेखा : जिह्वा तँ सबहक एक्के रंग होइ छै?

सुकान्त : देखैमे भलेहीं एक रंग होइ मुदा सुआद फुट-फुट होइ छै। जँ से नै होइतै तँ सभकेँ सभ जीज एक्के

मुनेसर : की?

रूपनी : इंजीनियर सहाएबक खेत छिअनि। दहाउ कि रौदिआउ हुनकर खेत थोड़े चलि जेतनि। मुदा हमरा सबहक तँ लगता चलि जाइए।

मुनेसर : कनियाँ, दू सेरक अशो तँ अछि।

रूपनी : एहेन आशाकेँ मुँह मारौथ। अना जे चुपेचाप खेत छोड़ि देथिन तँ दोखी हेता। हुनका गाम बजा कऽ सभ बात कहबनि। कहाँदन बड़का हाकिम छथीन। बुझता तँ बड़बढ़िया नै तँ हम सभ बिना पूँजिये काहि काटब ओ अछैते पूँजिये काहि कटताह।

मुनेसर : कुसेसर, कनियाँक विचार हमरो जँचैए। दुनू गोटे बुथपर चल। मिलिये कऽ कहबनि।

(दोसर दृश्य)

(श्याम इंजीनियरक डेरा)

श्याम : (चाह पीबैत) कौल्हुके टिकट अछि। दस बजे गाड़ी अछि। तँए सभ कुछ सम्हारि लीअ।

रेखा : (तमसाइत) की सम्हाहरब आ की नै सम्होरब। हजारो दिन कहलौं जे गामक खेत बेच लिअ, तँ जी गारल अछि।

श्याम : कोनो की खगैए जे बेच कऽ गुजर करब। बाप-पुरखाक अरजल छिअनि, जाधरि रहतनि ताधरि ने लोक नाम लेतनि जे फल्लांक छिअनि। ततवे नै अपन लगिते कि अछि मुदा साल भरिक बुतात (चाउर-दालि) तँ चलिते अछि।

रेखा : भरि दिन तँ हिसावे जोड़ै छी कने जोड़ि कऽ देखलिऐ जे कते पूँजीसँ कते आमदनी होइए।

श्याम : सभठाम हिसावे जोड़ने थोड़े काज होइए। इलाकाक-इलाकामे रौदी भऽ जाइ छै, दहार भऽ जाइ छै। अरबो-खरबोक पूँजीसँ एको-पाइ आमदनी नै होइ छै, से लोक बरदास करिते छथि आ हम......।

रेखा : जिनका दोसर रास्ता नै छन्हीं ओकि करताह। मुदा अपना तँ अछि।

श्याम : मिथिलाकेँ दिनयाँ देवलोक बुझैए। तइठाम हम छोड़ि कऽ पड़ा जाउँ।

रेखा : हमर बात कहिया सुनलौं जे आइ सुनब।

श्याम : कहिया नै सुनलौं?

रेखा : कहिया सुनलौं?

श्याम : जँ नै सुनलौं तँ आन दिन कहाँ कहियो ई बात कहलौं।

(सुकान्तक प्रवेश)

सुकान्त : भजार छी यौ?

श्याम : हँ, हँ भजार, आउ-आउ। बहुत दिन अहाँ जीवि?

सुकान्त : विचारे कऽ रहल छलौं जे अहाँसँ भेँट करी। काल्हि गाम जएब।

सुकान्त : किअए?

श्याम : बटेदार सभ अबैले कहलक अछि।

रेखा : कहै छिअनि जे कोन लपौड़ीमे पड़ल छी। गामक सभ खेत बेच कऽ अहीठाम मकान बना लिअ। पूँजी ने पूँजी बनवैत अछि। जते सम्पति गाममे अछि ओ जँ ऐठाम आनि चलाएव तँ ओहिसँ कते बर आमदनी हएत।

(रेखाक बात सुनि सुकान्तो मूड़ी डोलबैत। मुदा किछु बजैत नै।)

श्याम : भजार, गुम्म किअए छी?

सुकान्त : ई प्रश्न अपनो संग उठल अछि। मुदा.....?

श्याम : मुदा की?

सुकान्त : जे बात कहि रहल छथि ओ अपनो छल। मुदा रूकि गेलौं।

श्याम : रूकि किअए गेलौं?

सुकान्त : ठीके कहब छैक जे जते लोक तते विचार। मुदा नीक अधलाक विचार तँ करै पड़त।

श्याम : समाजक पढ़ल-लिखल (बुद्धिजीवी वर्ग) लोक तँ अपने सभ छी, अगर अपने सभ आँखि मूनि काज करब तँ जे कम पढ़ल-लिखल वा नै पढ़ल अछि ओ कि करत? तँए ने अहाँसँ पूछैक प्रयोजन।

सुकान्त : की करब अहाँ से तँ हमरा कहने नै करब। मुदा अपन कएल काज कहै छी।

श्याम : हँ, सएह कहू।

सुकान्त : पत्नी लग बजलौं जे गामक खेत बेच एतै आनि खेत कीनि घर बना भाड़ापर लगा देब। कोनो कारोवार जे करए जाहब से तँ नै भऽ सकैए। नोकरियोक ड्यूटी एहेन अछि जे चूर-चूर भऽ जाइ छी।

श्याम : की केलौं?

सुकान्त : पत्नी कहलनि जे खेत-पथार अहाँक कीनल तँ नै छी तखन बेचब किअए। स्त्रीगणक स्वभाव हम बुझै छी। अखन भलेहीं बेच कऽ लऽ आनू मुदा जे स्त्रीगणक गाममे आब औती ओ कि बजती?

रेखा : की बाजत? ककरो बजने कि हेतइ?

श्याम : की बजती?

सुकान्त : अपने नै बुझै छलौं मुदा पत्नी कहलनि जे किछुए दिनक पछाति घरारी घरारिये रहत से बात नै। बाड़ी-चौमास भऽ जाएत। जे कीनत ओ भट्टा उपजाओत कि परती बनाएत तेकर कोनो ठीक छै।

श्याम : हँ, से तँ नहिये छै।

सुकान्त : ककरो कियो मुँहमे ताला लगौत। बाजत जे कुकर्मीक घरारी छिऐ तँए नढ़ियो भुकै छै वा भट्टा उपजाओल जाइ छै।

श्याम : (नमहर साँस छोड़ैत) फेर की केलिऐ?

सुकान्त : मन औना गेल। पुछलिएनि तँ कहलनि जे पनरहो बीघा जमीन गौआँक बीत दए दिअनु। ओ सभ अदलि-बदलि एकठाम कऽ हाइ स्कूल बना लेता। अहाँ तँ नोकरी करिते छी। जाधरि जीवि ताधरि भ तँ सरकार नेनहि अछि।

श्याम : अहाँक काज हमरो जँचैए।

रेखा : कौआसँ खैर लुटाएब कोन कविलती भेल?

सुकान्त : एक्के काजकेँ लोक, अपन-अपन विचारे कते रंगक बुझैए। अपन कएल काज कहलौं। अहाँकेँ मीठ लगए वा तीत ई तँ अहाँक जिह्वा कहत।

रेखा : जिह्वा तँ सबहक एक्के रंग होइ छै?

सुकान्त : देखैमे भलेहीं एक रंग होइ मुदा सुआद फुट-फुट होइ छै। जँ से नै होइतै तँ सभकेँ सभ जीज एक्के

रंग लगितै।

(तृतीय दृश्य)

(गाम। कुसेसर, मुनेसर, फुलदेब, श्याम आ तीन-चारिटा आरो बटेदार)

फुलदेव : श्याम भाय, गाममे हमरा सभकेँ जीवि कठिन भऽ गेल अछि। हरीयरी अहाँ सभकेँ अछि।

श्याम : नोकरीमे कि कोनो लज्जति रहल। समए छल जखन लोक हकिमानी करैत छल आ अपना जकाँ खाइत छल। आब तँ निच्चाँ-ऊपर मालिके-मालिक।

फुलदेव : (हँसैत) एहेन उटपटाँग बात किअए कहलौं?

श्याम : सिर्फ दरमाहापर आश्रित छी। ओना दरमेहे तते अछि जे नै किछु बुझि पड़ैए। लोन लऽ कऽ घर बनेलौं।

फुलदेव : कते लोन अछि?

श्याम : पैछला मास सठि गेल। ऐल-फैल घर अछि चारिटा कोठरी भड़ो लगौने छी। जइसँ परिवारक खर्च निकलि जाइए।

फुलदेव : तब तँ दरमाहा बँचवे करत।

श्याम : हँ।

फुलदेव : भगवान करथि कतौ रही चैनसँ रही।

श्याम : बच्चा सभकेँ पढ़बैमे बड़ खर्च होइए।

फुलदेव : खर्च करै छी कि अपन भार उतारै छी। आब गप आगू बढ़ाउ, कुसेसर।

कुसेसर : फुलदेव भाय, अहूँ किसान छी। दस बीघा खेत जोतै छी। खेतीक सभ भाँज बुझै छी। कते लगता खेतीमे लगै छै से अहाँसँ छिपल अछि।

फुलदेव : झँपि-तोपि कऽ नै बाजू। खोलि कऽ साफ-साफ बाजू।

मुनेसर : फुलदेव बौआ, कुसेसर बजैमे धकाइए। हम कहै छी। इंजीनियर सहाएब पाँचटा बटेदार छी। अखैन धरि अधा-अधी उपजा बँटैत एलिएनि। मुदा बेर-बेर रौदी दाही होइए। हिनकर (श्यामक) तँ किछु नै बिगड़ैत छन्हि। उपजा नै होइ छन्हि। खेत तँ बँचले रहै छन्हि। मुदा हमरा सबहक तँ सभ कुछ चलि जाइए।

श्याम : अहाँ सभ अधा बाँटि कऽ की हमरेटा दै छी। आकि सभकेँ-सभ दैत छै। जे अदौसँ अछि।

फुलदेव : जे समए बीत गेल ओ तँ बीत गेल। पुनः घुरत नै। मुदा आँखियो मुनि कऽ जीवि उचित नै।

मुनेसर : ओते चिक्कारीमे गप करैक कोन जरूरी अछि। सोझ-साझ बात सुनू। सभ दिनसँ बटाइ करैत एलौं। जे नीक की अधला भेल, भेल। बिना कहने छोड़ि दैतिएनि से नीक नै होइत तँए सोझामे कहै छियनि जे हम सभ बटाइ नै करब।

फुलदेव : एना औगुता कऽ किअए बजै छी। कोनो रोग दवाइ केने छुटैए। हँ, समाजमे ई रोग भारी अछि। भने सभ बैसले छी किअए ने विचारि कऽ रास्ता निकालि लेब। गामक जमीन गामेक लोक उपजाओत।

श्याम : फुलदेव, पत्नीक विचार छन्हि जे बेच लिअ। मुदा एकटा दोस्त छथि ओ कहलनि जे अपन जमीन समाजकेँ सुमझा देलिएनि। बातो सत्य जे जे गाममे रहताह गाम हुनकर छियनि। तँए खेतीक बात बुझै नै छी अहाँ सभ उचित रास्ता निकालि कहू, मानि लेब।

फुलदेव : कते गोटे स्कूल बनवैत छथि, कते गोटे अस्पताल। समाजमे एकरो जरूरत अछि। मुदा सभसँ प्रमुख जरूरी अछि जे गामक सम्पति (जमीन) केँ समुचित उपाए कए उपजा बढ़ाओल जाए।

श्याम : उपजा कोना बढ़त?

फुलदेव : बारह मासक सालमे सिर्फ वर्षे मौसम एहेन अछि जे सालो भरिकेँ प्रभावित करैत अछि। खूब बरखा भेल दह भेल। नै बरखा भेल रौदी भेल। सालो भरि खेतिहर त्राहि-कृष्णा करैत रहह।

मुनेसर : फुलदेव बौआ, अहाँ देखते छी जे दूटा हाथ-पएर छोड़ि किछु अछि नै। तँए कि हमसब ऐ गामक नै कहाएब से बात तँ नै अछि। इंजीनियर सहाएब, सभ तरहेँ सम्पन्न छथि मुदा छिआह तँ अही गामक। तँए......।

श्याम : तँए कि?

फुलदेव : श्याम बाबू, अहाँ सिर्फ माटि बटेदारकेँ देने छिऐ। मुदा माटिसँ उपजा कोना हएत? ऐ बातपर विचार करए पड़त।

श्याम : जहाँ धरि संभव हएत, करैले तैयार छी।

फुलदेव : बीस बीघा जमीन अछि। दूटा बोरिंग आ एकटा दमकल कीनि बटेदारकेँ दए दिऔक। जखन पानि हाथमे आबि जएत तखन बाढ़ि-रौदीक संकट कमि जाएत। आठ मासक विसवासू खेती आ चारि मास अधा भऽ जएत। दहार नै रोकि सकब तँ रौदीसँ बचाओल जा सकैत अछि।

श्याम : बड़बढ़ियाँ।

बटेदार : एतवेटा सँ नै हएत। मोटा-मोटी यएह बुझू जे अहाँ सबहक (बटेदार सबहक) शरीर आ इंजीनियर सहाएबक पूँजी रहतनि। तँए आरो किछु पूँजी लगबैक जरूरत छन्हि।

श्याम : से की?

फुलदेव : खेत जोतैले बड़द, नीक बीआ आ खादक ओरियान सेहो कऽ दियौ।

श्याम : बड़बढ़ियाँ। मुदा हमरा वापसी कि हएत?

फुलदेव : खेतसँ लऽ कऽ दमकल-बोरिंग, बरद, खाद-बीआ लगा सभ पूँजी भेल। बैंकक जे सूद छै ओकरा धियानमे राखि वापसी हएत।

मुनेसर : कि इंजीनियर सहाएब, मंजूर अछि?

श्याम : अहाँ सभ कहू।

कुसेसर : ए-मस्त ।

फुलेसर : जँ स्वीकार भेल तँ सभ थोपड़ी बजा....।

(सभ थोपड़ी बजा निर्णएकेँ स्वीतक केलनि।)

(समाप्त)

रंग लगितै।

(तृतीय दृश्य)

(गाम। कुसेसर, मुनेसर, फुलदेब, श्याम आ तीन-चारिटा आरो बटेदार)

फुलदेव : श्याम भाय, गाममे हमरा सभकेँ जीवि कठिन भऽ गेल अछि। हरीयरी अहाँ सभकेँ अछि।

श्याम : नोकरीमे कि कोनो लज्जति रहल। समए छल जखन लोक हकिमानी करैत छल आ अपना जकाँ खाइत छल। आब तँ निच्चाँ-ऊपर मालिके-मालिक।

फुलदेव : (हँसैत) एहेन उटपटाँग बात किअए कहलौं?

श्याम : सिर्फ दरमाहापर आश्रित छी। ओना दरमेहे तते अछि जे नै किछु बुझि पड़ैए। लोन लऽ कऽ घर बनेलौं।

फुलदेव : कते लोन अछि?

श्याम : पैछला मास सठि गेल। ऐल-फैल घर अछि चारिटा कोठरी भड़ो लगौने छी। जइसँ परिवारक खर्च निकलि जाइए।

फुलदेव : तब तँ दरमाहा बँचवे करत।

श्याम : हँ।

फुलदेव : भगवान करथि कतौ रही चैनसँ रही।

श्याम : बच्चा सभकेँ पढ़बैमे बड़ खर्च होइए।

फुलदेव : खर्च करै छी कि अपन भार उतारै छी। आब गप आगू बढ़ाउ, कुसेसर।

कुसेसर : फुलदेव भाय, अहूँ किसान छी। दस बीघा खेत जोतै छी। खेतीक सभ भाँज बुझै छी। कते लगता खेतीमे लगै छै से अहाँसँ छिपल अछि।

फुलदेव : झाँपि-तोपि कऽ नै बाजू। खोलि कऽ साफ-साफ बाजू।

मुनेसर : फुलदेव बौआ, कुसेसर बजैमे धकाइए। हम कहै छी। इंजीनियर सहाएब पाँचटा बटेदार छी। अखैन धरि अधा-अधी उपजा बँटैत एलिएनि। मुदा बेर-बेर रौदी दाही होइए। हिनकर (श्यामक) तँ किछु नै बिगड़ैत छन्हि। उपजा नै होइ छन्हि। खेत तँ बँचले रहै छन्हि। मुदा हमरा सबहक तँ सभ कुछ चलि जाइए।

श्याम : अहाँ सभ अधा बाँटि कऽ की हमरेटा दै छी। आकि सभकेँ-सभ दैत छै। जे अदौसँ अछि।

फुलदेव : जे समए बीत गेल ओ तँ बीत गेल। पुनः घुरत नै। मुदा आँखियो मुनि कऽ जीवि उचित नै।

मुनेसर : ओते चिक्कारीमे गप करैक कोन जरूरी अछि। सोझ-साझ बात सुनू। सभ दिनसँ बटाइ करैत एलौं। जे नीक की अधला भेल, भेल। बिना कहने छोड़ि दैतिएनि से नीक नै होइत तँए सोझामे कहै छियनि जे हम सभ बटाइ नै करब।

फुलदेव : एना औगुता कऽ किअए बजै छी। कोनो रोग दवाइ केने छुटैए। हँ, समाजमे ई रोग भारी अछि। भने सभ बैसले छी किअए ने विचारि कऽ रास्ता निकालि लेब। गामक जमीन गामेक लोक उपजाओत।

श्याम : फुलदेव, पत्नीक विचार छन्हि जे बेच लिअ। मुदा एकटा दोस्त छथि ओ कहलनि जे अपन जमीन समाजकेँ सुमझा देलिएनि। बातो सत्य जे जे गाममे रहताह गाम हुनकर छियनि। तँए खेतीक बात बुझै नै छी अहाँ सभ उचित रास्ता निकालि कहू, मानि लेब।

फुलदेव : कते गोटे स्कूल बनवैत छथि, कते गोटे अस्पताल। समाजमे एकरो जरूरत अछि। मुदा सभसँ प्रमुख जरूरी अछि जे गामक सम्पति (जमीन) केँ समुचित उपाए कए उपजा बढ़ाओल जाए।

श्याम : उपजा कोना बढ़त?

फुलदेव : बारह मासक सालमे सिर्फ वर्षे मौसम एहेन अछि जे सालो भरिकेँ प्रभावित करैत अछि। खूब बरखा भेल दह भेल। नै बरखा भेल रौदी भेल। सालो भरि खेतिहर त्राहि-कृष्णा करैत रहह।

मुनेसर : फुलदेव बौआ, अहाँ देखते छी जे दूटा हाथ-पएर छोड़ि किछु अछि नै। तँए कि हमसब ऐ गामक नै कहाएब से बात तँ नै अछि। इंजीनियर सहाएब, सभ तरहेँ सम्पन्न छथि मुदा छिआह तँ अही गामक। तँए......।

श्याम : तँए कि?

फुलदेव : श्याम बाबू, अहाँ सिर्फ माटि बटेदारकेँ देने छिऐ। मुदा माटिसँ उपजा कोना हएत? ऐ बातपर विचार करए पड़त।

श्याम : जहाँ धरि संभव हएत, करैले तैयार छी।

फुलदेव : बीस बीघा जमीन अछि। दूटा बोंरिग आ एकटा दमकल कीनि बटेदारकेँ दए दिऔक। जखन पानि हाथमे आबि जएत तखन बाढ़ि-रौदीक संकट कमि जाएत। आठ मासक विसवासू खेती आ चारि मास अधा भऽ जएत। दहार नै रोकि सकब तँ रौदीसँ बचाओल जा सकैत अछि।

श्याम : बड़बढ़ियाँ।

बटेदार : एतवेटा सँ नै हएत। मोटा-मोटी यएह बुझू जे अहाँ सबहक (बटेदार सबहक) शरीर आ इंजीनियर सहाएबक पूँजी रहतनि। तँए आरो किछु पूँजी लगबैक जरूरत छन्हि।

श्याम : से की?

फुलदेव : खेत जोतैले बड़द, नीक बीआ आ खादक ओरियान सेहो कऽ दियौ।

श्याम : बड़बढ़ियाँ। मुदा हमरा वापसी कि हएत?

फुलदेव : खेतसँ लऽ कऽ दमकल-बोरिंग, बरद, खाद-बीआ लगा सभ पूँजी भेल। बैंकक जे सूद छै ओकरा धियानमे राखि वापसी हएत।

मुनेसर : कि इंजीनियर सहाएब, मंजूर अछि?

श्याम : अहाँ सभ कहू।

कुसेसर : ए-मस्त ।

फुलेसर : जँ स्वीकार भेल तँ सभ थोपड़ी बजा....।

(सभ थोपड़ी बजा निर्णएकेँ स्वीतक केलनि।)

(समाप्त)

रंग लगितै।

(तृतीय दृश्य)

(गाम। कुसेसर, मुनेसर, फुलदेब, श्याम आ तीन-चारिटा आरो बटेदार)

फुलदेव : श्याम भाय, गाममे हमरा सभकेँ जीवि कठिन भऽ गेल अछि। हरीयरी अहाँ सभकेँ अछि।

श्याम : नोकरीमे कि कोनो लज्जति रहल। समए छल जखन लोक हकिमानी करैत छल आ अपना जकाँ खाइत छल। आब तँ निच्चाँ-ऊपर मालिके-मालिक।

फुलदेव : (हँसैत) एहेन उटपटाँग बात किअए कहलौं?

श्याम : सिर्फ दरमाहापर आश्रित छी। ओना दरमेहे तते अछि जे नै किछु बुझि पड़ैए। लोन लऽ कऽ घर बनेलौं।

फुलदेव : कते लोन अछि?

श्याम : पैछला मास सठि गेल। ऐल-फैल घर अछि चारिटा कोठरी भड़ो लगौने छी। जइसँ परिवारक खर्च निकलि जाइए।

फुलदेव : तब तँ दरमाहा बँचवे करत।

श्याम : हँ।

फुलदेव : भगवान करथि कतौ रही चैनसँ रही।

श्याम : बच्चा सभकेँ पढ़बैमे बड़ खर्च होइए।

फुलदेव : खर्च करै छी कि अपन भार उतारै छी। आब गप आगू बढ़ाउ, कुसेसर।

कुसेसर : फुलदेव भाय, अहूँ किसान छी। दस बीघा खेत जोतै छी। खेतीक सभ भाँज बुझै छी। कते लगता खेतीमे लगै छै से अहाँसँ छिपल अछि।

फुलदेव : झाँपि-तोपि कऽ नै बाजू। खोलि कऽ साफ-साफ बाजू।

मुनेसर : फुलदेव बौआ, कुसेसर बजैमे धकाइए। हम कहै छी। इंजीनियर सहाएब पाँचटा बटेदार छी। अखैन धरि अधा-अधी उपजा बँटैत एलिएनि। मुदा बेर-बेर रौदी दाही होइए। हिनकर (श्यामक) तँ किछु नै बिगड़ैत छन्हि। उपजा नै होइ छन्हि। खेत तँ बँचले रहै छन्हि। मुदा हमरा सबहक तँ सभ कुछ चलि जाइए।

श्याम : अहाँ सभ अधा बाँटि कऽ की हमरेटा दै छी। आकि सभकेँ-सभ दैत छै। जे अदौसँ अछि।

फुलदेव : जे समए बीत गेल ओ तँ बीत गेल। पुनः घुरत नै। मुदा आँखियो मुनि कऽ जीवि उचित नै।

मुनेसर : ओते चिक्कारीमे गप करैक कोन जरूरी अछि। सोझ-साझ बात सुनू। सभ दिनसँ बटाइ करैत एलौं। जे नीक की अधला भेल, भेल। बिना कहने छोड़ि दैतिएनि से नीक नै होइत तँए सोझामे कहै छियनि जे हम सभ बटाइ नै करब।

फुलदेव : एना औगुता कऽ किअए बजै छी। कोनो रोग दवाइ केने छुटैए। हँ, समाजमे ई रोग भारी अछि। भने सभ बैसले छी किअए ने विचारि कऽ रास्ता निकालि लेब। गामक जमीन गामेक लोक उपजाओत।

श्याम : फुलदेव, पत्नीक विचार छन्हि जे बेच लिअ। मुदा एकटा दोस्त छथि ओ कहलनि जे अपन जमीन समाजकेँ सुमझा देलिएनि। बातो सत्य जे जे गाममे रहताह गाम हुनकर छियनि। तँए खेतीक बात बुझै नै छी अहाँ सभ उचित रास्ता निकालि कहू, मानि लेब।

फुलदेव : कते गोटे स्कूल बनवैत छथि, कते गोटे अस्पताल। समाजमे एकरो जरूरत अछि। मुदा सभसँ प्रमुख जरूरी अछि जे गामक सम्पति (जमीन) कँ समुचित उपाए कए उपजा बढ़ाओल जाए।

श्याम : उपजा कोना बढ़त?

फुलदेव : बारह मासक सालमे सिर्फ वर्षे मौसम एहेन अछि जे सालो भरिकेँ प्रभावित करैत अछि। खूब बरखा भेल दह भेल। नै बरखा भेल रौदी भेल। सालो भरि खेतिहर त्राहि-कृष्णा करैत रहह।

मुनेसर : फुलदेव बौआ, अहाँ देखते छी जे दूटा हाथ-पएर छोड़ि किछु अछि नै। तँए कि हमसब ऐ गामक नै कहाएब से बात तँ नै अछि। इंजीनियर सहाएब, सभ तरहेँ सम्पन्न छथि मुदा छिआह तँ अही गामक। तँए......।

श्याम : तँए कि?

फुलदेव : श्याम बाबू, अहाँ सिर्फ माटि बटेदारकेँ देने छिऐ। मुदा माटिसँ उपजा कोना हएत? ऐ बातपर विचार करए पड़त।

श्याम : जहाँ धरि संभव हएत, करैले तैयार छी।

फुलदेव : बीस बीघा जमीन अछि। दूटा बोरिंग आ एकटा दमकल कीनि बटेदारकेँ दए दिऔक। जखन पानि हाथमे आबि जएत तखन बाढ़ि-रौदीक संकट कमि जाएत। आठ मासक विसवासू खेती आ चारि मास अधा भऽ जएत। दहार नै रोकि सकब तँ रौदीसँ बचाओल जा सकैत अछि।

श्याम : बड़बढ़ियाँ।

बटेदार : एतवेटा सँ नै हएत। मोटा-मोटी यएह बुझू जे अहाँ सबहक (बटेदार सबहक) शरीर आ इंजीनियर सहाएबक पूँजी रहतनि। तँए आरो किछु पूँजी लगबैक जरूरत छन्हि।

श्याम : से की?

फुलदेव : खेत जोतैले बड़द, नीक बीआ आ खादक ओरियान सेहो कऽ दियौ।

श्याम : बड़बढ़ियाँ। मुदा हमरा वापसी कि हएत?

फुलदेव : खेतसँ लऽ कऽ दमकल-बोरिंग, बरद, खाद-बीआ लगा सभ पूँजी भेल। बैंकक जे सूद छै ओकरा धियानमे राखि वापसी हएत।

मुनेसर : कि इंजीनियर सहाएब, मंजूर अछि?

श्याम : अहाँ सभ कहू।

कुसेसर : ए-मस्त ।

फुलेसर : जँ स्वीकार भेल तँ सभ थोपड़ी बजा....।

(सभ थोपड़ी बजा निर्णएकेँ स्वीतक केलनि।)

(समाप्त)

JmoZy PmAm_mS Xwh¶

गोनू कहलनि...



दुर्गामाँ मुदित भऽ गेलीह।

गोनू तोरासँ तर्कमे कियो जीत नहि सकतौ।
तोहर चतुरता उमेरक संग बढ़ैत जेतौ।

JmoZy Am ñdJ©

















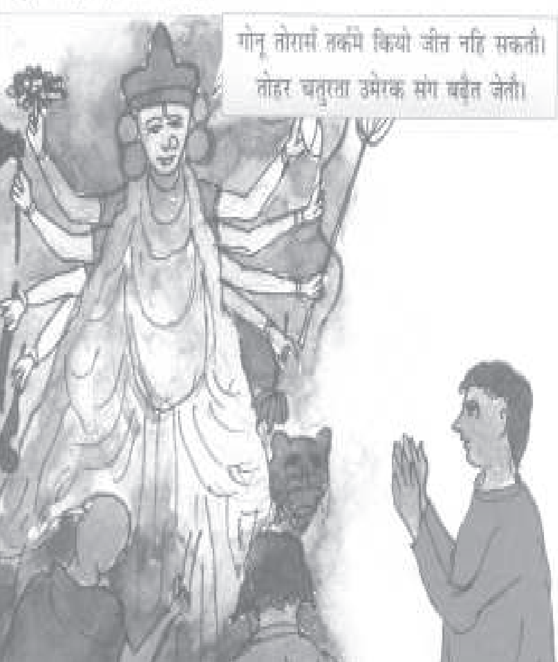
JmoZy PmAm_m§ XwJhr©

JmoZy Am ñdJ©

JmoZy PmAm_mß‌SXwJh©







JmoZy AmñdJ©



















मिथिलाक व्यंजन

शीला देवी झा

अक्सर मिथिला मे बदमाश बच्चा के अखलास करैत किछु बुजुर्ग लोकनि कहैत छथिन शायद एकर माय एकरा ओल खाए कऽ जन्मेने छथिन। ठीके ओल बर कब-कब होइत छैक। ओकर गाछ सं फर तक कतौ छुला सं कब-कब जरूरे लागत। एकर बावजूदो मैथिलानी जखन एकर चटनी बनौती तऽ होएत जे कतेक खाउ। दोसर कोनो साग सब्जी सं एकर स्थान नीचा नहिं रहैछ।



एकरा बनावए के विधि एहि प्रकारे अछि:-

ओल - 1 किलो

नेबो- 4 टा हरियर मिरचाई - 50 ग्राम

अचारक रैंची वा



सरिसब - 25 ग्राम

(सरसों) करु तेल - 50 ग्राम

नमक - स्वाद के अनुसार

बनाबक विधि:

ओल के पहिने धो दियौ तकराबाद ओकर छीलका के छील दियौ फेर नम्हर-नम्हर टुकड़ी मे काटि लीय। फेर कोनो बर्तन मे ओकरा सुसिद्ध कऽ उसनि लीय, जखन ओ ठंडा भए जाए तऽ ओकरा पानि के बर्तन सं कात कए दोसर बर्तन मे निकालि लीय। किछुकाल ओकरा छोड़लाक बाद देखबै जे ओ पूरा सुखि जाएत तखन ओकरा थकुचि कए पग-पग मिला दियौ औकर बाद ओहि मे नींबू के निचोड़ि कए मिला दियौ फेर स्वाद के अनुसार नमक मिला दियौ आओर अचारक रैंची सेहो मिला दियौ। हरियर मिरचाई के एकदम छोट-छोट खंड काटि कए ओहि मे मिला दियौ। ईऽ ध्यान राखब जरूरी अछि जे मिरचाई बेसी नहि होए नहि तऽ बेसी करू भए जाएत। आब एकटा छोर कराही मे करीब (पचास) 50 ग्राम करु तेल के गर्म करु और ओहि मे 25 ग्राम सरिसब या रैंची के फोरन दए ओकरा गरम करू।

फोरन जखन खूब पट-पटाए लागए तऽ ओकरा उतारि ओहि मे ओलक चटनी के दए पूरा मिला दियौ। बस आब चटनी पूर्ण रूपे तैयार भए गेल। आब ओकरा रोटी या भातक संगे स्वाद लए-लए कऽ खाईत रहू। एखन बस दू टा (वस्तु) सामानक बनावक (विधि) तरीका बतेलहुं अछि। आगू फेर मौका भेटला सं अपने लोकनिक सेवा मे उपस्थित होएब।



Âeeßçù - çÌçÍÜæeú

तारीख	दिन	तिथि/पावनि
ता. 3-4-2011	रविवार	अमावस्या
ता. 4-4-2011	सोमवार	वसन्त नवरात्रा आरम्भ सम्वत् 2068 (भदवान्त)
ता. 8-4-2011	शुक्रवार	चैती छठ के खरना
ता. 9-4-2011	शनिवार	चैती छठ सायं कालिन अर्घ
ता. 10-4-2011	रविवार	चैती छठ के परणा
ता. 12-4-2011	मंगलवार	महानवमी राम नवमी
ता. 14-4-2011	वृहस्पतिवार	सतुआइन घट दान-मेद संक्रांति एकादशी
ता. 15-4-2011	शुक्रवार	जूड़िशीतल
ता. 18-4-2011	सोमवार	चैत पूर्णिमा हनुमान जयन्ती
ता. 26-4-2011	मंगलवार	भदवा आरम्भ
ता. 28-4-2011	वृहस्पतिवार	वरुधनि एकादशी
ता. 1-5-2011	रविवार	भदवा समाप्त
ता. 2-5-2011	सोमवार	सोमवारी आमवस्या - 10-15 दिन के बाद
ता. 6-5-2011	शुक्रवार	अक्षय तृतीया पुरुषराम जयन्ती
ता. 11-5-2011	बुधवार	श्री जानकी नवमी व्रत अस्टमी उपरान्त
ता. 13-5-2011	शुक्रवार	विजया एकादशी
ता. 15-5-2011	रविवार	सक्रांति वृष के
ता. 17-5-2011	मंगलवार	वैशाख पूर्णिमा बुद्ध पूर्णिमा
ता. 23-5-2011	सोमवार	भगदा आरम्भ
ता. 28-5-2011	शनिवार	अपरा एकादशी
ता. 29-5-2011	रविवार	भदवा अन्त प्रात: 7 बजे
ता. 1-6-2011	बुधवार	जेस्ष्ठ अमावस्या वट सावित्री
ता. 11-6-2011	शनिवार	गंगा दशहरा
ता. 12-6-2011	रविवार	निर्जला एकादशी
ता. 15-6-2011	बुधवार	ज्येस्ठ पूर्णिमा सक्रांति मिथुन के
ता. 19-6-2011	रविवार	भदवाऽरम्भ दिन भरि शुद्ध
ता. 20-6-2011	सोमवार	मैथलि विवाहिक सभा (सौराठ मेला)
ता. 25-6-2011	शनिवार	भदवा सामाप्ती
ता. 27-6-2011	सोमवार	योगनि एकादशी
ता. 29-6-2011	बुधवार	सौराठ मेला समाप्ती
ता. 1-7-2011	शुक्रवार	आषढ कृष्ण आमवस्या

प्रस्तुति : पं. देवनारायण झा

हनुमान मंदिर, भजनका भवन, दिसपुर, गुवाहाटी, मो. 9864444251

मिथिलाक व्यंजन

शीला देवी झा



अक्सर मिथिला मे बदमाश बच्चा के अखलास करैत किछु बुजुर्ग लोकनि कहैत छथिन शायद एकर माय एकरा ओल खाए कऽ जन्मेने छथिन। ठीके ओल बर कब-कब होइत छैक। ओकर गाछ सं फर तक कतौ छुला सं कब-कब जरूरे लागत। एकर बावजूदो मैथिलानी जखन एकर चटनी बनौती तऽ होएत जे कतेक खाउ। दोसर कोनो साग सब्जी सं एकर स्थान नीचा नहिं रहैछ।

एकरा बनावए के विधि एहि प्रकारे अछि:-

ओल - 1 किलो

नेबो- 4 टा हरियर मिरचाई - 50 ग्राम

अचारक रैंची वा



सरिसब - 25 ग्राम

(सरसों) करु तेल - 50 ग्राम

नमक - स्वाद के अनुसार

बनाबक विधि:

ओल के पहिने धो दियौ तकराबाद ओकर छीलका के छील दियौ फेर नम्हर-नम्हर टुकड़ी मे काटि लीय। फेर कोनो बर्तन मे ओकरा सुसिद्ध कऽ उसनि लीय, जखन ओ ठंडा भए जाए तऽ ओकरा पानि के बर्तन सं कात कए दोसर बर्तन मे निकालि लीय। किछुकाल ओकरा छोड़लाक बाद देखबै जे ओ पूरा सुखि जाएत तखन ओकरा थकुचि कए पग-पग मिला दियौ औकर बाद ओहि मे नींबू के निचोड़ि कए मिला दियौ फेर स्वाद के अनुसार नमक मिला दियौ आओर अचारक रैंची सेहो मिला दियौ। हरियर मिरचाई के एकदम छोट-छोट खंड काटि कए ओहि मे मिला दियौ। ईऽ ध्यान राखब जरूरी अछि जे मिरचाई बेसी नहि होए नहि तऽ बेसी करू भए जाएत। आब एकटा छोर कराही मे करीब (पचास) 50 ग्राम करु तेल के गर्म करु और ओहि मे 25 ग्राम सरिसब या रैंची के फोरन दए ओकरा गरम करू।

फोरन जखन खूब पट-पटाए लागए तऽ ओकरा उतारि ओहि मे ओलक चटनी के दए पूरा मिला दियौ। बस आब चटनी पूर्ण रूपे तैयार भए गेल। आब ओकरा रोटी या भातक संगे स्वाद लए-लए कऽ खाईत रहू। एखन बस दू टा (वस्तु) सामानक बनावक (विधि) तरीका बतेलहुं अछि। आगू फेर मौका भेटला सं अपने लोकनिक सेवा मे उपस्थित होएब।



ÂeeSçÙ - çÌÏeUeeÚ

तारीख	दिन	तिथि/पावनि
ता. 3-4-2011	रविवार	अमावस्या
ता. 4-4-2011	सोमवार	वसन्त नवरात्रा आरम्भ सम्वत् 2068 (भदवान्त)
ता. 8-4-2011	शुक्रवार	चैती छठ के खरना
ता. 9-4-2011	शनिवार	चैती छठ सायं कालिन अर्घ
ता. 10-4-2011	रविवार	चैती छठ के परणा
ता. 12-4-2011	मंगलवार	महानवमी राम नवमी
ता. 14-4-2011	वृहस्पतिवार	सतुआइन घट दान-मेद संक्रांति एकादशी
ता. 15-4-2011	शुक्रवार	जूड़िशीतल
ता. 18-4-2011	सोमवार	चैत पूर्णिमा हनुमान जयन्ती
ता. 26-4-2011	मंगलवार	भदवा आरम्भ
ता. 28-4-2011	वृहस्पतिवार	वरुधनि एकादशी
ता. 1-5-2011	रविवार	भदवा समाप्त
ता. 2-5-2011	सोमवार	सोमवारी आमवस्या - 10-15 दिन के बाद
ता. 6-5-2011	शुक्रवार	अक्षय तृतीया पुरुषराम जयन्ती
ता. 11-5-2011	बुधवार	श्री जानकी नवमी व्रत अस्टमी उपरान्त
ता. 13-5-2011	शुक्रवार	विजया एकादशी
ता. 15-5-2011	रविवार	सक्रांति वृष के
ता. 17-5-2011	मंगलवार	वैशाख पूर्णिमा बुद्ध पूर्णिमा
ता. 23-5-2011	सोमवार	भगदा आरम्भ
ता. 28-5-2011	शनिवार	अपरा एकादशी
ता. 29-5-2011	रविवार	भदवा अन्त प्रात: 7 बजे
ता. 1-6-2011	बुधवार	जेस्ष्ठ अमावस्या वट सावित्री
ता. 11-6-2011	शनिवार	गंगा दशहरा
ता. 12-6-2011	रविवार	निर्जला एकादशी
ता. 15-6-2011	बुधवार	ज्येस्ठ पूर्णिमा सक्रांति मिथुन के
ता. 19-6-2011	रविवार	भदवाऽरम्भ दिन भरि शुद्ध
ता. 20-6-2011	सोमवार	मैथलि विवाहिक सभा (सौराठ मेला)
ता. 25-6-2011	शनिवार	भदवा सामाप्ती
ता. 27-6-2011	सोमवार	योगनि एकादशी
ता. 29-6-2011	बुधवार	सौराठ मेला समाप्ती
ता. 1-7-2011	शुक्रवार	आषढ कृष्ण आमवस्या

प्रस्तुति : पं. देवनारायण झा

हनुमान मंदिर, भजनका भवन, दिसपुर, गुवाहाटी, मो. 9864444251

मिथिलाक व्यंजन

शीला देवी झा

अक्सर मिथिला मे बदमाश बच्चा के अखलास करैत किछु बुजुर्ग लोकनि कहैत छथिन शायद एकर माय एकरा ओल खाए कऽ जन्मेने छथिन। ठीके ओल बर कब-कब होइत छैक। ओकर गाछ सं फर तक कतौ छुला सं कब-कब जरूरे लागत। एकर बावजूदो मैथिलानी जखन एकर चटनी बनौती तऽ होएत जे कतेक खाउ। दोसर कोनो साग सब्जी सं एकर स्थान नीचा नहिं रहैछ।

एकरा बनावए के विधि एहि प्रकारे अछि:-

ओल - 1 किलो

नेबो- 4 टा हरियर मिरचाई - 50 ग्राम

अचारक रैंची वा

सरिसब - 25 ग्राम

(सरसों) करु तेल - 50 ग्राम

नमक - स्वाद के अनुसार



बनाबक विधि:

ओल के पहिने धो दियौ तकराबाद ओकर छीलका के छील दियौ फेर नम्हर-नम्हर टुकड़ी मे काटि लीय। फेर कोनो बर्तन मे ओकरा सुसिद्ध कऽ उसनि लीय, जखन ओ ठंडा भए जाए तऽ ओकरा पानि के बर्तन सं कात कए दोसर बर्तन मे निकालि लीय। किछुकाल ओकरा छोड़लाक बाद देखबै जे ओ पूरा सुखि जाएत तखन ओकरा थकुचि कए पग-पग मिला दियौ औकर बाद ओहि मे नींबू के निचोड़ि कए मिला दियौ फेर स्वाद के अनुसार नमक मिला दियौ आओर अचारक रैंची सेहो मिला दियौ। हरियर मिरचाई के एकदम छोट-छोट खंड काटि कए ओहि मे मिला दियौ। ईऽ ध्यान राखब जरूरी अछि जे मिरचाई बेसी नहि होए नहि तऽ बेसी करू भए जाएत। आब एकटा छोर कराही मे करीब (पचास) 50 ग्राम करु तेल के गर्म करु और ओहि मे 25 ग्राम सरिसब या रैंची के फोरन दए ओकरा गरम करू।

फोरन जखन खूब पट-पटाए लागए तऽ ओकरा उतारि ओहि मे ओलक चटनी के दए पूरा मिला दियौ। बस आब चटनी पूर्ण रूपे तैयार भए गेल। आब ओकरा रोटी या भातक संगे स्वाद लए-लए कऽ खाईत रहू। एखन बस दू टा (वस्तु) सामानक बनावक (विधि) तरीका बतेलहुं अछि। आगू फेर मौका भेटला सं अपने लोकनिक सेवा मे उपस्थित होएब।





Âeeßçù - çÌaÜeeÚ

तारीख	दिन	तिथि/पावनि
ता. 3-4-2011	रविवार	अमावस्या
ता. 4-4-2011	सोमवार	वसन्त नवरात्रा आरम्भ सम्वत् 2068 (भदवान्त)
ता. 8-4-2011	शुक्रवार	चैती छठ के खरना
ता. 9-4-2011	शनिवार	चैती छठ सायं कालिन अर्घ
ता. 10-4-2011	रविवार	चैती छठ के परणा
ता. 12-4-2011	मंगलवार	महानवमी राम नवमी
ता. 14-4-2011	वृहस्पतिवार	सतुआइन घट दान-मेद संक्रांति एकादशी
ता. 15-4-2011	शुक्रवार	जूड़िशीतल
ता. 18-4-2011	सोमवार	चैत पूर्णिमा हनुमान जयन्ती
ता. 26-4-2011	मंगलवार	भदवा आरम्भ
ता. 28-4-2011	वृहस्पतिवार	वरुधनि एकादशी
ता. 1-5-2011	रविवार	भदवा समाप्त
ता. 2-5-2011	सोमवार	सोमवारी आमवस्या - 10-15 दिन के बाद
ता. 6-5-2011	शुक्रवार	अक्षय तृतीया पुरुषराम जयन्ती
ता. 11-5-2011	बुधवार	श्री जानकी नवमी व्रत अस्टमी उपरान्त
ता. 13-5-2011	शुक्रवार	विजया एकादशी
ता. 15-5-2011	रविवार	सक्रांति वृष के
ता. 17-5-2011	मंगलवार	वैशाख पूर्णिमा बुद्ध पूर्णिमा
ता. 23-5-2011	सोमवार	भगदा आरम्भ
ता. 28-5-2011	शनिवार	अपरा एकादशी
ता. 29-5-2011	रविवार	भदवा अन्त प्रात: 7 बजे
ता. 1-6-2011	बुधवार	जेस्ठ अमावस्या वट सावित्री
ता. 11-6-2011	शनिवार	गंगा दशहरा
ता. 12-6-2011	रविवार	निर्जला एकादशी
ता. 15-6-2011	बुधवार	ज्येस्ट पूर्णिमा सक्रांति मिथुन के
ता. 19-6-2011	रविवार	भदवाऽरम्भ दिन भरि शुद्ध
ता. 20-6-2011	सोमवार	मैथलि विवाहिक सभा (सौराठ मेला)
ता. 25-6-2011	शनिवार	भदवा सामाप्ती
ता. 27-6-2011	सोमवार	योगनि एकादशी
ता. 29-6-2011	बुधवार	सौराठ मेला समाप्ती
ता. 1-7-2011	शुक्रवार	आषढ कृष्ण आमवस्या

प्रस्तुति : पं. देवनारायण झा

हनुमान मंदिर, भजनका भवन, दिसपुर, गुवाहाटी, मो. 9864444251

संघ लोकसेवा आयोगक मैथिलीक पाठ्यक्रम

प्रश्न पत्र - 1
मैथिली भाषा और साहित्यक इतिहास
(उत्तर मैथिली में लिखने होंगे)
खंड-क

मैथिली भाषा का इतिहास

1. भारोपीय भाषा-परिवार मे मैथिली का स्थान
2. मैथिली भाषा का उद्भव और विकास (संस्कृत, प्राकृत, अवहट्ट, मैथिली)
3. मैथिली भाषा का कालिक विभाजन (आदिकाल, मध्यकाल, आधुनिक काल)
4. मैथिली एवं इसकी विभिन्न उपभाषाएं
5. मैथिली एवं अन्य पूर्वांचलीय भाषाओं में सम्बन्ध (बंगला, असमिया, उड़िया)
6. तिरहुता लिपि का उद्भव और विकास
7. मैथिली में सर्वनाम और क्रियापद

खंड-ख
मैथिली साहित्य का इतिहास

1. मैथिली साहित्य की पृष्ठभूमि (धार्मिक, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक)
2. मैथिली साहित्य का काल-विभाजन
3. प्राक् विद्यापति साहित्य
4. विद्यापति और उनकी परम्परा
5. मध्यकालीन मैथिली नाटक (कीर्तनिया नाटक, अंकीया नाट, नेपाल में रचित मैथिली नाटक)
6. मैथिली लोकसाहित्य (लोकगाथा, लोकगीत, लोकनाट्य, लोककथा)
7. आधुनिक युग में विभिन्न साहित्यिक विधाओं का विकास
   (क) प्रबंधकाव्य　(ख) मुक्तककाव्य
   (ग) उपन्यास　(घ) कथा
   (ङ) नाटक　(च) निबंध
   (छ) समीक्षा　(ज) संस्मरण
   (झ) अनुवाद
8. मैथिली पत्र-पत्रिकाओं का विकास

प्रश्न पत्र - 2
(उत्तर मैथिली में लिखने होंगे)

इस प्रश्नपत्र में निर्धारित मूल पाठ्यपुस्तकों का पढ़ना अपेक्षित होगा और ऐसे प्रश्न पूछे जाएंगे जिनसे अभ्यर्थी की आलोचनात्मक क्षमता की परीक्षा हो सके।

खंड-क

1. विद्यापति गीतशती-प्रकाशक-साहित्य अकादमी, नई दिल्ली (गीतसंख्या 1 से 50 तक)
2. गोविन्ददास भजनावली-प्रकाशक-मैथिली अकादमी, पटना (गीतसंख्या 1 से 25 तक)
3. कृष्णजन्म-मनबोध
4. मिथिलाभाषा रामायण-चन्दा झा (सुन्दरकाण्ड मात्र)
5. रमेश्वरचरित मिथिला रामायण-लालदास (बालकाण्ड मात्र)
6. कीचकवध-तन्त्रनाथ झा
7. दत्तवती-सुरेन्द्र झा 'सुमन' (प्रथम और द्वितीय सर्ग मात्र)
8. चित्रा-यात्री
9. समकालीन मैथिली कविता प्रकाशक साहित्य अकादमी, नई दिल्ली

खंड-ख

10. वर्णरत्नाकर - ज्योतिरीश्वर (द्वितीय कल्लोल मात्र)
11. खट्टर ककाक तरंग - हरिमोहन झा
12. लोरिक-विजय-मणिपद्म
13. पृथ्वीपुत्र - ललित
14. भफाइत चाहक जिनगी - सुधांशु 'शेखर' चौधरी
15. कृति राजकमल- प्रकाशक-मैथिली अकादमी, पटना (आरम्भ में दस कथा तक)
16. कथा-संग्रह-प्रकाशक-मैथिली अकादमी, पटना

सहायक ग्रन्थ

- मैथिली साहित्यक पृष्ठभूमि-डा० अमरनाथ झा
- मैथिली साहित्यक इतिहास - डा० जयकान्त मिश्र
- मैथिली साहित्यक इतिहास- डा० दुर्गानाथ झा श्रीश
- मैथिली साहित्यक रूपरेखा - डा० बासुकीनाथ झा
- मैथिली गद्यक विकास- मोहन भारद्वाज
- मैथिली कथाक विकास - डा० बासुकीनाथ झा
- मैथिली साहित्यक आलोचनात्मक इतिहास- दिनेश कुमार झा
- मैथिली परिचायिका - पं० गोविन्द झा
- मैथिली काव्यक विकास- सुरेश्वर झा
- संदर्भ : सुधांशु शेखर चौधरी
- मैथिली लोकसाहित्य : स्वरूप ओ सौंदर्य- डा० रामदेव झा
- मैथिली पत्रकारिताक इतिहास : पं० चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'
- मैथिली पत्रकारिता : दशा ओ दिशा : सं०- शरदिन्दु चौधरी
- विद्यापति - रमानाथ झा
- विद्यापति - डॉ० शैलेन्द्र मोहन झा
- चन्दा झा - प्रो० जयदेव मिश्र
- लाल दास- डा० देवेन्द्र झा
- मणिपद्म- हंसराज
- ललित- डा० विभूति आनन्द
- स्मारिका-2006-सं० शरदिन्दु चौधरी, (चेतना समिति, पटना) डा० सत्यनारायण मेहता
- आधुनिक मैथिली नाटक-सं०-मधुकान्त झा,(चेतना समिति, पटना)
- प्रयोजन : डॉ. इन्दिरा झा

संघ लोकसेवा आयोगक मैथिलीक पाठ्यक्रम

प्रश्न पत्र - 1
मैथिली भाषा और साहित्यक इतिहास
(उत्तर मैथिली में लिखने होंगे)
खंड-क

मैथिली भाषा का इतिहास
1. भारोपीय भाषा-परिवार मे मैथिली का स्थान
2. मैथिली भाषा का उद्भव और विकास
(संस्कृत, प्राकृत, अवहट्ट, मैथिली)
3. मैथिली भाषा का कालिक विभाजन
(आदिकाल, मध्यकाल, आधुनिक काल)
4. मैथिली एवं इसकी विभिन्न उपभाषाएं
5. मैथिली एवं अन्य पूर्वांचलीय भाषाओं में सम्बन्ध
(बंगला, असमिया, उड़िया)
6. तिरहुता लिपि का उद्भव और विकास
7. मैथिली में सर्वनाम और क्रियापद

खंड-ख
मैथिली साहित्य का इतिहास
1. मैथिली साहित्य की पृष्ठभूमि
(धार्मिक, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक)
2. मैथिली साहित्य का काल-विभाजन
3. प्राक् विद्यापति साहित्य
4. विद्यापति और उनकी परम्परा
5. मध्यकालीन मैथिली नाटक
(कीर्तनिया नाटक, अंकीया नाट, नेपाल में रचित मैथिली नाटक)
6. मैथिली लोकसाहित्य
(लोकगाथा, लोकगीत, लोकनाट्य, लोककथा)
7. आधुनिक युग में विभिन्न साहित्यिक विधाओं का विकास
(क) प्रबंधकाव्य (ख) मुक्तककाव्य
(ग) उपन्यास (घ) कथा
(ङ) नाटक (च) निबंध
(छ) समीक्षा (ज) संस्मरण
(झ) अनुवाद
8. मैथिली पत्र-पत्रिकाओं का विकास

प्रश्न पत्र - 2
(उत्तर मैथिली में लिखने होंगे)

इस प्रश्नपत्र में निर्धारित मूल पाठ्यपुस्तकों को पढ़ना अपेक्षित होगा और ऐसे प्रश्न पूछे जाएंगे जिनसे अभ्यर्थी की आलोचनात्मक क्षमता की परीक्षा हो सके।

खंड-क
1. विद्यापति गीतशती-प्रकाशक-साहित्य अकादमी, नई दिल्ली
(गीतसंख्या 1 से 50 तक)
2. गोविन्ददास भजनावली-प्रकाशक-मैथिली अकादमी, पटना
(गीतसंख्या 1 से 25 तक)
3. कृष्णजन्म-मनबोध
4. मिथिलाभाषा रामायण-चन्दा झा
(सुन्दरकाण्ड मात्र)
5. रमेश्वरचरित मिथिला रामायण-लालदास
(बालकाण्ड मात्र)
6. कीचकवध-तन्त्रनाथ झा
7. दत्तवती-सुरेन्द्र झा 'सुमन'
(प्रथम और द्वितीय सर्ग मात्र)
8. चित्रा-यात्री
9. समकालीन मैथिली कविता प्रकाशक साहित्य अकादमी, नई दिल्ली

खंड-ख
10. वर्णरत्नाकर - ज्योतिरीश्वर
(द्वितीय कल्लोल मात्र)
11. खट्टर ककाक तरंग - हरिमोहन झा
12. लोरिक-विजय-मणिपद्म
13. पृथ्वीपुत्र - ललित
14. भफाइत चाहक जिनगी - सुधांशु 'शेखर' चौधरी
15. कृति राजकमल- प्रकाशक-मैथिली अकादमी, पटना
(आरम्भ में दस कथा तक)
16. कथा-संग्रह-प्रकाशक-मैथिली अकादमी, पटना

सहायक ग्रन्थ

- मैथिली साहित्यक पृष्ठभूमि-डा० अमरनाथ झा
- मैथिली साहित्यक इतिहास - डा० जयकान्त मिश्र
- मैथिली साहित्यक इतिहास- डा० दुर्गानाथ झा श्रीश
- मैथिली साहित्यक रूपरेखा - डा० बासुकीनाथ झा
- मैथिली गद्यक विकास- मोहन भारद्वाज
- मैथिली कथाक विकास - डा० वासुकीनाथ झा
- मैथिली साहित्यक आलोचनात्मक इतिहास- दिनेश कुमार झा
- मैथिली परिचायिका - पं० गोविन्द झा
- मैथिली काव्यक विकास- सुरेश्वर झा
- संदर्भ : सुधांशु शेखर चौधरी
- मैथिली लोकसाहित्य : स्वरूप ओ सौंदर्य- डा० रामदेव झा
- मैथिली पत्रकारिताक इतिहास : पं० चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'
- मैथिली पत्रकारिता : दशा ओ दिशा : सं०- शरदिन्दु चौधरी
- विद्यापति - रमानाथ झा
- विद्यापति - डॉ० शैलेन्द्र मोहन झा
- चन्दा झा - प्रो० जयदेव मिश्र
- लाल दास- डा० देवेन्द्र झा
- मणिपद्म- हंसराज
- ललित- डा० विभूति आनन्द
- स्मारिका-2006-सं० शरदिन्दु चौधरी, (चेतना समिति, पटना)
डा० सत्यनारायण मेहता
- आधुनिक मैथिली नाटक-सं०-मधुकान्त झा,(चेतना समिति, पटना)
- प्रयोजन : डॉ. इन्दिरा झा

गाइड- मैथिली गद्य गौरव, सम्पादक- शरदिन्दु चौधरी
पुस्तक प्राप्ति स्थान - शेखर प्रकाशन
पोपुलर फर्मा के पीछे, निदान ज्योतिष केन्द्र, न्यू मार्केट, पटना — 1, फोन : 9334102305

संघ लोकसेवा आयोगक मैथिलीक पाठ्यक्रम

प्रश्न पत्र - 1

मैथिली भाषा और साहित्यक इतिहास

(उत्तर मैथिली में लिखने होंगे)

खंड-क

मैथिली भाषा का इतिहास

1. भारोपीय भाषा-परिवार मे मैथिली का स्थान
2. मैथिली भाषा का उद्भव और विकास
   (संस्कृत, प्राकृत, अवहट्ट, मैथिली)
3. मैथिली भाषा का कालिक विभाजन
   (आदिकाल, मध्यकाल, आधुनिक काल)
4. मैथिली एवं इसकी विभिन्न उपभाषाएं
5. मैथिली एवं अन्य पूर्वांचलीय भाषाओं में सम्बन्ध
   (बंगला, असमिया, उड़िया)
6. तिरहुता लिपि का उद्भव और विकास
7. मैथिली में सर्वनाम और क्रियापद

खंड-ख

मैथिली साहित्य का इतिहास

1. मैथिली साहित्य की पृष्ठभूमि
   (धार्मिक, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक)
2. मैथिली साहित्य का काल-विभाजन
3. प्राक् विद्यापति साहित्य
4. विद्यापति और उनकी परम्परा
5. मध्यकालीन मैथिली नाटक
   (कीर्तनिया नाटक, अंकीया नाट, नेपाल में रचित मैथिली नाटक)
6. मैथिली लोकसाहित्य
   (लोकगाथा, लोकगीत, लोकनाट्य, लोककथा)
7. आधुनिक युग में विभिन्न साहित्यिक विधाओं का विकास
   (क) प्रबंधकाव्य (ख) मुक्तककाव्य
   (ग) उपन्यास (घ) कथा
   (ङ) नाटक (च) निबंध
   (छ) समीक्षा (ज) संस्मरण
   (झ) अनुवाद
8. मैथिली पत्र-पत्रिकाओं का विकास

प्रश्न पत्र - 2

(उत्तर मैथिली में लिखने होंगे)

इस प्रश्नपत्र में निर्धारित मूल पाठ्यपुस्तकों को पढ़ना अपेक्षित होगा और ऐसे प्रश्न पूछे जाएंगे जिनसे अभ्यर्थी की आलोचनात्मक क्षमता की परीक्षा हो सके।

खंड-क

1. विद्यापति गीतशती-प्रकाशक-साहित्य अकादमी, नई दिल्ली
   (गीतसंख्या 1 से 50 तक)
2. गोविन्ददास भजनावली-प्रकाशक-मैथिली अकादमी, पटना
   (गीतसंख्या 1 से 25 तक)
3. कृष्णजन्म-मनबोध
4. मिथिलाभाषा रामायण-चन्दा झा
   (सुन्दरकाण्ड मात्र)
5. रमेश्वरचरित मिथिला रामायण-लालदास
   (बालकाण्ड मात्र)
6. कीचकवध-तन्त्रनाथ झा
7. दत्तवती-सुरेन्द्र झा 'सुमन'
   (प्रथम और द्वितीय सर्ग मात्र)
8. चित्रा-यात्री
9. समकालीन मैथिली कविता प्रकाशक साहित्य अकादमी, नई दिल्ली

खंड-ख

10. वर्णरत्नाकर - ज्योतिरीश्वर
    (द्वितीय कल्लोल मात्र)
11. खट्टर ककाक तरंग - हरिमोहन झा
12. लोरिक-विजय-मणिपद्म
13. पृथ्वीपुत्र - ललित
14. भफाइत चाहक जिनगी - सुधांशु 'शेखर' चौधरी
15. कृति राजकमल- प्रकाशक-मैथिली अकादमी, पटना
    (आरम्भ में दस कथा तक)
16. कथा-संग्रह-प्रकाशक-मैथिली अकादमी, पटना

सहायक ग्रन्थ

- मैथिली साहित्यक पृष्ठभूमि-डा० अमरनाथ झा
- मैथिली साहित्यक इतिहास - डा० जयकान्त मिश्र
- मैथिली साहित्यक इतिहास- डा० दुर्गानाथ झा श्रीश
- मैथिली साहित्यक रूपरेखा - डा० बासुकीनाथ झा
- मैथिली गद्यक विकास- मोहन भारद्वाज
- मैथिली कथाक विकास डा० बासुकीनाथ झा
- मैथिली साहित्यक आलोचनात्मक इतिहास- दिनेश कुमार झा
- मैथिली परिचायिका - पं० गोविन्द झा
- मैथिली काव्यक विकास- सुरेश्वर झा
- संदर्भ : सुधांशु शेखर चौधरी
- मैथिली लोकसाहित्य : स्वरूप ओ सौंदर्य- डा० रामदेव झा
- मैथिली पत्रकारिताक इतिहास : पं० चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'
- मैथिली पत्रकारिता : दशा ओ दिशा : सं०- शरदिन्दु चौधरी
- विद्यापति - रमानाथ झा
- विद्यापति - डॉ० शैलेन्द्र मोहन झा
- चन्दा झा - प्रो० जयदेव मिश्र
- लाल दास- डा० देवेन्द्र झा
- मणिपद्म- हंसराज
- ललित- डा० विभूति आनन्द
- स्मारिका-2006-सं० शरदिन्दु चौधरी, (चेतना समिति, पटना)
  डा० सत्यनारायण मेहता
- आधुनिक मैथिली नाटक-सं०-मधुकान्त झा,(चेतना समिति, पटना)
- प्रयोजन : डॉ. इन्दिरा झा

गाइड- मैथिली गद्य गौरव, सम्पादक- शरदिन्दु चौधरी

पुस्तक प्राप्ति स्थान - शेखर प्रकाशन

पोपुलर फर्मा के पीछे, निदान ज्योतिष केन्द्र, न्यू मार्केट, पटना — 1, फोन : 9334102305

अ आ इ ई उ ऊ ए ऐ ऋ ओ औ अं अः

क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ ट ठ

ड ढ ड़ ढ़ ण त थ द ध न प फ ब

भ म य र ल व श ष स ह

क का कि की कु कू कृ के कै को कौ कं कः

लृ क्ष त्र ज्ञ

अ आ इ ई उ ऊ ए ऐ ऋ ओ औ अं अः

क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ ट ठ

ड ढ ड़ ढ़ ण त थ द ध न प फ ब

भ म य र ल व श ष स ह

क का कि की कु कू कृ के कै को कौ कं कः

अ आ इ ई उ ऊ ए ऐ ऋ ओ औ अं अः

क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ ट ठ

ड ढ ड़ ढ़ ण त थ द ध न प फ ब

भ म य र ल व श ष स ह

क का कि की कु कू कृ के कै को कौ कं कः

कु खु गु घु चु छु जु झु टु ठु डु ढु णु

तु थु दु धु नु पु फु रु

भु मु यु रु लु वु शु षु सु हु क्षु श्रु

कू चू ठू रू भू पू भू यू रू हू क्तू

कृ चृ टृ तृ पृ भृ दृ

लृ क्ष त्र ज्ञ